स्वाध्याय स्वमन्थन स्वावलम्बन

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित)

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

BLISF-04
शराब, मादक द्रव्य और एच.आई.वी.

<u>प्रथम खण्ड</u> : मादक द्रव्य दुरुपयोग पर तथ्यपरक सूचना

<u>द्वितीय खण्ड</u> : मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसके परिणाम

<u>तृतीय खण्ड</u> : मादक द्रव्य दुरुपयोग-रोकथाम और उपचार

शान्तिपुरम् (सेक्टर-एफ), फाफामऊ, इलाहाबाद - 211013

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

BLISF-04
शराब, मादक द्रव्य और एच आई वी

खंड
1

मादक द्रव्य दुरुपयोग पर तथ्यपरक सूचना

इकाई 1

मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स में संबंध 5

इकाई 2

सामान्यतः प्रयोग वाले मादक द्रव्य और लक्ष्य समूह 18

इकाई 3

भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार का विस्तार 32

इकाई 4

मादक द्रव्य परिदृश्य - वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय 43

खंड 1 का परिचय

शराब, मादक द्रव्य और एच आई वी पर ऐच्छिक पाठ्यक्रम (वैकल्पिक) का खंड 1 आपके सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। मादक द्रव्य दुरुपयोग पाठयक्रम का यह परिचयात्मक खंड है इसमें मादक द्रव्य व्यसन और एच आई वी संचारण में संबंधों की समीक्षा की गयी है। सामान्यतः प्रयोग किये जाने वाले मादक द्रव्य तथा लक्ष्य समूहों के वर्णन के अतिरिक्त इस खंड में मादक द्रव्य व्यसन की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का भी मूल्यांकन किया गया है। इस खंड में चार इकाइयाँ हैं। इकाई 1 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी में संबंध की चर्चा करती है। यह इकाई यह भी चर्चा करती है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग कैसे एच आई वी संक्रमण के अवसरों को बढ़ा देते हैं। लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग क्यों करते हैं। इकाई 2 सामान्यतः प्रयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य और लक्ष्य समूहों का वर्णन करती है। इस इकाई में लोग मादक द्रव्य का क्यों दुरुपयोग करते हैं के वर्णन के साथ मादक द्रव्य का दुरुपयोग करने वाले संभावित विभिन्न समूहों का वर्गीकरण भी है। इकाई 3 में भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग की व्यावकता की सीमा तथा अवैध व्यापार का वर्णन किया गया है। इस इकाई में मादक द्रव्य दुरुपयोग का विभिन्न समूहों पर प्रभाव, मादक द्रव्य के अवैध व्यापार की व्यापकता और क्षेत्र तथा अवैध व्यापार के परिणामों की चर्चा की गई है। इकाई 4 सार्वभौमिक क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिदृश्य के बारे में वर्णन करती है। यह इकाई मादक द्रव्य दुरुपयोग समस्या की व्यापकता को प्रस्तुत करती है क्योंकि यह सामान्यतः पूरे विश्व में तथा भारत में विशेष रूप से विद्यमान है। इसमें विभिन्न देशों द्वारा इस सामाजिक बुराई का सामना करने के प्रयासों की चर्चा की गई है।

इस खंड की चार इकाइयाँ आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग, उसका एच आई वी/एड्स संचारण में संबंध तथा भारत एवं विश्व के अन्य भागों में विद्यमान समस्या की व्यापकता का एक विचार प्रदान करती है।

इकाई 1 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स में संबंध

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के अध्ययन का महत्व

1.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के बीच संबंध

1.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग का इतिहास

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

यह इकाई आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा एच आई वी - एड्स के अध्ययन के महत्व को समझने में सहायता करेगी। इसका उद्देश्य मादक द्रव्य मुक्त जीवन तथा दूसरों को मादक द्रव्य मुक्त जीवन जीने में सहायता करते हुए स्वस्थ जीवन-शैली को विकसित करने में आपकी सहायता करना है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

- मादक द्रव्य के उपयोग और दुरुपयोग की पहचान कर सकेंगे;
- मादक द्रव्य दुरुपयोग किस प्रकार से एच.आई.वी. संक्रमण के अवसरों में वृद्धि करता है इसपर चर्चा कर सकेंगे;
- मादक द्रव्य का दुरुपयोग लोग क्यों करते हैं स्पष्ट कर सकेंगे; और
- मादक द्रव्य दुरुपयोग के इतिहास का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मानव इतिहास में अनेक महामारियाँ हुई हैं। महामारियाँ रोग होती हैं। इनकी भयंकरता इससे सिद्ध होती है कि ये रोग थोड़े से समय में तेज़ी से फैलते हैं, तथा जहाँ फैलते हैं उस क्षेत्र में हजारों लोग मौत के ग्रास बन जाते हैं। मध्य युग में काली मौत (Black death) नामक महामारी ने यूरोप की आधी जनसंख्या को समाप्त कर दिया था। इस इकाई में आपको एक और महामारी के विषय में बताया जाएगा जिसने हजारों लोगों की जान ले ली है तथा विश्व में लाखों लोगों के जीवन को संकट में डाला हुआ है। इस महामारी को द्रव्य दुरुपयोग कहते हैं जिसे प्रायः मादक द्रव्य व्यसन के नाम से जानते हैं।

संभव है आपका ऐसे व्यक्ति से प्रत्यक्ष अनुभव रहा हो जिसको शराब पीने या अन्य मादक द्रव्य लेने की लत हो। इस इकाई में स्पष्ट किया जाएगा कि द्रव्य दुरुपयोग

क्या है तथा इसके साथ उन कारणों का विश्लेषण किया जाएगा जिनके कारण लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग करते हैं। इस इकाई में द्रव्य दुरुपयोग के निहितार्थ, उनकी रोकथाम और उपचार के संबंध में चर्चा की जाएगी।

1.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के अध्ययन का महत्व

इस पृथ्वी पर सबसे अमूल्य वस्तु जो हमें मिली है, वह है हमारा जीवन। जीवन की गुणवत्ता के बहुत सारे मापदण्ड हैं। एक कहावत है कि "एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग होता है।" प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने दिमाग को स्वस्थ रखना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह तब ही होता है जब आप स्वास्थ्य की देखभाल करना सीखें। हम यह सब अपने घर से सीख सकते हैं, विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों से तथा समाज की अन्य संस्थाओं व अभिकरणों से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में अध्ययन की जाने वाली पुस्तकों से हम अपने आपको और समाज को स्वस्थ रखने के उपायों का अध्ययन करते हैं। हमें अनेक बार बताया जाता है कि शराब और अन्य नशीले द्रव्यों का प्रयोग और उनका सेवन जिस तरह हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है उसी तरह से संपूर्ण समाज के लिए भी खतरनाक है। वर्तमान में शराब, तथा अन्य नशीले द्रव्यों के प्रयोग से मानव जाति को भंयकर खतरा हो गया है क्योंकि मादक द्रव्य का नशा करना विश्व में व्यापक रूप से फैला है इसमें विशेषकर नव-युवा लोग शामिल हैं। आजकल छोटी आयु में ही शराब पीना एक फैशन बन गया है। शराब के अतिरिक्त बाज़ार में, बहुत सारे जानलेवा मादक द्रव्य मौजूद हैं जिनके पाँच या छः बार प्रयोग से कोई भी व्यक्ति जीवन भर व्यसनी बन सकता है। बाज़ार में उपलब्ध हेरोइन, कोकेन तथा अन्य मादक द्रव्य के सेवन से बहुत से युवाओं का जीवन बरबाद हो चुका है। इनमें से अधिकतर लोग लापरवाही के कारण व्यसन में फंसे हैं। हम मादक द्रव्य और शराब के विषय में जो जानकारी प्राप्त करते है वह मुख्य रूप से पत्र-पत्रिकाओं और मित्रों से प्राप्त करते हैं। यह सूचनाएँ अपूर्ण और गलत होती हैं। हमारा अपना जीवन तथा प्रायः अपने सगे-संबंधियों का जीवन भी सही और सम्पूर्ण सूचनाओं पर निर्भर करता है। इसलिए ये सूचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं जिन्हें हम अपनी पाठ्यसामग्री में दे रहे हैं। ये सामग्री आपके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आप पहले ही एच आई वी/एड्स के संबंध में अध्ययन कर चुके हैं। आप यह भी पढ़ चुके हैं कि एच आई वी/एड्स किस प्रकार से रक्त और शरीर के स्रावों के माध्यम से फैलती है। अनेक मादक द्रव्य व्यसनी सीरिंज के द्वारा अपने शरीर में मादक द्रव्य लेते हैं। ये लोग उसी सुई को बिना विसंक्रमित किए आपस में इस्तेमाल करते रहते हैं। इस से व्यसनी लोगों में एच आई वी/एड्स के वायरस प्रवेश कर जाते हैं। शराब और अन्य मादक द्रव्य के नशे में वे लोग एच आई वी/एड्स से संक्रमित स्त्री-पुरुषों के साथ सहवास या यौन संबंध स्थापित कर लेते हैं और रोग से संक्रमित हो जाते हैं। इस प्रकार एक असंक्रमित स्वस्थ व्यक्ति भी एक बार की क्रिया से ही एच आई वी/एड्स का रोगी बन सकता है। सही सूचना सही दिशा में प्रेरणा प्रदान करेगी। इस तरह ड्रग्स या मादक द्रव्यों के प्रयोग और एच आई वी/एड्स के बीच संबंध को जानना और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

1.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स के बीच संबंध

मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स दोनों घातक रोग एक दूसरे से बहुत ही निकट संबंध रखते हैं। इन दोनों का संबंध नीचे स्पष्ट दिया गया है:

- दोनों का वर्तमान में उदय हुआ है।
- दोनों मुख्य रूप से युवा लोगों को प्रभावित करते हैं।
- दोनों का स्थायी उपचार (इलाज) नहीं है।
- दोनों ही का सामाजिक प्रभाव से संबंध हैं तथा
- दोनों ही स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स को सामाजिक-स्वास्थ्य समस्या के रूप में माना जाता है जो पिछली 20वीं सदी के अंतिम तिमाही में प्रकट हुई है। यह सच है कि शराब का सेवन लोग अति प्राचीन काल से करते आ रहे हैं। परन्तु यह आज की तरह कभी भी सामाजिक-समस्या के रूप में उभर कर नहीं आई थी। जैसे कि हम पहले ही बता चुके हैं कि अन्य मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य हैं जो बहुत ही मादक और व्यसनकारी हैं, उनका उदय हाल ही में हुआ है। संचार के विकसित साधनों और यातायात की सुविधाओं की उपलब्धता के कारण मादक द्रव्य बहुत आसानी से मिल जाते हैं। विश्व के किसी भी हिस्से में उत्पन्न मादक द्रव्य किसी भी स्थान पर कुछ दिनों अथवा यहाँ तक कि कुछ ही घंटों में पहुँच सकते हैं। इसी तरह से एच आई वी का पता भी 1981 में लगा तो भी इन 20 वर्षों के थोड़े से समय में ही यह विश्व समस्या बन गई और अनेक देशों की जनसंख्या के लिए घातक खतरा बन गई हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं एच आई वी/एड्स के शिकार हुए लोगों में से सबसे अधिक युवा लोग ही हैं। युवा लोगों में किसी नई चीज को जानने की बहुत उत्सुकता होती है और नए प्रकार के व्यवहारों को अनुभव करने की गहरी ललक होती है। इसी कारण युगांडा (अफ्रीका) जैसे अनेक देशों के युवा लोग व्यापक रूप से इस घातक रोग की चपेट में आ गए। इसके साथ ही यह तथ्य भी सत्य है कि किसी खास तरह के व्यवहार से ही यह रोग तेजी फैलता है।

अभी तक मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं एच आई वी/एड्स के उपचार की खोज नहीं हुई है। इस रोग को नियन्त्रण करने के लिए कुछ उपचार अवश्य मौजूद हैं किन्तु वे स्थायी इलाज नहीं हैं। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसकी रोकथाम के लिए केवल शिक्षा तथा व्यवहार में सुधार करके ही व्यक्ति और समाज की सुरक्षा की जा सकती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं एच आई वी/एड्स दोनों ही सामाजिक समस्याएँ हैं। ये दोनों ही जिस तरह से एक व्यक्ति को प्रभावित करते हैं उसी तरह से पूरे समाज को भी प्रभावित करते है। ये समाज पर दीर्घकालीन व्यापक प्रभाव छोड़ते हैं। यह सब इस कारण भी है कि इन रोगों का इलाज बहुत ही महँगा है तथा इसका प्रभाव समाज की

उत्पादकता पर पड़ता है। बिना समुचित देखभाल और नियन्त्रण के ये पूरे समाज को काफी हद तक नष्ट कर सकते हैं।

व्यक्तिओं का स्वास्थ्य पूरे समाज के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग से सबसे अधिक युवा लोग अपने महत्वपूर्ण समय में ही शिकार होते हैं। एच आई वी/एड्स से प्रभावित व्यक्ति 10 से 15 वर्ष या थोड़ा अधिक की अवधि तक ही जीवित रह सकता है। ऐसे रोगी का अधिकतर समय स्वास्थ्य केन्द्रों (Health Care Centre) में ही व्यतीत होता है। ये दोनों रोग धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूप से व्यक्ति को मारते हैं।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा एच आई वी/एड्स एक दूसरे से किस प्रकार से संबंधित हैं?

.....

.....

.....

.....

मादक द्रव्य दुरुपयोग क्या है?

इस इकाई में पहले हम मादक द्रव्य एवं मादक द्रव्य दुरुपयोग शब्दों का प्रयोग एक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कर चुके हैं। इसी प्रकार दुरुपयोग और व्यसन को भी एक ही अर्थ में प्रस्तुत किया जा चुका है। हम इन शब्दों को बारी-बारी से स्पष्ट करेंगे।

मादक द्रव्य क्या है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organisation – WHO) के अनुसार मादक द्रव्य कोई भी द्रव्य या पदार्थ हो सकता है जो जीवित शरीर के अन्दर पहुँचने पर शरीर के सभी अवयवों के संतुलन या उसकी कार्यप्रणाली में परिवर्तन कर सकता है। मादक द्रव्य का चिकित्सीय या गैर-चिकित्सीय कार्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इस शब्द का रूढ़ अर्थ है कि मादक द्रव्य कोई भी द्रव्य या पदार्थ होता है जो प्रयोग करने वाले व्यक्ति की मानसिक क्रिया में बदलाव ला सकता है। ये ऐसे रसायन हैं जो कि प्रयोग करने वाले की केन्द्रीय स्नायु-तन्त्र व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। इन्हें मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य के नाम से भी जाना जाता है। ये कानूनी या गैर-क़ानूनी हो सकते हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की परिभाषा

माइकेल के अनुसार "मादक द्रव्यों का अनुचित प्रयोग करना अथवा बिना चिकित्सीय सलाह और चिकित्सीय कारण के बिना भी अत्यधिक मात्रा में मादक द्रव्यों का उपयोग गैर कानूनी होता है।"

पुनर्जागरण और औद्योगिक क्रान्ति के बाद विज्ञान के सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक प्रगति हुई। अफीम को चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। अंग्रेज चिकित्सक थॉमस सिडेंहम (1624-1689) तथा डॉ. थॉमस डॉवर अफीम को विकसित करने के लिए प्रबल समर्थक थे वे अनेक रोगों के इलाज के लिए इसे उपयुक्त मानते थे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मादक द्रव्य दुरुपयोग को सामयिक या अस्थायी नशे की स्थिति के रूप में परिभाषित किया है जो व्यक्ति को एवं समाज को हानि पहुँचाता है। यह किसी (प्राकृतिक या निर्मित) मादक द्रव्य को बार-बार लेने से होता है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. लगातार मादक द्रव्य के लेने के लिए गहन इच्छा और आवश्यकता अनुभव होना तथा उसको प्राप्त करने के लिए कोई भी साधन अपनाना।
2. खुराक की मात्रा को बढ़ाने की इच्छा रखना।
3. मादक द्रव्य के प्रभाव पर मानसिक (मनोवैज्ञानिक) तथा कभी-कभी शारीरिक रूप से निर्भर रहना।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मादक द्रव्य निर्भरता शब्द पर बल दिया है न कि मादक द्रव्य दुरुपयोग पर। तथ्य यह है कि एक व्यक्ति जो रसायन का प्रयोग करता है वह जीवन भर उस रसायन पर निर्भर हो जाता है तथा बाद में वह व्यक्ति उस मादक द्रव्य या रसायन का प्रयोग जीवित रहने के लिए करने लगता है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग क्या है?

.....

.....

.....

.....

महत्वपूर्ण शब्दावली

मादक द्रव्य दुरुपयोग पर किसी भी प्रकार की चर्चा करते समय हम बार-बार कुछ खास शब्दावली का प्रयोग करते हैं। इसलिए यह अच्छा रहेगा कि हम उस शब्दावली के अर्थों को जानें ताकि बिना किसी कठिनाई के उस शब्दावली को हम आसानी से समझ सकें।

1. **कोकेन** : यह मादक द्रव्य कोका पौधे से बनाई जाती है जिसे पीड़ानाशक दवाई के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।
2. **अत्यधिक इच्छा**: शारीरिक अथवा मनोवैज्ञानिक आवश्यकता जिसको नियंत्रित करना वश में नहीं होता।
3. **एच आई वी/एड्स** : यह रोग मानव प्रतिरक्षा की कमी करने वाले वायरस के कारण होता है।
4. **हेरोइन** : यह अत्यधिक व्यसनी पीड़ानाशक रसायन है जो अफीम पोस्त से तैयार होता है।
5. **नशीला या मादक** : नशे की लत पैदा करने वाला या आत्म-नियन्त्रण से परे।
6. **सामाजिक-चिकित्सा** : यह सामाजिक और चिकित्सा से संबद्ध होता है।
7. **जीवाणुविहीन बनना** : रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं से मुक्त करना।

8. **निर्भरता** : निर्भरता दो प्रकार की हो सकती है:

   (क) **शारीरिक निर्भरता** : जब कोई व्यक्ति कुछ समय के लिए किसी विशेष तरह के रसायन की आदत डाल लेता है अथवा उसका व्यसनी हो जाता है, उस व्यक्ति का शरीर सामान्य कार्य करने के लिए रसायन लेने की आवश्यकता महसूस करता है। कुछ समय के बाद उस व्यक्ति का शरीर उस खास रसायन के प्रयोग किए बिना सामान्य कार्य करने में असमर्थ हो जाता है।

   (ख) **मनोवैज्ञानिक निर्भरता** : यह एक दिमागी स्थिति होती है। जब एक व्यक्ति कुछ समय तक किसी रसायन का प्रयोग कर लेता है तो उस रसायन लेने के लिए सुखाभाव महसूस करने लगता है और सुख की इच्छा उसके दिमाग में बैठ जाती है। यद्यपि वह व्यक्ति उस रसायन के बिना भी अपने शारीरिक जीवन को आसानी से संभाल सकता है परन्तु उसका दिमाग उस रसायन के लिए लालायित होता है। गांजा इसी तरह का मादक द्रव्य है जो मानसिक लालसा पैदा करता है जबकि उसकी शारीरिक निर्भरता नहीं होती।

9. **सहनीय मात्रा (सहने की क्षमता)**: यह एक लम्बे समय तक किसी रसायन का प्रयोग करने की लत का प्रभाव होता है। जब कोई मादक द्रव्य कुछ समय के लिए प्रयोग किया जाता है तो शरीर व दिमाग मादक द्रव्य के प्रभाव को अपने में समाहित कर लेता है। तब उसी तरह के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए अधिक और अधिक मात्रा लेने की आवश्यकता पड़ती है। इसका स्पष्टीकरण केवल सामान्य जीवन जीने वाला व्यक्ति ही दे सकता है। उदाहरण के लिए यदि आज हम अपने सिरदर्द के लिए एक गोली का प्रयोग करते हैं तो इसके बाद हो सकता है उस व्यक्ति को सिरदर्द ठीक करने के लिए दो या दो से अधिक गोलियाँ देने की आवश्यकता पड़े।

10. **प्रत्याहार (छोड़ना)** : कोई व्यक्ति लम्बे समय तक किसी रसायन का प्रयोग करता तो वह इसके प्रभावों का आदी हो जाता है। जब व्यक्ति अचानक उस विशेष रसायन का प्रयोग बन्द कर देता है तो उसका शरीर और मस्तिष्क उस खास रसायन के अभाव में प्रतिक्रिया करने लगते हैं।

11. **निर्विषीकरण** : शारीरिक रूप से निर्भर रहने वाले मादक द्रव्य व्यसनी द्वारा धीरे-धीरे अपनी लत छोड़ने को निर्विषीकरण कहते हैं। यह प्रायः निर्भरता वाली उस विशेष मादक द्रव्य की मात्रा कम करते हुए या फिर उसके विपरीत प्रभाव वाली मादक द्रव्य का प्रयोग करके किया जाता है। निर्विषीकरण अन्य किसी मादक द्रव्य की सहायता के बिना भी संभव हो सकता है यदि व्यक्ति छोड़ने के संलक्षणों को सहन करने के लिए तैयार हो तो कुछ मामलों में एक्यूपंचर पद्धति भी निर्विषीकरण के लिए लाभदायक सिद्ध हुई है।

1.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग का इतिहास

मादक द्रव्य दुरुपयोग उतना ही पुराना है जितना कि मानव का इतिहास। प्राचीन काल के लगभग सभी धार्मिक ग्रन्थों में मानव मस्तिष्क में परिवर्तन लाने के लिए मादक द्रव्यों के प्रयोग का ज़िक्र किया गया है। धार्मिक महाकाव्यों में इन रसायनों का उल्लेख देवताओं के भोजन या उनके पेय के रूप में हुआ है।

धर्मनिरपेक्ष महाकाव्य जैसे कि इलियाद तथा ओडेसी ग्रन्थों में इस प्रकार के पौधे के बारे में बताया गया है जिनके प्रयोग करने से जीवन की चिन्ताएँ/तनाव से मुक्ति मिल जाती हैं। यूनान के सैनिक जब युद्ध के लिए निकलते थे तो वे अफीम द्वारा तैयार कोई पदार्थ तथा अन्य प्रकार के मादक द्रव्य का इस्तेमाल करते थे ताकि वे

कुछ संवेदनाएँ भूल जाएँ। यूनानी देवता बैकयुस (Bacchus) तथा रोमन देवी सेरस (Ceres) को शराब और मद्य का संरक्षक माना जाता है।

अफीम का इतिहास

प्राचीन सुमेरियाई शहरों के कुछ हिस्सों की खुदाई करते समय चिकनी मिट्टी की तख्तियाँ मिली है जो ईसा पूर्व 5000 वर्ष पुरानी हैं। इन तख्तियों से पता लगा है कि वहाँ पर पोस्त की खेती होती थी और वे अफीम तैयार करते थे। उस समय पोस्त के पौधों को वे लोग अजोय पौधे के नाम से जानते थे। असेरियाई जिसने सुमेरियाई लोगों को अपने अधीन बनाया लगता है कि वे अफीम को औषधि के रूप में प्रयोग करते थे। हमारे पास जानकारी का कोई ऐसा स्रोत नहीं है कि उस समय अफीम का व्यापक रूप से दुरुपयोग किया जाता था या नहीं।

मिश्र के लोग भी अफीम का प्रयोग करते थे। वे लोग कुछ रोगों के इलाज़ और पीड़ानाशक के रूप में इसका प्रयोग करते थे। यह भी संभव था कि वे अफीम को शराब में मिलाकर प्रयोग करते थे। रोमवासी अफीम को दवाइयों और उपशमकों के रूप में प्रयोग करते थे। रोमवासी देशद्रोहियों को क्रूसीरोपण (शरीर में कीलें ठोंकना) के द्वारा दण्ड देते थे। जब वे पीड़ित व्यक्ति पर दया करना चाहते तो उस समय वे अपराधी को शराब में अफीम मिलाकर देते थे ताकि उसे अधिक पीड़ा का अनुभव न हो।

यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटिक जिन्हें औषधि विज्ञान के पिता के रूप में जाना जाता है संभव है उन्हें पोस्त के रस के प्रभावों का पता हो, वे एक पदार्थ तैयार करते थे जिसे वे मेकॉन (Mecon) के नाम से पुकारते थे। इसका उल्लेख पेचिश रोकने व बेहोशी करने के प्रयोग के रूप में मिलता है। गालेन रोम का एक प्रसिद्ध चिकित्सक था जिसने अफीम के प्रयोग को बढ़ावा दिया। रोम तथा रोमन शासित प्रदेशों में अफीम को प्रसिद्ध करने में वह प्रमुख साधन था। इसके परिणामस्वरूप रोम का सम्राट भी अफीम खाने की लत में पड़ गया था। ईसवी सन् की दूसरी सदी के उत्तरार्ध में अफीम रोम के बाज़ारों में आम बिकती थी।

अरब के चिकित्सक अफीम का व्यापक प्रयोग करते थे उनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध अविसेन्न (Avicenna – 980–1037 ई.) थे। वे स्वयं भी शायद अफीम की अधिक मात्रा का प्रयोग करने से मरे थे। कहा जाता है कि इसी समय में अरब के व्यापारियों ने पूर्व को अफीम से परिचित कराया था। कहा जाता है कि अरब के व्यापारियों ने अफीम को चीन तथा पूर्व के अन्य देशों में पहुँचाया था। बारबोसा नामक पुर्तगाली यात्री ने लिखा है कि अफीम की उत्पत्ति भारत में हुई थी। 1546 ई. में फ्रांस के प्राकृतिक विज्ञानी बारवासा ने एशिया माईनर और मिश्र की यात्रा की तथा उसने देखा कि तुर्क लोग अफीम के अत्यधिक व्यसनी थे तथा वे किसी भी कीमत पर अफीम को खरीदने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

शराब का इतिहास

प्राचीन काल से ही मानव जाति शराब बनाने, उसका खमीरा तैयार करने, आदि कला से परिचित थी। शराब का प्रयोग व्यापकता से किया जाता था क्योंकि यह वैदिक काल से ही उत्सवों, समारोहों यहाँ तक कि बलि देने जैसे धार्मिक कार्यों में भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती थी। इस युग में गांजा के पौधे से तैयार बेहोशी या अचेत करने वाली दवाइयों का प्रयोग भी किया जाता था। जहाँ तक शराब से प्राचीन लोगों की जानकारी का संबंध है इस पर चर्चा करते हुए साइमांड्स ने अपनी पुस्तक *"अल्कोहल, इट्स प्रॉड्क्शन, प्रोपर्टीज़ एंड एपलीकेशंस"* में कहा है कि इसमें तनिक भी शंका नहीं है कि भारत में शराब बनाने की कला 800 ई.पू. में ही ज्ञात थी। जहाँ तक श्रीलंका का सवाल है उसके विषय में समयावधि ज्ञात नहीं है। (डॉ. जॉन चुंकपुरा अल्कोहोज्लिम, साइको सोशिल वेरीएबल्स, 1988)।

यद्यपि शराब में अफीम की तरह अनेक चिकित्सीय विशेषताएँ होती हैं। परन्तु इसके दुरुपयोग की संभावना को लोग प्राचीनकाल से ही जानते थे। तभी से समाज और धर्म दोनों ही इसके खतरों को कम करने का प्रयास करते रहे हैं। इस संदर्भ में *दि कोड ऑफ हम्मुराबी* (1700 ई. पू.) बनाया गया जिसमें बेबीलोन के भोजनालयों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। रोम के सम्राट ने अंगूर की खेती को हतोत्साहित कर शराब पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया। लोगों को अंगूर के खेतों को समाप्त कर अन्य उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

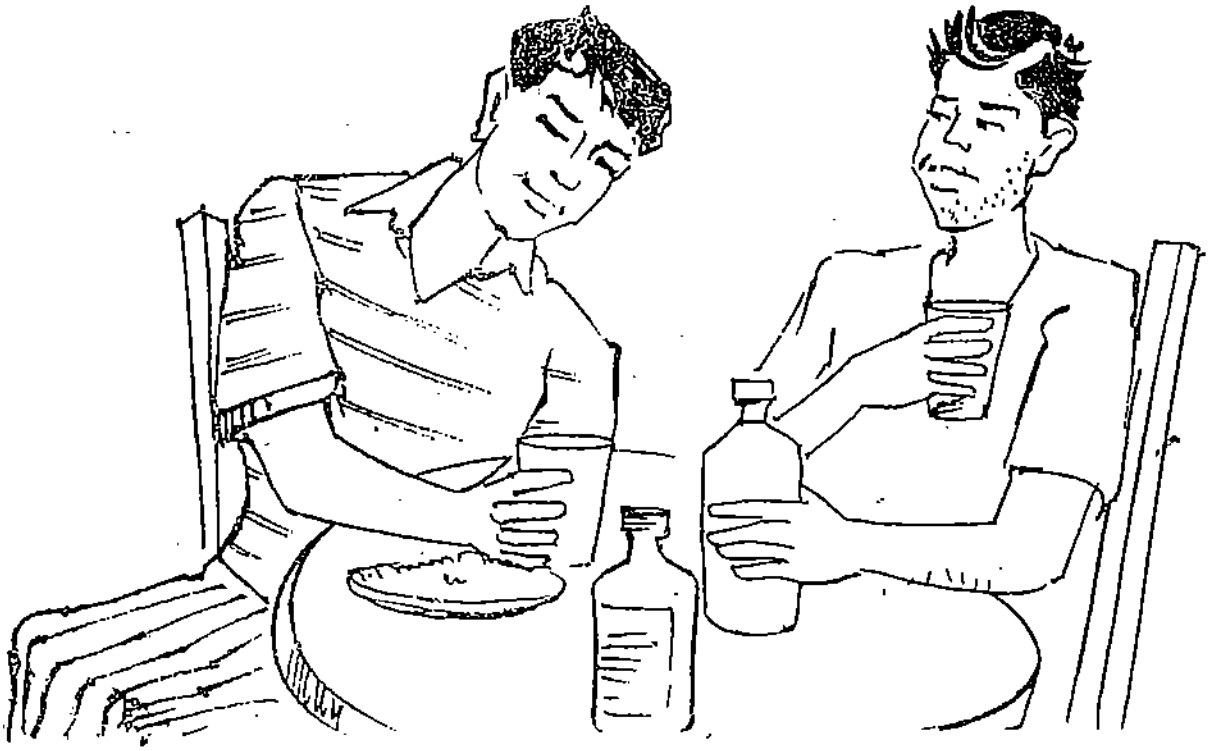

मध्य काल में, कुछ यूरोपीय देशों में बहुत ही अधिक नशा करने वाले लोगों को उनके नथुनों में रस्सी डालकर शहर से बाहर निकाला जाता था। धर्म ने शराब के इस्तेमाल में कमी की तथा किसी हद तक संपूर्ण परहेज को लागू किया। परन्तु यह देखा गया है कि इसमें कानून की अपेक्षा धार्मिक पाबन्दी अधिक सफल रही।

औद्योगिक क्रान्ति से पहले मद्यपान से इस तरह की समस्याएँ और चुनौतियाँ खड़ी नहीं हुई थी जिस तरह से आज हमारे सामने हैं। जब से शराब निर्माण की नई पद्धतियाँ विकसित हुई हैं जिनमें अधिक नशे वाले द्रव्य होते हैं तबसे इस समस्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। इसके अलावा शराब पीने को प्रोत्साहन देने के लिए बहुत ही आकर्षक विज्ञापनों और प्रचार अभियानों का भी योगदान है।

मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य का इतिहास

प्रथम विश्व युद्ध के बाद मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य के दुरुपयोग का मामला बहुत ही चिन्ताजनक बन गया हैं। हेनरिथ ड्रेजर के द्वारा युद्ध के दौरान 1898 में हेरोइन अफीम के मिश्रण से कृत्रिम रूप से तैयार की जाती थी।

जख्मी सिपाहियों के इलाज़ के लिए हेरोइन का प्रयोग किया जाता था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान बहुत सारे जख्मी सिपाहियों का हेरोइन से उपचार किया गया था और बाद में उनमें से बहुत से सैनिक हेरोइन के आदी हो गए थे। पिछले तीन दशकों से गैर-क़ानूनी मादक द्रव्य के दुरुपयोग की दर में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और इसका दुरुपयोग विश्व के सभी देशों में होने लगा है। कोई भी राष्ट्र मादक द्रव्य दुरुपयोग की

समस्या को कम नहीं कर पाया है। दूसरी ओर विश्व समुदाय इस समस्या पर अपनी गहरी चिन्ता जता रहा है। 1960 के दशक के मध्य और इसके बाद एल. एस. डी. जैसे भयंकर मादक द्रव्य के प्रयोग के बारे में भी सुना गया। 1970 तक आकलन किया गया है कि पूरे विश्व में लगभग 20 लाख व्यक्ति एल. एस. डी. का दुरुपयोग कर रहे थे।

1960 वें दशक की अंतिम अवधि में कोकेन और हेरोइन काफी प्रसिद्ध हो गई थी। रॉक म्यूजिक और हिप्पी संस्कृति ने ड्रग संस्कृति में वृद्धि की और उसके प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया। 1970 वें दशक के अंतिम दिनों में विश्व में अनेक आंतकवादी समूहों का उदय हुआ। आंतकवाद, हथियारों का व्यापार, तथा ड्रग्स के व्यापार का गठजोड़ हो गया। ड्रग्स का व्यापार गोल्डन ट्रायंगल में और दक्षिण अमरीकी प्रदेशों में कोकेन का व्यापार अनेक आतंकवादियों के हाथ में आ गया था।

मादक द्रव्य दुरुपयोग स्वास्थ्य संबंधी मुद्दा है

आज हमें समाज को शिक्षित करने की आवश्यकता है जिसमें विशेषकर युवा वर्ग को बताना है कि वे समाज में बढ़ रही मादक द्रव्य दुरुपयोग की प्रवृत्ति का किस प्रकार सामना करें। यह तब ही संभव हो सकता है जब राजनीतिक नेता, विधि निर्माता और समाज मादक द्रव्य की विभिन्न समस्याओं की व्यापकताओं की पहचान करें तथा स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं को भरपूर सहयोग देने के लिए मिल कर कार्य करें।

मादक द्रव्य दुरुपयोग एक महामारी की तरह है, जिसने विश्व के प्रत्येक कोने को अपने कब्ज़े में कर लिया है। नए मादक द्रव्य तथा इसका तंत्र पुराने मादक द्रव्य दुरुपयोग से भी अधिक भयानक है। इसलिए समाज एक साथ मादक द्रव्य दुरुपयोग के रोकथाम की आवश्यकता के बारे में संगठित और जागरूक हो। इसके साथ ही स्वास्थ्य संबंधी नीतियों का निर्माण करते समय सरकार की स्वास्थ्य नीतियों में मादक द्रव्य मुद्दों को भी शामिल किया जाना चाहिए। समीक्षा करते समय मादक द्रव्य नीतियों को भी स्वास्थ्य नीतियों के साथ संबद्ध करना चाहिए।

मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में लोक अवधारणा

> "राज्य अपने लोगों के पोषण और जीवन स्तर में विकास करेगा तथा अपने प्राथमिक कर्तव्यों में लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करेगा और विशेषकर राज्य नशीले पेय पदार्थों तथा मादक द्रव्यों को जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, केवल उपचार के लिए प्रयोग को छोड़ कर, उनके उपभोग पर क़ानूनी पाबंदियाँ लगाने का प्रयास करेगा।" (भारत का संविधान - अनुच्छेद 47)

महात्मा गांधी ने कहा है कि: "यदि मैं भारत का एक घंटे के लिए तानाशाह नियुक्त हो जाऊँ तो मेरा सबसे पहला काम यह होगा कि मैं देश की सभी शराब की दुकानों को बिना किसी क्षतिपूर्ति के एकदम बंद कर दूंगा और सभी टोडा पत्तियों को नष्ट कर दूंगा।" (*दि हरिजन*: 1935)। जिस तरह हम समस्या के मार्ग को देखेंगे उसी तरह इसके समाधान का मार्ग भी प्राप्त होगा शराब की लोक धारणा द्वैधवृत्ति बन चुकी है। भारत में नशाबन्दी के प्रभावी क्रियान्वयन में आर्थिक तथा राजनीतिक दबाव एवं बाध्यता आड़े आ रही हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की चुनौती एक गंभीर समस्या है। इसके साथ ही लोगों में जानकारी का अभाव भी समान रूप से गम्भीर है। आज भारत के पास मादक द्रव्य संबंधित अपराधों को रोकने, अपराधियों को दंडित करने के लिए सशक्त कानून है और नशे के व्यसनियों के इलाज़ के लिए अधिक उपचार केन्द्र मौजूद हैं। वास्तव में जनता की और सरकार की ओर से अभी तक सामूहिक प्रयास आरम्भ नहीं हुए हैं। इस स्थिति के लिए कुछ निम्नांकित कारण दर्शाए गए हैं।

मतभेद

इस स्थिति की उपेक्षा का सबसे बड़ा कारण है आपसी मतभेद। लोग एकमत नहीं हैं। सामान्य लोगों में मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में कुछ गलत धारणाएँ बनी हुई हैं। कुछ लोग इसे पश्चिमी देशों की समस्या के रूप में देखते हैं तो दूसरे लोग अमीरों की समस्या मानते हैं। कोई भी समस्या को इस तरीके से नहीं देखता जो राष्ट्र तथा इसकी कार्य निष्पादन प्रणाली को प्रभावित कर रही है।

असहाय की भावना

आज भी नशे की लत को अपराध और नैतिक कमजोरी की दृष्टि से देखा जाता है। इसलिए व्यक्ति, माता-पिता तथा अन्य रिश्तेदार इसे छुपाए रखते हैं। इसके लिए परिवार के सदस्य इसे शर्म और अपराध मानते हैं जो उन्हें समय पर सहायता और समाधान प्राप्त करने के लिए रोकते हैं। इसके अतिरिक्त इलाज किए गए व्यसनी के पुनः व्यसन में पड़ने की दर ऊँची होने के कारण व्यसनी और इससे संबंधित लोग सहायता प्राप्त करने में असमर्थ हो जाते हैं।

दोषारोपण

लोग व्यसन के विस्तार का दोष पश्चिमी जीवन-शैली को देते हैं। यद्यपि इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है किन्तु ऐसा करने से समस्या का हल तो नहीं होता है। आज यह संभव नहीं है कि कोई अलग-थलग रहे। पश्चिमी सभ्यता के लाभ लोगों को तब तक प्राप्त नहीं हो सकते जब तक उनकी जीवन-शैली को कुछ हद तक न अपनाया जाए अर्थात् पश्चिमी प्रगति का लाभ उठाने में जीवन-शैली का कुछ प्रभाव पड़ना स्वभाविक है।

समाधान क्या है?

इस स्थिति से निपटने के लिए एक मार्ग यह है कि सामान्य ज्ञान का दृष्टिकोण अपनाया जाए। इस संबंध में लोगों को उचित रूप से शिक्षित करने पर उदासीनता, असहायपन तथा दोषारोपण की भावना में कमी आएगी। यह प्रशिक्षण प्रक्रिया विद्यालय स्तर से आरम्भ होनी चाहिए। अभिभावकों को बच्चों के मादक द्रव्यों की लत में पड़ने की संभावनाओं के संबंध में जानकारी प्रदान करने से असहायता की भावना में कमी आएगी। विद्यालयों की तरह मादक द्रव्य दुरुपयोग कार्यस्थलों पर भी एक गंभीर समस्या है। इसलिए कर्मचारियों और नियोक्ताओं को मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसके परिणामों के बारे में समुचित जानकारी होनी चाहिए। सरकार को इस समस्या की गंभीरता के लिए व्यापक सर्वेक्षण करना चाहिए जिसमें संभावित असुरक्षित क्षेत्रों को दर्शाया जाए। सरकार को चाहिए कि वह मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम और इसके इलाज़ के लिए अन्य एजेंसियों को भी सहायता के लिए प्रोत्साहित करे।

मोहकता (आकर्षण) को हटाना

मादक द्रव्य दुरुपयोग समाज में प्रचलित कुछ घटकों के कारण मानव जाति गंभीर जोखिम में फंस गई है। मादक द्रव्य दुरुपयोग पर नियन्त्रण करने के लिए यह महत्वपूर्ण होगा कि हमें अपने विश्वासों, आदतों तथा सामाजिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन करना पड़ेगा जो मादक द्रव्य तथा शराब को प्रसन्नतादायक, आकर्षक, मोहक और विशिष्ट बनाते हैं। समाज को सक्रियता से उन विशेष प्रचारों की समीक्षा करनी होगी जो आजकल मादक द्रव्यों को विशिष्ट बनाते हैं। हमें इस स्थिति को शिक्षा के द्वारा सही वर्णन एवं वास्तविक अनुभवों को प्रचार कर बदलना होगा। आमतौर पर पत्र-पत्रिकाओं में तम्बाकू और शराब से संबंधित विज्ञापनों को इतने आकर्षक ढंग से दिखाया जाता है कि इनके प्रयोग से सुकून प्राप्त होता है और थकान मिट जाती है। आज सब लोग उस मुद्रित लाइन के विषय में जानते हैं जिसमें कहा जाता है कि "रिलेक्स, हैव ए चारमीनार" चार मीनार (सिगरेट) का धूम्रपान करें और थकावट मिटाए, या इसी तरह के अन्य वाक्य।

"डाइरेक्टर्स स्पेशल" में वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि धूम्रपान करना ही थकान को दूर करने का एकमात्र साधन है और किसी निगम या संस्था में तरक्की प्राप्त करनी है तो शराब का सेवन करें इत्यादि। यदि समाज मादक द्रव्य दुरुपयोग और शराब सेवन को अल्प बुद्धि और मूर्खता के रूप में देखने लगे तो रोकथाम के कार्य और अधिक सफल होंगे।

धीरे-धीरे समाज एक स्थिति में पहुँचने की आशा कर सकता है जहाँ व्यसनी भी यह महसूस करें कि वे भटके हुए थे और उन्होंने जीवन का वास्तविक आनन्द नहीं उठाया।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. नैतिकता से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

1.5 सारांश

इस इकाई के अनेक भागों का अध्ययन करने के बाद आप मादक द्रव्य दुरुपयोग समस्या से परिचित हो गए हैं और इसके अध्ययन के विभिन्न पक्षों के महत्व को समझ गए हैं। पहले भाग में अध्ययन के महत्व के संबंध में विस्तृत विवरण दिए गए हैं। दूसरे भाग में मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स जैसी दो भयंकर महामारियों के संबंध के बारे में बताया गया है। अगले भाग में मादक द्रव्य दुरुपयोग का वर्णन है तथा इस अध्ययन के महत्वपूर्ण पक्षों से परिचित कराने में सहायता प्रदान करता है। अंतिम भाग में मादक द्रव्य दुरुपयोग के इतिहास के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई है। सारांश वाले भाग में लोगों की मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में अवधारणा और व्यवहार का वर्णन किया गया है। इस इकाई का सम्पूर्ण अध्ययन करने के बाद आप अनेक अपरिचित विषयों पर आत्मविश्वास के साथ खुल कर चर्चा कर सकते हैं।

1.6 शब्दावली

कोकेन	:	पीड़ानाशक मादक द्रव्य है जो कोकाकोवा कोक पौधे की पत्तियों से बनती है।
अत्यधिक इच्छा	:	अपनी इच्छा के नियंत्रण से बाहर शारीरिक और मानसिक आवश्यकता अनुभव करना।
एच आई वी/एड्स	:	एक रोग मानव प्रतिरक्षा की कमी करने वाले वायरस के कारण होता है।

हेरोइन	:	यह बहुत ही तेज व्यसनकारी पीड़ानाशक मादक द्रव्य होती है जो अफीम पोस्त से तैयार होती है।
उन्माद होना	:	स्वयं के नियन्त्रण से बाहर की स्थिति पैदा करने में समर्थ।
सामाजिक-चिकित्सा	:	सामाजिक और चिकित्सा क्षेत्रों से संबंधित।
जीवाणुरहित	:	जीवाणुओं को नष्ट करना जो रोगों को पैदा करते हैं।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. यूनाइटेड नेशनस डिपार्टमेंट आफ पब्लिक इनफोर्मेशन, (1992), *ड्रग एब्यूज*, जिनेवा।
2. यू. एन. डी. सी. पी. रीजनल आफिस फार साउथ एशिया (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट*, नई दिल्ली।
3. नेमीसराम मित्तल, (1991) *ड्रग माफियाज*, पुस्तक महल, नई दिल्ली।
4. ईरा मोदनर एंड अलॉन विटेजेक्स, *हाउ टू गेट ऑफ ड्रग्स*, पैंगुईन बुक।
5. अनिल अग्रवाल, (1995) *नारकोटिक ड्रग्स*, नेशलन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?

1. हम कुछ विषयों का अध्ययन करते हैं जो हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, वहीं पर हम अन्य विषयों का अध्ययन करते हैं जो हमारी जीविका उपार्जन में महत्व रखते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स दो महामारियाँ हैं। ये हमारे समाज में व्याप्त हैं। ये किसी को भी नष्ट कर सकती हैं। इसलिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हमें इनकी समुचित जानकारी होनी चाहिए ताकि व्यक्ति स्वयं तथा उसके संबंधी एवं मित्र इससे बच सकें और वे निरोग रह कर आनन्द से जीवन व्यतीत करें।

   मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा एच आई वी/एड्स के बारे में न केवल अज्ञानता है अपितु समाज में अनेक गलत अवधारणाएँ भी व्याप्त हैं। इन दोनों मुद्दों की समुचित जानकारी सभी नागरिकों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

बोध प्रश्न 2

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा एच आई वी/एड्स एक दूसरे से किस प्रकार से संबंधित हैं?

1. ये दोनों रोग अनेक प्रकार से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों समस्याएँ सामाजिक और चिकित्सा संबंधी हैं। दूसरे, दोनों व्यक्ति की व्यवहार संबंधी समस्याएँ हैं। तीसरे, दोनों ही रोग मुख्य रूप से युवाओं को प्रभावित करते हैं। चौथा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

बोध प्रश्न 3

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग क्या है?

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मादक द्रव्य की लत को सामयिक या सतत् नशे की स्थिति के रूप में परिभाषित किया है। जो मादक द्रव्य (प्राकृतिक या कृत्रिम) का बार-बार उपभोग करने से उत्पन्न होता है। यह व्यक्ति और समाज दोनों को क्षति पहुँचाती है।

बोध प्रश्न 4

1. नैतिकता से आप क्या समझते हैं?

1. व्यसन के व्यापक प्रसार के लिए पश्चिमी जीवन-शैली पर आरोप लगाया जाता है। यद्यपि इसमें कुछ सच्चाई है परन्तु दोषारोपण से समस्या का हल नहीं होता। आज कोई भी अकेला नहीं रह सकता। पश्चिमी सभ्यता का लाभ उठाने के लिए उसकी कुछ बुराइयों का आना स्वभाविक है।

इकाई 2 सामान्यतः प्रयोग वाले मादक द्रव्य और लक्ष्य समूह

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों करते हैं?

2.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित सिद्धान्त

2.4 मादक द्रव्य के प्रकार

2.5 मादक द्रव्य तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित गलत धारणाएँ

2.6 सारांश

2.7 शब्दावली

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आपको उन मादक द्रव्य के बारे में विस्तार से बताया जाएगा जिनका प्रायः लोग दुरुपयोग करते हैं। लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों करते हैं, इससे संबंधित सभी कारणों को आपके समक्ष रखा जाएगा। इस इकाई का उद्देश्य आपको विभिन्न प्रकार के बहुत ही नशीले मादक द्रव्य से संबंधित समुचित जानकारी प्रदान करना है। इसमें आपको यह भी बताया जाएगा कि इनका हमारे मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के स्पष्टीकरण से मादक द्रव्य और उसके दुरुपयोग के बारे में जो गलत विचार और धारणाएँ बनी हैं, उनको दूर करने में आपको सहायता मिलेगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- लोगों द्वारा दुरुपयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य के प्रकारों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले विभिन्न नशीले द्रव्यों और उनके कार्यों को समझ सकेंगे;
- लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग क्यों करते हैं यह जान सकेंगे;
- व्यसन एक रोग है इसको समझ सकेंगे; और
- मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले संभावित समूहों में विभेद कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही मानव अनेक मादक द्रव्य जैसे कि भाँग और शराब का दुरुपयोग करता आ रहा है। आज विज्ञान की प्रगति के कारण ऐसे शक्तिशाली मादक द्रव्य निर्मित होने लगे हैं जो शराब से 100 गुणा अधिक हमारे मस्तिष्क को प्रभावित कर सकते हैं। ये मादक द्रव्य केवल मानव मस्तिष्क के कार्यों को प्रभावित ही नहीं करते

अपितु अत्यधिक व्यसनकारी भी हैं। बहुत सारे युवा इन रसायनों की वास्तविक प्रकृति से अनभिज्ञ हैं। ज्ञान में शक्ति होती है। यह पाठ आपको इन रसायनों के संबंध में समुचित जानकारी देता है। इससे आप सही निर्णय लेने में समर्थ होंगे और इन सूचनाओं को अन्य लोगों तक पहुँचाने में समर्थ होंगे। मादक द्रव्य खतरनाक नहीं होते हैं। केवल मादक द्रव्य का दुरुपयोग खतरनाक होता है।

2.2 लोग मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों करते हैं?

लोग अनेक प्रकार के होते हैं। इसलिए वे विभिन्न कारणों से मादक द्रव्य का प्रयोग अथवा दुरुपयोग करते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग के वास्तविक कारणों की पहचान करना बहुत कठिन है। कारण कुछ भी हो सकते हैं किन्तु यह तो सच है कि मादक द्रव्य का दुरुपयोग वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से हानिकारक है। एक व्यसनी लगातार मादक द्रव्य का दुरुपयोग करता है जबकि वह जानता है कि जिस मादक द्रव्य का वह दुरुपयोग कर रहा है वह उसे समाप्त कर देगी। फिर भी वह इस व्यसन को छोड़ने में असमर्थ रहता है।

लोग मादक द्रव्य का दुरुपयोग क्यों करते हैं इसका साधारण कारण है कि यह उनको आनन्द की अनुभूति कराता है। दूसरे शब्दों में आनन्द प्राप्त करने के लिए मादक द्रव्य का दुरुपयोग किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति खुश रहना चाहता है। यह खुशी उसे मादक द्रव्य अति शीघ्र प्रदान कर सकता है और थोड़े समय के लिए संभवतः वह अपनी सभी चिन्ताओं और दुखों को भूलने में समर्थ हो जाता है। मादक द्रव्य लेने के बाद लोग अपनी चिन्ताओं को भूल जाते हैं और प्रसन्नता महसूस करते हैं। इसलिए लोग लगातार उनका सेवन करते हैं जबकि वे जानते हैं कि मादक द्रव्य उन्हें प्रत्यक्ष रूप से हानि पहुँचा रहा है। इसके अतिरिक्त भी अनेक कारणों से लोग द्रव्य दुरुपयोग करते हैं। इस संबंध में कुछ तथ्य नीचे दिए जा रहे हैं:

समकक्ष दबाव: प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह युवा हो या वृद्ध, दूसरे लोग विशेषतः उनके मित्र उसके बारे में क्या सोचते हैं इससे वह बहुत प्रभावित होता है। हमारी सोच और कार्यों पर प्रभाव **समकक्ष दबाव** (Peer Pressure) कहलाता है। इस संबंध में यह देखा गया कि किशोर अधिक चिंतित रहते हैं कि उनके मित्र क्या सोचते हैं। यह सब इसलिए होता है कि वे विश्व की वास्तविक सच्चाइयों के बारे में बहुत कम जानते हैं किन्तु वे सोचते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं। इस स्थिति में युवा आसानी से सही और गलत में अन्तर नहीं कर सकते।

मादक द्रव्य की तरह समकक्ष दबाव कार्य के अनुसार सही भी हो सकता है और गलत भी। यदि मित्र अच्छे हैं तो निश्चित रूप से व्यक्ति पर प्रभाव अच्छा ही होगा। दुर्भाग्यवश इसी तरह का समकक्ष दबाव किसी एक समूह में व्यवहार संहिता के रूप में स्वीकृत है तो किसी को भी गलत मार्ग पर जाने के लिए प्रभावित करता है। मादक द्रव्य सेवन करने वालों का आत्म विश्लेषण बहुत कम होता है इसलिए अपने व्यवहार में समकक्ष साथियों की स्वीकृति को बहुत महत्व देते हैं। इसलिए वे स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अन्य लोगों को अपने समूह में शामिल होने और वैसा ही व्यवहार बनाने के लिए राजी कर लेते हैं।

जिज्ञासा (कौतूहल): जिज्ञासा होना एक सहज वृत्ति होती है। यह हमें चीजों को देखने और समझने में सहायता करती हैं जिन्हें हम नहीं जानते। यह जिज्ञासा वृद्धों और युवाओं दोनों को प्रभावित करती है लेकिन युवा अधिक प्रभावित होते हैं। वे देखते और सुनते हैं कि मादक द्रव्य क्या करता है। इसके बाद वे इसका स्वयं अनुभव करना चाहते हैं। पहली बार सेवन के प्रभाव से व्यक्ति बहुत प्रभावित होता है और वह लगातार मादक द्रव्य का इस्तेमाल करने लगता है। जितनी कम आयु में वह एक बार मादक द्रव्य का स्वाद चख लेता है तो उतनी ही जल्दी बार-बार इसका अनुभव करने की संभावना होती है।

अनभिज्ञता: लोगों में मादक द्रव्य तथा इसके प्रभावों के बारे में आमतौर पर गलत सूचनाएँ प्रचुर मात्रा में होती है। सरकार, वैज्ञानिक, विशेषज्ञ और अन्य लोग सही सूचनाओं को संचारित में करने आंशिक रूप से ही सफल हुए हैं। मादक द्रव्य का प्रयोग सम्पूर्ण विश्व में हो रहा है, झूठी कल्पनाओं में वृद्धि हुई है, तथ्यों को विकृत किया गया है और विषय को हास्यास्पद बना दिया है। व्यक्ति पहली बार मादक द्रव्य का सेवन हानि की संभावना न होने के विश्वास के साथ प्रयोग के तौर पर करता है। यदि मादक द्रव्य व्यक्ति की इच्छानुसार प्रभाव देता है तो वह स्वास्थ्य संबंधी खतरों की जानकारी के अभाव में निरंतर प्रयोग करने लगता है। जब उसको हानि के बारे में पूरी तरह से पता लग जाता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। ऐसी हालत में वह व्यसनी बंद करना चाहे तो भी नहीं कर सकता और न ही क्षति को पूरा कर सकता है।

एकाकीपन (Alienation): एकाकीपन व्यक्ति का एक ऐसा अनुभव है जिसमें वह मानता है कि जिस समाज में रहता है और जहाँ काम करता है उससे वह अलग-थलग कर दिया गया है। वह सोचता है कि किसी समूह का हिस्सा नहीं है। मानवता की एक आवश्यकता है वह परिवार, जाति समुदाय अथवा किसी देश से जुड़ा हो। व्यक्ति जब इनमें से किसी समूह से जुड़ा न हो तो वह अपने को अकेला मानने लगता है और किसी समूह से संबद्ध होना चाहता है। इसी तरह अकेला महसूस करने वाले समान इच्छा के लोग एकत्रित हो जाते हैं और एक नया समूह निर्मित कर लेते हैं और अपने तनाव से बचने के लिए मादक द्रव्य का सेवन करने लगते हैं। वे महसूस करने लगते हैं कि उनको एक अच्छा वातावरण मिल गया है जहाँ पर मादक द्रव्य सेवन करने वालों का स्वागत होता है। जिसका परिणाम व्यक्ति और समाज दोनों के लिए भयानक हो सकता है।

बदलती सामाजिक संरचना: समाज में लगातार परिवर्तन होता रहता है। कभी-कभी यह परिवर्तन इतना तेज़ी से होता है कि सब लोग इसके साथ सामंजस्य करने में असमर्थ रहते हैं। कभी-कभी बुरे परिवर्तन होते हैं जब एक समाज अपने समूह को या उसके सदस्यों को परिवर्तन में सहायता और सहयोग प्रदान करता है तो उनमें से कुछ लोग परिवर्तन के साथ तालमेल में पिछड़ जाते हैं और वे मादक द्रव्य की दुनिया में आश्रय एवं सहायता प्राप्त करने लगते हैं। यह घटना इसलिए होती है कि वे लोग इस परिवर्तन को समझने में असमर्थ रहते हैं और परिवर्तन की नई परिस्थितियों की आवश्यकताओं को पूरी नहीं कर पाते। इन्हीं कारणों में से एक कारण यह है कि गाँवों से शहरों में आने वाले युवकों के कारण व्यसनकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। वे लोग अचानक ग्रामीण जीवन-शैली से शहरी जीवन में प्रवेश के प्रभाव से मादक द्रव्य दुरुपयोग का आश्रय लेते हैं।

शहरीकरण और बेरोज़गारी: हमारे देश में विश्व के अनेक हिस्सों की तरह ही बहुत सारे लोग रोज़गार की तलाश में गाँवों से शहरों में जाते हैं। प्रायः इन लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वे लोग बिलकुल अलग तरह के वातावरण से आते हैं जहाँ वे स्थिति की वास्तविकता को समझने और उसमें समायोजित होने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। वे पहली बार अपने परिवारों से अलग होते हैं। शहरों का जीवन भिन्न प्रकार की परम्पराओं और मूल्यों का होता है जिसे ग्रामीण लोग स्वीकार करने में असमर्थ होते हैं। शहरों में उनके परिवार और मित्र न होने के कारण उन्हें किसी तरह की सहायता नहीं मिलती है जिससे वे अपने को एकाकी और अलग-थलग मान बैठते हैं। यह एकाकीपन उन्हें हताश और तनाव की स्थिति में धकेल देता है।

गाँवों से शहरों की तरह आने वाले लोगों का सामन्यतया शैक्षिक स्तर बहुत निम्न होगा। इस हालत में वे बेरोज़गार रहेंगे। अधिकतर प्रवासी लोगों की परम्परागत सहायता समाप्त हो जाती है और वे एकाकीपन तथा हताशा होने का समाधान मादक द्रव्य को मान बैठते हैं और वे लोग मादक द्रव्य की दुनिया में प्रवेश कर लेते हैं।

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या एक ही कारण है? संक्षेप में स्पष्ट करें।

.....

.....

2.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित सिद्धान्त

मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या अत्यन्त जटिल है। वैज्ञानिक, चिकित्सक और समाज शास्त्री इस समस्या को विभिन्न कोणों से समझने का प्रयास कर रहे हैं। इन लोगों ने अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। इनमें से कुछ लोगों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि लोग मादक द्रव्य लेना आरम्भ क्यों करते हैं तो अन्य लोगों ने इस सिद्धान्त की समीक्षा की है कि लोग मादक द्रव्य को क्यों लगातार प्रयोग करते रहते हैं। कुछ सिद्धान्त इन दोनों पक्षों की समीक्षा करते हैं।

जैविक सिद्धान्त

(क) **वंशानुगत सिद्धान्तः** इस सिद्धान्त में कहा गया है कि मद्यपान करना एक वंशानुगत रोग होता है। यदि एक व्यक्ति मद्यपान करने का आदी है तो उसकी संतान भी मद्यपान की आदी हो सकती है। अनुसंधानकर्त्ता इसे स्पष्ट करने में असमर्थ रहे हैं कि यह क्यों होता है?

(ख) **अन्तःस्रावी सिद्धान्तः** कुछ वैज्ञानिक यह विश्वास करते हैं कि मद्यपान करना शारीरिक अन्तःस्रावी व्यवस्था की दुष्क्रिया के परिणामस्वरूप होता है। अन्तःस्रावी व्यवस्था में कुछ गड़बड़ होने के कारण कुछ लोग मद्यपान (शराब) को समुचित रूप से पचा नहीं पाते और इस कारण वे मद्यपान के आदी हो जाते हैं।

(ग) **एलर्जी से संबंधित सिद्धान्तः** कुछ लोगों में अज्ञात कारणों से शराब से एलर्जी होती है इसलिए यह रोग की अपेक्षा शराब की एलर्जिक प्रतिक्रिया है।

मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तः इस सिद्धान्त का आधार यह है कि व्यसनी/मद्यपान करने वाला व्यक्ति एक अलग तरह की विशेष मनोवैज्ञानिकता रखता है जो उसे मद्यपान करने वाला बनाती है।

(क) **मनोविश्लेषण सिद्धान्तः** यह सिद्धान्त कहता है कि किसी भी प्रकार का व्यसन व्यक्ति की दमित भावना, बचपन के आघात, अधूरी आवश्यकताएँ, यहाँ तक कि स्वयं को दण्डित करने की प्रक्रिया का परिणाम होता है। व्यसन का स्रोत अचेतन मस्तिष्क में होता है, इसलिए किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह स्वयं इस समस्या का समाधान निकाल ले।

(ख) **सीखने का सिद्धान्तः** इस सिद्धान्त का मानना है कि व्यसन एक सीखने की आदत है। व्यक्ति का मानना है कि अपने अनुभव से मादक द्रव्य के सेवन से समस्याएँ हल की जा सकती हैं। इसलिए जब व्यक्ति के समक्ष समस्याएँ पैदा होती है तो उनको सुलझाने के लिए मादक द्रव्य का सेवन करेगा। जब यह कार्य बार-बार किया जाए तो वे इसके आदी हो जाएँगे यानी व्यसनी बन जाएँगे।

(ग) **विशिष्ट व्यक्तित्व सिद्धान्तः** यह सिद्धान्त कहता है कि कुछ व्यक्तियों में पहले से ही ऐसे गुण होते हैं जिसके कारण वे मद्यपान के व्यसनी हो जाते हैं। इस तरह के लोग किसी भी तरह के दबाव और असफलता को सहन नहीं कर सकते।

वे अवास्तविक इच्छाएँ एवं खयाली दुनिया में रहते हैं इस तरह के लोग अपने जीवन में आसान तरीका या मार्ग खोजते हैं।

सामाजिक सिद्धान्तः व्यसनी लोग कभी भी अकेले मादक द्रव्य का प्रयोग नहीं करते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग एक सामाजिक क्रिया है। मादक द्रव्य का उपयोग या दुरुपयोग धार्मिक कारणों से भी किया जाता है। इसलिए यह मानना स्वाभाविक है कि मादक द्रव्य का दुरुपयोग सामाजिक-धार्मिक आचार-व्यवहार से प्रभावित है।

सांस्कृतिक सिद्धान्तः यह सिद्धान्त प्रत्यक्ष रूप से शराब के प्रयोग पर लागू होता है। एक व्यक्ति द्वारा शराब का प्रयोग करने के लिए तीन महत्वपूर्ण घटक माने गए हैं। वे हैं: शराब पीने के प्रति समाज का दृष्टिकोण, अन्य यह तनाव को कम करने का एक साधन माना जाता है और तीसरा कारण है कि समाज में संस्कृति के कारण तनाव। यदि सांस्कृतिक नियम कड़े हैं उस स्थिति में तनाव अधिक होगा और समाज के सदस्य इसे स्वीकार नहीं कर सकते हैं इसलिए यह संभव है कि इस तरह के समाज में मद्यपान के व्यसन में और वृद्धि हो जाए।

असामान्य (Devialt) व्यवहार सिद्धान्तः कई बार मद्यपान का व्यसन समाज, या अन्य सख्त संरचना के मौजूदा मानदण्डों के विरुद्ध विद्रोह के कारण होता है। यदि समाज व्यसन को असामान्य व्यवहार के रूप में निर्धारित करता है तो विद्रोहियों को यह व्यवहार मद्यपान करने के लिए उत्साहित करता है। जैसा कि आपने देखा है कि एक भी सिद्धान्त ऐसा नहीं है जो मद्यपान के जटिल तथ्यों को पूरी तरह स्पष्ट करता हो। अभी भी इस संबंध में अनुसंधान ज़ारी है जो मद्यपान के कारणों को और अधिक्र विस्तार से समझने में हमारी सहायता कर सके।

2.4 मादक द्रव्य के प्रकार

निम्नलिखित तालिका आपको सामान्यतः दुरुपयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य के नाम, उपयोग के तरीके, अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक प्रभाव, छोड़ने के संलक्षण और सहन करने की शक्ति का विकास करने की जानकारी प्रदान करेगी।

सं.	मादक द्रव्य का नाम	दुरुपयोग का मार्ग	अल्पकालिक प्रभाव	दीर्घकालिक प्रभाव	छोड़ने के संलक्षण	सहन करने का स्तर
1.	शराब	मुँह से	तंदरुस्ती की भावना, आवास अभाव, समायोजन की शक्तिक्षीण, निर्णय की शक्ति नष्ट	ज़िगर को हानि, मस्तिष्क को नुकसान, खंडित मनसिकता	चिंता, नींद न आना, सन्निपात	थोड़ी या बहुत कम
2.	स्रापक पीड़ानाशक अफीम, मार्फ़िया हेरोइन ब्राउन सूगर पेथेडीन	मुँह से, सुई द्वारा, धूम्रपान से	12 घंटे तक तंदरुस्त बने रहने की भावना, भूख न लगना, उन्नीदापन	मानसिक क्षति श्वास और अन्य स्वास्थ्य की हानि संबंधित समस्याएँ	उल्टी दस्त लगना, सर्दी जुकाम, शरीर में ऐंठन, मरोड़	बहुत उच्च
3.	उत्तेजक, कोकेन, एम्फीटेमाइन	मुँह से, सुई द्वारा,	सुख बोध, मानसिक और शारीरिक	अधिक चिंता, नाक का अल्सर,	अनिद्रा, बैचेनी, शरीर में	बहुत उच्च

		नाक द्वारा	सक्रियता में वृद्धि, उच्च रक्त चाप	मस्तिष्क को क्षति	ऐंठन अवसाद, भूख में वृद्धि	
4.	अवसादकारी शराब,* बारबीट्रेरेट्स डायजीपाम	मुँह से, सुई द्वारा	सुख बोध, चिंता से मुक्ति, नियंत्रण में कमी, मानसिक और शारीरिक समन्वय में कमी	ग्लानि, थकान, अस्पष्ट दृष्टि अनिद्रा, अवसाद माँग शक्ति में कमी	सन्निपात, कापना, अनिद्रा वैचेनी, दस्त उल्टियाँ	वहुत उच्च अति उच्च
5.	मतिभ्रम एन.एस., एल.एस.डी. मेस्कालाइन, फेनसाइक्लडाइन पेसी-लोसाइविन	मुँह से, सुई द्वारा	मन परिवर्तन उदासी, चेतना में ऊँची उड़ान, मतिभ्रम	अवसाद, मानसिक रोग, पूर्व दृश्य	केवल मानसिक प्रत्याहार, संलक्षण, शारीरिक प्रत्याहार लक्षण नहीं	निम्न
6.	देवकली, भाँग (cannabis) गांजा, चरस, हस आयल	धूम्रपान, सुई द्वारा	सुख बोध, दिल की तेज धड़कन, चेतना में वृद्धि, चेतना में सक्रियता	थकान, संभ्रान्ति, मनोवि-कृति	चिंता अनिद्रा	निम्न

* यद्यपि शराब उत्तेजक होती है किन्तु अधिक मात्रा में लेने से अवसादकारी होती है।

प्रभाव के अनुसार मादक द्रव्य का वर्गीकरण

केन्द्रीय स्नायुतंत्र प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर मादक द्रव्यों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है:

(क) **स्वापक पीड़ानाशक:** यह मादक द्रव्य पीड़ानाशक होती है और स्नायुतन्त्र को गतिहीन कर देती है। चिकित्सा के लिए अफ़ीम तथा अफीम से बने या कृत्रिम विकल्प देते हैं जो अफीम की तरह प्रभावी होते हैं।

(ख) **उत्तेजक:** ये वे मादक द्रव्य होते हैं जिनसे केन्द्रीय स्नायुतन्त्र प्रणाली में गति उत्पन्न होती है। इन्हें ओपर्स (Auppers) के नाम से भी जानते हैं।

(ग) **शमक (अवसादकारी):** ये वे मादक द्रव्य होते हैं जो केन्द्रीय स्नायुतन्त्र प्रणाली के कार्यों को धीमा करते हैं। वे शांत या निद्रा देने में सहायता करते हैं। इनमें से बहुत सारे मादक द्रव्य मानसिक रोगों के इलाज़ के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

(घ) **मतिभ्रमकारी:** ये वह मादक द्रव्य होता है जो नाटकीय ढंग से चिंतन, धारणाओं, मनोभावों और मानसिक प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इसका प्रयोग करने वाले लोग भय, भ्रम, शंका, चिंता और नियन्त्रण खो देते हैं।

उत्पत्ति के अनुसार वर्गीकरण

मादक द्रव्य की उत्पत्ति के अनुसार प्राकृतिक, अर्ध-कृत्रिम, कृत्रिम और बनावटी मादक द्रव्य में वर्गीकृत किया जा सकता है:

(क) **प्राकृतिक मादक द्रव्य :** ये प्राकृतिक मादक द्रव्य होते हैं जैसे कि अफीम, भांग, आदि। इन मादक द्रव्य के उत्पादन में किसी तरह की रासायनिक प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती।

(ख) **अर्ध कृत्रिम मादक द्रव्य :** ये मादक द्रव्य प्राकृतिक मादक द्रव्य में कुछ रसायनों की सहायता से प्रयोगशालाओं में तैयार किए जाते हैं। हेरोइन, शराब आदि इसी श्रेणी में आती हैं।

(ग) **कृत्रिम मादक द्रव्य :** ये मादक द्रव्य प्रयोगशाला में ग़ैर जैविक सामग्री से तैयार किए जाते हैं। ई.जी., मेथाडान, बारबीटेट्स आदि।

(घ) **डिजाइनर (बनावटी) मादक द्रव्य :** यहाँ पर इनके बारे में बताना बहुत आवश्यक है क्योंकि ये बहुत ही नशीले मादक द्रव्य होते हैं। ये मुख्य रूप से कृत्रिम मादक द्रव्य होते हैं तथा ग़ैर-क़ानूनी तरीके से निर्मित किए जाते हैं। ये बनावटी मादक द्रव्य किसी व्यक्ति की माँग पर तैयार किए जाते हैं जो किसी अवैध मादक द्रव्य को बनाना चाहता है। उनका अवैध व्यापार होता है और दण्डनीय अपराधिक संबंध होता है। ये मादक द्रव्य उन मादक द्रव्य में शामिल नहीं होते है जिनका प्रयोग और निर्माण ग़ैर-क़ानूनी होता है। मूल प्रक्रिया में अणु संख्या जैसे द्रव्य सम्मिलित कर दिए जाते हैं। ई.जी., ईक्स्टेसी, कृत्रिम हेरोइन आदि।

शराब

अल्कोहल अरबी शब्द अल-कुहुल से बना है जिसका अर्थ है अच्छी तरह विभाजित स्प्रिट या शराब के अनेक प्रकार होते हैं। इथाइल शराब का प्रायः सेवन होता है। अधिकतर अल्कोहल पेय जैसे कि व्हिस्की, जिन, रम, आदि 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक अल्कोहल होता है। देशी शराब में (स्थानीय कारखानों में बनी) अल्कोहल की मात्रा 65 प्रतिशत तक होती है।

मिथाइल शराब रसायन प्रक्रिया द्वारा लकड़ी से बनाई जाती है। इसका औद्योगिक कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। यह जहरीली होती है और हम इसके साक्षी हैं कि मिथाइल शराब पीकर असंख्य लोग बेमौत मरते हैं।

शराब कितनी तेज़ी से हमारे शरीर को प्रभावित करती है यह अनेक घटकों पर निर्भर करता है।

- पीने की गति
- प्रयोग करने वाले के शरीर का वजन
- पेट में मौजूद भोजन की मात्रा
- शराब में अल्कोहल की मात्रा, और
- शराब पीने का अनुभव

शराब की आदत

शराब की उपयुक्त परिभाषा कीलर और इफ्फरान ने दी है जिसे अधिकतर लो.ग स्वीकार करते हैं। वे कहते हैं शराब एक पुराना रोग है जो मानसिक, दैहिक, या मानसिक दैहिक होता है जिसकी अभिव्यक्ति मनुष्य के व्यवहार में विकार होने से प्रकट हो जाती है। शराब को लगातार पीना इसकी विशेषता है जो कि सामाजिक रीति-रिवाजों, आहार नियमों या समुदाय के सामाजिक अवसरों पर सेवन की मात्रा से भी इतनी अधिक हो जाती है कि इसका प्रभाव सीधा शराब पीने वालों के स्वास्थ्य, समाज तथा आर्थिक व्यवस्था पर भी पड़ता है।

एक व्यसनी और सामाजिक स्तर में शराब पीने वाले के मध्य एक अन्तर होता है। इस अन्तर को मार्टीमान ने इस प्रकार स्पष्ट किया है कि एक शराबी के कारण उसके जीवन क्षेत्र में एक या उससे अधिक समस्याएँ बनी रहती हैं। जबकि एक सामाजिक रूप से शराब पीने वाला अपने उस दायरे या सीमाओं में पीता है जिसे उसके सामाजिक समूह ने अनुमति दी हुई है। सामाजिक रूप से शराब पीने वाला व्यक्ति न तो अपने जीवन में और न ही समाज में किसी प्रकार की समस्या पैदा करता है।

शराब सेवन की स्थिति

आरम्भिक स्थिति

- **सहन शक्ति में वृद्धिः** वांछित प्रभाव पैदा करने के लिए व्यक्ति और अधिक शराब की माँग करने लगता है।
- **चेतना शून्य हो जानाः** कुछ समय के लिए पूरी तरह से याददाश्त को खो देता है जबकि शारीरिक और मानसिक क्रियाकलाप अन्य सामान्य रूप में करता रहता है।
- **शराब पीने में ध्यान मग्नताः** व्यक्ति हमेशा और अधिक पीने के बारे में सोचता है।
- शराब पीने से संबंधित किसी भी प्रकार की चर्चा करना नहीं चाहता।

मध्य स्थिति

- **नियन्त्रण खोनाः** व्यक्ति शराब की मात्रा, पीने का स्थान और पीने के समय के संबंध में अपना नियन्त्रण नहीं रख सकता।
- **शराब पीने को उचित सिद्ध करनाः** व्यक्ति शराब पीने के नए-नए बहाना बनाना और उसे तर्कसंगत बनाने का प्रयास करता है।
- **आक्रामक होनाः** शराबी यह मानने लगता है कि अन्य लोग उसके लिए समस्याएँ पैदा कर रहे हैं। इसलिए वह दूसरों को गाली देने लगता है और हाथापाई करने लगता है।
- **शान-शौकत का व्यवहार करनाः** अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने और अपनी गलतियाँ को छिपाने के लिए और ढींगे मारना लगता है तथा अपने मित्रों और परिवार पर बेहद खर्च करता है।
- **मदिरापान करने की संरचना में परिवर्तन करनाः** ऐसा करके वह दिखाना चाहता है कि वह शराब पर नियन्त्रण कर सकता है। व्यक्ति पीने के तरीकों, स्थान को बदल सकता है और कुछ समय के लिए मदिरापान बंद कर सकता है।
- **लगातार मदिरापान करनाः** रक्त में मदिरा स्तर को बनाए रखने के लिए लगातार शराब पीना ताकि शराब त्यागने के संलक्षण रोके जा सकें।

चिरकालिक स्थितिः कुछ दिनों के लिए लगातार भरपूर प्रयोग करके कुछ दिनों तक संयम रखने का प्रयास करेगा।

संभ्रान्तिः व्यक्ति प्रत्येक के लिए शंकालू बन जाता है। उसे भ्रान्ति हो जाती है। उसे लगता है कि कुछ लोग उसे मारने का षड़यन्त्र कर रहे हैं।

मादक द्रव्य में छल-कपटः मादक द्रव्यों का व्यापार गैर-क़ानूनी होता है। इसमें भयानक धोखा और छल-कपट हो सकता है जिसमें अत्यधिक ठगी और हत्या तक भी हो सकती है। इसमें अनपेक्षित या नशीला प्रभाव भी मिलाया जा सकता है जो बहुत घातक हो सकता है। इनमें से कुछ निम्नलिखित छल-कपट के व्यवहार हो सकते हैं:

(क) **अवमिश्रण (घटिया करना)**: यह मात्रा के बढ़ाने के लिए कुछ क्रियाशील रसायनों का मिश्रण कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप वजन में कमी हो जाती है। इस प्रक्रिया को कम (कट) करना कहते हैं। मिश्रण करते समय उसमें आटा, चीनी, चाक गिट्टी आदि मिलाई जाती हैं।

(ख) **अपमिश्रण**: मादक द्रव्य को कम करने के लिए उसमें कुछ सक्रिय वस्तुओं की मिलावट कर दी जाती है। हेरोइन में चूहे मारने वाला जहर मिलाया जा सकता है और कोकेन की मात्रा में वृद्धि के लिए बारबीट्रेट्स को मिश्रित कर देते हैं।

(ग) **वैकल्पिक**: यह स्पष्ट ठगी या धोखा होता है जब किसी मूल्यवान रसायन के नाम पर दूसरा रसायन बेचा जाता है। अर्थात् बनावटी हेरोईन को शुद्ध हेरोईन के नाम से बेच दिया जाता है।

लक्ष्य समूह

अनुसंधान से पता लगता है कि अभिभावक जितना समझते है बच्चों में उससे दस गुणा अधिक मादक द्रव्य लेने की लत है। इसके अतिरिक्त अनेक विद्यार्थी जानते हैं कि उनके मादक द्रव्य प्रयोग की मात्रा के बारे में उनके माता-पिता या अभिभावकों को पता नहीं चलेगा और वे विश्वास करने लगते हैं कि वे बिना किसी दण्ड के आसानी से मादक द्रव्य का सेवन कर सकते हैं। (यू. एस. शिक्षण विभाग)

यहाँ तक कि भारत में भी मादक द्रव्य विद्यालय परिसर तक पहुँच चुका है। एक दशक पहले पश्चिम में मादक द्रव्य सेवन एक समस्या थी। आज यह विकासशील देशों में फैल गई है जहाँ पर विश्व के 20 प्रतिशत मादक द्रव्य व्यसनी हैं। लगभग सभी महानगरों के विद्यालयों, कॉलेजों और शिक्षा संस्थानों में मादक द्रव्य के व्यसनी मौजूद हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार के लिए बदनाम हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग वाले अति संवेदनशील समूह निम्न प्रकार हैं:

अधिकतर मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले लोग छोटी उम्र, अर्थात् किशोरावस्था या इससे पहले ही मादक द्रव्य का सेवन करना आरम्भ कर देते हैं। अपने मित्रों का

प्रभाव इसमें निर्णायक सिद्ध होता है। मादक द्रव्य प्रयोग विद्यालय की समस्या है क्योंकि विद्यार्थी की शैक्षिक योग्यता को कम माना जाता है। इसके परिणामस्वरूप विद्यालयों से विद्यार्थी अपनी-शिक्षा को अधूरी छोड़कर चले जाते हैं जिसकी दर काफी ऊँची है।

मादक द्रव्य समस्या सम्पूर्ण विद्यालय को अस्तव्यस्त कर देती है। यह विद्यार्थियों के चरित्र को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त मादक द्रव्य विद्यालय में ग़ैर-क़ानूनी वातावरण बना देते हैं जैसे कि मादक द्रव्य का सेवन, मादक द्रव्य का अवैध व्यापार, चोरी, अपराध यहाँ तक कि वेश्यावृत्ति भी इसमें शामिल है।

1. **आवारा बच्चेः** भारत में आवारा बच्चों की बहुत बड़ी संख्या है। ये कूड़े-कचरे में से कबाड़ उठाना, जूतों की पालिस करना, छोटे कारखानों और दुकानों में काम करके अपना जीवनयापन करते हैं।

   बच्चों द्वारा सामान्यतः मादक द्रव्य प्रयोग किए जाने वाले हैं तम्बाकू, कच्ची शराब, ब्राउन सुगर, भाँग, गेसोलीन, ग्लू, पेंट, थिनर और मिट्टी का तेल (सूंघना)। इनमें से कुछ घातक मादक द्रव्य का सेवन करने लगते हैं और अन्तःशिरा मादक द्रव्य व्यसन की अंतिम सीमा पर पहुँच जाते हैं।

2. हाल में ही एक अध्ययन किया गया जिसमें साक्षात्कार में 75 प्रतिशत बच्चे नियमित रूप से शराब का सेवन करते हैं इनमें से 25 प्रतिशत प्रतिदिन शराब पीते हैं।

3. प्रौढ़ और गिरोह इन बच्चों से अनैतिक रूप से फेरी लगाने का काम करवाते हैं अर्थात् इनसे अनैतिक व्यापार करवाते हैं।

4. **क़ामगारः** व्यसन का अति संवेदनशील अन्य समूह है श्रमिक वर्ग। इसमें लम्बी दूरी पर चलने वाले ट्रक ड्राइवर, दैनिक दिहाड़ी मज़दूर, विशेषकर अप्रवासी श्रमिक जो अपने घरों से दूर रहते हैं, शामिल हैं। इस समूह पर मादक द्रव्य का प्रभाव हमारी कल्पना से परे है। इनकी यह लत कार्यक्षमता को कम करती है, उत्पादन को हानि होती है, यातायात दुर्घटनाएँ होती हैं और स्वास्थ्य देखभाल की लागत में वृद्धि होती है।

5. **खेल कार्मिकः** कुछ ऐसे रसायन हैं जो एथलीटों की गति या उनके खेल प्रदर्शन में सुधार ला सकते हैं। चीन तथा पूर्वी जर्मनी ने स्वीकार किया है कि वे खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करते समय इस तरह के रसायनों का प्रयोग करते थे। हो सकता है कि इस तरह के ड्रग्स लेने से खिलाड़ियों में इनकी आदत न पड़े। परन्तु व्यक्ति के स्वास्थ्य पर अवश्य ही बुरा प्रभाव पड़ता है। कुछ खिलाड़ी कोकेन जैसे उत्तेजक नशीले पदार्थ लेते हैं ताकि उनके खेल प्रदर्शन में सुधार हो।

6. **कलाकारः** सृजन तथा मनःस्थिति बदलने वाले ड्रग्स में विशेष रूप से संबंध है। संगीत, कला और कविता आदि सृजनात्मक क्षेत्र हैं। हाल के दिनों में कोलम्बिया केन्द्र में व्यसन तथा द्रव्य दुरुपयोग के लिए 12 से 17 वर्ष के बच्चों का अध्ययन किया गया। जिसमें 76 प्रतिशत बच्चों ने बताया है कि मनोरंजन उद्योग ग़ैर-क़ानूनी ड्रग दुरुपयोग को प्रोत्साहित करता है। ड्रग महामारी प्रसिद्ध संस्कृति विशेषकर रॉक संगीत के द्वारा अधिक तेजी से फैलती है। कुछ प्रसिद्ध रॉक संगीत सितारे ड्रग की मोहकता और चकाचौंध का प्रचार करते हैं।

7. कुछ प्रसिद्ध लेखक और कवि रसायनों से प्रभावित रहे हैं। वे अधिक सृजनात्मक लेखन कार्य के लिए अतः स्थिति परिवर्तनकारी नशीले पदार्थों का सेवन करते थे।

8. कुछ व्यक्ति जो एक ही काम रोज करते हैं वह नीरस और उबाऊ होता है। इस समूह में ड्राइवर, कानून को लागू करने वाले अधिकारी, रक्षा कार्मिक शामिल हैं। इनके कार्यों में शारीरिक दबाव, व तनाव अत्यधिक होता है ये लोग कार्य करने के लिए शराब का सेवन करने लगते हैं तथा कुछ मामलों में वे ड्रग्स पर निर्भर हो जाते हैं।

विभिन्न समूहों का अध्ययन करने के पश्चात् हमें पता चला कि लोग विभिन्न कारणों से मादक द्रव्य का सेवन करते हैं। यह स्पष्ट होता है कि ड्रग्स सेवन के पीछे कोई एक कारण नहीं है और न ही यह किसी वर्ग विशेष अथवा विशेष लोगों से संबंधित है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित कुछ सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 मादक द्रव्य तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित गलत धारणाएँ

मिथिकों या धारणाओं पर अत्यधिक विश्वास किया जाता है परन्तु वास्तव में ये गलत होते हैं। साधारण लोग मादक द्रव्य के विषय में कुछ समझ नहीं पाते और न ही उनके प्रभावों के जानते हैं। मादक द्रव्य से संबंधित गलत धारणाओं के कारण बहुत लोग मादक द्रव्य के व्यसनी बन जाते हैं। आइए इनमें से कुछ के बारे में चर्चा करें:

1. केवल कमज़ोर व्यक्ति ही मादक द्रव्य का व्यसनी बनता है। वास्तव में तथ्य इसके विपरीत हैं: व्यसनी बहुत कमज़ोर हो जाता है। कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्य का सेवन करना व्यसनी बनने के लिए नहीं करता। जैसे कि हमने देखा है कि लोग मादक द्रव्य विभिन्न कारणों से सेवन आरंभ करते हैं। आरंभिक स्थिति में भी उनकी इच्छा शक्ति बहुत शक्तिशाली होती है जबकि उनके पास मादक द्रव्य आने लगते हैं। मादक द्रव्य का सेवन करने वाला व्यक्ति अपनी आदत को बनाए रखने के लिए किसी भी प्रकार का ज़ोखिम उठा सकता है।

2. इसके अतिरिक्त इच्छा शक्ति प्रेरणा पर भी निर्भर करती है और प्रेरणा प्राथमिकता पर निर्भर करती है। किसी व्यसनी के लिए सबसे पहली प्राथमिकता है मादक द्रव्य प्राप्त करना क्योंकि यह उसकी सभी समस्याओं का समाधान कर देती है। अतः व्यसनी किसी भी अन्य वस्तु को छोड़कर सबसे पहले रसायन यानि कि मादक द्रव्य लेना पसन्द करेगा।

3. मादक द्रव्य मानसिक और शारीरिक शक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए वह मादक द्रव्य व्यक्ति की तर्क शक्ति में परिवर्तन कर देता है। मादक द्रव्य के प्रभाव में वह

ऐसा कार्य भी कर देगा जो उसके बिना नहीं कर सकता। दूसरा तथ्य यह है कि व्यक्ति जो शक्ति प्राप्त करता है वह केवल थोड़े समय के लिए ही होती है। मादक द्रव्य उसको थोड़े समय के लिए ही अवरोधों एवं भय पर नियंत्रण करा सकता है तथा वह स्वयं को एक साहसी व्यक्ति मानने लगता है।

4. मनोरंजन के लिए मादक द्रव्य का प्रयोग करना हानिकारक नहीं है। सभी ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य हानिकारक हैं। वे प्रयोगकर्त्ता में शारीरिक और मानसिक परिवर्तन लाते हैं। अधिक दिनों तक मादक द्रव्य का प्रयोग करने से व्यक्ति व्यसनी बन जाता है। इसके अतिरिक्त मादक द्रव्य मंहगे होते हैं। मादक द्रव्य व्यक्ति को शारीरिक रूप से अशक्त और आर्थिक दृष्टि से निर्धन बना देते हैं। यह व्यसन मादक द्रव्य के अवैध व्यापार को बढ़ावा भी देता है।

5. सभी लोग मादक द्रव्य का प्रयोग करते हैं। सच यह है कि इस तरह के तर्क वे ही देते हैं जो मादक द्रव्य के व्यसनी हैं और वे चाहते हैं कि लोग उनके व्यवहार को स्वीकार कर लें। यहाँ तक कि यदि यह मान भी लिया जाए कि बहुत सारे लोग मादक द्रव्य का सेवन करते हैं परन्तु यह भी सच है कि अत्यधिक लोग मादक द्रव्य का प्रयोग नहीं करते। समकक्ष साथियों के दबावों का सामना करना कठिन होता है। सही के समक्ष खड़ा होने और मादक द्रव्य व्यसन का प्रतिरोध करने के लिए और अधिक साहस और शक्ति की आवश्यकता होती है। प्रत्येक व्यक्ति मादक द्रव्य का सेवन नहीं करता।

6. मादक द्रव्य जीवन की असफलताओं, दुख भरी घटनाओं को भुलाने में सहायता करते हैं। सच यह है कि यह व्यसनी की उतने समय ही सहायता करता है जब तक उस रसायन का प्रभाव रहता है और यह प्रभाव एक घंटे से तीन घंटे तक की अवधि तक रहता है। यह थोड़े समय के लिए अपना प्रभाव छोड़ता है। यह उसी तरह है जैसे कि किसी जीवित व्यक्ति को कब्र में दफनाना और कहना कि कल प्रेतात्मा आएगी और आपको तंग करेगी!

7. मादक द्रव्य समकक्ष समूह स्तर को बनाए रखने में सहायता करते हैं। किन्तु सत्य यह है कि समान, समकक्ष का कोई स्तर होता ही नहीं। वे सभी लोग जो पीते हैं वे इसलिए पीते हैं क्योंकि वे पीना नहीं छोड़ सकते। वे इसे बन्द करना चाहते हैं किन्तु ऐसा नहीं कर सकते। समान समूह स्तर का सीधा संबंध अवास्तविकता और अस्वास्थ्यकर होता है।

8. मादक द्रव्य आपकी एकाग्रता में सुधार करता है। सत्य यह है कि यह उसी प्रकार है कि उधार लेकर त्योहार मनाना। मादक द्रव्य आपके मस्तिष्क की कार्यक्षमता में वृद्धि कर सकते हैं परन्तु यह भी सत्य है कि बाद में वे आपकी मस्तिष्क की शिराओं को नष्ट कर देते हैं।

इसलिए अब आवश्यकता इस बात की है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में प्रचलित सभी प्रकार की अवधारणाओं का उत्तर दिया जाए।

2.6 सारांश

इस इकाई का उद्देश्य है कि आप मादक द्रव्य दुरुपयोग के तथ्यों से अवगत हो जाएँ। अब आप इनके उपयोग और दुरुपयोग में अन्तर करने में समर्थ हो गए हैं। आप विभिन्न कारणों से लोगों द्वारा दुरुपयोग करने के संबंध में चर्चा कर सकते हैं। आप यह समझ गए हैं कि विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य होते हैं, उनमें क्या अन्तर है और किस प्रकार से हमारे शरीर के हिस्सों को वे प्रभावित करते हैं। यह भी जान गए हैं कि मादक द्रव्य विभिन्न प्रकार से तैयार किए जाते हैं। आपने यह भी जाना होगा कि

ड्रग्स के दुरुपयोग में कितने क़ानूनी पक्ष हैं। विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य को विभिन्न प्रकार के लोग इस्तेमाल करते हैं। हमने मादक द्रव्य के प्रभावों के बारे में गलत अवधारणाओं पर भी चर्चा की है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में फैली गलत मिथिकों, अवधारणाओं को भी समझा है। मादक द्रव्य का दुरुपयोग इसलिए होता है कि इसके संबंध में गलत धारणाएँ प्रचलित हैं कि इनका शरीर और मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

2.7 शब्दावली

मादकता (नशीलापन)	:	व्यसन और निर्भरता का कारण।
नीरसता (ऊबाऊ)	:	नीरसता की स्थिति, किसी भी लाभदायक कार्य में रुचि न होना।
भाँग	:	भाँग का पौधा, गांजा।
एथाइल अल्कोहल	:	एथाइल एक रंगहीन तरल पदार्थ होता है जो नशीला होता है और शराब और बीयर में एक नशीले पदार्थ के रूप में मिश्रित किया जाता है।
समकक्ष समूह का दबाव	:	समान आयु समूह, व्यवसाय और सिद्धान्त वाले व्यक्तियों का दूसरों पर उन्हीं की तरह व्यवहार करने का प्रभाव।
आत्म-प्रतिष्ठा होना	:	अपने बारे में ऊँचे विचार रखना।

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. टी. टी. रंगनाथन (1989), *अल्कोहोलिज्म एंड ड्रग डिपेंडेंस*, क्लिनिकल रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नाई।
2. यू. एन. डी. सी. पी. (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट*, दक्षिण एशिया का क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली।
3. इरा मोदनर एंड एलन विट्ज, *हाउ टू गेट ऑफ ड्रग्स*, पैंगुईन बुक्स, लंदन।
4. जॉन चंकपुरा, (1994), *ट्रिटमेंट मॉड्लस इन एडिक्शन*, टी. आर. ए. डी. ए., कोट्टायम।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या एक ही कारण है? संक्षेप में स्पष्ट करें।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए केवल एक कारण नहीं है। वैज्ञानिक अनुसंधानकर्त्ताओं ने मादक द्रव्य दुरुपयोग को स्पष्ट करते हुए विभिन्न उत्तर दिए हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग का सीधा संबंध व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामजिक वातावरण से जुड़ा है। व्यक्ति क्यों मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करता है, इसके कुछ कारण हैं और वह क्यों मादक द्रव्यों का दुरूपयोग जारी रखता है, इसके अन्य कारण हैं।

बोध प्रश्न 2

2. मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित कुछ सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित तीन सिद्धान्त हैं जिन्हें हम तीन समूहों में विभाजित करते हैं।

(i) **शारीरिक सिद्धान्तः** ये स्पष्ट करते हैं कि मादक द्रव्य दुरुपयोग एक शारीरिक समस्या है। एक व्यक्ति अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मादक द्रव्य का दुरुपयोग करता है। इसमें पोषण की कमी हो सकती है। अथवा शरीर के एलेर्जिक प्रतिक्रिया के कुछ प्रकारों का परिणाम है।

(ii) **मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तः** मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त मुख्य रूप से व्यसनी के व्यवहार पर प्रकाश डालता है। व्यसनी एक प्रकार का व्यक्तित्व होता है जो पहले से ही व्यसन के लिए तैयार होता है। यह पूर्व निर्धारण प्रायः मनुष्य के बचपन के अनुभवों का परिणाम होता है।

(iii) **सामाजिक सिद्धान्तः** किसी एक व्यक्ति का व्यवहार और आचरण उसके समाज से प्रभावित होता है जहाँ पर वह रहता है या उससे संबंध रखता है। यदि समाज मादक द्रव्य के प्रति अपना मोह या आकर्षण रखता है तो व्यक्ति भी आसानी से मादक द्रव्य का सेवन करने लगेगा। कोई भी समाज अपने स्थापित मानदण्डों से मादक द्रव्य दुरुपयोग को प्रोत्साहित अथवा निरुत्सर्गहित कर सकता है।

इकाई 3 भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार का विस्तार

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 सामाजिक समस्या के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग

3.3 मादक द्रव्य का अवैध व्यापार

3.4 अवैध मादक द्रव्य व्यापार से संबंधित तथ्य और आँकड़े

3.5 विभिन्न समूहों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

3.6 सारांश

3.7 शब्दावली

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई आपको इसमें विभिन्न समूहों जो मादक द्रव्य दुरुपयोग करते हैं उनसे परिचय कराने में सहायता करेगी। मादक द्रव्य दुरुपयोग विभिन्न वर्गों के लोगों को उनके जातीय समूहों, व्यवसाय, आयु, लिंग आदि के अनुसार प्रभावित करता है। इसकी चर्चा की गई है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- किस प्रकार से अनेक वर्ग तथा सामाजिक समूह मादक द्रव्य दुरुपयोग से प्रभावित होते हैं इसका अन्तर कर सकेंगे;
- मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के विस्तार तथा क्षेत्रों की पहचान सकेंगे; तथा
- मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के परिणामों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

यह हमारा अनुभव है कि एक महामारी क्षेत्र के सभी लोगों को समान रूप से प्रभावित नहीं करती है। उदाहरण के लिए मलेरिया और टी.बी. निर्धन वर्ग के लोगों को अधिक प्रभावित करते हैं। इसी तरह से हृदय रोग महिलाओं से अधिक पुरुषों को प्रभावित करता है। ऐसे ही मादक द्रव्य दुरुपयोग विभिन्न स्तरों में भारत के लोगों को प्रभावित करता है। हमने देखा है कि सबसे अधिक व्यसन युवाओं और शहरी लोगों में व्याप्त है। हमें यह भी पता लगा है कि कुछ जातीय समूह अन्य लोगों की तुलना में मादक द्रव्य दुरुपयोग के मामले अधिक सुभेद्य और असुरक्षित हैं।

इसी प्रकार मादक द्रव्य के अवैध व्यापार का प्रचलन भी कुछ क्षेत्रों में अधिक है जबकि दूसरे क्षेत्रों में कम है। इस विस्तार की भिन्नता के कारण भौगोलिक तथा राजनीतिक हैं। इस इकाई में मादक द्रव्य दुरुपयोग, मादक द्रव्य का अवैध व्यापार तथा

इससे संबंधित विभिन्न समूहों का विस्तार से वर्णन और उसका विश्लेषण किया जाएगा।

3.2 सामाजिक समस्या के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग

सामाजिक समस्या व्यवहार के उस स्वरूप के कारण होती है जो समाज को संकट में डालता है अथवा उन समूहों और संस्थाओं को जोखिम में डालता है जिनमें समाज का निर्माण हुआ है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि समाज में एक वर्ग के लोगों के व्यवहार व आचरण के कारण सामाजिक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। समाज में ऐसे लोगों का व्यवहार न स्वयं उनके लिए और न ही सम्पूर्ण समाज के लिए उपयोगी होता है। भूकम्प या बाढ़ सामाजिक समस्या नहीं है, परन्तु अपराध, निरक्षरता आदि सामाजिक समस्याएँ हैं। इन दोनों में यह अन्तर है कि एक समस्या स्वयं मनुष्य द्वारा बनाई गई है जबकि दूसरी समस्या एक प्राकृतिक विपत्ति है।

प्रत्येक समाज के अपने-अपने नियम और क़ानून बने होते हैं जिनसे वे हत्या, बलात्कार, डकैती, चोरी आदि के कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाते हैं। यह नियम क़ानून या मानदण्ड समाज के कार्यों को सुचारू रूप से पूरा करने और प्रगति करने में सहायक होते हैं। जब कुछ लोगों का समूह इन नियमों के विरुद्ध चलने लगता है तो समाज के अन्य सदस्यों के लिए शान्ति से रहना कठिन हो जाता है।

मानव इतिहास मादक द्रव्य दुरुपयोग का भी इतिहास रहा है। प्रारंम्भिक काल से जड़ी-बूटियाँ, जड़ें, छालें और पौधे पीड़ानाशक और रोगों के नियन्त्रण के लिए प्रयोग में लाते रहे हैं। इस प्रकार मादक द्रव्य के प्रयोग में कोई बुराई नहीं है। मादक द्रव्य का उचित उपयोग किया जाए तो चिकित्सा के लिए वरदान माना जाता है। पिछले दो दशकों के दौरान मादक द्रव्य का ग़ैर-क़ानूनी इस्तेमाल होने लगा है और इसका प्रसार खतरे की दर तक पहुँच गया है तथा विश्व के सभी हिस्सों में व्याप्त हो गया है।

मादक द्रव्य समस्या सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। "मादक द्रव्य दुरुपयोग को अधिक दिनों तक अपराधी रहित अपराध नहीं माना जा सकता। यह एक ऐसा अपराध है कि जो लोगों और विश्व के राष्ट्रों पर डगमगा देनेवाला भार है। यह एक ऐसा भार है जिसे कोई समाज नहीं झेल सकता। ड्रग्स का ग़ैर-क़ानूनी उत्पादन, वितरण और उपभोग एक भयानक मामला है तथा लोक सेवकों को भ्रष्ट बना रहा है, यहाँ तक कि इससे सरकारें भी अस्थिर हो जाती हैं। मादक द्रव्य धनराशि की अनियमितता, प्रवाह और अत्यधिक मात्रा में धन आपूर्ति और मुद्रा विनिमय बाजारों को प्रभावित करती हैं (यू. एन. रिपोर्ट, 1992)।"

मादक द्रव्य दुरुपयोग संपूर्ण विश्व समाज की समस्या है। यह किसी एक राष्ट्र या महाद्वीप तक सीमित नहीं है। यह एक सामाजिक समस्या है जो कि आतंकवाद, कालाधन, हथियारों का व्यापार और हत्याओं के स्रोतों को जन्म देती है। इसके अधिकांश शिकार मासूम नागरिक होते हैं।

मादक द्रव्य और हथियारों के व्यापार करने वाले समूह इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे लोकतान्त्रिक ढंग से चुनी गई सरकारों को गिराने में समर्थ होते हैं। इस तरह की घटनाएँ दक्षिणी-अमरीका, सिसली और अफ़गानिस्तान में हो चुकी हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. क्या मादक द्रव्य दुरुपयोग सामाजिक समस्या है?

.....

.....

.....

3.3 मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार

मादक द्रव्य का अवैध व्यापार ड्रग्स की ग़ैर-क़ानूनी बिक्री तथा परिवहन है जो देश के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में या एक देश से दूसरे में किया जाता है। "अन्तः संबंधित समूहों का व्यापक नेटवर्क होता है जो अवैध मादक द्रव्य उत्पादन, परिवहन का आधुनिक प्रौद्योगिकी के रूप में इस्तेमाल होता है जिससे अवैध मादक द्रव्यों का व्यापार किया जाता है। ये लोग हथियारों से लैस होते हैं जिनसे ये अपनी रक्षा करते हैं और डराते-धमकाते हैं। इसलिए ये लोग बहुत ही भयानक हो सकते हैं।"

इनकी पद्धतियाँ बहुत ही विशिष्ट और जटिल होती हैं जिसमें मादक द्रव्य की अनेक किस्में होती हैं जो सम्पूर्ण विश्व में अनेक प्रकार के स्रोत से प्राप्त होती हैं। "यह मादक द्रव्य का अवैध व्यापार केवल राष्ट्रीय मादक द्रव्य क़ानूनों तथा अन्तर्राष्ट्रीय परम्पराओं का ही उल्लंघन नहीं करते हैं बल्कि धोखाधड़ी, षड़यन्त्र, रिश्वत तथा लोक अधिकारियों को भ्रष्ट बनाना, कर बचाना, बैंक क़ानूनों का उल्लंघन करना, ग़ैर-क़ानूनी धन हस्तांतरण, आयात/निर्यात के क़ानूनों का उल्लंघन, अपराध उल्लंघन तथा आतंकवाद के साथ अनेक अपराधिक गतिविधियों में भी शामिल होते हैं।"

विश्व में मादक द्रव्य के अवैध व्यापार में वृद्धि क्यों हो रही है? इसके अनेक कारण हैं। पहला कारण है व्यापक मादक द्रव्य की माँग में वृद्धि हो रही है। दूसरा कारण है कुछ मादक द्रव्य प्राकृतिक पौधों से प्राप्त होते हैं जैसे कि अफीम, पोस्त और कोकाबुस आदि जबकि अर्ध-कृत्रिम मादक द्रव्य जैसे कि हेरोइन और कोकेन को रासायनिक कारखानों में तैयार किया जाता है। ये कारखाने विकसित देशों में उच्च प्रौद्योगिकी से सम्पन्न होते हैं।

तीसरा कारण यह है कि कुछ देशों में बहुत दक्ष नियन्त्रण व्यवस्था मौजूद है जबकि कुछ देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य उत्पादन और उसके अवैध व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं। अधिकतर मादक द्रव्य का अवैध व्यापार बहुत ही गुप्त रूप से होता है। मादक द्रव्य उद्योग अरबों-रुपयों का व्यापार है। एक अनुमान के अनुसार इस उद्योग का वार्षिक कारोबार लगभग 1600 बिलियन रुपयों का है।

मादक द्रव्य के ग़ैर-क़ानूनी व्यापार में वृद्धि हो रही है इसे ऐसे संगठित व्यक्तियों या समूहों द्वारा संचालित किया जाता है जिनका वित्त तथा संचालन पर नियन्त्रण होता है लेकिन वे मादक द्रव्य से कोई संबंध नहीं रखते। प्रायः मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के लिए जो एजेंट होते हैं वे व्यावसायिक अपराधी होते हैं। अपराधी इस क्षेत्र में लगातार संचालन करते रहते हैं क्योंकि इस व्यापार में आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

मादक द्रव्य का अवैध व्यापार करने वाले समूहों को प्रायः माफिया के नाम से जाना जाता है। इनके पास उत्पादन और वितरण का बहुत ही दक्ष नेटवर्क होता है। वे बाज़ार की और सबसे अधिक मांग के क्षेत्रों की पहचान करते हुए विशिष्ट भौगोलिक स्थान में "रुचि की मादक द्रव्य" का पता लगाते हैं, जबकि सम्पूर्ण विश्व में व्यापक मादक द्रव्य का प्रसार-प्रवाह को बनाए रखते हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार के बीच संबंध

माँग और आपूर्ति का साधारण नियम मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार के मामले में भी लागू होता है। एक व्यसनी के लिए मादक द्रव्य एक अत्यावश्यक वस्तु

बन जाती है। आवश्यक वस्तुओं के लिए माँग कम नहीं होती है। यदि आपूर्ति में कमी आती है तो माँग कम नहीं होती किन्तु मूल्य अधिक हो जाता है। जैसा कि हमने पूर्व अध्यायों में देखा है कि व्यसनी अपनी लालसा की पूर्ति के लिए मादक द्रव्य की मात्रा को अधिक से अधिक बढ़ाता रहता है। जब व्यसनी मादक द्रव्य के लिए खर्च करने में असमर्थ हो जाता है तो उसे अपने स्रोत खोजने पड़ते हैं और अंत में वह उस अवैध व्यापार में सम्मिलित हो जाता है। इस प्रकार वह व्यसनी होने के साथ-साथ अवैध व्यापार व्यवस्था में भी अपने संबंध स्थापित कर लेता है।

आपराधिक समूह मादक द्रव्य बेचने के लिए बच्चों का उपयोग करते हैं। क़ानून के अनुसार 12 वर्ष से कम आयु के बच्चे कोई भी अपराध करने पर दण्डित नहीं किए जा सकते। "ब्राजील में आवारा बच्चों का इस कार्य में अनुपात सबसे अधिक है। वे लोग मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के लिए वाहक का काम करते हैं और स्वयं भी मादक द्रव्य का प्रयोग करने लगते हैं। कुछ बच्चों से अड़ोस-पड़ोस में मादक द्रव्य वाहक का काम करवाया जाता है। ये हवाई जिम्बो, 'छोटे वायुयान' के नाम से जाने जाते हैं। उन्हें कुछ धन मिलता है जिससे वे अपने परिवार के भरण-पोषण में सहयोग देते हैं। छः या सात वर्ष की आयु के इन बच्चों के जीवन का मादक द्रव्य एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।"

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या तात्पर्य है?

3.4 अवैध मादक द्रव्य व्यापार से संबंधित तथ्य और आँकड़े

संयुक्त राष्ट्रसंघ मादक द्रव्य नियन्त्रण कार्यक्रम की वार्षिक रिपोर्ट, 1999 में मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वालों के तथ्य और उनकी विश्वव्यापी संख्या संबंधी आँकड़ों एवं मादक द्रव्यों के प्रकार निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं।

तालिका

मादक द्रव्यों के प्रकार	कुल व्यसनियों की आकलित संख्या (लाखों में)	विश्व जनसंख्या का प्रतिशत
स्खापक	8.0	0.14
कोकेन	13.3	0.23
भाँग	141.2	2.45
हालूसिनोजेंस	25.5	0.44
उपशामक प्रकार	30.2	0.52
कुल आकलित	227.4	3.92

स्रोतः यू. एन. डी. सी. पी (आर. ओ. एस. ए.), 1999.

इस तालिका से पता लगता है कि विश्व के 100 व्यक्तियों में से 4 व्यक्ति एक या अन्य प्रकार के मादक द्रव्य का प्रयोग करते हैं। हो सकता है कि यह सभी देशों में समान नहीं हो। किसी देश में यह प्रतिशत दूसरे देश से अधिक हो सकता है। भाँग सबसे अधिक दुरुपयोग किए जाने वाला मादक द्रव्य है इसके बाद उपशामक अधिक प्रयोग की जाती है।

भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रचलन

भारत में शराब, भाँग और अफीम तीन प्रकार के परम्परागत मादक द्रव्य का दुरुपयोग किया जाता है। इस संबंध में चारों क्षेत्रों में अध्ययन किए गए जिनके परिणाम नीचे दिखाए गए हैं:

तालिका

क्षेत्र	हेरोईन	अफीम	भाँग	शराब
दक्षिण भारत (5 शहर)	0.3%	2.6%	5.1%	-
उत्तर पूर्वी-राज्य	1.3%	0.3%	1.7%	19.8%
उत्तर पश्चिमी-राज्य	0.2%	0.5%	0.4%	17.2%
दिल्ली	0.3%	0.4%	0.4%	13.4%

यह सर्वेक्षण मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में किया गया है। इसलिए हो सकता है कि इसके परिणाम देश की वास्तविकता को नहीं दर्शाते हों। इस तालिका से यह तो स्पष्ट होता है कि उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में अफीम के अधिक व्यसनी है और उत्तर-पूर्व के क्षेत्रों में हेरोईन के अधिक व्यसनी पाए गए हैं। अफीम के सेवन करने वाले अधिकतर लोग कार्मिक वर्ग के हैं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में हेरोइन का अधिक प्रयोग होता है पर जो शहरों में रहते हैं उनमें सबसे अधिक सेवन करने वाले लोग युवा हैं। श्रमिक वर्ग और कार्मिक वर्ग भाँग का प्रयोग करता है किन्तु इनके प्रयोग के भिन्न-भिन्न कारण रहे हैं।

ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य का उत्पादन

विश्व में अफीम का उत्पादन 1996 में 3900 टन था। इसका 80 प्रतिशत भाग गोल्डन क्रिसेंट और सुनहरा ट्रायंगल में उत्पादित हुआ। अफीम के पौधे अफगानिस्तान म्यामार, उत्तरी लाओस तथा उत्तरी थाईलैण्ड आदि में उगाए जाते हैं।

विश्व की 90 प्रतिशत कोकेन का उत्पादन दक्षिण अमरीका के पेरु, कोलम्बिया और बोलबिया देशों में होता है। एक आकलन के अनुसार 1996 में कोकेन का उत्पादन 1000 टन के लगभग था।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार की सामाजिक कीमत

यद्यपि हम अगली इकाई में इस विषय पर विस्तार से चर्चा करेंगे किन्तु यहाँ पर कुछ बिन्दुओं को ध्यान में रखना लाभदायक होगा। मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण हमें अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यदि ऐसा न होता तो अधिक मादक द्रव्य या शराब लेने से बहुत लोगों की अकाल मौत न होती। मादक द्रव्य दुरुपयोग के कुप्रभाव नीचे दिए जा रहे हैं।

- स्वास्थ्य
- पारिवारिक संबंध
- सामाजिक संबंध

- अपराध
- दुर्घटनाएँ

मादक द्रव्य दुरुपयोग का सबसे पहला परिणाम है स्वास्थ्य का नष्ट होना। यह प्रभाव व्यक्तिगत ही नहीं होता अपितु इससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य व्यवस्था प्रभावित होती है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के व्यापक प्रसार से एच.आई.वी./एड्स जैसी बीमारियाँ फैल जाती हैं। इसका समाज में स्वास्थ्य व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य की देखभाल करना व्यक्ति की सबसे अधिक जिम्मेदारी होती है। मादक द्रव्य दुरुपयोग एक ऐसा मामला है जहाँ पर व्यक्ति स्वयं शिथिल हो जाता है और वह अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने में असमर्थ होता है।

परिवार समाज की मूलभूत इकाई है। मादक द्रव्य दुरुपयोग परिवार के संबंधों को नष्ट कर देता है। परिवार ही व्यक्ति के विकास के लिए भावनात्मक सहयोग देता है। बच्चों का पालन पोषण और विकास यदि ऐसे परिवार में हो जहाँ पर मादक द्रव्य दुरुपयोग होता है तो वह परिवार और समाज के योग्य नहीं रहते हैं। विघटित पारिवारिक संबंध समाज में सुचारु सामंजस्य संबंधों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

व्यसन व्यक्ति को समाज से अलग कर देता है। यह इसलिए होता है क्योंकि समाज इसको बुरी नज़र से देखता है अथवा इसको अच्छा नहीं मानता। व्यसनी अपनी आदतों को समाज के लोगों से छिपाने का प्रयास करता है क्योंकि ऐसा व्यक्ति भयभीत रहता है कि कहीं समाज उसे एक बुरे व्यक्ति के रूप में स्वीकार न कर ले। मादक द्रव्य व्यसन के साथ कलंक लगा होता है, इसलिए व्यसनी छिप कर रहता है और समाज से दूर रहने का अर्थ है अपराध की ओर कदम रखना।

व्यसनी को संगठित समूह अपने आपराधिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। व्यसन अनेक यातायात और औद्योगिक दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण अनेक कार्य दिवसों की हानि होती है।

3.5 विभिन्न समूहों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

यद्यपि मादक द्रव्य दुरुपयोग एक व्यापक समस्या है, लेकिन यह सभी समूहों को समान रूप से प्रभावित नहीं करती। इसका एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक आयु समूह से दूसरे आयु समूह तथा स्त्री-पुरुषों में अपना प्रभाव समान न होकर अलग-अलग होता है।

युवाओं और आवारा बच्चों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

1960 के दशक के मध्य से मादक द्रव्य दुरुपयोग विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में एक गंभीर मुद्दा बन गया था। 1963 में कलकत्ता से पहली अध्ययन रिपोर्ट आई। इसके अनुसार "विश्वविद्यालय के 1130 विद्यार्थियों में से 37.4 प्रतिशत में मादक द्रव्य दुरुपयोग पाया गया था। (तम्बाकू का 26 प्रतिशत तथा एम्फेटामाइन का 11.45 प्रतिशत)।"

बाद के अध्ययनों से पता लगता है कि पुरुष विद्यार्थियों में मादक द्रव्य दुरुपयोग अधिक है। कोई एक मादक द्रव्य नहीं थी जिसका दुरुपयोग विद्यार्थी करते हों, विद्यार्थी अनेक प्रकार की मादक द्रव्य का इस्तेमाल करते थे।

दूसरा अध्ययन 1975-78 के बीच हाई स्कूल (अंग्रेजी माध्यम) के बारे में हुआ। इससे पता चला कि 34 प्रतिशत विद्यार्थी मादक द्रव्य लेते हैं। इन मादक द्रव्य में शराब,

एम्फोटामाइन, भाँग, एल.एस.डी., स्वापक, अफीम, पेथीडीन और बारबीट्रेरेट्स आदि, शामिल थे।

भारत के सभी हिस्सों में 1970 से 1986 के बीच अनेक अध्ययन किए गए। इससे पता चला कि 10 से 15 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अपने जीवन में शराब का प्रयोग किया था। इसमें हाई स्कूल और कालेजों के विद्यार्थी शामिल थे। तम्बाकू का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 8 से 15 प्रतिशत थी। इन विद्यार्थियों में से 1 से 2.5 प्रतिशत ने ट्रांक्विलाइज़र का प्रयोग करने का प्रयास किया था।

भारत में 1986 से हेरोईन के व्यापक प्रयोग की सूचनाएँ प्राप्त हुई। भाँग के प्रयोग का प्रचार कॉलेज विद्यार्थियों में अधिक रहा, 5.4 प्रतिशत विद्यार्थियों ने साक्षात्कार के समय बताया कि कॉलेज के दिनों में उन्होंने भाँग पीने के प्रयास किए थे।

भारत में शायद आवारा बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। गरीबी के कारण बहुत सारे बच्चे काम की खोज़ में शहरों में चले जाते हैं। शहरों में ये बच्चे कबाड़ चुनने, जूते पालिश करने, होटलों में काम करने और छोटे उद्योगों में इन लोगों को जीवनयापन के साधन उपलब्ध हो जाते हैं। जब इनको अच्छे और ईमानदारी से काम नहीं मिलते हैं तो ये लोग छोटे-छोटे अपराधों में लिप्त हो जाते हैं जैसे कि जेब काटना, चोरी करना आदि।

ये बच्चे पियर दबाव के कारण मादक द्रव्य का सेवन करने लगते हैं। इनमें से बहुत सारे बच्चे बहुत की कठोर और नीरस कामों में लगे होते हैं। मादक द्रव्य उनको शारीरिक और मानसिक पीड़ा कम करने में सहायता करता है। वे तम्बाकू पीने लगते हैं (धूम्रपान) तथा ब्राउन शुगर तथा अन्य नशीले स्वापक पदार्थों से प्रभावित हो जाते हैं। 10 वर्ष की आयु में ही वे तम्बाकू और शराब पर निर्भर रहने लगते हैं। दिल्ली की मलीन बस्तियों के सर्वेक्षण से पता चलता है कि 75 प्रतिशत 16 वर्ष की आयु के लड़के नियमित रूप से शराब का सेवन करते हैं। इनमें लगभग 50 प्रतिशत को भाँग पीने का अनुभव है। इनमें से लगभग 10 प्रतिशत ने हेरोईन के सेवन की बात स्वीकार की है। हेरोईन लेने की संख्या का प्रतिशत कम होना इसके ऊँचे मूल्य के कारण है।

मादक द्रव्य का दुरुपयोग और महिलाएँ

विश्व में हुए अध्ययनों/अनुसंधानों से पता चलता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ मादक द्रव्य दुरुपयोग कम करती हैं। जैविकी कारणों से महिलाओं पर मादक द्रव्य का विपरीत प्रभाव होता है। "सामाजिक संदर्भ में देखा गया है कि समाज महिलाओं के मादक द्रव्य लेने को सहन नहीं करता और एशिया में इस तरह की सांस्कृतिक परम्परा खासतौर पर मौजूद है। यदि इस तरह की घटनाएँ होती भी हैं तो वे छुपी रहती हैं उनकी सूचना नहीं मिलती है। महिला ऐसा करती है तो उसे लोकलाज के कारण छिपा के रखा जाता है। मादक द्रव्य लेने वाली महिला दुगनी पथभ्रष्ट लगती है।"

गोवा तथा औद्योगिक नगरों से महिलाओं द्वारा मादक द्रव्य सेवन के संबंध में रिपोर्ट प्राप्त हुई है (सेन, 1991)। सूचना है कि भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में लगभग 7 प्रतिशत महिलाएँ मादक द्रव्य लेने की आदि हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में 22 प्रतिशत महिलाएँ मादक द्रव्य सेवन करती हैं (अग्रवाल, 1995)। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि पुरुषों से अधिक महिलाएँ स्वापक मादक द्रव्य का सेवन करती हैं।

पुरुषों की तुलना में महिलाओं में मादक द्रव्य दुरुपयोग के सामाजिक परिणाम अधिक भयानक होते हैं। महिलाओं के कन्धों पर अधिक भार होता हैं। बच्चों का पालन-पोषण एवं उनकी देखभाल की जिम्मेदारी होती है। यदि वह मादक द्रव्य का प्रयोग करने लगेगी तो अपनी जिम्मेदारी को भली प्रकार नहीं निभा सकती। वह फिर कुछ नहीं कर

सकती है। परिवार के दूसरे व्यक्ति उसे बंदिश में रखते हैं, उसे घर खर्च बहुत कम दिया जाता है तथा कभी-कभी उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है। अधिकतर उन्हें अपने आदतों को पूरा करने के लिए उधार लेना पड़ता है इससे घर की आय में अनियमितताएँ हो जाती हैं। कभी-कभी मादक द्रव्य का सेवन करने वाली कुछ महिलाएँ ड्रग्स के अवैध व्यापार से जुड़ जाती हैं वे मादक द्रव्य को बिक्री के लिए यहाँ से वहाँ ले जाती हैं और वेश्यावृत्ति जैसे ग़ैर-क़ानूनी धन्धों में लिप्त हो जाती हैं। इस धन्धें में वे आसानी से एच.आई.वी./संक्रमण की शिकार बन जाती हैं। यह भी देखा गया है कि अनेक प्रभावित महिलाएँ अपना इलाज़ कराने में असमर्थ होती हैं क्योंकि महिलाओं के लिए विशेष इलाज़ का कोई प्रबन्ध नहीं है।

कैदियों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

हमारे देश की जेलों में मादक द्रव्य का सेवन करने वाले कैदियों की देखभाल करने की कोई व्यवस्था नहीं हैं। जेलों में मादक द्रव्य सेवन करने वाले कैदियों के कोई राष्ट्रीय आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। देश में मादक द्रव्य सेवन करने वाले कैदियों की संख्या में आए दिन वृद्धि हो रही है। अधिकतर मादक द्रव्य व्यसनी जेल में भी अपनी इस लत को लगातार बनाए रखने के लिए कुछ न कुछ व्यवस्था कर ही लेते हैं। दूसरे अन्य मामलों में जेल में ही मादक द्रव्य लेने की आदत पड़ जाती हैं। इसका मुख्य कारण जेलों का वातावरण और बोरियत से बचने के लिए वे ऐसा करते हैं।

जेल में इस तरह के कैदियों को अलग रखने की व्यवस्था शायद ही किसी जेल में हो। वे बच्चे जो मादक द्रव्य नहीं लेते किन्तु मादक द्रव्य लाने-लेजाने के काम करने के कारण बन्दी बनाए गए हैं वे भी दूसरे अपराधियों के साथ रखे जाते हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि लगभग 15 मादक द्रव्य व्यसनी दिल्ली के तिहाड़ जेल में प्रतिदिन बन्दी बनाए जाते हैं। 1993 से पहले तिहाड़ जेल में व्यसनियों के विशेष इलाज़ और पुनर्वास के लिए कोई प्रबंध नहीं था। इसके बाद कुछ व्यवस्था की गई। आज इस जेल में पाँच विशेष केन्द्र समुचित रूप से अपना कार्य कर रहे हैं।

आदिवासी समुदायों में मादक द्रव्य दुरुपयोग

एक आकलन के अनुसार विश्व के 70 देशों में 30 करोड़ के लगभग देशी या आदिवासी लोग निवास करते हैं। वे देशी या देशज या आदिवासी जातियों के नाम से जाने जाते हैं क्योंकि ये लोग अपनी जमीन पर उस समय से रह रहे हैं जब भूमि बेचने वाले कहीं से भी वहाँ पर नहीं पहुँचे थे। उनकी ऊँची संस्कृति नृजातीय, भाषाई तथा धार्मिक भिन्नताएँ है। उनमें अभी भी कुछ शिकार पर जीते हैं और घने जंगलों में जीवनयापन करते हैं तथा कुछ विश्व के वित्तीय केन्द्रों में व्यापारी नेता बन गए हैं।

इन सबके होते हुए भी अधिकतर आदिवासी समूहों को विरासत में मिले सामान्य नशे की जड़ी बूटियों का प्रयोग करते हैं जो मनोसक्रिय करने वाला एक द्रव्य है। वे इसे सदियों से जानते हैं कि मनो-परिवर्तनकारी उनके आसपास प्राकृतिक द्रव्यों का भण्डार है। यह उनके लिए बहुत मूल्यवान होते हैं क्योंकि उनका प्रयोग चिकित्सा, पोषण और धार्मिक कार्यों में होता है। हेल्यूसिनोजेंस के सहित मुसरूम के कुछ प्रकारों तथा केक्टस का केन्द्रीय और दक्षिणी अमरीका में धार्मिक और दीक्षा समारोहों में प्रयोग किया जाता था एशिया में अफीम का दर्द निवारक के रूप में पुराना इतिहास है। यहाँ पर यह आराम पहुँचाने और पुराने दर्द तथा गैस से संबंधित समस्याओं के उपचार के लिए प्रयोग की जाती रही है। अफ्रीका में भाँग का प्रयोग वे शराब को तेज़ बनाने में करते थे। यह कार्य आदिवासी लोगों का सामान्य जीवन का अंग है।

संस्कृतियों में मनो-परिवर्तनीय द्रव्यों के परम्परागत प्रयोग को नियमित करने के लिए कठोर परंपराएँ हैं। जबकि अनेक समुदायों ने परम्परागत व्यवहारों को बनाये रखा है क्योंकि वे शेष विश्व से अलग-थलग हैं। जबकि समाप्त होने वाली कुछ अन्य संस्कृतियों ने नृजातीय समूहों की नीतियों में अपने को समाहित कर लिया है।

आदिवासी समुदायों में लगता है कि मादक द्रव्य सेवन की अधिक संभावनाएँ रहती हैं। इस तथ्य का नागालैण्ड, मिजोरम और मणिपुर राज्यों से प्राप्त गहन मादक द्रव्य दुरुपयोगों की रिपोर्टों से पता लगता है।

इसके अतिरिक्त मध्य भारत के अनेक आदिवासी समुदाय के लोगों में सबसे अधिक शराब पीने की दर है। इसके अनेक कारण हैं। आदिवासी समुदाय अपने युवाओं को अत्यधिक स्वतन्त्रता देते हैं। अभी आदिवासी समुदाय संक्रमण काल में चल रहे हैं। आदिवासी समुदाय देश के शेष भाग से अलग थे। परन्तु संचार तथा यातायात सुविधाओं की उपलब्धि के कारण उन्हें अकस्मात् नए मूल्यों के बारे में जानकारी मिलने लगी है। उनकी अपनी मूल्यवान व्यवस्था और सामाजिक नियन्त्रण समाज को एक साथ रखने के लिए अधिक प्रभावी नहीं रहे।

उत्तर पूर्वी राज्यों में सबसे अधिक प्रभावित आदिवासी समुदाय हैं। इनमें से अधिकतर म्यामार की सीमा से लगे हैं जो मादक द्रव्य उत्पादन क्षेत्र है। मध्य भारत के अधिकतर आदिवासी समुदाय भी मध्यप्रदेश के अफीम उत्पादन क्षेत्रों से संबद्ध हैं। उत्तर-पूर्व भारत के आदिवासी समुदायों में व्यसनियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। मादक द्रव्य उत्पादन क्षेत्र के नजदीक होने के साथ ही अचानक नई संस्कृति और मूल्यों का पता लगने से समस्याएँ गंभीर हो गई हैं। इसके साथ ही आतंकवाद का उदय स्वाभाविक है, जहाँ पर अवैध व्यापार और हथियारों के सौदागर एक साथ मिलकर अपना कार्य कर रहे हैं।

तथापि आदिवासी समुदायों में शराब का प्रयोग दैनिक भोजन का एक हिस्सा है यहाँ पर शराब के उत्पादन और उसके उपभोग पर किसी प्रकार की क़ानूनी पाबन्दियाँ नहीं है पहले आदिवासी समुदायों में प्रयुक्त शराब की किस्में किसी निर्माणशाला में तैयार नहीं की जाती थीं। अधिकतर नशीली शराब व्यक्ति की आंत के मार्ग से समा जाती है। जब व्यक्ति शराब का सेवन करने के साथ कड़ा परिश्रम करता है तो यह उसकी कैलोरी को जलाने में सहायक होती है। बाज़ार अर्थव्यवस्था के आने से अनेक युवा और वृद्ध लोग आराम तलबी हो गए हैं। इन सबके कारण आदिवासी समाज के ऊँचे स्तर के लोगों में मद्यपान करने की प्रवृति में वृद्धि के लिए अधिक सहयोग मिला।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. किस प्रकार मादक द्रव्य दुरुपयोग आदिवासी समुदायों को प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

3.6 सारांश

मादक द्रव्य दुरुपयोग और मादक द्रव्य का अवैध व्यापार दोनों एक साथ चलते हैं। जहाँ पर मादक द्रव्य की माँग है, वहाँ उसकी पूर्ति भी होगी। मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसका अवैध व्यापार दोनों ही ग़ैर-क़ानूनी कार्य हैं। इसके साथ ही ये एक सामाजिक समस्या भी हैं। हमने देखा है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग किस प्रकार से

सामाजिक समस्या है। हमने मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के बारे में चर्चा की है कि यह अवैध व्यापार क्या है और क्यों होता है। हमने अनेक घटकों के संबंध में विश्लेषण किया है जो मादक द्रव्य के अवैध व्यापार को प्रभावित करते हैं।

हमने तालिकाओं के द्वारा विश्व और भारत में मादक द्रव्य के दुरुपयोग के विस्तार को दर्शाने का प्रयास किया है विभिन्न मानव जातियाँ, आयु और लिंग समूहों के समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएँ आती हैं जब वे मादक द्रव्य सेवन आरम्भ करते हैं। इस इकाई में हमने विश्व और भारत के संबंध में मादक द्रव्य दुरुपयोग और ड्रग के अवैध व्यापार को विस्तार से बताया है।

3.7 शब्दावली

नई संस्कृति : वह संस्कृति जो अपनी संस्कृति से भिन्न है।

वाहक : वह व्यक्ति जिसे संदेश या कुछ सामान लाने ले जाने के लिए नियुक्त किया जाता है। यहाँ पर वह जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य का आदान-प्रदान करता है

संक्रमण काल : परिवर्तन का समय, विशेषकर सामाजिक परिवर्तन का समय।

विषैला पदार्थ : विषैला द्रव्य।

उच्च वर्ग : ये लोग जो सामाजिक स्थितियों का अधिक आनन्द उठाते हैं।

3.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लैरी सीगल (संपादित) (1987), *एड्स एण्ड सबस्टांस एब्यूज*, हेरींगटन पार्क प्रेस, न्यूयार्क।
2. अनिल अग्रवाल (1995), *नारकोटिक्स ड्रग्स*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
3. इरा मॉथनर और एलन विट्ज़, *हाउ टू गेट ऑफ ड्रग्स*, पैंगुईन बुक्स, लंदन।
4. यू. एन. डी. सी. पी. (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन-रिपोर्ट*, दक्षिण एशिया का क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली।
5. नेमीशरण मित्तल (1991), *ड्रग माफियाज़*, पुस्तक महल, दिल्ली।

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. क्या मादक द्रव्य दुरुपयोग सामाजिक समस्या है?

1. मानव समाज एक जीव की तरह है। जब कोई रोग किसी अंग पर हो जाता है तो उससे पूरे शरीर को कष्ट होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग एक बीमारी है, जिससे संपूर्ण मानव समाज प्रभावित होता है। यह मानव समाज के सामान्य कार्यों को प्रभावित करता है। प्रत्येक समाज अपना कार्य कुछ मानदण्डों और नियमों के तहत करता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव समाज के सामान्य कार्यों

को विपरीत रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक समस्याएँ समाज के सदस्यों द्वारा अनुचित व्यवहार के माध्यम से उत्पन्न की जाती हैं। इस तरह के व्यवहार समाज के कल्याण में सहयोग नहीं देते। वास्तव में ये समाज की भलाई को संकट में डालते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग समाज को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से संकट में डालते हैं, उसे नष्ट करते हैं। इसलिए यह स्पष्ट रूप से एक सामाजिक समस्या है।

बोध प्रश्न 2

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या तात्पर्य हैं?

1. मादक द्रव्य का अवैध व्यापार एक आपराधिक कार्य है। यह समाज और राष्ट्र के हितों के विरुद्ध है। ड्रग का अवैध व्यापार ड्रग्स दुरुपयोग को बढ़ावा देता है और मानवता को गंभीर संकट में डालता है। ड्रग्स का अवैध व्यापार आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि करता है। ये हत्याएँ और हिंसा करने में बढ़ावा देते हैं। ड्रग्स का अवैध व्यापार आतंकवादी गतिविधियों और हथियारों के प्रयोगों से संबंधित होता है। मादक द्रव्य का अवैध व्यापार काले धन का संग्रह करने में सहयोग देता है। इसके साथ ही यह जंगलों को भी नष्ट करता है।

बोध प्रश्न 3

1. किस प्रकार मादक द्रव्य दुरुपयोग आदिवासी समुदायों को प्रभावित करता है?

1. सम्पूर्ण भारत में आदिवासी समुदाय संक्रमण काल में है। इनमें से अनेक पहली बार आधुनिक विश्व का अनुभव कर रहे हैं। उनके पास विभिन्न सामाजिक मानदण्डों होते है जो वे भारत के अन्य समुदायों से लागू होते हैं।

   हमने देखा है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग से अनेक आदिवासी समुदाय गंभीर रूप से प्रभावित हैं। इसमें एक कारण यह है कि आधुनिक संचार और जन माध्यम के द्वारा सांस्कृतिक दूरियाँ पैदा हो गई हैं। दूसरे, देर से अपनाई गई राजनैतिक व्यवस्था के कारण उन्होंने वह सामाजिक नियन्त्रण खो दिया है जिसके माध्यम से समाज को व्यवस्थित रखते थे। आदिवासी समुदायों पर मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रभाव भयानक रहा, इससे उन्हें बहुत बड़ी हानि हुई है।

इकाई 4 मादक द्रव्य परिदृश्य - वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

4.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग : क्षेत्रीय परिदृश्य

4.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग : भारतीय परिदृश्य

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपको विभिन्न प्रकार के ड्रग और उनके दुरुपयोग, किस प्रकार से दुरुपयोग किए जाते हैं और कैसे किए जाते हैं तथा विभिन्न देशों में मादक द्रव्य के बारे में विभिन्न दृष्टिकोणों का अनुमान हो जाएगा। आशा करते हैं कि आपको भारत में इसकी गंभीरता की जानकारी प्राप्त होगी और आप इससे संघर्ष करने में समर्थ होंगे।

इस इकाई का उद्देश्य आपको निम्न तथ्यों से परिचित कराना है।

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप :

- विश्व में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों और उसकी सार्वभौमिक समस्या को समझ सकेंगे;
- विश्व के विभिन्न भागों में अनेक प्रकार की समस्याएँ और विभिन्न देश किस प्रकार से इन समस्याओं से निपट रहे हैं इसे जाने सकेंगे; और
- भारतीय मादक द्रव्य परिदृश्य के साथ-साथ हमारे देश में इसकी व्यापक व घातक समस्या से संबंधित विचारों से अवगत हो सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्य दुरुपयोग विश्व की सबसे घातक समस्याओं में से एक है। विश्व के अनेक युवा लोग इस घातक बीमारी के शिकार हो चुके हैं। जब हम यह कहते हैं कि यह विश्वव्यापी समस्या है तब हमें यह समझ लेना चाहिए कि मादक द्रव्य दुनिया के किसी भी कोने में उपलब्ध हो सकता है। यद्यपि मादक द्रव्य दुनिया के प्रत्येक हिस्से में उपलब्ध है परन्तु इसकी समस्या की गहनता एक देश से दूसरे देश में भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए कोकेन विश्व के सभी देशों में उपलब्ध नहीं होती है और फेनी जैसा मादक द्रव्य केवल गोवा में ही उपलब्ध होता है। एक मादक द्रव्य को हम अवैधानिक मानते हैं परन्तु वही मादक द्रव्य विश्व के दूसरे क्षेत्र में वैधानिक है। भारत में गाँजा और भाँग गैर-क़ानूनी मादक द्रव्य हैं। परन्तु भारत में कई जनजातियों

में गांजा को धूम्रपान के रूप में प्रयोग करना सांस्कृतिक परम्परागत लत का हिस्सा है। भारत के बहुत सारे राज्यों में ताड़ी का प्रयोग ग़ैर-क़ानूनी नहीं है परन्तु कुछ राज्यों में ताड़ी का प्रयोग ग़ैर-क़ानूनी है और इस पर प्रतिबन्ध है। अतः मादक द्रव्य की समस्या के संबंध में व्यापक दृष्टिकोण के लिए आपको मादक द्रव्य के वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिदृश्य को समझना होगा। क्या आप ऐसा नहीं मानते कि मादक द्रव्य व्यापार व इसके विस्तार के बारे में जानना बहुत दिलचस्प होगा? क्या आपने कभी उस धनराशि के बारे में सोचा है जो इस मादक द्रव्य व्यापार में लगी हुई है। क्या आपने यह जानने का प्रयास किया कि मादक द्रव्य माफिया क्या है? जब आप अखबारों में यह पढ़ते हैं कि करोड़ों रुपये के मादक द्रव्य पकड़े गए हैं जिससे स्मगलर अंतर्राष्ट्रीय स्तर से जुड़े हुए थे। आपको यह समझ लेना चाहिए कि यह रकम उनके लिए बहुत छोटी है तथा केवल आइसबर्ग के बराबर है।

4.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

बीसवीं शताब्दी में, दूसरे विश्व युद्ध के बहुत बाद में मादक द्रव्य संकट वैश्विक समस्या बन गया। अधिकतर नागरिक और समाज मादक द्रव्य समस्या और इससे संबंधित समस्याओं का सामना कर रहे थे। सभी प्रकार के मादक द्रव्यों में से सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाले नशीले मादक द्रव्यों में शराब प्रथम स्थान पर है। शराब का प्रयोग पश्चिमी संस्कृति के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। शराब पश्चिमी देशों में अनेक समस्याओं का केन्द्र बिंदु है जिनमें से कुछ नाम - दुर्घटनाएँ, अपराध, घरेलू हिंसा, सामाजिक अव्यवस्था आदि हैं। क्या आप आश्चर्यचकित नहीं है कि पश्चिमी देशों की दस से पंद्रह प्रतिशत युवा जनसंख्या की समस्या शराब है। आश्चर्य न करें, संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से सिफारिश की है कि वर्ष 2000 तक सभी राष्ट्रों को चाहिए कि वे अपने यहाँ 25 प्रतिशत शराब का प्रयोग कम करें। ग़ैर-क़ानूनी या अत्यधिक नशीली दवाएँ भी विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। एक आकलन है कि ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य व्यापार में लगी धनराशि विश्व में हथियारों के व्यापार के बाद दूसरे स्थान पर है यानि हथियारों के बाद इसका दूसरा स्थान है। चिकित्सा संबंधी मादक द्रव्यों का प्रयोग चिकित्सक की सलाह से दवाई के रूप में किया जाना चाहिए किन्तु इनका विश्वभर में दुरुपयोग होता है। ये सब संकेतक विश्व की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हैं। बहु उपचारक दवाएँ अथवा अनेक नशीले द्रव्यों का प्रयोग सम्पूर्ण विश्व में साधारण बात हो गई है।

सभी देशों में, नशीले मादक द्रव्यों के प्रयोग का अनुपात विकट और विशालतम स्थिति में पहुँच गया है जिसके कारण जन स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवस्था अकथनीय समस्या बन गई है। संपूर्ण विश्व में सभी प्रकार के मादक द्रव्यों के प्रयोग में बेहद वृद्धि हुई है। नए-नए नशीले मादक द्रव्य प्रतिदिन बाज़ार में आ रहे हैं। इसके अलावा कुछ ऐसे मादक द्रव्य हैं जिनका प्रचलन कुछ देशों तक सीमित हैं, कुछ भिन्न प्रकार और मादक द्रव्य लगभग सभी देशों में उपलब्ध हैं। अनेक देशों में मादक द्रव्य का दुरुपयोग जीवन का एक हिस्सा बन गया है और यह सिलसिला कहीं थमता नहीं दिखाई दे रहा है। ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्यों के व्यापारियों की गतिविधियाँ विश्व भर में सामान्य बात हो गई हैं। इनमें से कुछ मादक द्रव्य सिंडीकेट इतने शक्तिशाली हैं कि वे किसी भी देश की सरकार को गिराने की धमकी दे सकते हैं अथवा सरकार गिराने की सामर्थ्य रखते हैं। वर्ष 1987 में वियना में मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य व्यापार पर संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री जेवियर पेरेज डी. क्यूलर के भाषण के कुछ अंशों का यहाँ प्रस्तुत करना प्रासंगिक रहेगा।

"वास्तव में यह सत्य है कि मादक द्रव्य व्यसनी लोग अपना स्वास्थ्य और स्वतन्त्रता खो चुके हैं, इसी तरह से अनेक देश इसके ही कारण भ्रष्टाचार में फंस गए हैं, और स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि उनकी स्वतन्त्रता खतरे में है। अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा स्वयं खतरे में है जिसका मुख्य कारण ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्यों के व्यापार के चलते ग़ैर-

क़ानून। हथियारों का क्रय-विक्रय, विनाश और आतंकवाद है। संक्षेप में, हम एक ऐसी बुराई अथवा दुश्मन से लड़ रहे हैं जो केवल मानवता को ही नष्ट नहीं कर रहा है बल्कि भ्रष्टाचार और हिंसा के माध्यम से समाज की स्थापना व आधार को कमज़ोर कर रहा है।"

जॉनस हारटेल्यू ने अपनी पुस्तक *"विश्व - एक मादक द्रव्य दृश्य"* में लिखा है कि

"मादक द्रव्यों का ग़ैर-क़ानूनी आधार दो या तीन महाद्वीपों में संचालित होता है जो अनेक देशों में पुलिस और सीमा शुल्क अधिकारियों के लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। मादक द्रव्यों का उत्पादन एक देश में होता है, संसाधित दूसरे देश में, तस्करी तीसरे देश के माध्यम से, बेचे जाते है चौथे देश में और इस सम्पूर्ण तस्करी का लाभ मिलता है पाँचवें देश में। इन सबके कारण क़ानून को लागू करने वाली एंजेंसियों के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इस अन्तर्राष्ट्रीय अपराध से निपटने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अपराध पुलिस संगठन (ICPO, इंटरपोल) तथा विश्व सीमा शुल्क संगठन (WCO) ने संयुक्त रूप से ठोस प्रयास किए हैं।"

कुछ मादक द्रव्य सिंडीकेट बहुत ही शक्तिशाली होते हैं वे अपने देश के "राज्य के अन्दर राज्य" का कार्य करते हैं। वे अपनी शक्ति का प्रयोग, अधिकारियों को भ्रष्ट बनाने, धमकी देने, भयभीत करने और हत्या, न्याय तथा अभियोजक और राजनीति को दूषित तथा अर्थव्यवस्था को कमजोर करने में लगातें हैं। कोलॉम्बिया जैसे देश का स्पष्ट उदाहरण दिया जा सकता है। यहाँ की संवैधानिक सरकार अपने यहाँ पर क़ानून और व्यवस्था को बनाए रखने में असमर्थ है तथा वह मादक द्रव्य सिंडीकेट के आक्रमणों से अपने लोक सेवकों की रक्षा करने, उनको संरक्षण देने में असमर्थ है।

विश्व में मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिदृश्य बहुत ही खतरे की स्थिति में पहुँच गया है। सरकारों और सेवा संगठनों द्वारा उपभोग पर रोक, इलाज़ कराने और परामर्श जैसी दी जाने वाली सेवाओं का अपेक्षित प्रभाव नहीं हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप मादक द्रव्य दुरुपयोग पर विभिन्न मंचों पर घोर चर्चाएँ हुई हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की महासभा ने सिफारिश की कि विश्व के सभी देश वर्ष 2000 तक 25 प्रतिशत शराब उपभोग को कम करें। बहुत ही हास्यास्पद स्थिति है जिसका विश्व साक्षी है कि जहाँ हम एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी में पहुँच गए वहीं इसके उत्पादन और उपभोग में वृद्धि हुई है।

इस इकाई के इस भाग में हमने जो पढ़ा है इससे स्पष्ट है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या वैश्विक समस्या बन गई है। क्या आपने इससे पहले इस तरह की स्थिति के बारे में कभी सोचा था? उपलब्ध आँकड़े कुछ चौंकाने वाले तथ्य प्रकट करते हैं। प्रत्येक संगठन जो मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, वे जानते हैं कि यह समस्या किस कारण से यहाँ पर फैल रही है। उदाहरण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की 1997 की भाँग पर रिपोर्ट इस तथ्य (भाँग : स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य और अनुसंधान एजेंडा) को स्वीकार करती है कि: भाँग का प्रयोग 'संपूर्ण विश्व में तेजी से फैला है जो कि मनोरोगी बनाने वाला पदार्थ है।" यूरोपियन यूनियन में मादक द्रव्य समस्या वाले राज्य पर वार्षिक रिपोर्ट 1998 में मादक द्रव्य और मादक द्रव्य व्यसनी लोगों के लिए यूरोपीयन निगरानी केन्द्र द्वारा प्रकाशित की थी जिसमें यूरोपीयन यूनियन के देशों में व्यसन के बढ़ते प्रभाव को निम्न प्रकार से उद्धृत किया गया है कि "ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्यों का प्रयोग और स्वास्थ्य समस्याओं के बीच बहुत ही गहरा संबंध इंजेक्शन लगाने वालों में पाया गया।" व्यसनी लोगों में से सुई से नशा लेने वालों की दर का 10- 15 प्रतिशत से 80 प्रतिशत लोग ही इलाज के लिए आते हैं जो कि सामान्य लोगों में बहुत कम है।

इंजेक्शन से मादक द्रव्य दुरुपयोग न करने वालों (मुख्य रूप से हेरोईन के व्यसनी) की अपेक्षा इंजेक्शन लेने वाले अधिक गंभीर हैं और वे अधिक मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त इंजेक्शन लेने वाले व्यसनियों को एच.आई.वी./एड्स और यकृत

शोथ जैसे रोगों से संक्रमित होने की अधिक संभावना एवं खतरा होता है। यह कथन खतरे के नए आयाम को बताता है जो आमतौर पर मादक द्रव्य व्यसनियों को होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग व यकृत्त शोथ के बीच संबंध के बारे में टिप्पणी करते हुए इसी रिपोर्ट में कहा है: सुई से मादक द्रव्य लेने वालों में यकृत शोथ-सी (Hepatitis C) स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बेहद गंभीर समस्या है। अनेक देशों में यकृत शोथ को अत्यन्त ऊँची दर पर देखा गया जो इस बात का संकेत करता है कि यह इंजेक्शन लेने वालों के बीच जोखिम भरे व्यवहार हैं जिन पर शायद ध्यान नहीं दिया है - जैसे कि चम्मचों, रुई तथा अन्य कार्यों में साझीदारी करना है। यूरोकेयर की एक रिपोर्ट में कहा है कि वर्ष 1996 में फ्रांस में औसतन 15% से अधिक एक व्यक्ति ने औसतन 14.9 लीटर शराब की खरीददारी की। इसी तरह कनाडा में हुए एक अध्ययन के अनुसार 35 प्रतिशत और 60 प्रतिशत मानव हत्याओं का संबंध शराब पीने से है। एक अन्य अध्ययन रिपोर्ट से पता चलता है कि 1990 में संयुक्त राज्य अमेरिका में शराब के दुरुपयोग में कुल अर्थव्यवस्था की लागत का आकलन 100,000 मिलियन डॉलर था।

शायद आपको आश्चर्य हो कि क्या विश्व व्यसन के द्वारा हो रही तबाही या विध्वंस को एक खामोश असहाय दर्शक की तरह से देख रहा है? इसका उत्तर है, नहीं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध सरकारें, संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा विभिन्न सेवा संगठन लगातार संघर्ष कर रहे हैं। नशे के व्यसन को एक रोग के रूप में स्वीकार करते हुए अनेक सेवा संस्थाओं ने रोकथाम कार्य करने के अतिरिक्त इलाज व पुर्नवास की सुविधाएँ देने का प्रयास किया। सिंगापुर और मलेशिया जैसे देशों ने मादक द्रव्य से संबंधित अपराधों को गंभीरता से लिया है उनको सख्त क़ानून की पकड़ में लाकर कड़ी सज़ा देने का प्रावधान किया गया है। उदाहरण के लिए सिंगापुर में गैर-क़ानूनी व्यापार से खरीदी गई कोकेन जिसका वजन बीस ग्राम से कम न हो और तीस ग्राम से अधिक न हो, पकड़े जाने पर अधिक से अधिक 30 वर्ष की कैद और 15 कौड़े तथा कम से कम 20 वर्ष की कैद और 15 कौड़े की सजा दी जाती है। इसके अलावा यदि कोकेन की मात्रा 30 ग्राम से अधिक पाई गई तो अपराधी को मौत की सज़ा दी जाएगी। परन्तु इस तरह के छोटे देशों में इतनी गंभीर और भयानक सज़ा होते हुए भी वर्ष 1991 में 3823 ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें मादक द्रव्य का व्यसन था और उन्हें इलाज़ के लिए भर्ती कराया गया था। इन सब प्रयासों और रोकथाम के बावजूद भी मादक द्रव्य दुरुपयोग और इसका गैर-क़ानूनी व्यापार इस आधुनिक विश्व में लगातार चल रहा है।

जोनास हरटेलियस ने अपनी पुस्तक में मादक द्रव्य समस्या को काबू में लाने वाली कल्याणकारी नीतियों की असफलता के बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं। "विभिन्न प्रकार की चिकित्सा, देखभाल, परामर्श आदि पर विशाल राशि व्यय करने के बावजूद जनकल्याण व्यवस्था के भीतर व बाहर दूरगामी परिणाम कठिनाई से ही मिलते हैं। चिकित्सा व उसके सदृश उपायों का महत्व मानवतावादी है और उन उपायों से जीवन की रक्षा करना अनिवार्य है। फिर भी ये आप मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित जन स्वास्थ्य समस्याओं का निदान नहीं कर रहे है। मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या चिकित्सा सुविधाओं और जन सुरक्षा तंत्र के लिए बेहद गंभीर खतरा बनी हुई है।"

आजकल कुछ क्षेत्रों में यह भावना पनप रही हैं कि "कल्याणकारी कार्यों को भाड़ में जाने दो" अर्थात् सभी नागरिकों के लिए व्यापक सेवा उपलब्ध कराने की कल्याणकारी नीतियों में रुचि कम हो रही है। इन सब कार्यों के लिए लागत अत्यधिक दिखाई जाती हैं किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकलते हैं। इस प्रवृति की अब हद हो गई है लोग सोचने लगे हैं "स्वयं जीयो और दूसरों को मरने दो" - यह व्यवहार अर्थात् अहस्तक्षेप सिद्धान्त है। इसे आप व्यक्तिगत तथा परिवार की देखभाल तथा अपने पड़ोसियों के बारे में देख सकेंगे। मादक द्रव्य दुरुपयोग के दानव से बचाने के लिए व्यक्तिगत स्थानीय समाज, सहयोग और यजमानी कर्त्तव्यों की सीमा समाज से परिवार, वंश, तक सिमट कर रह गई है।

निरंतर बढ़ रही कल्याण विपदाओं के बावजूद अभी तक मादक द्रव्य दुरुपयोग से निपटने के लिए नए परिप्रेक्ष्य अथवा कार्यनीति तैयार नहीं हुई है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. शराब के संबंध में कहा जाता है कि पश्चिमी देशों में यह समस्या सबसे प्रमुख है। कुछ समस्याओं के नाम बताएँ।

.....

.....

.....

.....

2. मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका के संबंध में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। (30 शब्दों में)

.....

.....

.....

.....

3. गैर-क़ानूनी मादक द्रव्य व्यापारियों की खतरनाक गतिविधियों के संबंध में लिखिए। (30 शब्दों में)

.....

.....

.....

.....

4. वे कौन-से दो भयानक स्वास्थ्य संकट हैं जिनका सामना इंजेक्शन से मादक द्रव्य लेने वालों को करना पड़ता है?

.....

.....

.....

.....

5. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि सख्त से सख्त दण्ड देने के प्रावधानों से मादक द्रव्य समस्या हल हो जाएगी? अपने विचारों के पक्ष में उदाहरण देकर सिद्ध करें। (30 शब्दों में)

.....

4.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग : क्षेत्रीय परिदृश्य

हमने पिछले भाग में वैश्विक ड्रग्स की समस्या के संबंध में एक झलक प्रस्तुत की है। परन्तु यह समस्या पूरे संसार में एक जैसी नहीं हैं, जैसे कि मादक द्रव्यों के साथ लगी समस्याओं की प्रकृति सम्पूर्ण विश्व के क्षेत्रों में समान नहीं है। यह समस्याएँ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र, एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में अलग-अलग हो सकती हैं। हम इसे विभिन्न कोणों से देख सकते हैं। उदाहरण के लिए भारत जैसे देश में मादक द्रव्य जिसमें शराब सबसे बड़ी समस्या है। भारत मादक द्रव्य उत्पादक देशों के बीच में फँसा हुआ है जो सुनहरा त्रिकोण (म्यामार, लाओस, थाईलैण्ड) और (ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान) के नाम से जाने जाते हैं व जो अन्तर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य तस्करी संचालन के क्षेत्र हैं। इसके अलावा भारत की पश्चिमी सीमाओं पर मादक द्रव्य तस्करी विभिन्न गतिविधियों और आतंकवाद के लिए जिम्मेदार है। इसी तरह से सांस्कृतिक विभिन्नताएँ भी मादक द्रव्य दुरुपयोग को भी भिन्न-भिन्न नजरों से देखती हैं। भारत में कुछ आदिवासियों के बीच गांजा पीना सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में स्वीकार किया हुआ है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में मेरीजूना का धूम्रपान (गांजा पीना) एक बड़ी समस्या है। इसके अलावा एक बहुत ही आश्चर्यजनक और दुख का विषय है कि यू.के. में कुछ लोग गांजा पीना क़ानून के दायरे में लाने की माँग कर रहे हैं यानि उनकी माँग है कि गांजा पीना अपराध न माना जाय। इसके पीने की छूट दी जाए।

मादक द्रव्यों का उपयोग मानव संस्कृति के समान ही पुराना है और प्रत्येक संस्कृति के अपने मादक द्रव्य होते हैं। मादक द्रव्य का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर किया जाता है। विशेषकर उस समय जब कोई व्यक्ति अलौकिक शक्तियों से बात करना चाहता है। तीसरी दुनिया के देशों में मादक द्रव्यों का दुरुपयोग गरीबी से जुड़ा हुआ है। यह कुछ अच्छे संकेत हैं कि विकसित देशों में इस पर पाबन्दियाँ लगाई जा रही हैं वहीं पर इन द्रव्यों की माँग भी कम हो रही है। जहाँ तक अल्प विकसित देशों का प्रश्न हैं वहाँ कि स्थिति पहले ही भयंकर हो रही है, साथ ही इस मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से कुपोषण की समस्या और बढ़ गई है जो स्वास्थ्य देखभाल से जुड़ी हुई है। अल्प विकसित देशों में मादक द्रव्यों का प्रयोग देश के विकास में बाधा डाल रहा है वहीं पर आर्थिक स्थिति के विकास में तेज़ी लाने में रुकावटें पड़ रही हैं।

क़ानून की स्थिति भी अलग-अलग देशों में भिन्न है। भारत में भाँग या गांजा रखना अपराध है जबकि यू.के. में यह अपराध नहीं है। इससे पिछले भाग में बताया गया था कि अत्यधिक खतरनाक मादक द्रव्य रखने पर सिंगापुर में (500 ग्राम से अधिक गांजा रखने पर) फांसी की सज़ा दी जाती है। अनेक अल्प विकसित देशों में मादक द्रव्य व्यवसनी और मादक द्रव्य क़ानून का उल्लंघन करने पर अन्य अपराधियों की तरह ही सज़ा दी जाती हैं। तीसरी दुनिया के अनेक देश गरीबी के कारण वहाँ के क़ानूनी तन्त्र या शासन व्यसनियों का इलाज़ और उनके पुनर्वास की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए सिंगापुर को ही लीजिए। यहाँ पर मादक द्रव्य से संबंधित क़ानूनों को सख्ती से लागू किया जाता है। वहाँ क़ानून कड़े हैं किन्तु इसके साथ ही वे मादक द्रव्य के व्यसनी का इलाज़ और उसके पुनर्वास का प्रबंध भी निश्चित रूप से करते हैं। इसके बाद मादक द्रव्य व्यसनी पर कड़ी नज़र रखते हैं वहीं पर ड्रग्स क़ानून एवं रोकथाम के लिए संबंधित व्यक्ति को शिक्षित करने का जिम्मा भी उठाते हैं। मादक द्रव्य अपराधियों के लिए जेल में डालना, कौड़े लगाना, मृत्युदण्ड

देना आदि संभव हैं। यदि कोई व्यक्ति चिकित्सा जाँच में मादक द्रव्य का व्यसनी पाया जाता है इसका इलाज़ किया जाता है और उसे 36 मास के लिए पुनर्वास करके उसकी सहायता की जाती है। पश्चिम के अनेक देशों में क़ानून को लागू करने वाले प्राधिकारी मादक द्रव्य व्यसनी के प्रति चिन्ताएँ जताते हैं। सरकार द्वारा घर पर या स्वास्थ्य केन्द्र में व्यसनी का इलाज़ व पुनर्वास करते हैं साथ सुईयाँ परिवर्तन या बदलने के प्रायोजित कार्यक्रमों का संचालन करते हैं।

4.4 मादक द्रव्य दुरुपयोग : भारतीय परिदृश्य

इस इकाई का पिछले भाग का अध्ययन करने के बाद आपके मस्तिष्क में कुछ प्रश्न उठेंगे। हमारे देश में क्या मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एक बहुत बड़ी समस्या है? यदि ऐसा है तो वे कौन-सी मादक द्रव्य है जिनका भारतीय लोग प्रायः इस्तेमाल करते हैं? क्या हमारी संस्कृति मादक द्रव्य का प्रयोग करने की अनुमति देती हैं? क्या कोई प्रभावी रोकथाम या इलाज़ के उपाय मौजूद हैं? ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से हमारे राष्ट्र को क्या हानि होती है? इस कार्यक्रम के विद्यार्थी होने के कारण यह स्वाभाविक ही है कि आप इस तरह के सवाल करें। इस भाग में इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाएगा। हमें आशा है कि इस भाग का अध्ययन करने के बाद आप भारतीय मादक द्रव्य परिदृश्य और विश्व के परिदृश्य से तुलना करने में समर्थ होंगे। भारत के एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आप मादक द्रव्य विनाश से निपटने के लिए कुछ कार्यनीतियों की योजना भी बनाएँगे।

आइए अब हम एक भारतीय युवक की सच्ची कहानी को पढ़े जिसे शक्ति द्वारा प्रकाशित पुस्तक '*दि साइकोटिक ड्रग मीनेस*' में ब्रिगेडियर नज़ारत द्वारा लिखी उसकी पृष्ठभूमि में लिखा है।

रविन्द्र सिंह ब्रिगेडियर ज्ञान सिंह का पुत्र था, जिसने 1960 में पहली बार माउन्ट एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ाई के लिए अपने दल का नेतृत्व किया था। ब्रिगेडियर ज्ञान सिंह की रुचि बाह्य जीवन में थी तथा जिसका संबंध युवकों को विकसित करने के लिए आजकल भी चल रहा था। उन्होंने सम्पूर्ण भारत में यूथ एडवेंचर क्लब के साथ नेशनल एडवेंचर फाउंडेशन को आरम्भ किया था। रवि बहुत ही भाग्यशाली था जिसका जन्म एक अच्छे, स्वस्थ पारिवारिक वातावरण में हुआ जिसमें उसके माता-पिता सबसे श्रेष्ठ वस्तुएँ उसे उपलब्ध कराने का प्रयास करते थे।

रवि को बहुत अच्छे विद्यालय में भर्ती कराया गया। उसे अजमेर के मेयो कालेज के छात्रावास में रखा गया। यह कालेज पूर्व राजकुमारों के लिए बनाया था। इसके प्राचार्य प्रतिष्ठित और शिक्षाविद जे. टी. एम. गिब्सन थे जो एक स्केटिंग और श्रेष्ठ पर्वतारोही थे। इसके साथ ही वे इस विद्यालय के प्रधानाचार्य भी रह चुके थे। रवि स्वयं प्रतिभाशाली और सृजनात्मक प्रवृत्ति का योग्य विद्यार्थी था।

और तब तक ..... और तब तक ..... रवि साइकोट्रोपिक मादक द्रव्य के जाल में फंस गया था। उसने किशोर अवस्था में बीड़ी पीना आरम्भ कर दिया था जिसे वह रात के अन्धेरे में सड़क पर पड़ी हुई बीड़ियों को उठाकर पी लेता था। इसके बाद उसने सिगरेट पीना आरम्भ कर दिया क्योंकि वह स्वयं यह समझने लगा था कि वह अब बड़ा (जवान) हो गया है, साथ में यह भी सोचने लगा था कि सिगरेट पीने से वह स्मार्ट लगता है। इस समय तक वह नशे के मध्य घर में पहुँच चुका था और उसने भाँग पीना आरम्भ कर दिया। वह अपने साथियों को प्रसन्न करने के लिए कालेज की दीवार को कूद कर फाँदने लगा था। जब उसकी माँ उससे मिलने के लिए कालेज में आई तो वह अपनी माँ के पास जाने से कतराने लगा।

इसके बाद उसने अपनी चीजों को बेचना शुरू कर दिया और उस धन से वह भाँग खरीद कर पीने लगा। और जब वह अपनी कक्षा के अंतिम वर्ष में पहुँचा तो भाँग पीने के उस बिन्दु पर पहुँच गया था जहाँ से वापस नहीं आया जा सकता है। 11 वर्ष मेयो कालेज में बिताने के बाद उसे कालेज से निकाल दिया गया और उसका पतन आरम्भ हो गया। वह ऐसे लोगों के साथ मिल गया जो व्यसनी और सनकी थे। अब वह अपना नशा पूरा करने के लिए फेरी लगाकर मार्फिया हेरोईन जैसा मँहगा मादक द्रव्य बेचने लगा था।

उसने पहली बार 'स्मैक' (हेरोईन) का इंजेक्शन लिया और वह एक पक्का व्यसनी बन गया। अब वह भाँग पीने में कोई इच्छा नहीं रखता था। स्मैक पीने के कारण अब वह अत्यधिक उस पर निर्भर रहने लगा और इसकी पूर्ति के लिए चोरी करने लगा, फेरी लगाकर के अतिरिक्त वाल्यूम, मैनड्रेक्स और अत्यधिक नशीले द्रव्यों को बेचने लगा था। इसके साथ ही एल. एस. डी. का भी प्रयोग करने लगा और पतन के गर्त में चला गया। इस स्थिति में पहुँचने के बाद उसने महसूस किया कि उसे अपना मार्ग बदल लेना चाहिए।

वह वापस अपने घर आया। उसके माता-पिता ने उसे फिर से अपना प्रेम तथा स्नेह दिया तथा उसको लम्बे समय तक चिकित्सकों की देख-रेख में रखा और उसका पुनर्वास किया गया। इन सब कारणों से उसके जीवन में फिर से परिवर्तन आया और वह स्वयं ही सामाजिक कार्यों में शामिल हो गया। युवा लोगों के लाभ के लिए उसने व्यसनी जीवन के अनुभवों को प्रकाशित कराने का निश्चय किया और उसने ओरियन्ट पेपरबेक में '*आई वाज ए ड्रग एडिक्ट*' नामक पुस्तक लिखी। यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे प्रत्येक युवा को अवश्य पढ़ना चाहिए।

अफसोस! वह अपनी पुस्तक पूरी न कर सका था और वह पुनः उस हृदय विदारक स्थिति में लौट गया। और उसकी बाकी बची पुस्तक उसके [illegible] ने पूरी की। रवि फिर से उस मादक द्रव्य के कीचड़ में फंस गया और उसने बहुत ही दुख भरे शब्दों में लिखा था कि "अब उस गन्दगी के ढेर में फिर से जा रहा हूँ और मेरा अनुमान है कि मैं उस कूड़े के ढेर में मरने जा रहा हूँ।" यह कहावत सत्य है कि "जो एक बार गन्दा हो जाता है वह हमेशा गन्दा रहता है।" रवि फिर से अपनी गन्दगी के जीवन में लौट गया था और वह मात्र 21 वर्ष की अल्प आयु में उस गन्दगी में अपने अमूल्य प्राण त्याग दिए। एक बहुत ही अच्छे जीवन का कितना दुखद अन्त है।

यह सच्ची कहानी हमें बताती है कि भारत में कोई भी व्यक्ति इस मौत के फंदे में फंस सकता है। अब कहिए कि क्या भारत में मादक द्रव्य-व्यसन वास्तविक समस्या है।

भारत में तम्बाकू, शराब, गाँजा, कृत्रिम अफीम, कोकेन तथा निर्धारित मादक द्रव्य का दुरुपयोग होता है। संक्षेप में वे सभी मादक द्रव्य जो अन्य देशों में बनतें हैं या मौजूद होते हैं वे सब भारत में आसानी से उपलब्ध होते हैं। परन्तु यहाँ कुछ मादक द्रव्य अधिक प्रसिद्ध हैं और अन्य देशों की तुलना में अधिक स्वीकार की जाती है या उनका प्रयोग किया जाता है।

भारत में तम्बाकू का प्रयोग आम बात है। इसका प्रयोग चबाकर, धूम्रपान द्वारा और नाक से सूंघ कर किया जाता है। तम्बाकू का प्रयोग परिवारों में भी स्वीकार्य है और निर्धन लोगों में बहुत प्रचलित है। तम्बाकू चबाना और विशेषकर पान के साथ चबाना अधिकतर परिवारों में प्रचलित है। भारत में धूम्रपान करना काफी प्रसिद्ध है लोग बैठकर एक साथ 'हुक्का' पीते हैं साथ ही उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में धूम्रपान करते हुए आसानी से देखे जा सकते हैं। यहाँ सिगार का उत्पादन बहुत होता है जिसका निर्यात किया जाता है तथा इससे सरकार को काफी राजस्व प्राप्त हो

जाता है। यद्यपि पश्चिमी देशों में हम तम्बाकू सूंघते हुए आसानी से नहीं देख सकते हैं किन्तु भारत में तम्बाकू को सूंघ कर प्रयोग करना भी काफी प्रचलित है।

भारत के लोगों में शराब अत्यधिक प्रचलित है। आज ताड़ी, फेनी और भारत में बनी अंग्रेजी शराब इस श्रेणी में आती हैं। प्रायः हम जहरीली शराब से मरने वालों की भयानक मौत के समाचार अखबारों में पढ़ते रहते हैं। क्या आप जानते हैं वह क्या है? बहुत पहले की घटना है शायद आपको याद हो कि केरल के मध्य में वाईपीन नामक नशीली शराब प्रसिद्ध है। ओणम के त्यौहार के अवसर पर इस ग़ैर-क़ानूनी शराब को पीने के क़ारण एक पूरा गाँव ही मौत के गर्त में चला गया था। इस प्रकार की त्रासदी व दुखांत घटनाएँ क्यों होती हैं? इसका मुख्य कारण यह है कि लोग तेज़ और सस्ती शराब की माँग करते हैं। इसलिए वे लोग स्वयं शराब बनाने लगते हैं। यह शराब ग़ैर-क़ानूनी तो होती ही है साथ में कभी-कभी यह शराब इतनी तेज़ हो जाती है कि वह विष का रूप धारण कर लेती है और इस तरह की घटनाएँ घट जाती हैं। यद्यपि ग़ैर-क़ानूनी शराब बनाने पर रोक लगाने के लिए बहुत सख्त कानून हैं किन्तु भारत में सबसे अधिक लाभ कमाने वाला घरेलू उद्योग है। इसका सबसे बुरा वह हिस्सा है जब शराब के ग़ैर-क़ानूनी निर्माण और इसके विक्रय में बच्चे एवं महिलाएँ शामिल कर ली जाती हैं अथवा हो जाती हैं।

भारतीय लोगों में ताड़ी निकालना और इसको पीना प्राचीन काल से चला आ रहा है। आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व तमिल के विद्वान कवि तिरुवल्लूवर ने ताड़ी न पीने के लिए दस दोहे लिखे थे। दक्षिण भारत में ताड़ी के वृक्ष से ताड़ी निकालना बहुत ही प्रचलित है। प्रायः धार्मिक अवसरों, त्यौहारों पर ताड़ी का जम कर प्रयोग किया जाता है।

ताड़ी गाँवों के लोक जीवन में बहुत ही प्रचलित है और कुछ राज्यों में क़ानूनी मादक द्रव्य है। कुछ राज्यों में तो यह सरकार द्वारा निर्मित, वितरित और परचून में बेची जाती है। आपने देखा होगा कि कुछ शराब की दुकानों के बोर्डों पर आई. एम. एफ. एल. रिटेल शाप लिखा होता है। क्या आप जानते हैं इसका पूरा अर्थ क्या है? आई. एम. एल. एफ. का अर्थ भारत में निर्मित विदेशी शराब। इसके अन्तर्गत वे सभी प्रकार की शराब ब्रांड तैयार होते हैं जो विदेशों यानि कि विशेषकर पश्चिमी देशों में प्रसिद्ध एवं प्रचलित हैं किन्तु इनका निर्माण भारत में ही होता है। बीयर, ब्रांडी, ज़िन, रम, वाइन, वोदका आदि इसी श्रेणी में आती हैं।

फेनी गोवा का बहुत ही प्रसिद्ध पेय है। इसकी बिक्री से सरकार को भरपूर राजस्व मिलता है और पर्यटकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण होता है।

भारत में भाँग या गाँजा बहुत ही प्रसिद्ध है, यह एक ग़ैर-क़ानूनी मादक द्रव्य है किन्तु अत्यधिक प्रचलन में है। भाँग या गांजे की ग़ैर-क़ानूनी खेती अत्यधिक मात्रा में होती है और देश से बाहर के देशों में इसकी तस्करी होती है। कुछ हिस्सा तो इसका स्थानीय लोगों द्वारा उपभोग कर लिया जाता है। उत्तर भारत के कुछ आदिवासी क्षेत्रों में गांजे का प्रयोग उनके सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सवों का हिस्सा होता है। भारत में गाँजा युवाओं विशेषकर विद्यार्थियों में बहुत प्रचलित है। यह खेद का विषय है कि इसके विरुद्ध आंदोलन की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना संयुक्त राज्य अमेरिका में।

कुछ अन्य अत्यन्त भयानक मादक द्रव्य - कृत्रिम अफीम तथा कोकेन भारत के युवा वर्ग में प्रसिद्ध हैं विशेषकर नगरों के नवयुवकों में इसके प्रति अत्यधिक आकर्षण है। आप 5 अप्रैल, 1999 के इंडिया टुडे के अंक के मुख पृष्ठ को देखिय जिस पर लिखा गया है "कोकेन जैसे नशीले और तेज़ाब तेज़ ड्रग्स शहरों के युवा और अमीर लोगों में बहुत प्रचलित हैं, इसने इस वर्ग में अपनी पकड़ जमा ली है।" हम प्रायः हेरोईन और ब्राउन सुगर की जब्ती के संबंध में समाचार-पत्रों में पढ़ते रहते हैं और अधिकतर ये तस्करी के समय ही जब्त होते हैं। इससे पिछली इकाई में हमने बताया था कि

भारत मादक द्रव्य के अवैध व्यापार का पारगमन बिन्दु है। भारत के माध्यम से जब मादक द्रव्य की तस्करी होगी तो यह भी स्वाभाविक है कि इसका बहुत सारा हिस्सा यहाँ के स्थानीय बाज़ार में भी पहुँचता है और यहाँ के युवाओं को यह मादक द्रव्य आसानी से उपलब्ध हो जाएगा। इस भाग के आरम्भ में हमने एक प्रश्न किया था कि "क्या हमारी संस्कृति मादक द्रव्य के सेवन की अनुमति देती है?"

भारत के साथ ड्रग्स सांस्कृतिक रूप से जुड़ी हुई हैं।' जब हम इस ओर ध्यान से देखते हैं तो हमें बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि मादक द्रव्य का दुरुपयोग और धर्म के बीच सीधा गठबंधन है। जब हम भारत की धार्मिक पुस्तकों को देखते हैं तो मादक द्रव्य के अनेक संदर्भ पढ़ने के लिए प्राप्त होते हैं। भारतीय वेदों में नशीली पदार्थों में पेय के लिए दो नाम हमारे समक्ष आते हैं सोम और सुरा, सोम देवता पीते थे और सुरा का प्रयोग मनुष्य करता था। इन दोनों में सुरा अधिक तेज थी परन्तु सोम पीना आदरपूर्ण था। सोम रस वैदिक यज्ञों में आहुति देने के काम आने लगा और उसे पुजारी लोग पीते थे। प्राचीन काल की पुस्तकों में अध्ययन करने को मिलता है कि मनुष्य जब हर्षोन्माद होने की स्थिति में ईश्वर से मिलता था उस समय मद्यपान करना उसके लिए धार्मिक कृत होता था। पुजारी जिस समय उन्माद में होकर यानि मद्य सेवन करके समाधि लगाता था और ईश्वर के दर्शन करता था उस स्थिति को प्राप्त करने के लिए उसे मादक द्रव्य आवश्यक रूप से सेवन करने होते थे। *वात्स्यायन* प्रसिद्ध *कामसूत्र* जिसमें स्त्री के साथ संभोग करने के 64 आसनों का विवरण दिया है और कहा है कि वहीं स्त्री सर्वश्रेष्ठ है जो "मादक द्रव्यों का निर्माण करने में निपुण हो तथा उनके उपयुक्त रसों का तत्व निकाल सके एवं उन्हें रंग दे सके" ताकि "वे अपने पति को अपने वश में रख सकेंगी।" इसलिए सांस्कृतिक रूप से भारतीय मादक द्रव्यों के सेवन और मदिरा पान से विमुख नहीं थे।

आज हमें एक अन्य प्रश्न पर विचार करना होगा। क्या भारत जैसा गरीब देश मादक द्रव्य पर इतना धन व्यर्थ में खर्च कर सकता है? आशा है अब आपका एक समझदार व्यक्ति की तरह इस प्रश्न का उत्तर होगा 'नहीं'। भारत में मादक द्रव्य के दुरुपयोग का सीधा संबंध गरीबी और महिलाओं के उत्पीड़न से जुड़ा है। भारत में मनुष्य विशेषकर समाज के निम्न स्तर से संबंधित व्यक्ति सारा दिन रोटी के एक टुकड़े के लिए संघर्ष करता रहता है। अधिकतर भारतीय गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करते हैं। भारत में निर्धन व्यक्ति को गन्दी बस्तियों में बने घरों में समुचित स्वस्थ वातावरण के अभाव के कारण अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मादक द्रव्य लेने के बाद तो उसकी स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि हो जाती है। इसके अतिरिक्त नशे में धुत व्यक्ति प्रायः अपनी स्त्री को ही मारता है इससे वह कुछ संतुष्टि भी महसूस करता है। महिलाओं को मानसिक और शारीरिक रूप से तंग किया जाता है उन पर अत्याचार किए जाते हैं इसलिए घरेलू हिंसा का मूल कारण मादक द्रव्य व्यसन है।

भारत में गरीबी और मद्यपान के बीच गहरा संबंध है जो एक वास्तविक तथ्य है। गरीब आदमी के दुखों और कष्टों का मुख्य केन्द्र शराब है। प्रायः देखा जाता है कि भारत के गरीबों का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी मेहनत की कमाई को शराब पीकर नष्ट कर देता है। भारत का गरीब आदमी गन्दी बस्तियों में अपना जीवन बिताता है जहाँ पर उसकी मूल आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं होती है - जैसे कि, रोटी, कपड़ा और मकान। इस स्थिति में जब एक गरीब व्यक्ति शराब का सेवन करता है तो इस का अर्थ होता है कि वह अन्य मूल आवश्यकताओं - स्वास्थ्य और बच्चों की शिक्षा आदि के खर्च में कटौती करके शराब पीकर करता है। 1995 में पेरिस में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पेरिस में एक सम्मेलन में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के प्रो. शेखर सक्सेना ने कहा था कि "प्रत्येक गरीब आदमी शराब नहीं पीता है, परन्तु यदि वह पीता है तो वह धन भोजन और बच्चों की शिक्षा पर किए जाने वाले खर्च में कटौती करके आता है। किसी व्यक्ति द्वारा लगातार शराब का प्रयोग करने का अर्थ होता है - कुपोषण, बच्चों का विद्यालयों से निकाला जाना

और परिवार में गरीबी का अनैतिक चक्र, हिंसा एवं रोगों का आक्रमण।" प्रो. सक्सेना के बयान को भारतीय समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी के रूप में लिया जाना चाहिए। यह कथन सत्य है कि वास्तव में गरीबी से छुटकारा पाना बहुत कठिन है जब तक व्यसन से लड़ने के लिए सही आवाज़ नहीं उठाई जायेगी। इसलिए गांधीजी ने कहा है कि "छूआंछूत जैसी भयंकर प्रथा के बाद शराब की भयंकरता ही सामने आती है।"

क्या भारत में मादक द्रव्य दुरुपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए समुचित क़ानूनी व्यवस्था है? अपराधियों को क्या सज़ा दी जाती है? समूचे भारत में नशाबन्दी क्यों नहीं की जाती है? किस प्रकार से कानून को लागू करने वाले प्राधिकारी मादक द्रव्य के ग़ैर-क़ानूनी व्यापार को रोकने का प्रयास करते हैं अथवा उनकी क्या भूमिका है? इस तरह के प्रश्न हैं जिन्हें अब आप उठा सकते हैं। भारत में इस तरह के प्रतिबन्धों का अधिकार राज्यों के पास है। भारतीय अपराध संहिता मादक द्रव्य दुरुपयोग से निपटने के लिए समुचित क़ानूनी व्यवस्था है। ग़ैर-क़ानूनी शराब या अन्य मादक द्रव्यों का निर्माण, उसका अवैध व्यापार व इस प्रकार के मादक द्रव्य आदि दण्डनीय हैं जिसके साथ कैद और जुर्माना दोनों साथ-साथ हो सकते हैं। यह सब अपराध की प्रकृति और गंभीरता पर निर्भर करता है। महात्मा गांधी ने कहा है कि नशा करना अत्यन्त भयंकर है और यह गरीब आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है। परन्तु यह भी हास्यास्पद है कि अधिकतर भारतीय राज्यों में नशाबन्दी नहीं है। इसके अलावा राज्य सरकारों का शराब निर्माण और उसके वितरण पर एकाअधिकार है। यह निर्णय राज्य सरकार को लेना होगा कि राज्य में किस प्रकार की शराब का विक्रय किया जाए।

सरकार के पास नशाबन्दी न करने के लिए कुछ तर्क हैं। एक कारण तो यह बताया जाता है कि शराब से राज्य को अत्यधिक राजस्व प्राप्त होता है। शराब पर लगे कर से और शराब बिक्री के लिए दुकानों की नीलामी से सरकार को समुचित धन प्राप्त होता है। इन सब कारणों के लिए एक प्रश्न किया जा सकता है कि नशाबन्दी लागू किए जाने पर कितना राजस्व का घाटा होता है और इस वित्तीय घाटे को किस प्रकार पूरा किया जा सकता है उस धन की कितनी राशि होगी? आप इस तथ्य के बारे में जानते होंगे कि अभी पिछले दिनों में आन्ध्र प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी लागू कर दी गई थी, यह एक प्रयोग था जिसके बाद में नशाबन्दी को हटा लिया गया था। सरकार एक तर्क और भी देती है, कि जिसे वह प्रायः देती रहती है। उसका कहना है कि देश में भयंकर बेरोज़गारी है और इसलिए शराब का निर्माण, वितरण और उसके विक्रय से बहुत सारे लोगों को रोज़गार मिलता है जो अत्यन्त आवश्यक है। यदि शराब के कारखानों को एक दम बन्द कर दिया जाए तो उन लोगों का पुनर्वास कौन करेगा जो शराबबन्दी के कारण बेरोज़गार होंगे। एक सबसे बड़ा पाठ हम समय-समय पर सीखते रहते हैं कि जब खुले बाज़ार में शराब बेचने पर पाबन्दी लगा दी जाती है उस समय ग़ैर-क़ानूनी शराब का निर्माण होने लगता है और वह कभी-कभी इतनी भयंकर हो जाती है कि उससे सैंकड़ों लोगों की जाने चली जाती हैं। इस तरह की त्रासदी हर वर्ष होती रहती हैं। सभी कहते हैं और हम इसे महसूस भी करते हैं कि भारत में शराब और ड्रग्स पर अत्यधिक धन बर्बाद किया जाता है जिसका हिसाब नहीं है।

आज भारतीय युवक सभी तरह के भयंकर मादक द्रव्य के आदी हो गए हैं। गाँजे का धूम्रपान करना साधारण बात हो गई हैं तथा ब्राउन शुगर और हेरोईन यहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती है। कोकेन पहले भारत में नहीं मिलती थी किन्तु अब महानगरों में मिलने लगी है। इसलिए वह कौन-सी सबसे अच्छी नीति हो सकती है जिसका सुझाव हम भारतीय नवयुवकों को दे सकते हैं। हमारा सुझाव है कि सब लोग आत्मसंयम और सदाचार को पूरी तरह से अपनाएँ और आने वाली नई पीढ़ी को यह सिखाएँ कि वह कहें ड्रग्स का प्रयोग नहीं करेंगे।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए

1. क्या आप मादक द्रव्य के ग़ैर-क़ानूनी व्यापार के लिए सिंगापुर में दिए जाने वाले दण्डों के प्रकारों से सहमत हैं? पुष्टि के लिए कारण बताएँ।

.....

.....

.....

2. भारत में पाई जाने वाले कुछ सामान्य मादक द्रव्य की सूची बनाएँ।

.....

.....

.....

3. आप किस प्रकार से मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध लड़ेंगे? (अपना उत्तर 25 शब्दों में दीजिए।)

.....

.....

.....

4.5 सारांश

यह इकाई एक यात्रा की तरह थी, इसके माध्यम से विश्व के विभिन्न हिस्सों की स्थिति को समझने का अवसर प्राप्त हुआ है कि मादक द्रव्य कितने भयानक और ज़ोखिम भरे होते हैं। आपने यह भी अनुभव किया होगा कि विश्व का कोई भी एक हिस्सा नहीं है जहाँ पर यह सामाजिक समस्या न हो। आप यह भी समझ गए होंगे कि मादक द्रव्य पर प्रतिबंध लगाने के लिए विभिन्न देशों ने अलग-अलग उपाय किए हुए हैं। परन्तु इन सबके बावजूद मादक द्रव्यों का दुरुपयोग लगातार चल रहा है। क्या आप यह महसूस नहीं करते हैं कि भारत जैसे विकासशील देश मादक द्रव्य के दुरुपयोग के भार को सहन करने में असमर्थ हैं। इसलिए हमें चाहिए कि मादक द्रव्य के निर्माण, वितरण और इसके दुरुपयोग के विरुद्ध युद्ध स्तर पर कार्य करें जिससे इस व्यसन से विशेषकर नवयुवकों को बचाया जा सके। क्या आप यह विचार नहीं करते हैं कि इस इकाई के भाग 4.4 में प्रो. शेखर सक्सेना का कथन पाठकों का हृदय में गुंजायमान नहीं होता? हमारा विश्वास है कि जब आप इस पूरे कार्यक्रम का अध्ययन कर लेंगे तब तक आप मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार हो जाँएगे।

4.6 शब्दावली

मादक द्रव्य व्यापारियों का संगठन : मादक द्रव्य निर्माणकर्त्ता/तस्कर अपने हितों को साधने और लाभ कमाने के उद्देश्य से संगठन का निर्माण कर लेते हैं।

खर्राटे लेना : सोते समय नाक से ज़ोर-ज़ोर से सांस लेना। इससे भयंकर ध्वनि निकलती है।

विनाशक : लोगों के हितों को कमज़ोर करके उनको नष्ट या विनाश कर देना उदाहरण के लिए जिस प्रकार से सरकार गिरा देना है।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. अनेक समस्याएँ - सड़क, दुर्घटनाएँ, औद्योगिक दुर्घटनाएँ, घरों में दरारें, अकाल या समय से पहले मृत्यु, एच.आई.वी. का संचरण, यकृत शोथ-सी उनमें से ये कुछ नाम हैं। सूची में शामिल करें।
2. राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन की चिन्ताओं को दर्शाना - वे किस प्रकार से इसकी रोकथाम, इलाज़ और पुनर्वास के लिए कार्य कर रहे हैं।
3. ग़ैर-कानूनी मादक द्रव्य के व्यापार/तस्करी करने वाले समूह बहुत शक्तिशाली हैं वे सरकारों को अस्थिर कर देते हैं और आतंकवादी गतिविधियों को धन उपलब्ध कराते हैं। उनका तस्करों से निकट का संबंध होता है। इस विचारों को विस्तार से लिखें।
4. एच.आई.वी. संक्रमण और यकृत शोथ-सी - इसे विस्तार से लिखें।
4. भारत के साथ सिंगापुर के मादक द्रव्य परिदृश्य की तुलना कीजिए। पूछिए कि क्या कड़ी सज़ा देने पर मादक द्रव्य दुरुपयोग को समाप्त किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1. सिंगापुर और भारत जैसे दो देशों में मादक द्रव्य के ग़ैर-क़ानूनी व्यापार पर क़ानूनी निहितार्थ के विरोधाभासों की तुलना कीजिए। पूछिए कि किसी व्यक्तिगत सहायता से और क़ानूनी दण्डों के प्रावधानों से ड्रग्स के अवैध व्यापार पर पूरी तरह से पाबन्दी लगाई जा सकती है।
2. इस इकाई में लम्बी सूची है। यदि आप इसे बना सकते हैं तो अच्छा रहेगा।
3. कल्पना कीजिए कि आप एक सामाजिक कार्यकर्त्ता होना चाहते हैं आप अपनी कार्य योजना बताएँ।

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

BLISF-04

शराब, मादक द्रव्य और एच आई वी

खण्ड

2

मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसके परिणाम

इकाई 1

शराब, मादक द्रव्यों और यौन संचारी रोग के बीच संबंध तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता 5

इकाई 2

व्यक्ति पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणाम 17

इकाई 3

मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिवार और राष्ट्रीय विकास पर प्रभाव 31

इकाई 4

स्वापक (उपविष) औषध और मनोपरिवर्तक मादक द्रव्य अधिनियम, 1985 (एन डी पी एस एक्ट) 45

इकाई 5

मादक द्रव्यों की माँग और आपूर्ति में कमी करना 56

खंड 2 का परिचय

अब हम शराब, मादक द्रव्य और एच आई वी पाठ्यक्रम का खडं 2 आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस खंड में पाँच इकाइयाँ हैं। इस खंड की मूल विचारधारा मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसका व्यक्ति, परिवार और राष्ट्र पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है। इकाई 1 शराब, मादक द्रव्य, यौन संचारी रोग व एच आई वी में संबंध तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता से संबंधित है। यह इकाई मादक द्रव्य प्रयोग या दुरुपयोग द्वारा एस टी डी और एच आई वी जैसे रोगों को एकत्रित करने की प्रक्रिया की जाँच करती है तथा इन रोगों की रोकथाम के लिए उपायों की पहचान करने में सहायता प्रदान करती है। इकाई 2 में मादक द्रव्य दुरुपयोगों का व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन है। यह इकाई व्यसन द्वारा व्यक्ति को होने वाली शारीजिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और भावात्मक क्षति का वर्णन करती है। इकाई 3 मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिवार एवं राष्ट्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन करती है। यह इकाई हमारे स्कूलों, कार्य स्थलों और राष्ट्रको मादक द्रव्यों से मुक्त करने के महत्व का भी वर्णन करती है। इकाई 4 नारकोटिक ड्रग एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट 1985, (एन डी पी एस सक्ट, 1985) का संक्षेप में वर्णन करती है। यह इकाई एन डी पी एस अधिनियम की मुख्य शब्दावली को परिभाषित करती है, अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ बताती है तथा अधिनियम के अंतर्गत आने वाले अपराधों एवं दण्डों को अधिसूचित करती है। इकाई 5 मादक द्रव्य की माँग एवं आपूर्ति में कमी का विवरण प्रस्तुत करती है। इस इकाई में लोगों के व्यसनी बनने, व्यसन के बुरे प्रभावों, माँग में कमी की आवश्यकता और मादक पदार्थों के लिए लोगों में लालसा रोकने के लिए अपनायी जा सकने वाली पद्धतियों की चर्चा की गई है।

इस खंड में प्रस्तुत पाँच इकाइयाँ समग्र रूप से आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग का व्यक्ति, परिवार और राष्ट्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के संबंध में एक सोच प्रदान करती है। इस खंड का उद्देश्य मादक प्रदार्थ दुरुपयोग के विभिन्न स्तरों पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने में सहायता प्रदान करना है।

इकाई 1 शराब, मादक द्रव्यों और यौन संचारी रोग के बीच संबंध तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 एस टी डी, तथा एच आई वी/एड्स पर बुनियादी सूचना

1.3 शराब, मादक द्रव्य दुरुपयोग और स्वास्थ्य

1.4 महिलाएँ, एच आई वी/एड्स एवं एस टी डी

1.5 प्रजनक स्वास्थ्य एवं मादक द्रव्य

1.6 मादक द्रव्यों, यौन संचारी रोगों और एच आई वी/एड्स पर अध्ययन की प्रासंगिकता

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको एच आई वी/एड्स तथा यौन संचारी रोगों (एस टी डी) एवं उनके मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के साथ संबंधों के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह आपको वर्तमान संदर्भ में इसके महत्व के बारे में भी बेहतर समझ प्रदान करती है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- किस प्रकार यौन संचारी रोग आपस में संबंधित हैं, इसे जान सकेंगे;
- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के कारण ये रोग किस प्रकार से भंयकर हो जाते हैं, इसकी पहचान कर सकेंगे;
- किस प्रकार ये व्यक्ति की प्रजनकता को प्रभावित करते हैं, इसे समझ सकेंगे और
- इन रोगों को फैलाने से रोकने के लिए कौन से उपाय हैं, इनका विश्लेषण कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। आप पहले ही परिवर्तित व्यवहार के संबंध पढ़ चुके हैं। एच आई वी/एड्स एक यौन संचारी रोग हैं। इसके अलावा अन्य कई रोग भी यौन संचारी रोग है। इसका स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। मानव यौन क्रिया से उत्पन्न जीव है। एस टी-डी, एच आई वी/एड्स की सम्पूर्ण जानकारी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि ये घातक रोग हैं। मानव न केवल यौनिक ही नहीं है बल्कि विवेकी भी होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव के बौद्धिक कार्यों को प्रभावित करते हैं तथा यह असुरक्षित यौन व्यवहार की तरफ ले जाता है, जिसके परिणामस्वरूप यौन संचारी रोगों से सम्पर्क हो सकता है।

यह इकाई एच आई वी/एस टी डी/मादक द्रव्य परिदृश्य, उनके परस्पर संबंधों और परिणामों के बारे में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करेगी।

1.2 एस टी डी, तथा एच आई वी/एड्स पर बुनियादी सूचना

यौन संचारित रोगों को आमतौर पर एस टी डी के नाम से जाना जाता है। ये विशेष प्रकार के रोग हैं जो कि यौन क्रियाओं के माध्यम से फैलते हैं। प्रारम्भिक दिनों इसे लोग 'रतिज रोग' नाम से जानते थे। रतिज शब्द को 'वीनस' के नाम से लिया गया है जो प्रणय की देवी है। जन्मजात आतशक को छोड़ कर सभी यौन रोग यौन क्रिया के माध्यम से संचारित होते हैं। वी डी (रतिज रोग) के साथ सामाजिक कलंक लगा हुआ है, इसी लिए सन 1994 में में विश्व स्वास्थ्य संगठन नें इसका नाम बदल कर एस टी डी रख दिया है।

एस टी डी एक संक्रामक रोग है जो कि अन्य रोग से शीघ्र संचारित होता है। इसके रोगियों को अत्यन्त दीर्घ होता है तथा बहुत सारे रोगी एच आई वी/एड्स के रोगियों की तरह ही मौत के शिकार हो जाते हैं। वास्तव में हाल ही में एस टी डी की सूची में एच आई वी/एड्स नया नाम शामिल हुआ है। अभी तक बीस से अधिक एस टी डी के प्रकारों की पहचान की जा चुकी है। एस टी डी से संक्रमित किसी भी स्त्री-पुरुष के साथ यौनिक, मुख से या गुदा मैथुन करने पर आसानी से संक्रमित हो सकता है यदि रहे यौनि, शिशन, गुदा और मुँह के माध्यम से एस टी डी के कीटाणु शरीर में फैल सकते है अथवा प्रवेश कर सकते हैं।

इतिहास और उदगम

वैसे तो एस टी डी शताब्दियों से इस समाज में मौजूद थी किन्तु इसका व्यापक विस्तार 20वीं शदी के पहले दसक में हुआ है जिसके कारण उस समय में हजारों लोग इस रोग से मारे गए थे उन दिनों में एस टी डी आज के एच आई वी/एड्स की तरह ही संचारित हुई थी। आरम्भ में चिकित्सा जगत नहीं जानता था कि इस रोग पर कैसे काबू पाया जाए। यह हमेशा ही यौन क्रियाओं के माध्यम से ही फैलती रही है। इसका इलाज संभव है यदि इस की रोगी की जानकारी समय पर मिल जाए।

1942 में पेंसिलिन नामक औषधि की खोज की गई थी जो एस टी डी के इलाज में महत्व पूर्ण दवा साबित हुई थी। 1924 में ब्रुसेलस समझौते के तहत एस टी डी को एक देश से दूसरे देश अथवा एक द्वीप से दूसरे द्वीप में फैलने से रोकने के लिए नाविकों, जलयानों और समुद्री पत्तनों में काम करने वाले लोगों के लिए निशुल्क इलाज उपलब्ध कराया गया था।

विस्व स्वास्थ्य संगठन ने मानव के सब से बड़े दुश्मनों में तीन रोगों को चिन्हित किया है। ये हैं मलेरिया, क्षय और एस टी डी, अनेक देशों में एस टी डी के रोग का व्यापक सक्रमण हुआ है जिनमें 15 तथा 20 वर्ष के युवक लोग शामिल हैं। इनमें विशेषकर महिला रोगी अधिक है। इस रोग को लोग अधिकतर सामाजिक कलंक और शर्म के कारण छिपाते रहते है और इलाज नहीं करवाते हैं। यह किशारों के यौन क्रियाओं के प्रति व्यवहार में परिवर्तन के कारण विश्व में तेज़ी से फैल रहा है। कुछ देशों में 1966 और 1971 के मध्य यह रोग 17 वर्ष की आयु के लड़कों में दुगना और लड़कियों में तीन गुना के हिसाब से फैला था। 16-17 वर्ष की आयु समूह के लोगों की रिपोर्ट से पता लगा है कि यह 14-15 वर्ष के आयु समूह में आठ गुना अधिक मात्रा में यह रोग फैला है।

भारत में एस टी डी को फैलने में लिए व्यापक अवसर प्राप्त हैं। अथवा यूं कह सकते हैं कि यहाँ उसका विस्तृत खेल का मैदान है। प्रत्येक वर्ष लाखों भारतीय लोग, एस टी डी से संक्रमित होते हैं। यह इस लिए तेज़ी से फैलता है क्योंकि इसके कारण शरीर में प्रतिरक्षी का निमार्ण नहीं होता है।

सामान्य एस टी डी

आमतौर पर लोगों को जब एस टी डी होने का पता लगता है तो वे घबरा जाते हैं। सभी चिकित्सक भली-भाँति जानते हैं कि एस टी डी का इलाज संभव है। कुछ सामान्य एस टी डी निम्न प्रकार हैं:

आतशक (Syphilis)

आतशक, सबसे भयंकर एस टी डी में से एक है। अधिकतर यह रोग लैंगिक क्रियाओं के माध्यम से होता है। आतशक से पीड़ित गर्भवती महिला रोगाणुओं को जन्म से पूर्व अपने शिशु में संक्रमित कर सकती है। इस संक्रमण के फलस्वरूप शिशु जन्म के साथ ही भंयकर, मानसिक और शारीरिक बीमारियों से पीड़ित हो सकता है।

सूजाक (Genorrhea)

सूजाक आमतौर पर सबसे अधिक होने वाला एक एस टी डी है। इसकी चरम अवस्था में महिलाओं में मूत्रमार्ग, योनि ग्रीवा तथा योनि में सूजन आ जाती है। मूत्रमार्ग, गुदामार्ग तथा यौनिक मार्ग से महिलाओं के शरीर में रोगी को मूत्र त्याग के समय अत्यंत जलन और पीड़ा होती है, साथ ही मूत्र के साथ मवाद भी आने लगती है। पुरुषों में आंतरिक जनन अंगों में संक्रमण हो जाता है। ध्यान रहे कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी लक्षण सूजाक रोग के ही हों।

जनेन्द्रिय हर्पीज (Genital Herpes)

जनेन्द्रिय हर्पीज बहुत ही पीड़ादायक एस टी डी है जिसका अभी तक इलाज पता नहीं है। यह तेजी से फैलने वाला वायरल संक्रामक रोग है प्रतिवर्ष लाखों लोग इस रोग के शिकार हो जाते हैं। यह रोग प्रायः यौनिक, मुख और गुदा मैथुन के माध्यम से संचारित होता है। जनेन्द्रिय हर्पीज से पीड़ित गर्भवती महिला के पेट में पलने वाले भ्रूण संक्रमित हो सकते हैं।

क्लैमाइडियल संक्रमण (Chlamydial Infection)

क्लैमाइडियल संक्रमण, स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से संक्रमित करता है। यह महिलाओं में वांझपन पैदा कर सकता है। इसका संक्रमण यौनिक एवं मुख मैथुन के माध्यम से होता है। संक्रमित गर्भवती महिला अपने रोगाणु प्रसव के समय नवजात शिशु में संक्रमित कर सकती है।

रतिज व्रण (Chancroid)

रतिज व्रण एक एस टी डी रोग है और प्रायः वेश्याओं में पाया जाता है। साथ ही वे लोग भी संक्रमित होते है जो इनसे संबद्ध रहते हैं। यह वास्तव में यौनिक अल्सर का रोग है और एच आई वी संक्रमण के खतरे को बढ़ाता है।

एस टी डी संक्रमण और भी अनेक प्रकार के होते है। हमने केवल बहुत ही सामान्य होने वालों की चर्चा की है। इससे अधिक विवरण हमने खंड-1 में एच आई वी/एड्स पर ऐच्छिक पाठयक्रम में एस टी डी के अध्याय में विशेष चर्चा की है जिसमें आप विस्तार से विवरण प्राप्त कर सकते हैं।

एस टी डी के जोखिम वाले लोग

एस टी डी का प्रभाव सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्तर के सभी महिला-पुरुषों पर समान रूप से होता है। यह प्रायः सबसे अधिक वेश्याओं और अनेक लोगों के साथ लैंगिक क्रियाओं में लिप्त रहने वाले लोगों में होता हे। देश के विभिन्न हिस्सों में सी एस डब्ल्यू पर किए गए अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सी एस डब्ल्यू के 90 प्रतिशत लोग एच आई वी/एड्स सहित किसी न किसी एस टी डी से संक्रमित हैं। कुछ अध्ययन रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि मुम्बई के एस टी डी चिकित्सा केंद्रों में आने वाले रोगियों में से 25 प्रतिशत रोगी एच आई वी से प्रभावित पाए गए हैं। आवारा बच्चों में एस टी डी की अधिक संभावना होती है। बेसहारा गरीब बालिकाएँ जो यौन शोषण का शिकार होती हैं उनमें अल्पायु से ही एस टी डी की संभावना प्रबल होती है।

एस टी डी के भंयकर परिणाम निकलते हैं जिसमें अंधापन, बांझपन और बहुत सारे मामलों में मृत्यु होना भी शामिल है। एस टी डी के संचारण या उसके फैलने का मुख्य कारण लापरवाही होती है। लोगों को इन रोगों के लक्षणों का पता नहीं होता इसलिए वे दूसरे लोगों को भी संक्रमित करते रहते हैं। वास्तव में एस टी डी के बहुत सारे लक्षण आसानी से ज्ञात नहीं होते। इसलिए यह रोग शरीर के एक हिस्से से दूसरे हिस्सों में फैल जाता है। असंख्य लोगों द्वारा विवाहेतर लैंगिक क्रियाओं में लिप्त रहने के कारण, भारत में एच आई वी/एड्स और एस टी डी संक्रमण के तेजी से प्रसार की संभावनाएँ मैजूद हैं।

एस टी डी तथा एच आई वी/एड्स

एस टी डी तथा एच आई वी/एड्स एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि एच आई वी का संक्रमण एस टी डी का आधुनिक रूप है जो मानव को संक्रमित करता है। इन दोनों की कुछ सामान्य व समान विशेषताएँ हैं जिन्हें नीचे दिया जा रहा है:

1. दोनों ही समान जोखिम भरे व्यवहारों से संक्रमित होते हैं। एस टी डी की रोकथाम के जो उपाय हैं वे ही उपाय एच आई वी के संक्रमण पर लागू होते हैं।

2. जो व्यक्ति एस टी डी के रोग से पीड़ित है वह आसानी से एच आई वी से संक्रमित हो सकता है। एच आई वी संक्रमण उन लोगों को अधिक संक्रमित करता है जो लोग पहले जननांगों में अल्सर पैदा करने वाले जैसे आतशक, रतिज व्रण और ज्ञानेन्द्रिय हर्पीज से पीड़ित होते हैं। यदि एस टी डी संक्रमण का ठीक समय पर इलाज करा लिया जाए तो एच आई वी संक्रमण के जोखिम को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

3. एस टी डी रोग उसी तरीके से संचारित होता है जिस तरीके से एच आई वी संक्रमण होता है। वैसे तो प्राय: ये रोग लैंगिक क्रियाओं से ही संचारित होते हैं किंतु इसके अतिरिक्त भी इसके फैलने के अनेक रास्ते हैं जैसे कि रक्त चढ़ाने, उत्तक या अंगों के प्रत्यारोपण करने और संक्रमित माँ के द्वारा उसके शिशु में।

4. भारत में लोगों एच आई वी और एस टी डी से आजकल शहरों और गाँवों में समान रूप से संक्रमित हो रहे हैं।

देश में एच आई वी/एड्स अबाध रूप से फैल रहा है, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया है कि एस टी डी की रोकथाम और इनके नियंत्रण के लिए कार्यनीतियों का निर्माण किया जाए ताकि इस भंयकर रोग पर लगाम लगाई जा सके। हमारे लोगों की जो सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि दी गई है परस्पर संबंधों के लिए उससे अब बाहर आने की आवश्यकता है। हम देखते हैं कि हमारे सांस्कृतिक वातावरण में परिवार और विद्यालय में यौनिक सूचनाओं के परस्पर आदान-प्रदान करने, उस पर चर्चा करने की परंपरा नहीं है। हमें इसमें बदलाव लाकर इस विषय पर खुले रूप में चर्चा कर इसकी रोकथाम पर विचार करना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. एस टी डी क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2. एस टी डी तथा एच आई वी संक्रमण के बीच क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

1.3 शराब, मादक द्रव्य दुरुपयोग और स्वास्थ्य

स्वास्थ्य और व्यवहार पर शराब तथा मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का बुरा प्रभाव पड़ता है जो एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। ऐसे अनेक रोग हैं जो शराब और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से बहुत भयानक और गंभीर हो जाते हैं। इनमें से दो एस टी डी और एच आई वी/एड्स बहुत ही संगीन रोग हैं। शराब और मादक द्रव्य शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली पर विपरीत प्रभाव डालते हैं साथ ही यदि रोगी एच आई वी से पीड़ित है तो उस व्यक्ति के स्वास्थ्य को तेज़ी से नष्ट कर देते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्ति का व्यवहार उन लोगों के संबंधों पर बुरा प्रभाव डाल सकता है जो लोग उसकी देखभाल कर रहे हैं। भविष्य में यदि शराब और मादक पदार्थों के दुरुपयोग वाले तथा सहायता प्राप्त करने वालों का यही व्यवहार रहा तो और संसाधनों में हिस्सेदारी के लिए सहयोग न करने के कारण संस्थाएँ तथा समुदाय उनकी सहायता सीमित कर सकते हैं।

व्यक्ति के स्वास्थ्य पर शराब और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से होने वाले प्रभावों की गंभीरता निम्नलिखित में से एक अथवा अधिक कारणों पर निर्भर करती है:

- शरीरिक स्वास्थ्य की सामान्य स्थिति
- तनाव और चिंताओं को कम करने की क्षमता
- पोषण की स्थिति
- रोग का इतिहास : पूर्व और वर्तमान

वास्तव में यह सत्य है कि मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है। शराब और मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने से व्यक्ति की रोगाणुओं, वायरल या परजीवी संक्रमणों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली के क्षेत्र में अनेक वर्षों तक किए गए गहन अनुसंधानों के परिणामस्वरूप निम्नलिखित तथ्य उभर कर आए हैं:

- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से रोग अवरोधक शक्ति क्षीण हो जाती है।
- रोग प्रतिरोधी कारकों (एंटीबाडी) के निर्माण में कमी हो जाती है जो रोगों से लड़ने में सहायता करते हैं।
- उस प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को धीमा कर देते हैं जो रोगों से सफलतापूर्वक संघर्ष करती है। क्योंकि इससे प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है।

शराब, मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स

शराब की लत हो जाना एक सामान्य बात है। अभी हाल ही में हुए अध्ययनों से पता चलता है कि अमरीका में दस व्यक्तियों में से एक व्यक्ति रसायनों पर निर्भर है। इसके साथ यह भी पता चला है कि यू. एस. ए. में जहाँ सबसे पहले एड्स का पता चला विदेशी जीवन व्यतीत करने वालों की जनसंख्या में प्रत्येक 10 व्यक्तियों में से तीन व्यक्ति शराब या फिर मादक द्रव्यों के प्रयोग से पीड़ित हैं। भारत में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वालों और एच आई वी/एड्स के बीच संबंधों के वास्तविक आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

हालांकि मादक द्रव्यों की सूई लेने वाले व्यसनियों की रिपोर्ट से विदित होता है कि मादक द्रव्य और शराब का प्रयोग करने वालों में यह जोखिम बहुत ही अधिक होता है जिसके कारण एच आई वी जैसे घातक रोग का आसानी से संचारण होता है।

यह सच है कि शराब और मादक द्रव्यों के प्रयोग के कारण एच आई वी संक्रमण नहीं होता। फिर भी मन:स्थिति में परिवर्तन करने वाले मादक पदार्थ इसका सह-कारक हो सकते हैं। शराब और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का एच आई वी संक्रमण तथा एड्स के विकास के बीच संबंध होने की मुख्य चिंताएँ निम्नलिखित हैं:

1. जो लोग शराब पीते हैं या मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं वे अधिकतर जोखिम भरे वाले कार्यकलापों में व्यस्त होते हैं जिनसे एच आई वी संक्रमण होते हैं।

2. अतीत में शराब तथा मादक द्रव्यों का प्रयोग करने से कमजोर हुई प्रतिरक्षी प्रणाली के कारण ऐसे लोगों को संपर्क में आने से ही एच आई वी संक्रमण होने की संभावना रहती है।

3. जो व्यक्ति पहले से ही एच आई वी से संक्रमित है और वह लगातार शराब या मादक द्रव्यों का सेवन कर रहा है ऐसी स्थिति में उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली निरंतर और अधिक नष्ट हो सकती है।

4. जो लोग शराब का सेवन या मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं वे प्राय: असुरक्षित यौनिक क्रियाओं में लिप्त रहते हैं। इस व्यवहार के कारण उनके जोखिम में वृद्धि होती है वे एच आई वी से ग्रसित हो सकते हैं यदि वे पहले ही संक्रमित है तो एच आई वी संचालन का जोखिम बढ़ा देंगे तथा वे स्वयं भी और अधिक संक्रमित हो सकते हैं।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. किस प्रकार से मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एस टी डी तथा एच आई वी संक्रमण के जोखिम में वृद्धि करता है?

.....

.....

.....

.....

1.4 महिलाएँ, और एच आई वी/एड्स एवं एस टी डी

एच आई वी तथा एस टी डी से प्रभावित होने वाला अतिसंवेदनशील समूह महिलाओं का ही होता है। इसका प्रमुख कारण उनकी अज्ञानता है। दूसरा कारण यह है कि वे अपने इलाज के लिए एस टी डी चिकित्सा केंद्रों में नहीं जाती क्योंकि वे सामाजिक कलंक के भय से बचना चाहती है, ये अपने ही पतियों से संक्रमित होती हैं जो हो सकता है जिस-किसी से भी संभोग करते हो। ये महिलाएँ अज्ञानता तथा अस्वास्थ्यकारी स्थितियों के कारण अपनी गर्भस्थ संतान को तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों को संक्रमित कर सकती हैं।

यद्यपि कोई भी व्यक्ति एस टी डी से संक्रमित हो सकता है किंतु कुछ ऐसे समूह हैं जिनके संक्रमित होने के अधिक अवसर होते हैं। इनमें से कुछ समूह नीचे दिए गए हैं:

- वे लोग जो यात्राएँ करते हैं और प्रसन्न रहने के लिए लैंगिक क्रियाओं का सहारा लेते हैं।
- ट्रक ड्राइवर जो सी एस डब्ल्यू के साथ लैंगिक क्रियाएँ करते है।

- वे महिलाएँ जो व्यावसायिक सेक्स कर्मी हैं। (वेश्याएँ)
- देवदासियाँ (बालिकाएँ जिन्हें मंदिर में अर्पित कर दिया जाता है)
- समलैंगिक, महिला और पुरुष और उनके साझीदार।
- हिजड़े और उनके साथी जो लैंगिक क्रिया करते हैं।
- किशोर और आवारा बच्चे जो विभिन्न लोगों के साथ लैंगिक क्रियाओं में लिप्त रहते हैं।
- मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने वाले लोग जो विभिन्न लैंगिक क्रियाओं में लगे रहते हैं और उनके साझीदार।

कुछ एस टी डी रोग जैसे कि रतिज व्रण आतशक एवं ज्ञानेंद्रिय हर्पीज को सामूहिक रूप से यौनिक अल्सर रोग (Gential Ulcer Disease/GUD) के नाम से जाना जाता है। एक महिला जो पहले से ही जी यू डी से संक्रमित है और वह एच आई वी संक्रमित व्यक्ति से लैंगिक संबंध स्थापित कर लेती है। इस तरह की महिला की अपेक्षा जी यू डी से संक्रमित न हुई महिला एच आई वी से संक्रमित हो सकती है। इसी प्रकार जी यू डी से संक्रमित महिला अपने लैंगिक साथी को संक्रमित कर सकती है।

एस टी डी से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक होती हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि समस्या के गंभीर न होने तक वे इस ओर ध्यान नहीं देती तथा इलाज नहीं कराती। किसी भी तरह का घाव या स्राव महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में आसानी से दिखाई दे जाते हैं। केलव महिलाओं में आंतरिक घाव या सूजन एच आई वी संप्रेषण का बड़ा खतरा बन सकती है। महिलाओं में अनेक प्रकार के एस टी डी मौजूद होते हैं जो अपेक्षाकृत लक्षण विहीन होते हैं। इसलिए किसी भी तरह की जननिक संबंधी समस्याओं के संबंध में बहुत ही सावधान रहना चाहिए और तुरंत चिकित्सकीय सहायता लेनी चाहिए।

एस टी डी से पीड़ित महिलाओं में योनि-ग्रीवा का कैंसर भी हो सकता है। इन एस टी डी रोगों में एक है ह्युमैन पैपीलामा वायरस संक्रमण (एच पी वी)। इसके जननांगों में मस्से (गाँठ) उभर जाते हैं। एच पी वी से संक्रमित रोगी को योनि-ग्रीवा एवं जननिक कैंसर होने की संभावना बनी रहती है। किसी भी तरह के एस टी डी से संक्रमित गर्भवती महिला को सावधान रहने की आवश्यकता है। इसलिए उन्हें तुरंत ही स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता या परामर्शदाताओं से सलाह

करनी चाहिए। यह तथ्य है कि एस टी डी सहित एच आई वी संक्रमित माताओं से शिशु में जन्मपूर्व या प्रसव के समय संक्रमण हो सकता है।

1.5 प्रजनक स्वास्थ्य और मादक द्रव्य

एस टी डी तथा एच आई वी/एड्स प्रजननीय स्वास्थ्य को गंभीर हानि पहुँचाते हैं। प्रजननीय स्वास्थ्य को उन सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्थितियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो प्रजनन प्रणाली तथा कार्य प्रक्रिया से संबंध रखती हैं। यह परिवार की योजना बनाने, परिवार, परामर्श तथा एस टी डी के इलाज से भी अधिक महत्व रखता है। यह मानव की लैंगिक क्रिया में दम्पत्ति के जैविक और मानसिक घटकों के बीच संबंधों के रूप में पहचाना जाता है। इसमें लैंगिक स्वास्थ्य के अनेक पक्ष शामिल होते हैं जो निजी संबंधों को व्यापक बनाते हैं और इस प्रकार जीवन को व्यापक बनाते हैं।

मादक द्रव्य प्रजननीय स्वास्थ्य को किस प्रकार हानि पहुँचाते हैं

सभी मादक द्रव्य जिसमें शराब तथा तम्बाकू शामिल है प्रजननीय स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं. वे निम्नलिखित तरीकों से प्रजननीय स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं:

- लैंगिक कार्यप्रणाली
- जननशक्ति
- गर्भधारण
- एच आई वी/एड्स

मादक द्रव्य तथा लैंगिक कार्यप्रणाली

यह आमतौर पर भ्रम बना हुआ है कि मादक द्रव्य और शराब के नशे से लैंगिक क्रिया में शक्ति मिलती है और अत्यधिक आनंद प्राप्त होता है। परंतु चिकित्सा जगत के अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि यह एक बेबुनियाद भ्रम है। वास्तव में शराब और मादक द्रव्य सामान्य व स्वस्थ लैंगिक संबंधों को नष्ट करते हैं। मादक द्रव्यों से यौन क्रिया की इच्छा में तो वृद्धि हो सकती है किंतु ये लैंगिक कार्य क्षमता को कम करते हैं।

यह गलत धारणा कुछ सामाजिक मान्यताओं के कारण बनी है। इन अवधारणाओं को मिथकों, हास्य कथाओं, गप्पों, फिल्मों तथा विज्ञापनों ने पुष्ट किया है। यदि वास्तव में मादक द्रव्य व्यक्ति की लैंगिक क्रिया शक्ति में वृद्धि करते हैं, तो यह मानसिक होता है। प्रसन्नता और आनंद का शराब या मादक द्रव्यों से कोई संबंध नहीं है बल्कि मस्तिष्क की महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि लैंगिक क्रिया का अनुभव आनन्ददायक है या नहीं। अनुसंधान यह सिद्ध कर चुके हैं कि लैंगिक क्रियाओं को शराब और मादक द्रव्य निम्न प्रकार से प्रभावित करते हैं:

- जो व्यक्ति नशे में होता है वह प्राय: लैंगिक क्रिया अथवा संभोग करने में असमर्थ रहता है। इसे नामर्दी के नाम से जाना जाता है। उनके शारीरिक अंग में लैंगिक क्रिया पूरी करने लायक उत्तेजना नहीं आती।
- स्त्री-पुरुष दोनों को ही यह अनुभव की आशा होती है कि शराब पीने या मादक द्रव्यों के प्रयोग से प्रसन्नता और आनंद की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। लेकिन नशा सामान्यत: उन्हें सुन्न व भावशून्य कर देता है जिससे लैंगिक सुख के अनुभव में कमी आ जाती है तथा उनमें अपने साथी को आनन्दित करने की जिम्मेदारी का अनुभव नहीं होता।
- अनेक स्त्री-पुरुषों में नशे के प्रभाव के कारण एक दूसरे के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है। बात करते समय लड़खडाना, तुलतुलाना, हकलाना, मुँह से दुर्गंध आना, क्रोध जैसे कुछ प्रभावों के कारण साथी का आकर्षण समाप्त हो जाता है।

- शराब और मादक द्रव्यों का प्रभाव उसकी स्मरण शक्ति पर पड़ता है और उसे नशे की अवधि में यह याद नहीं रहता है कि क्या किया गया। अगले दिन अनेक स्त्री-पुरुष बीते दिन के कार्यों के बारे में बहुत कम याद कर पाते हैं। वे शायद अपने को छिपाने के लिए बढ़-चढ़ कर बातें करेंगे या अपनी डींग हाकेंगे।

अनेक लोग शराब और मादक द्रव्यों से अपनी गहन लैंगिक तथा संबंधों की समस्याओं को सुलझाने का उपाय मानकर उन्हें लेना आरंभ कर देते हैं। संकोची स्वभाव, घबराहट क्षमता के बारे में चिंता, अपने विचारों को दूसरों के समक्ष रखने की कमी और आत्मविश्वास न होना आदि कुछ प्रमुख समस्याएँ हैं। तथापि इन समस्याओं के समाधान के अनेक तरीके हैं तथा बिना किसी शराब या मादक द्रव्यों के भी लैंगिक क्रिया करने की शक्ति में वृद्धि की जा सकती है। इसलिए साथी के साथ प्यारे, स्नेहभरे, आदरपूर्ण संबंध बनाना प्रजननीय स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण भाग है। इससे लैंगिक कार्यप्रणाली में वृद्धि और आनंद बढ़ाने में दोनों स्त्री-पुरुष को समान लाभ प्राप्त होगा।

शराब, मादक द्रव्य और जनन क्षमता

शराब और मादक द्रव्यों-का प्रयोग करने वाली स्त्रियों में गर्भधारण कठिन हो सकता है। पुरुषों द्वारा शराब का प्रयोग करने से उनमें शुक्राणु उत्पादकता नष्ट हो सकती है। नशे के कारण पुरुषों के शुक्राणुओं की संख्या में कमी हो जाती है तथा शुक्राणुओं की गतिशीलता भी कम हो सकती है। इस तरह से जो महिलाएँ शराब पीती है या मादक द्रव्यों का प्रयोग करती हैं उनमें अंडोत्सर्जन और उनके मासिक धर्म की स्वाभाविक चक्र में गडबड़ी हो जाती है। इससे उनमें गर्भधारण करना अधिक कठिन हो जाता है।

शराब, तम्बाकू, मादक द्रव्य और गर्भावस्था

गर्भवती महिलाओं को बिना चिकित्सक की सलाह के शराब, धुम्रपान, तम्बाकू अथवा अन्य मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अनुसंधानों से ज्ञात होता है कि इन द्रव्यों का सेवन करने से अनेक भयानक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं जैसे कि गर्भपात, नवजात शिशु में विकृति और उसमें व्यसन करने जैसी संभावनाएँ बनी रहती हैं। जन्म के समय होने वाली त्रुटियाँ जैसे कि शिशु का कम वजन होना, मानसिक विकृति, शारीरिक विकृति और आंतरिक अंगों की विकृति आदि शामिल हैं। जब शराब का प्रभाव शामिल हो तो भ्रूण शराब संलक्षण (फोइटल ऊकोहल सिंडरोम एफ ए एस) अथवा भ्रूण शराब प्रभाव (फोइटल अल्कोहल इफैक्ट एफ ए ई) के नाम से जाना जाता है। गर्भावस्था में मादक द्रव्यों जैसे कि हेरोईन का प्रयोग करने वाली महिलाएँ। हो सकता है ऐसे बच्चें को जन्म दे जो शिशु हेरोईन का व्यसनी हो। ऐसे में जन्म के बाद मादक पदार्थ छोड़ने जैसे लक्षण सकते हैं जैसे कि प्रौढ़ व्यक्ति में होता है। व्यसन की आदत पर नियंत्रण पाने के लिए उन्हें जन्म के बाद शीघ्र अस्पताल में भर्ती कराने की आवश्यकता होती है ताकि उन्हें नशे से मुक्ति दिलाई जाए।

गर्भावती महिलाओं के लिए में शराब, तम्बाकू और अन्य मादक द्रव्यों के प्रयोग की कोई सुरक्षित सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। इसलिए सबसे अच्छा यही है कि गर्भावस्था में किसी प्रकार की शराब, मादक द्रव्यों का प्रयोग न किया जाए।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. किस प्रकार मादक द्रव्यों का दुरुपयोग प्रजननीय स्वास्थ्य को प्रभावित करते है?

.....

.....

.....

.....

1.6 मादक द्रव्यों, यौन संचारी रोगों और एच आई वी/एड्स पर अध्ययन की प्रासंगिकता

प्राप्त अनुभवों के परिणामस्वरूप शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति के व्यवहार और उसकी जीवनशैली में परिवर्तन आता है। शिक्षा एक सीखने की प्रक्रिया भी है जिसके माध्यम से व्यक्ति कुशल तथा बुद्धिमान बनने के लिए सूचनाओं को प्राप्त करता है।

इस संदर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गई स्वास्थ्य शिक्षा की परिभाषा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार सामान्य शिक्षा की तरह स्वास्थ्य शिक्षा भी लोगों के ज्ञान, भावनाएँ और व्यवहार में परिवर्तन से संबंधित है। इसका सर्वाधिक उपयोग यह है कि यह ऐसी स्वास्थ्य परंपरागत विकसित करने पर ध्यान देती है जो मानव में यथासंभव सर्वोत्तम स्थिति प्रदान करती है।

मानव सभ्यता को भयंकर संकट में डालने वाली दो महामारियों के संदर्भ में सबसे प्रभावी रोकथाम का उपाय है सम्पूर्ण और सटीक सूचना प्रदान करना। मादक द्रव्य दुरुपयोग, यौन संचारी रोग तथा एच आई वी एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं जानकारी के अभाव में अनेक युवा लोग इन महामारियों के शिकार हो जाते हैं।

दूसरे 1980 के माध्य दशक से मीडिया के माध्यम से युवा लोगों का संपूर्ण विश्व से संपर्क हो रहा है। निश्चय ही विद्यालयों और शैक्षिक संस्थाओं में लैंगिक क्रियाओं में निरंतर वृद्धि हो रही है। हमारी कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत युवा वर्ग है जो लगातार जीवन के तथ्यों को जानने व समझने में अनभिज्ञ है। यह वर्ग प्रयोग करने के लिए लैंगिक क्रियाओं में शामिल जाता है। अभी हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि अब छोटी आयु के किशोर भी लैंगिक क्रियाओं में अत्यधिक संख्या में शामिल रहते हैं जबकि आज से दो दशक पहले ऐसा नहीं था। यदि हम 1960 के दशक के युवाओं से तुलना करें तो आज का युवा वर्ग पहले के युवाओं की अपेक्षा अब माता-पिता के नियंत्रण में बहुत कम है। इसके अतिरिक्त पारंपरिक मूल्यों में विशेषत: लैंगिक मूल्यों में अत्यंत गिरावट आई है।

आज से 30 वर्ष पहले के किशोर की तुलना में वर्तमान का किशोर वर्ग वित्तीय स्थिति में बहुत आत्म निर्भर है। यह वित्तीय सुविधा उन्हें अधिक गतिशीलता और विभिन्न प्रकार के नए व्यवहारों का प्रयोग करने के अधिक अवसर प्रदान करती है। उनके अब नए-नए मॉडलों, खेल सितारे, फिल्म सितारे, रॉक सितारे आदि आदर्श हैं।

इन सभी संस्थाओं का सामूहिक प्रभाव यह हुआ है कि आज का किशोर पहले के किशोर की तुलना में अधिक जोखिम वाले वातावरण में रहता है। महानगरों में हाल के अध्ययनों से ज्ञात होता है कि कम आयु की किशोरियाँ अधिक मात्रा में गर्भवती हो रही हैं। अनेक बालिकाएँ अपना छिपकर गर्भपात करा लेती हैं। हाई स्कूल की अनेक छात्राएँ अप्रासंगिक लैंगिक क्रियाओं की शिकार हुई है और जोखिम भरे गर्भपात करवाने पड़े हैं। इन सब तथ्यों से यह सिद्ध होता हैं कि आकस्मिक लैंगिक क्रियाएँ अब सामान्य घटनाएँ हैं। एच आई वी/एड्स की भयंकरता में वृद्धि होने के बाद हम अप्रासंगिक लैंगिक क्रियाओं एस टी डी और मादक द्रव्य दुरुपयोग को हल्के ढंग से स्वीकार नहीं कर सकते हैं और न ही हम इनके बारे में लापरवाह हो सकते हैं।

अनेक महिलाएँ पुरुषों के जोखिम भरे व्यवहार के कारण एच आई वी/एड्स से पीड़ित हुई हैं। इस तरह से वे नवजात शिशुओं में भी इस भयानक बीमारी को संप्रेषित कर सकती है जिससे उन्हें इन अभिशाप के साथ जीना होगा। इसलिए सही और समुचित ज्ञान और समय पर उठाए गए कदमों से इसके अनुकसान को कुछ अंशों तक कम किया जा सकता है और एक अच्छे स्वस्थ समाज के निर्माण में सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

1.7 सारांश

यौन संचारी रोगों को एस टी डी कहते हैं। एड्स एक नया रोग है जो इनके साथ संबद्ध है। अधिकतर एस टी डी एड्स भी एक अत्यंत घातक रोग है। अज्ञानता, सामाजिक कलंक और शर्म

या लज्जा के कारण एस टी डी इलाज नहीं करवाया जाता। पिछले दो दशकों में एस टी डी में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एस टी डी के त्वरित प्रसार में एक सहयोगी घटक है। नशे के कारण व्यक्ति लैंगिक क्रियाओं को समुचित रूप से पूरा करने में असमर्थ होता है। महिलाएँ एस टी डी से सबसे अधिक पीड़ित होती हैं। महिलाएँ अपने इस रोग को अनजाने में अपने बच्चों में संचारित कर देती हैं। सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन के होने के कारण, एस टी डी तथा एच आई वी की,समुचित जानकारी तथा इनका मादक द्रव्यों के साथ संबंधों के ज्ञान से एक अच्छे स्वस्थ समाज की रचना की जा सकती है।

1.8 शब्दावली

संक्रामक रोग (Communicable diseases) : यह रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को लग सकता है।

परजीवी संक्रमण (Parasitic infection) : परजीवी के कारण संक्रमण अर्थात् केंचुआ संक्रमण।

जोखिम वाला व्यवहार (Risk Behaviour) : वह व्यवहार जो कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए घातक हो।

यौन संचारी रोग चिकित्सा केंद्र (STD Clinics) : एस टी डी के इलाज के लिए विशेष चिकित्सा केंद्र।

प्रतिरोधी टीका लगाना (Vaccination) : प्रतिरोधक, प्रतिरक्षा प्राप्त करने के लिए प्रतिरक्षण टीके द्वारा इलाज करना।

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वी.के. महाजन और एम.वी. गुप्ता (1992): प्रिवेंटिव एंड सोशल मेडिसिन, जे.पी. ब्रदर्स, नई दिल्ली।

टेड एडीसन (1992) : एड्स केयर गिवर्स हैंडबुक, सेंट मार्टीनर्स प्रेस, न्यूयार्क

ग्रेशियस थॉमस (1999) : प्रिवेंसन ऑफ एच आई वी/एड्स सी वी सी आई कमीशन फॉर हेल्थ, नई दिल्ली।.

थॉमस, ग्रेशियस (1997) : प्रिवेंसन ऑफ एड्स : इन सर्च ऑफ आन्सवर्स, शिपरा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. एस टी डी क्या है?

   एस टी डी का अर्थ है यौन संचारी रोग। पहले इन्हें रतिज रोग अथवा यौन रोग कहा जाता है। ये मुख्य रूप से वायरल संक्रमण द्वारा फैलते हैं। इनमें से अधिकांश का इलाज संभव है। इनमें स्वास्थ्य को विशेषकर प्रजननीय अंगों को गंभीर नुकसान हो सकता है। इनमें से कुछ महिलाओं स्थाई रूप से बांझ बना सकते हैं कुछ रोगी को पागल बना सकते हैं।

2. एस टी डी तथा एच आई वी संक्रमण के बीच क्या संबंध है?

   एस टी डी और एच आई वी/एड्स दोनों ही लैंगिक क्रियाओं के माध्यम से फैलते हैं। दोनों ही संचारी रोग हैं। दोनों के फैलने के कारण वायरल संक्रमण है। उच्च जोखिम वाले

व्यवहार के कारण कुछ लोगों को यह सरलता से प्रभावित कर देता है। इन सभी मामलों में एस टी डी और एच आई वी/एड्स संक्रमण महिलाओं में सरलता से होने की संभावना होती है। एस टी डी बहुत पुराने रोग है किंतु एच आई वी/एड्स बिल्कुल नया रोग है।

बोध प्रश्न 2

1. किस प्रकार से मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एस टी डी तथा एच आई वी संक्रमण के जोखिम में वृद्धि करता हैं?

   शराब एवं मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से तर्क संगत व्यवहार की क्षमता में कमी आ जाती है जो व्यक्ति को जोखिम वाले व्यवहारों की ओर ले जाती है। दूसरे शराब और मादक द्रव्य व्यक्ति की प्रतिरक्षा स्तर को कम कर देते हैं। तीसरे, कम प्रतिरक्षा वाला व्यक्ति संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आता है तो उस व्यक्ति के संक्रमित होने की संभावना हो जाती है।

बोध प्रश्न 3

1. किस प्रकार मादक द्रव्यों का दुरुपयोग प्रजननीय स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं?

प्रजननीय स्वास्थ्य में लैंगिक क्रिया, जननक्षमता और गर्भावस्था शामिल होती है। शराब सामान्य लैंगिक क्रिया को कमजोर करने में एक निर्णायक तत्व है क्योंकि नशे में व्यक्ति विवेक का प्रयोग नहीं कर सकता जो लैंगिक क्रिया सफल बनाते हैं वहीं पर वह अपने लैंगिक साथी को हानि भी पहुँचता है। मादक द्रव्य प्रजनन क्रिया में संबंधित अंगों की श्रेष्ठ कार्य प्रणाली को कम कर देते हैं। शराब गर्भवती महिला की रक्त वाहिनियों में प्रवेश कर गर्भ में पल रहे शिशु को भी हानि पहुंचाती है।

इकाई 2 व्यक्ति पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणाम

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 रासायनिक किस प्रकार से शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते

2.3 अंतरवैयक्तिक संबंध और मादक द्रव्य दुरुपयोग

2.4 व्यसन की स्थिति (अवस्था)

2.5 रोग के रूप में व्यसन

2.6 नकाराना

2.7 व्यसन के आर्थिक परिणाम

2.8 व्यसन और धार्मिक विश्वास

2.9 सारांश

2.10 शब्दावली

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में व्यसनकर्ता के शरीर और बुद्धि पर रसायन दुरुपयोग को प्रभावों के विषय में बताया है। इसमें यह भी स्पष्ट किया जाएगा कि मादक द्रव्य दुरुपयोग किस प्रकार समाज में अंतर वैतक्तिक व्यक्तिक संबंधों व ईश्वर के साथ संबंधों को विकृत कर देते हैं। इस इकाई में यह भी बताया जाएगा कि इससे व्यसनकर्ता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कैसे बिगड़ती है। इस इकाई का उद्देश्य है कि आपको व्यसनकर्ता के व्यावहारिक आचरण के परिवर्तन की जानकारी दी जाए। इन इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- व्यक्ति पर व्यसन से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कितनी हानि होती है। इसकी पहचान कर सकेंगे।
- व्यसनी के आचरण को कैसे समझने और उसका विश्लेपण करने में समर्थ हो सकेंगे, और
- व्यक्ति पर व्यसन के सामाजिक-अर्थिक प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

रसायन दुरुपयोग व्यक्ति की शारीरिक मानसिक और भावनात्मक स्थिति को विकृत कर देता है। ऐसा करने से व्यसनी की आर्थिक स्थिति खतरा हो जाती है और उसके सामाजिक संबंध बिगड़ जाते हैं।

व्यक्ति अपनी समस्याओं के सामाधान के लिए मादक द्रव्यों को प्रयोग करने लगता है। समस्याओं के हल की वजाए उसकी समस्याओं में वृद्धि होने लगती है। मादक द्रव्य शरीर के महत्वपूर्ण अंगों

को नष्ट करना आरंभ कर देते हैं जैसे कि जिगर, मस्तिष्क, दिल, गुर्दा आदि। इस स्थिति में वह स्वंय के लिए किसी प्रकार का उपार्जन करने में असमर्थ हो जाता है जबकि व्यसन से उसे मादक द्रव्यों को खरीदने के लिए अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है।

इस इकाई में व्यसनी की बुद्धि और शरीर पर मादक द्रव्यों को पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन किया जाएगा। मादक द्रव्य के दुरुपयोग से अधिक और सामाजिक परिणामों का भी विश्लेषण किया जाएगा।

2.2 रासायनिक किस प्रकार से शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं?

शरीर

जिज्ञासा हम सबको नई वस्तुओं को देखने सीखने का अवसर देती है। अधिकतर लोग जिज्ञासावश मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करना आरंभ करते हैं, इनमें से कुछ सौभाग्यशाली होते हैं जो मादक द्रव्यों का उपयोग बंद कर देते हैं किंतु इनमें से बहुत से लोग दुर्भाग्यवश इसके आदी बन जाते हैं। मादक द्रव्यों का दुरुपयोग आनंद लेने के लिए किया जाता है। परंतु जब लोग निरंतर व्यसन जारी रहती है तो उन्हें किसी प्रकार का आनंद प्राप्त नहीं होता अपितु यह उनकी आवश्यकता बन जाते हैं। मादक द्रव्यों का सेवन करने बाद व्यसनी को चिंताओं से कुछ राहत मिलती है। परंतु यह पदार्थ लेने वालों को भरी कीमत चुकानी पड़ती है।

आरंभ में मादक द्रव्यों का प्रयोग स्व-चिकित्सा के रूप में लेना आरंभ करते हैं, जैसे कि नींद न आना, चिंताओं को कम करने, शरीर में चुस्ती-फुर्ती लाना आदि। यदि किसी भी व्यक्ति को पहले ही यह पता लग जाए कि आगे जाकर उसे भारी कीमत चुकानी पड़ेगी तो कोई भी मादक पदार्थों का सेवन आरंभ नहीं करेगा। मादक द्रव्यों का सेवन अल्पकाल के लाभ के लिए आरंभ किया जाता है, जैसे कि अच्छे सामाजिक संबंध स्थापित करने, तनाव या दबाव से मुक्ति प्राप्त करने या ऐसे ही अन्य अनेक दीर्घकाल में शरीर के लिए सभी प्रकार के मादक द्रव्य हानिकारक सिद्ध होते हैं। मादक द्रव्य के कुछ प्रतिशत व्यसनकर्ता दीर्घकाल में मादक द्रव्य लेने के कारण आसानी से जोखिम का शिकार हो जाते हैं जबकि मादक द्रव्य न लेने वालों में प्रतिरोधक क्षमता होती है। मादक द्रव्यों के लगने वाले एक जैसे जोखिम लेकिन वास्तव में अलग-अलग मादक द्रव्यों के विभिन्न प्रकार के जोखिमों के कारण व्यसनकर्ता उनके ऐसे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कीमत को नहीं जान पाते जो उन्हें कभी भी चुकानी पड़ सकती है। अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए हमें इन हानियों वर्गीकरण करना होगा। तो भी कोई एक हानि एक व्यक्ति के लिए या दूसरे मादक द्रव्य पर अधिक लागू हो सकती है।

मादक द्रव्यों का तीक्ष्ण विषैला प्रभाव

विषैला प्रभाव का अर्थ विष है। हम लोग 'उन्माद' या नशे नामक शब्द से भली-भांति परिचित हैं। जो व्यक्ति नशा करते हैं वे नहीं चाहते हैं कि वे बेहोश हो जाएँ। वह केवल आनंद अनुभव करने के लिए ही शराब पीते हैं। परंतु उसके शरीर की प्रक्रिया पर रसायनों का जो प्रभाव होता है विशेषकर व्यक्ति के मस्तिष्क पर प्रभाव होता है उसके नियंत्रण में नहीं होता है। यही वह प्रभाव है जो नशा करने से पैदा होता है और यह उसके नियंत्रण में नहीं होता है।

स्वापक मादक द्रव्यों की अधिक मात्रा को लीजिए और व्यक्ति इनकी अत्यधिक मात्रा ले लेता है। यदि आप शामक द्रव्य को शराब में मिला कर पीते हैं तो उस स्थिति में आप मूर्च्छा में चले जाएँगे अथवा आपकी सांस पूर्ण रूप से लड़खड़ाने लगेगी। प्रत्येक मादक द्रव्य यदि अत्यधिक मात्रा में लिया गया है तो अवश्य ही वह तीक्ष्ण विषैला प्रभाव दिखाएगा। यहाँ तक कि यदि आप कॉफी का अत्यधिक मात्रा में सेवन कर लेते हैं तो निश्चित रूप से 'तीक्ष्ण कॉफी विष' बन जाएगा।

दीर्घकालीन शारीरिक जोखिम

मादक द्रव्यों का शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव रसायनों की विशेषताओं के अनुसार परिवर्तित होते हैं। खंड-1 की इकाई-2 में विभिन्न मादक द्रव्यों के दीर्घकालीन और अल्पकालिक प्रभावों की एक सूची दी गईहै। इसी इकाई में शराव के वर्णन में शराव के शारीरिक प्रभावों के वारे में आप अध्ययन करेंगे। लम्वे समय तक शराव के सेवन से हाथ-पाँवों के स्नायु तंत्र अपना कार्य करना वंद कर देते हैं, यहाँ तक की मस्तिष्क की कोशिकाओं और ज़िगर को भी नष्ट कर देते है।

लसीला या चिपचिपा पदार्थ गुर्दे को नष्ट कर सकता है और वहीं पर मस्तिष्क में कोशिकाओं की झिल्ली को भी नष्ट कर सकता है तथा कुछ प्रकार की श्वेतरक्तता को भी हानि पहुँचा सकता है। कोकेन हृदय को कमजोर कर सकती है और एम्फेटामीन कभी-कभी मस्तिष्क को स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त कर सकती है। स्वापक, कोकेन तथा एम्फाटामीन एवं शराव का लम्वे समय से सेवन करने से कुपोषण हो जाता है और परिणामस्वरूप संक्रमण और रोगों की संभावना अधिक हो जाती है। गांजा या भांग का लम्वे समय से सेवन से फेफड़े और श्वास प्रणाली क्षतिग्रस्त हो जाती है। लगातार धूम्रपान करने से फेफड़ों का कैंसर हो सकता है।

नसों में मादक द्रव्य लेने वालों को अनेक संक्रामक रोगों से पीड़ित होने की संभावनाएँ वढ़ जाती हैं, जिसके कारण शोथ अथवा हृदय आघात हो सकता है जिससे हृदय के वाल्व खराव हो सकते हैं। उन्हें एच आई वी संक्रमण का जोखिम भी हो सकता है। अधिकतर व्यसनकर्ता सूई को विसंक्रमित नहीं करते हैं और कई वार वे लोग एक ही संक्रमित सूई प्रयोग करते हैं। सूंघने या एक घूंट में पीने वाले मादक द्रव्य से भी नाक की नाजुक झिल्ली फट सकती है।

भ्रूण में शराब के संलक्षण

शराव गर्भावस्था में शिशु को गहन हानि पहुँचाती है। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि गर्भ में भ्रूण पर शराब की मात्रा, और उसके लगातार सेवन का विभिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है। विशेषकर गर्भावस्था के पहले 12 सप्ताहों में भ्रूण पर शराव के गंभीर प्रभाव पड़ते हैं। इसके वाद में शिशु के विकास में जहाँ वाधा आती है वहीं पर उसके मस्तिष्क परिपक्वता नष्ट हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप नवजात शिशु के मस्तिष्क में कमी आ जाती है माता के रक्त में शराव की अधिकता के कारण गर्भपात भी हो सकता है।

केवल शराव ही गर्भावस्था में शिशु को हानि नही पहुंचाती है अपितु धुमपान सहित अनेक मनोसंवेदी मादक द्रव्य भ्रूण संरचना में विकार पैदा कर सकते हैं। नाभिकाल (प्लेसेंटा) की रूकावटें स्वापक के लिए प्रभावशाली नहीं रहती तथा व्यसनकर्ता के वच्चों में जन्म से ही ड्रग्स लेने की ललक पैदा हो सकती है।

मस्तिष्क (बुद्धि)

सभी मादक द्रव्यों का बुरा प्रभाव होता है। परंतु सवका प्रभाव समान रूप से हानिकारक नहीं होता। अधिकतर मादक द्रव्यों का सवसे वुरा प्रभाव मस्तिष्क पर होता है। इसलिए हम न मनोसंवेदी मादक द्रव्यों पर अपना ध्यान अधिक केंद्रित करते हैं। कुछ ऐसे मादक द्रव्य हैं जो मस्तिष्क के कार्य को परिवर्तित करने में समर्थ हैं। इस भाग में हम मादक द्रव्यों द्वारा व्यक्ति में मानसिक परिवर्तन करने के विभिन्न तरीकों के संवंध में विचार करेंगे। मनोवैज्ञानिक प्रभाव केंद्रीय स्नायुतंत्र प्रणाली (सी एन एस) में विकार होने के कारण ही होता है।

केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में मस्तिष्क और संदेश नियंत्रित करने वाले स्नायु शामिल है। ये स्नायु मस्तिष्क से संदेश प्राप्त कर शरीर के दूसरे हिस्सों में इस संदेश को भेजते हैं। प्रायः सभी मादक द्रव्य केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली के कार्यों को या तो कम कर देते हैं या उसकी प्रक्रिया में और अधिक गति वढ़ा देते हैं।

मादक द्रव्य रक्त वाहिनियों के माध्यम से मस्तिष्क के केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में प्रवेश करते हैं। एक वार रक्त वाहिनी में मादक द्रव्य के पहुँचने पर वह द्रव्य पूरे शरीर में प्रवेश कर जाता है। तथापि ये केवल उसी हिस्से को प्रभावित करते हैं जहाँ ग्रहण किया जाता है। इस नियम में केवल एक ही वाधा आती है कि कुछ मादक द्रव्य रक्त की मस्तिष्क वाधाओं को पार नहीं कर पाते हैं

जो केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली की रक्षा करते हैं। केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में अधिकतर मनोसंवेदी मादक द्रव्य सूत्र युग्मन के जिम्मेदार होते हैं। क्योंकि स्वाभाविक मार्ग के लिए होती है जिसके साथ-साथ मस्तिष्क के सिग्नल चलते हैं उसकी कोशिकाओं में अंतराल होता है। प्राय: वे तब तक इस प्रतिक्षा में रुके रहती है जब तक सूत्रयुग्मन में भंडारित रासायनिक तंत्रिका संचारणों का निकास नहीं हो जाता और उन्हें जनिका मार्ग नहीं दिया जाता।

मादक द्रव्य तंत्रिका संचारण को उत्तेजित या बाधित कर सकते हैं। अथवा वे आवेग के सूत्र युग्मन को पार करने के बाद उन्हें समाप्त करने से रोक सकते हैं। उदाहरण के लिए तांत्रिका संचालन समूह, एक सिग्नल (मानो एमाइंस) प्रेषित किया जाता है तथा युग्मन अंतराल से बाहर आता है। यह आवश्यक रूप से पुन: चक्रीय क्रिया होती है। कोकेन इस प्रेषण को बाधित करती नज़र आती है जबकि सूत्र युग्मन तैरते रहते हैं तथा आवेश संदेश को पुन:प्रेषित करने के लिए प्रवाह मान रहते हैं। शरीर के पास एक तरीका होता है जिससे वह इन्जायम का निर्माण करता है जो मोनो एमाइंस का प्रतिरूप तैयार कर उन्हें समाप्त कर देता है।

अधिकांश मादक द्रव्यों से भिन्न जो सूत्र युग्मन की कार्य प्रणाली को विकृत करते हैं। शराब तंत्रिका झिल्ली के कार्य को प्रभावित करती है। यह झिल्ली को और लचीला या तरल बना देती है जिससे आवेश प्रवाह की गति कम हो जाती है। इस प्रतिक्रिया में मस्तिष्क अपने पास उपलब्ध रसायनों के माध्यम से इसका प्रतिरोध करता है और झिल्ली को कठोर बनाने का प्रयास करता है। अप्राकृतिक रूप से कठोर हुई तत्र कोशिकाओं के कारण इसके परिणामस्वरूप संयम संलक्षण (शराब के लक्षण त्याग) पैदा हो जाते हैं तथा आवेश की गति तेज हो जाती है। प्रवाह करने की प्रक्रिया आरंभ कर देती है।

मादक द्रव्य के दुरुपयोग के स्वास्थ्य संबंधी परिणाम

मादक द्रव्य स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं। स्वास्थ्य बिगड़ने की सीमा इसकी डिग्री और प्रकार प्रयोग की जाने वाले मादक द्रव्य पर निर्भर होता है जो निम्न प्रकार है:

- मादक द्रव्य के प्रकार
- मादक द्रव्यों के सेवन की अवधि
- प्रयोग करने का तरीका
- उपभोग की मात्रा
- अवैध आपूर्ति में मिलावट
- अन्य उच्च जोखिम वाले व्यवहार

फ्रीस्चर ने 1994 में अपने एक अध्ययन में बताया है पूरे विश्व में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से हर साल लगभग 2,00,000 लोगों की मृत्यु को जाती है। इस संबंध में सरकारी आँकड़ें बहुत कम संख्या दर्शाते हैं। अधिकतर देशों के पास मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से होने वाले नुकसान की सूचना एकत्रित करने के लिए समूचित साधन नहीं है।

मादक द्रव्य जैसे कि हीरोईन की अधिक मात्रा का सेवन करने से मृत्यु हो सकती है। शराब की अधिक मात्रा लेने पर मृत्यु की संभावनाएँ नहीं होती। लम्बे समय तक मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने से स्वास्थ्य को खतरा हो जाता है। अधिकतर व्यसनकर्ता जो स्वापक और उत्तेजक मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं वे अकाल मौत के ग्रास बन जाते हैं। शराब और गांजा पीने वाले अधिक लम्बी अवधि में व्यसनी बनते है, इसलिए उनमें स्वास्थ्य समस्याएँ विलम्ब से सामने आती हैं। जिन मादक द्रव्यों को मुँह से लिया जाता है उनके अधिक मात्रा में लेने की संभावनाएँ कम हैं। यदि कोई व्यक्ति अधिक मात्रा में मादक द्रव्यों का सेवन कर भी लेता है तो उसे उल्टी हो जाती है अथवा उल्टी हो जाती है जिससे विषेला प्रभाव कम हो जाता है। मादक द्रव्यों में मिलावट से गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हो जाती है। मादक द्रव्यों में मिलावट इसलिए की जाती है कि एक तो उनकी मात्रा और क्षमता में वृद्धि हो जाए। इसमें मिलावट के लिए जहरीले द्रव्यों को मिलाया

जाता हैं। गलियों में बेचे जाने वाले मादक द्रव्यों में चूहे मारने का विष डी डी टी, तथा अन्य विषैले तत्वों को मिलाया जाता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग अनेक जोखिम वाले कार्यों की ओर ले जाते हैं। मतिभ्रम से व्यक्ति को दूरी और आवाज़ की गलत अनुभूति हो सकती है। अनेक दुर्घटनाएँ मतिभ्रम के कारण होती है। मादक द्रव्यों से व्यक्ति में जोखिम भरी लैंगिक आदत पड़ जाती है जिससे वह एच आई वी संक्रमण हो सकता है।

2.3 अंतरवैयक्तिक संबंध और मादक द्रव्य दुरुपयोग

संबंध व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही तरह के होते हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का प्रभाव केवल किसी व्यक्ति पर अकेले नहीं होता है बल्कि यह सामाजिक स्तर पर भी होता है। इनसे पारिवारिक समस्याएँ भी पैदा होती हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के परिणामस्वरूप प्रमुख समस्याएँ आती हैं जैसे आर्थिक असुरक्षा, परिवार में हिंसा, समाज में हिंसा और बच्चों की उपेक्षा आदि।

परिवार घटकों और मादक द्रव्यों के बीच बहुत ही जटील संबंध होते हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग क कारण अनेक परिवार टूटते हैं यह भी तथ्य है कि टूटे हुए परिवार व्यसन के प्रमुख घटक का एक हिस्सा है।

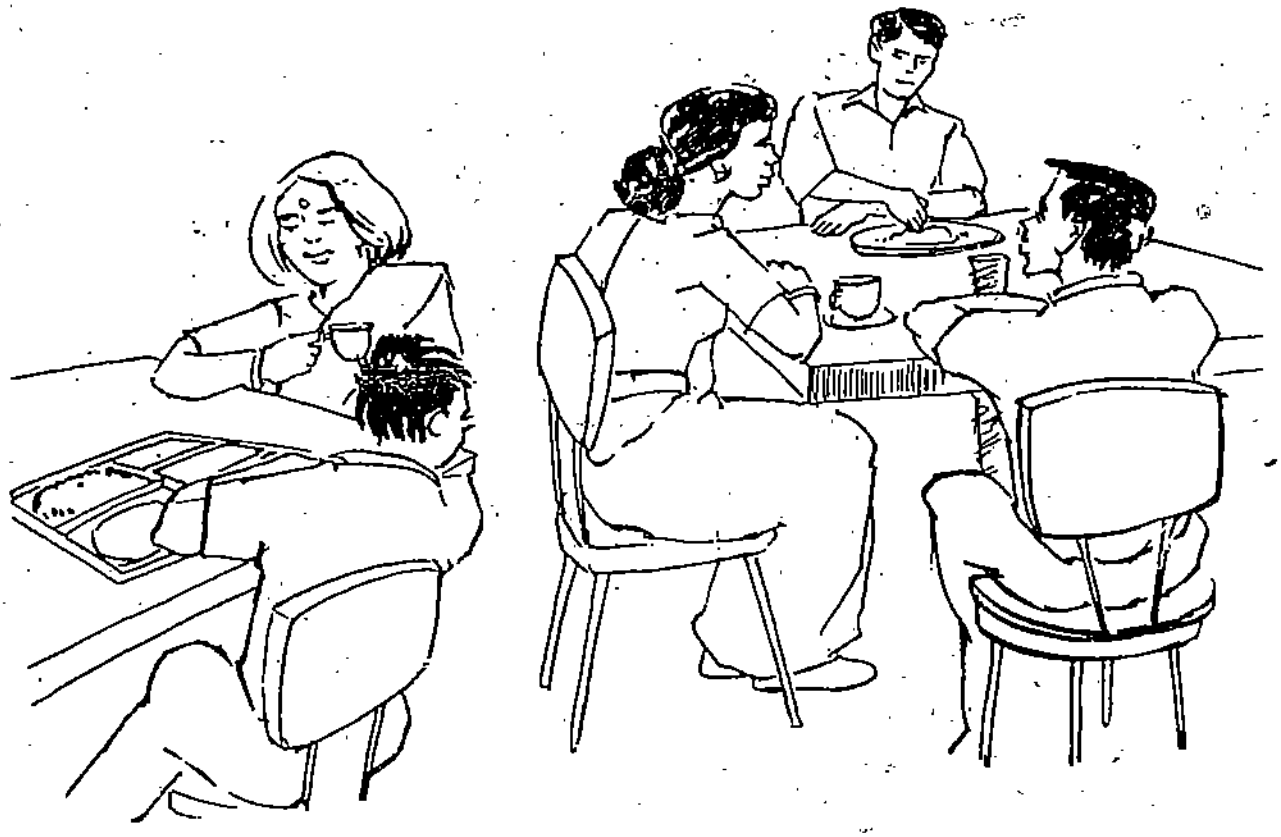

भावनात्मक चिंताओं से पीड़ित व्यक्ति, इनके समाधान के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करता है। अपनी मानसिकता के कारण व्यक्ति जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना नहीं कर पाता। अंतरवैयक्तिक संबंधों की समस्याएँ हल करने के लिए संतुलित बुद्धि की आवश्यकता होती है।

मादक द्रव्यों का प्रयोग समस्या का समाधान करने के स्थान पर समस्याओं को और जटिल बनाते हैं। व्यसनकर्ता अपनी लत को पूरी करने के लिए हमेशा अपने परिवार तथा मित्रों से अलग रहने का प्रयास करता है। इसके परिणामस्वरूप, योजनाएँ समाप्त हो जाती है। लैंगिक उपेक्षा, तर्क-वितर्क और तनाव में वृद्धि हो जाती है। संबंधियों और मित्रों से वार्तालाप समाप्त हो जाता है क्योंकि व्यसनकर्ता पीछे हट जाता है। उनमें भावनात्मकता दूरी बन जाती है। साथ ही व्यसनकर्ता

अपनी आदत में हस्तक्षेप को सहन नहीं करता। व्यसनकर्ता अविश्वसनीय बन जाता है तथा किसी भी वायदे को पूरा नहीं करता और इस प्रकार उसके प्रति अविश्वास पैदा हो जाता है। और जब अविश्वास पैदा हो जाता है तो वहाँ पर कोई संबंध नहीं बनता।

इस अवस्था में व्यसनकर्ता को दूसरों से भावनात्मक सहारे की आवश्यकता होती है। इसे प्राप्त करने के लिए वह चालाकी, झूठ और धोखे का सहारा लेता है। यद्यपि उसे सामाजिक भावनात्मक संबंधों की आवश्यकता महसूस होती है तो भी उसका महत्वपूर्ण संबंध अपने मनपसंद मादक द्रव्य प्राप्त करने की होती है चाहे वह शराब हो अथवा कोई अन्य मादक द्रव्य। वह व्यर्थ में ही अपने संबंधों का वास्तविकताओं के विपरीत संयोजित करने का प्रयास करता है। ये विपरीत अवस्थाएँ हैं एक ओर मादक द्रव्य है और दूसरी ओर परिवार/मित्रगण। वह इनमें से किसी को भी छोड़ नहीं सकता, परंतु उसकी पंसद मादक रसायन ही होते हैं और रसायनों को प्राप्त करने के लिए ही संबंधों को धोखा देता है। वह स्वयं को मादक द्रव्यों और टूटते रिश्तों के बीच फंसा हुआ पाता है तो वह अपने व्यसन के लिए उन लोगों को दोष देता है जो उसके संबंधी होते हैं। यह जानना महत्वपूर्ण है कि सुधार कार्यक्रम में वह अपने संबंधों को धोखा देने का प्रयास करता है तथा अपने व्यसन व्यवहार को बनाए रखने में उनको साधन बनाने का भी प्रयास करता है।

मनोवैज्ञानिक परिवर्तन

मादक द्रव्यों का प्रयोग इसलिए किया जाता है कि प्रयोग करने वाला व्यक्ति अपने आपको अच्छा महसूस करे। आरंभ में व्यक्ति को अच्छा महसूस भी होता हैं। उसमें आत्मविश्वास आ जाता है तथा वह स्वयं को चिंताओं और तनाव से मुक्त पाता है। लगातार मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हुए वह एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ वह सामान्य रहने के लिए ही मादक द्रव्यों को प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति को मादक द्रव्य कोई आनंद नहीं देते। इस समय वह ऐसे बिंदु पर होता है कि पीड़ा को कम करने के लिए उसे मादक द्रव्य लेने पड़ते हैं। यही वह स्थिति जिसे मादक द्रव्यों का प्रयोग न करने वाले लोग गलत समझते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि व्यसनकर्ता मादक द्रव्यों का प्रयोग मौज-मस्ती के लिए प्रयोग कर रहा है परंतु सत्यता यह है कि मादक द्रव्य उसे कुछ आनंद नहीं देते। वह मादक द्रव्यों को लेने के लिए इसलिए बाध्य है कि वह इन्हें छोड़ नहीं सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग भावनात्मक मुद्दा भी है। एक व्यक्ति व्यसनी होने से पूर्व वह भावनात्मक मुद्दों को समझने व समाधान करने में असमर्थ होता है। अब मादक द्रव्यों के प्रयोग से उसकी मनःस्थिति बदलने लगती है तथा उसका व्यक्तित्व बदल जाता है। वह विवश होकर अपराध भावना, हीनता, क्रोध और अलगाव से संघर्ष करता है। व्यसन की अंतिम अवस्था में पहुँचने के बाद वह भाव शून्य हो जाता है और अपने चारों ओर के परिवेश से विरक्त हो जाता है।

मादक द्रव्य केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करता है। यह उसके विवेक और तर्क संगत कार्य प्रणाली को प्रभावित करता है। मादक द्रव्यों का लगातार प्रयोग करने से उसकी की छवि विकृत हो जाती है। अपने अस्तित्व के उद्देश्य की कमी का अनुभव तथा अपने चारों ओर वास्तविकता को समझने के विभ्रम में वृद्धि होने लगती है।

आरंभ में व्यसनकर्ता अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करता हैं, किंतु वही अब उसकी समस्याएँ बन जाती है। परंतु वह उन्हें समझने में सक्षम नहीं होता।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है?

.....

.....

2.4 व्यसन की स्थिति (अवस्था)

व्यसन एक रोग है। यह रोग बढ़ता जाता है। जब तक व्यक्ति इसके वश में नहीं हो जाता है या उसका का अंत नहीं होता यह विभिन्न स्तरों से गुजरता है। व्यसनकर्ता के व्यसन में वृद्धि होने की निम्नलिखित अवस्थाओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

प्रारंभिक स्थिति

- मादक द्रव्य की ली गई मात्रा तथा ली गई खुराकों में वृद्धि हो जाती है। मादक द्रव्य लेते हुए काफी समय व्यतीत होने के बाद और अधिक रसायनों की इच्छा पैदा होते है।
- व्यसनकर्ता के विचार हमेशा मादक द्रव्य के संबंध में होते हैं। वह हमेशा मादक द्रव्य के बारे में विचार करता है, उनकी बात करता है, तथा मादक द्रव्यों की उपलब्धि के उपायों की खोज करता है ताकि मादक द्रव्य की आपूर्ति बनी रहे।
- अपनी मादक द्रव्य की लत को बनाए रखने के लिए जीवन की सभी स्थितियों में परिवर्तन करता है। वह अपने मादक द्रव्यों के अलावा सभी खर्चों में कटौती करेगा ताकि मादक द्रव्य प्राप्त करने के लिए समुचित धन हो।
- मादक द्रव्यों के सेवन को तर्कसंगत बताएगा। वह अनजाने में स्वयं को तथा दूसरों को विश्वास दिलाने का प्रयास करेगा कि मादक द्रव्य हानिकारक नहीं होते। सभी मादक द्रव्यों को प्रयोग में खतरे से बचने की चेतावनी को गलत मानता है और उसे तथ्यों पर आधारित नहीं मानता।

मध्य स्थिति

- मादक द्रव्य लेने के लिए उसकी सहन शक्ति में वृद्धि हो जाती है। व्यसनकर्ता उसी मादक द्रव्य को और अधिक लेना आरंभ करता है क्योंकि उसको अब पहले वाली कम मात्रा से उसकी इच्छा पूरी नहीं होती।
- व्यसनकर्ता समय और प्रयुक्त मादक द्रव्य की मात्रा नियंत्रित करने में असमर्थ हो जाता है। इस स्थिति से पहले ही वह व्यसनी हो चुका होता है। इससे पहले जब आवश्यकता होती थी वह मादक द्रव्य लेने से परहेज कर लेता था: उदाहरण के लिए परीक्षा के समय वह परहेज कर लेता था।
- सामान्य रहने के लिए उसे मादक द्रव्य लेने की आवश्यकता पड़ती है। यदि वह मादक द्रव्य का सेवन रोकता है तो परित्याग के लक्षणों से उसे भय लगता है। वह मादक द्रव्यों को कई अवसरों पर न लेने के लिए प्रयास करता है किंतु वह ऐसा निरंतर करने में असमर्थ रहता है।
- एक मादक द्रव्य के स्थान पर दूसरा मादक द्रव्य का प्रयोग करता है। एक शराब पीने वाला व्यक्ति बीयर के स्थान पर विहस्की या हेरोईन के स्थान पर पीड़ानाशक ड्रग का प्रयोग करने लगता है।
- आपूर्ति बनाए रखते के लिए मादक द्रव्यों को छिपाकर रखता है क्योंकि उसके बिना उसके जीवन को खतरा हो सकता है।
- कार्यस्थल पर समस्याएँ आने लगती हैं और स्कूल इसका प्रमाण है। इसका कारण कार्य नहीं न होना या उपस्थिति कम होना है।
- अपनी स्वच्छता का ध्यान न रखा जाना। कम भोजन करने और कम संवरने की आदत अपराध भावना, शर्म और चिंताओं में वृद्धि।
- व्यक्तित्व में स्पष्ट परिवर्तन। चिड़चिड़ा और अलग रहने में वृद्धि।
- पारिवारिक संबंधों में गड़बड़ी आना। पिता, पति आदि की जिम्मेदारियों को न निभाना और व्यसनकर्ता का पूर्ण रूप से अविश्वासी बन जाता है।

- भावनात्मक समस्याओं के हल के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करता है। जब वह प्रसन्न होगा तो मादक रसायन लेगा और जब दुखी होगा उस समय भी मादक रसायनों का प्रयोग करेगा।
- इस स्थिति में व्यसनकर्ता का जीवन केवल मादक रसायन के चारों ओर ही घूमता है।

उच्चतम स्थिति

- इस स्थिति में मादक द्रव्य पर नियंत्रण का पूरी तरह अभाव हो जाता है। यद्यपि अब उसे मादक द्रव्य लेने में कम से कम आनंद आता है तो भी वह लगातार इसका प्रयोग करता रहता है क्योंकि उसे परित्याग के लक्षणों का भय होता है।
- स्थान परिवर्तन, मादक द्रव्य और प्रयोग करने के तरीकों में परिवर्तन करके समस्या से बचना चाहता है। परंतु उसके ये सब प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं।
- व्यसनकर्ता पूर्ण रूप से अपने जीवन के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। वह भोजन भी इसलिए करता है कि उसके निकट संबंधियों का उस पर दबाव होता है।
- समाज से अलग-थलग रहने की आदत में वृद्धि हो जाती है। वह समाज से बिल्कूल कट जाता है तथा उन लोगों के साथ रहता है जो मादक द्रव्यों का प्रयोग करते है।
- यदि समय पर व्यसनकर्ता का इलाज न किया गया तो निश्चित रूप से उसकी असमय मृत्यु हो जाती है।

2.5 रोग के रूप में व्यसन

इस इकाई का यह महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस इकाई के आरंभ में तथा अन्य इकाईयों में आपने पढ़ा होगा कि व्यसन एक रोग है। इस भाग में यह स्पष्ट किया जाएगा कि व्यसन क्यों और कैसे एक रोग है।

वर्ष 1956 में एक गहन अनुसंधान के बाद अमरीकी मेडीकल एसोसिएशन ने निष्कर्ष निकाला कि व्यसन एक रोग है। चिकित्सीय भाषा निम्नलिखित चीज़ों के होने पर रोग माना जाता है:

प्रतिनिधि (An Agent) : वह जो रोग का कारण बनता है।

मेजबान (The Host) : जब कारण प्रतिनिधि दूसरे के संपर्क में आता है तो कुछ घटित होता है।

वातावरण (The Environment) : वह हालात जिसके कारण प्रतिनिधि मेजबान के संपर्क में आता है।

संलक्षण (The Syndrome) : कुछ ऐसे चिह्न दिखाई देते है जिनसे साबित होता है कि प्रतिनिधि मेजबान के संपर्क में आया है।

व्यसन के मामले में रसायन प्रतिनिधि है तथा उसका मेजबान रसायन का प्रयोग करने वाला वह व्यक्ति है। वातावरण वह व्यक्तित्व है जिसका पहले से ही इसकी और झुकाव या प्रवत्ति बनी हुई है। संलक्षण स्पष्ट रूप से व्यसनकर्ता के शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं।

रोग की संकल्पना : रोग की संकल्पना व्यक्ति के नियत्रंण से परे तथ्यों के कारण अनिच्छा से रसायनों पर निर्भरता की होती है। कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्यों को व्यसनाकर्ता बनने के लिए सेवन नहीं करता। इसके अतिरिक्त वे हृदय से मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं करना चाहते हैं फिर भी करने को बाध्य हैं। इस तरह से वे व्यसनकर्ता बन जाते हैं।

कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो बिना किसी शारीरिक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जीवन को हानि पहुँचाएँ मन:स्थिति परिवर्तन करने वाले रसायनों का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं। यह रोग रासायन लेने के कारण होता है जैसे कि किसी रोगी को मलेरिया हो

जाए और वह ठंड से कांपने लगे। कपकपाना बंद करना चाहता है किंतु वह ऐसा नहीं कर सकता। यह उसके नियंत्रण में नहीं होता। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति एक बार व्यसनकर्ता बन जाता है वह रसायन लेना नहीं छोड़ सकता। यद्यपि व्यसन रोग की परिभाषा में पूरी तरह से सटीक नहीं आता है तो भी इसमें रोग की कुछ विशेषताएँ अवश्य मौजूद है। वे हैं :

- यह एक बुनियादी रोग है। व्यसन मनोवैज्ञानिक अस्वस्थता का कोई लक्षण नहीं है। व्यसन मानसिक, भावुकता और शारीरिक समस्या का कारण है। इससे परहेज़ में सफलता मिल जाए तो इसका समाधान हो सकता है। यह मादक द्रव्य है जो समस्या का कारण है समस्या मादक द्रव्यों को लेने कारण नहीं है। व्यसन एक वास्तविक रोग है, तथा दूसरे रोग के लक्षण नहीं हैं।

- यह स्थायी रोग है इसका इलाज संभव नहीं हैं, फिर भी मधुमेह की तरह इसका उपचार किया जा सकता है और इस पर नियंत्रण किया जा सकता है। मधुमेह रोग में मुख्य रूप से चीनी समस्या मुख्य कारण होता है, इसी तरह मादक द्रव्य दुरुपयोग में रसायन समस्या का मुख्य कारण होता है।

- यह निरंतर बढ़ने वाला रोग है। यदि इसका समय पर इलाज नहीं कराया जाए तो यह रोग इतना बढ़ जाता है स्थिति गंभीर से गंभीरता होती जाती है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि इसमें सुधार हो रहा है किंतु कुछ समय के पश्चात् यह रोग भंयकर रूप ले लेता है।

- यह एक अंतिम सीमा तक जाने वाला रोग है। यदि इसका इलाज न कराया जाए तो व्यसनकर्ता मर जाता है। हो सकता है कि व्यसनकर्ता की किसी दुर्घटना या ज़िगर के निष्क्रिय हो जाने से मृत्यु हो। परंतु इतना तो सत्य है कि उसकी मृत्यु का कारण केवल मादक द्रव्य ही होता है।

व्यसन को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि व्यसनकर्ता यह जानता है कि मादक द्रव्य उसके लिए हानिकारक है, इसके बावजूद वह न चाहते हुए भी मादक द्रव्यों के सेवन पर नियंत्रण नहीं कर पाता। व्यसन को रोग माना जा सकता है क्योंकि व्यसनकर्ता उसके द्वारा सेवन किए जाने वाले मादक द्रव्य के सेवन पर कोई नियंत्रण नहीं होता।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. व्यसन को रोग के रूप में परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2.6 नकारना

उपर्युक्त कारणों के सम्मिश्रण से व्यसन हो सकता है। परंतु व्यसन के पैदा होने की भूमि नकारना है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो अचेतन स्तर पर पैदा होती है जिसमें व्यक्ति एक भ्रम को इस विश्वास के साथ पाल लेता है कि वह उसे वास्तविक समझने लगता है। उसकी सोच में होने वाले परिवर्तन का उसे ज्ञान नहीं होता। चिर परिचित उदाहरण यहाँ दिया जा सकता है। मान लीजिए किसी व्यक्ति के प्रियजन की मृत्यु का उसे पता लगे लेकिन किसी न किसी प्रकार वह सोचता है कि यह सत्य नहीं है।

व्यसनकर्ता अपनी समस्या को क्यों नकारता है?

मादक द्रव्य व्यक्ति को कुछ अच्छा अनुभव करने में तथा जीवन की उन वास्तविकताओं से पलायन करने में सहायता करते हैं जो कभी-कभी अप्रिय होती है। दूसरी ओर मादक द्रव्य की आदत शारीरिक और भावनात्मक समस्याओं का कारण बनती है। इस स्थिति में उसके समक्ष दो विकल्प आते हैं, या तो वह मादक द्रव्य की लत का त्याग करे या जीवन की वास्तविकता का सामना करे। दोनों ही विकल्प ही पीड़ादायक हैं। इसलिए वह मादक द्रव्य लेना पसंद करता और जीवन की वास्तविकताओं को नकार देता है। यह उसी तरह है मानों उसके समक्ष मित्र मृत पड़ा है और वह इसे स्वीकार नहीं करता। मस्तिष्क की अपनी सुरक्षा प्रणाली होती है जिससे वह दवाव में आने से अपनी रक्षा करता है। व्यसनकर्ता मादक द्रव्य का सेवन बंद में असमर्थ होता है क्योंकि वह उसके जीवन की बहुत महत्वपूर्ण वस्तु बन जाती है।

नकारने का मुख्य कार्य यह है कि व्यक्ति किसी भी स्थिति में मादक द्रव्यों के प्रयोग में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने देना चाहता। व्यसनकर्ता कभी भी समस्याओं का सामना नहीं करना चाहता चाहे वे व्यसन से उत्पन्न हुई हो क्योंकि यदि वह उन्हें समस्या मानेगा। देखना-सुनना नहीं चाहेगा जो उसने पैदा की है या हो गई है। तो उसे निश्चित रूप मे उनके लिए कुछ करना होगा। एक बार व्यसन आरंभ करने के बाद वह इस प्रकार के विचार सहन नहीं करता। इससे उसकी भ्रम पालने में सहायता मिलती है कि सब कुछ ठीक-ठाक है और अपनी गलती, शर्म और आरोपों से अपना बचाव करता है जो व्यसन के साथ जुड़े होने हैं।

जैसे जैसे व्यसन बढ़ता रहता है, इसे रोकना असंभव हो जाता है। जीवन की वास्तविकताएँ उसे अधिक भयंकर दिखाई देने लगती है :

- व्यसन के साथ नैतिकता का कलंक लगा होता है, इसलिए वह नकारने के लिए आधार प्रस्तुत करता है।
- व्यसन के परिणामों को परिवार और मित्रगण अपने व्यवहार से पर्दा डालने या छिपाने का प्रयास करते हैं जिससे व्यसनकर्ता को नकारने के लिए समुचित वातावरण उपलब्ध होता है जिससे व्यसनी का उत्साह बढ़ता है।
- व्यक्ति की यह प्रवृत्ति होती है कि आंतरिक कलह को किसी तरह से टाला जाए। यह अप्रिय वास्तविकताओं के नकारने के लिए साहस पैदा करता है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. नकार क्या है? यह किस प्रकार से व्यसन को बढ़ावा देता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.7 व्यसन के आर्थिक परिणाम

मादक द्रव्यों के व्यापक दुरुपयोग से विश्व के राष्ट्रों और लोगों पर अत्यधिक आर्थिक भार पड़ता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के आर्थिक दुष्परिणाम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह के हो सकते हैं। व्यक्ति और संपूर्ण समाज भी इन आर्थिक दुष्परिणामों का शिकार होता है।

व्यक्तिगत पर प्रत्यक्ष दुष्परिणाम

मादक द्रव्य महंगे होते हैं। मादक द्रव्यों की लत को बनाए रखने की प्रतिदिन की लागत व्यक्ति द्वारा उपभोग किए जाने वाले द्रव्य के प्रकार पर निर्भर करती है। इसलिए यह संभव नहीं है कि व्यय किए गए धन का सही आकलन किया जाए। कुछ व्यसनकर्ताओं के अपने स्रोत होते हैं। दूसरे लोग अपने परिवार अथवा संबंधों पर निर्भर करते हैं। सभी मामलों में, व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकताओं को छोड़कर सारा धन अपनी लत को बरकरार रखने में व्यय कर देता है। देखा गया है कि बेरोज़गार लोग मादक द्रव्यों का अधिक प्रयोग करते हैं। मादक द्रव्यों के प्रयोग से उत्पादकता में कमी, अनुपस्थिति, रोग एवं दुर्घटनाएं होती हैं। इन सबसे आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। मादक द्रव्य की लत से एक व्यक्ति समाज का एक उत्पादक सदस्य कम हो जाता है। इसके बदले वह केवल उपभोग करने वाला ही बनकर रह जाता है।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के अप्रत्यक्ष दुष्परिणाम

मादक द्रव्यों दुरुपयोग के प्रत्यक्ष दुष्परिणामों से अधिक परिणाम होते हैं। व्यसनकर्ता के इलाज और उसकी देखभाल पर व्यय का अत्यधिक भार सीधे परिवार पर पड़ता है। अधिकतर व्यसनकर्ता चिरकालिक रोगों से पीड़ित हो जाते हैं जिन्हें लगातार इलाज की आवश्यकता पड़ती है। स्वयं व्यसन का इलाज भी जीवन भर तक चल सकता है।

व्यसन के कारण अनेक दुर्घटनाएँ होती हैं। इसे भी आप स्वास्थ्य देखभाल व्यय के रूप में भी देख सकते हैं। परिवार की लापरवाही और कुप्रबंध के कारण व्यसनकर्ता के परिवार वालों को भी अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। आमतौर पर यह भी देखा गया है कि व्यसनकर्ता के माता-पिता एवं जीवन साथी भी बीमार हो जाते हैं। उनका इलाज भी परिवार पर अत्यधिक आर्थिक भार डालता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और अपराध दोनों का निकट संबंध है। जब हम समस्या के इस पक्ष को समझ लेते हैं तो मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो जाती है। यदि हम उसे आर्थिक समस्या मान लें तो इसकी लागत की गणना असंभव है।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. व्यसन के आर्थिक दुष्परिणाम क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 व्यसन और धार्मिक विश्वास

प्राचीन काल से ही किसी प्रकार के धार्मिक विश्वास मानवता के अभिन्न अंग रहे हैं। यह देखा गया है कि धार्मिक विश्वास का व्यसन एवं इलाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस संबंध में आपको इलाज भाग में और अधिक पढ़ने को मिलेगा। फिर भी यहा पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में धार्मिक की कुछ विशेषताओं से अवगत करना महत्वपूर्ण होगा।

हम पहले ही देख चुके हैं कि व्यसनकर्ता अपनी वास्तविकता पर नियंत्रण करना चाहता है जो कि वह करने में असमर्थ होता है। रसायनों से उसे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि वह अप्रिय वास्वतिकता को नियंत्रण कर सकता है। धार्मिक विश्वास उसे आभास कराता है कि कोई एक शक्ति है जो प्रत्येक वस्तु को निर्देशित करती है इसलिए उस शक्ति के समक्ष समर्पण कर देने उसे व्यक्ति को शांति और खुशियाँ प्राप्त होती है। व्यसन और धार्मिक विश्वास एक दूसरे के अनुरूप है।

व्यसनकर्ता की एक विशेषता है अपना अलग दृष्टिकोण रखना। कुछ इलाज कार्यक्रमों में इसे 'ईश्वर का खेल' माना जाता है। परंतु व्यसनकर्ता दूसरे ढंग से सोचता है। उसकी अपनी विशिष्ट इच्छा होती है। जब व्यसनकर्ता बड़ा हो जाता है तो वह समझने लगता है। कि यद्यपि वह प्रौढ़ है किंतु उसे अन्य लोगों के विचारों और सोच के साथ जुड़ना चाहिए। जो व्यक्ति ईश्वर में अत्यधिक आस्था रखते हैं वे इस मज़बूरी को आसानी से स्वीकार कर लेते है। कुछ लोग इसे ईश्वर के विधि-विधान के रूप में या अपने 'कर्मों' का फल मान कर स्वीकार कर लेते हैं। व्यसनकर्ता इस तरह के किसी भी विश्वास का विरोधी होता हैं जब वास्तविकता का दबाव बहुत ही सशक्त होता है तो उसके इसमें मादक द्रव्यों की सहायता से परिवर्तन करने के अतिरिक्त अन्य स्रोत नहीं होता है। इससे उसे अस्थाई रूप से नियंत्रण की भावना का अनुभव होता है।

2.9 सारांश

इस इकाई में आपने मादक द्रव्यों दुरुपयोग के विभिन्न शारीरिक, मानसिक और आर्थिक प्रभावों के बारे में पढ़ा है। मादक द्रव्य शरीर पर विशेषकर केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं और उसके कार्यों में परिवर्तन कर देते है। मादक द्रव्य शरीर के अन्य भागों पर भी दुष्प्रभाव डालते हैं। मादक द्रव्य व्यसनकर्ता के व्यक्तित्व को उसके आचरण और व्यवहार से परिवर्तित कर देते है।

मादक द्रव्य व्यसनकर्ता के सामाजिक संबंधों को नुकसान पहुँचाते हैं। व्यसन विभिन्न स्तरों से गुजरता है जिन्हें आसानी से अलग किया जा सकता है। व्यसन एक रोग है जो रसायन उपभोग की विवशता के कारण पैदा होता है। रसायनों का प्रयोग करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए, यह निर्णय करना व्यसनकर्ता के नियंत्रण से बाहर होता है। इसलिए इसे रोग की संज्ञा दी गई हैं। व्यसनकर्ता विवश आचरण से पीड़ित होता है जिसे हम नकारना कहते हैं। व्यसनकर्ता का धर्म और ईश्वर में विश्वास भिन्न प्रकार का होता है। यद्यपि वह धार्मिक संस्कारों को आजमा सकता है, क्योंकि वास्तव में वह अपने जीवन पर नियंत्रण करना चाहता है धार्मिक व्यक्ति इसे ईश्वर की देन के रूप में देखता है।

2.10 शब्दावली

कैफ़ीन : एक उत्तेजक रसायन है जो चाय की पत्तियों और कॉफी की फलियों में उपलब्ध होता है।

के.त.प्र. (सी एन एस) : केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली मस्तिष्क और तंत्रिकाओं स संबद्ध होती है और शरीर के अंगों में संप्रेषण करती है।

भ्रूण : पैदा होने से पूर्व का शिशु, यह गर्भ में आठ या इससे अधिक सप्ताहों की अवधि का होता है।

नाक से सूंघने वाला : पेट्रोल और समरूप खनिज आदि को सांस से खींचना।

प्रतिरक्षी : रोगाणु वायरस इत्यादि के आक्रमण से मुक्त।

अंतर्बाध : अपने मनोभाव या संवेदना को प्रस्तुत करने में असमर्थ।

दीर्घकालीन जोखिम	:	लम्बे समय के बाद दिखाई देने वाला परिणाम।
श्वेत रक्तता (ल्यूकीमिया)	:	एक प्रकार का रक्त कैंसर।
अधिक खुराक	:	मादक द्रव्यों की अधिक मात्रा जो मृत्यु का कारण हो सकती है।
तंत्रिका संचार	:	तंत्रिका वाहिनी से निकलने वाला रसायन तत्व जो वाहिनी में आवेश को दूसरी तंत्रिका में संप्रेषित करता है।
नाभिनाल (प्लेसेंटा)	:	एक समतल गोल शारीरिक अंग जो गर्भाशय में गर्भ झिल्ली ढकता है और भ्रूण को पोषण पहुंचाता है।
ग्रहण करने वाला	:	एक अंग जो बाहरी उत्तेजना की प्रति क्रिया करने में उत्तर देने में समक्ष हो।
सूत्र युग्मन	:	दो तंत्रिका कोशिकाओं के मध्य का स्थान।

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर्नाल्ड वास्टन एंड डोना वॉउंडी (1989): विल पॉवर इज नाट एनफ हार्पर पेरीनियल, न्यूयार्क।

डेनिस ई पोपलीन स्कॉट (1978): सोशल प्राब्लम्स, फोरस्मेन एंड कं. इलीनॉइज।

यू एन डी सी पी (1999): ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट रीजनल ऑफिस, नई दिल्ली।

टी टी के फाउंडेशन (1989): एल्कोलिज्म एंड ड्रग डिपेंडेंसी, चेन्नई।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है?

मादक द्रव्य दुरुपयोग एक मानसिक समस्या भी है। मनोवैज्ञानिक प्रभावों का मुख्य रूप से व्यावहारिक परिवर्तनों के माध्यम से जाना जाता है। व्यसन में व्यक्ति अपने महत्व को कम मानता है। इसका आरंभ अपनी प्रतिष्ठा, शर्म, गलती और चिड़चिड़ेपन से पीड़ित होने से होता है। यह विरोध करने, नकारने और अस्थिरचित वृत्ति के द्वारा किया जाता है। व्यसन व्यक्ति को चिंताओं ग्लानि से भी पीडित करता है। हम देख सकते हैं कि व्यसनकर्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में परिवर्तन हो जाता है। वह बिना रसायनों के जीवन की भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है।

बोध प्रश्न 2

1. रोग के रूप में व्यसन को परिभाषित कीजिए।

चिकित्सीय शब्दावली में रोग की चार शर्तें होती हैं। प्रतिनिधि, मेजबान, वातावरण, और संलक्षण। व्यसनकर्ता में रसायन व्यसन रोग का कारण है। व्यसनकर्ता अपनी व्यवस्था द्वारा मादक द्रव्यों को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है जिस प्रकार रोगाणु बीमारी का कारण होता है उसी प्रकार मादक रसायन व्यसनकर्ता को रोगी बनाता है। वातावरण व्यसनकर्ता का व्यक्तिगत है। संलक्षण वे शारीरिक और मानसिक प्रभाव हैं जो उसे रोगी बनाते हैं।

बोध प्रश्न 3

1. नकारना क्या है? यह किस प्रकार से व्यसन को बढ़ाता है?

नकारना एक प्रकार का रक्षा तंत्र है। एक व्यसनकर्ता यह स्वीकार नहीं करेगा कि वही एकमात्र ऐसा है। तथा वह तर्क देगा कि व्यसन के कारण उसको कोई समस्या नहीं है। व्यसन की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने का अर्थ है कि उसे मादक द्रव्य छोड़ देना चाहिए। वह किसी भी रूप में इसके लिए तैयार नहीं होता। वह नकार देगा कि वह एक व्यसनकर्ता है।

नकारने से व्यसन दो प्रकार से बढ़ता है। पहले वह अपनी श्रेष्ठ प्रतिष्ठा को बनाए रखेंगे। व्यसन को स्वीकार करना बहुत ही दर्दनाक है क्योंकि व्यसन समाज को स्वीकार नहीं है। दूसरे नकारने से उसे वह अपने व्यसन के लिए दूसरों पर दोषारोपण करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार से वह दूसरों को छलता है और जानबूझकर अपने व्यसन का समर्थन करता है।

बोध प्रश्न 4

1. व्यसन के आर्थिक दुष्परिणाम क्या हैं।

व्यसन एक महंगी लत है। इसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अत्यधिक व्यय होता है। व्यसनकर्ता अपनी व्यसन लत को बनाए रखनें के लिए अत्यधिक धन का व्यय करता है। यह धन अपराधिक समूहों के पास जाता है। व्यसन से स्वास्थ्य को भारी हानि होती है। इसके कारण परिवार के अन्य लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता है। इसलिए परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च परिवार पर एक भारी आर्थिक बोझ होता है। व्यसनकर्ता समाज का एक अनउत्पादक सदस्य होता है। व्यसनकर्ता की अपराधिक आदतें समाज पर अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक बोझ डालती है। कार्य से अन-उपस्थितिता दुर्घटनाएँ इत्यादि से परिवार और समाज पर अतिरिक्त आर्थिक भार पड़ता है। इसी तरह से कानूनी व्यवस्था लागू करने और नियंत्रणा करने में भी अत्यधिक आर्थिक खर्च पड़ता है।

इकाई 3 मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिवार और राष्ट्रीय विकास पर प्रभाव

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग - परिवार और राष्ट्र

3.3 व्यसनी परिवार की व्यावहारिक प्रतिक्रिया

3.4 सह-निर्भरता

3.5 मादक द्रव्य दुरुपयोग और राष्ट्रीय विकास

3.6 मादक द्रव्य दुरुपयोग और अपराध

3.7 मादक द्रव्य मुक्त राष्ट्र के लिए प्रयास

3.8 सारांश

3.9 शब्दावली

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य मादक द्रव्य दुरुपयोग से परिवार और राष्ट्र को होने वाली हानि के बारे में वर्णन करना है। इसमें आपको बताया जाएगा कि मादक द्रव्य दुरुपयोग राष्ट्र विकास में कितनी गंभीर बाधाएँ डालते हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- मादक द्रव्य दुरुपयोग, परिवार और राष्ट्र के बीच संबंधों की व्याख्या कर सकेंगे,
- परिवार के सदस्यों पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के नकारात्मक प्रभावों का वर्णन कर सकेंगे,
- किस प्रकार मादक द्रव्य दुरुपयोग राष्ट्र विकास में हानिकारक हैं, इसे समझ सकेंगे,
- हमारे विद्यालयों, कार्यस्थलों और राष्ट्र को मादक द्रव्य मुक्त करने के महत्व को जान सकेंगे, और
- आपके अपने जीवन अनुभवों को मादक द्रव्य दुरुपयोग के विभिन्न पक्षों को सबंद्ध कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

आपने नशे में धुत चालक द्वारा की गई यातायात दुर्घटनाओं को अवश्य देखा होगा। कुछ महामारियों की तरह ही मादक द्रव्य दुरुपयोग से व्यापक मौतें होती हैं। व्यसनकर्ता स्वयं के लिए, परिवार और समाज की सुरक्षा लिए खतरा है। व्यसन अपने कलंक के धब्बे आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी छोड़ता है।

व्यसनी के बच्चों का सामान्य विकास नहीं हो पाता है क्योंकि उनके परिवार में उन्हें भावनात्मक वातावरण नहीं मिल पाता है जो बच्चों के सामान्य विकास के लिए आवश्यक होता है। शराबी पिता के होने वाले अनेक बच्चे भी बड़े होने पर शराबी बन जाते हैं।

व्यसन राष्ट्र विकास के लिए गंभीर चुनौती है। व्यसनी प्राय: समाज में अनत्पादक तत्व होता हैं व्यसनी सामाजिक स्वास्थ्य देखभाल पर अतिरिक्त भार है। व्यसन के कारण वहुत सारी दुर्घटनाएँ भी होती हैं।

इस इकाई में समाज के विभिन्न स्तरों पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणामों को प्रस्तुत किया गया है इसमें परिवार में वच्चों पर और समाज और राष्ट्र के लिए आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणामों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग - परिवार और राष्ट्र

विश्व में प्रत्येक वस्तु आंतरिक रूप से परस्पर जुड़ी हुई है। एक राष्ट्र में परिवार समाज की मूल इकाई है। राष्ट्र की हालत परिवार के स्वास्थ्य से मापी किया जाती है। व्यसन प्राय: परिवारों को प्रभावित करता है। व्यसन के कारण वच्चों का चरित्र विगड़ जाता है। जव परिवार का एक व्यक्ति चाहे अभिभावक, वच्चा हो या रिश्तेदार हो मादक द्रव्य दुरुपयोग करने लगता है तो विकृत होने लगता तथा शांति भंग हो जाती है। वहीं पर परिवार के प्रत्येक सदस्य को इसकी हानि उठानी पड़ती है। व्यसनी प्राय: अपनी आदतों से इतना पीड़ित हो जाता है कि सव कुछ उस पर केंद्रित हो जाता है यहाँ तक कि परिवार के अन्य सदस्यों की आवश्यकताओं और उनकी स्थिति की भी उपेक्षा की जाती हैं, इस कारण परिवार की एकता संधि की तरह टूट जाती है।

राष्ट्र को आर्थिक और मानवता के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है। अधिकतर, मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले लोग 18 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के होते हैं। इनमें से कुछ रोज़गार शुदा होते हैं तो कुछ वेरोज़गार। रोज़गार शुदा व्यक्ति अपने कार्य स्थल पर गंभीर समस्याएँ खड़ी कर देता है। कार्य से अनुपस्थिति, काम धीमे करना, कार्य स्थल पर दुर्घटनाएँ और साथी कर्मियों के साथ खराव संवंध आदि मादक द्रव्य दुरुपयोग परिणाम होते हैं।

अधिकतर किशोर अवस्था व्यसनी के वेरोज़गार होते हैं। वे राष्ट्र के उत्पादक सदस्य नहीं वनते। वे राष्ट्र के संसाधनों पर वोझ वन जाते हैं। वे अपराध समूहों का रूप धारण कर लेते हैं। उनके स्वास्थ्य की देखभाल करना भी राष्ट्र पर अतिरिक्त भार होता है। वे अनजाने में ही महामारियों रोगों तथा लाइजाज रोगों के वाहक या एजेंट वन जाते हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की एक ओर भी कीमत चुकानी पड़ती है - पर्यावरण की कीमत। वन कटाई, भूमि कटाव, जल स्रोतों का प्रदूषण, व्यापक वनस्पति नाशक छिड़काव, पर्यावरणीय व्यवस्था में असंतुलन, जलीय योजना में परिवर्तन, जनसंख्या का दवाव, लोगों का अप्रवर्जन आदि मादक द्रव्य उत्पादन के कुछ अप्रत्यक्ष परिणाम है। गैर कानूनी मादक द्रव्य की फसल पैदा करने वाले माहौल का विस्तार हो जाता है। लातिन अमरीका, अफ्रीका तथा एशिया में लाखों छोटे किसानों पर इनकी खेती करने के लिए अत्याचार किए जाते हैं। जिससे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। इसमें इनकी अस्थिर हालत की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता। जीवन को वचाने के लिए इन लोगों को अव कोकेन, अफीम, पोस्त या भांग की फसल में कमी करनी चाहिए। मादक द्रव्य उत्पादन के लिए राष्ट्र या विश्व द्वारा चुकाई जाने वाली कीमत वेशक अप्रत्य हो लेकिन यह वहुत विशाल है। अनेक मादक द्रव्य जैसे कि पोस्त, कोका, अफीम तथा तम्वाकू का उत्पादन पौधों अर्थात् फसल से होता है। चूँकि ये फसलें प्राय: गैर कानूनी होती हैं इसलिए इनका कार्य करने वाले लोग फसल उगाने के लिए जंगलों में चले जाते हैं और वेरहमी से जंगलों की कटाई करते है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और परिवार

परिवार पर मादक द्रव्यों के जो भयंकर प्रभाव पड़ते हैं मुख्यत: वे वही हैं जो राष्ट्र के लिए गंभीर खतरा वने हुए हैं। व्यसनी अपने आपराधिक व्यवहार से परिवार का वातावरण विगाड़ देता है परिणाम स्वरूप परिवार के सदस्य शारीरिक और मानसिक रूप से व्यथित होते हैं। एक प्रियजन जो प्राय: कमाने वाला होता है, के इस तरह से व्यसनी होने के कारण परिवार के सदस्यों को

बहुत दुख होता है। यह स्थिति बहुत दर्दनाक होती है। इसका एक और गंभीर पक्ष यह भी है कि जब कोई बड़ी आयु का व्यक्ति व्यसन में लिप्त हो जाता है उससे छोटी आयु का लोगों पर अत्यंत भयंकर प्रभाव पड़ता है। वे समझते हैं कि जब इतनी बड़ी आयु का व्यक्ति ऐसा करता है तो हमें ऐसा करने में क्या नुकसान है और वे भी मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने लगते हैं। प्राय: इस पक्ष की उपेक्षा की जाती है।

अविभावक इस तथ्य का सामना नहीं कर पाते हैं कि उनके बच्चे मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगे हैं अथवा वे उस विपरीत व्यवहार को स्वीकार नहीं करते जो उन्होनें बच्चों का पालन करते समय नहीं किया है। अधिकांशत: शर्म और निराशा के कारण वे यह स्वीकार नहीं करते कि उनका बच्चा व्यसनी बन गया है। समस्या का सामना करने में असमर्थ लोग बच्चे को मादक द्रव्य न लेने के लिए उपयुक्त उपाय ढूंढने में उसको प्रोत्साहित नहीं कर पाते।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वाले छोटे बच्चों के माता-पिता प्राय: अपने परिवार के अंदर ही गहन भावनात्मक तनाव पीड़ित रहते देखे गए हैं। उन लोगों को यह बिछुड़ने चाहे वह मृत्यु, तलाक, त्यागने अथवा उपेक्षा के कारण अपने माता-पिता के खोने का दुख होता है। वे लगाव और बिछुडने, हानि और लाभों के विपरीत मुद्दों में तनाव युक्त और चिंतित रहते हैं।

शराब के नशे को प्राय: पारिवारिक रोग की संज्ञा दी जाती है। इसका अर्थ है कि शराब के व्यसनी के परिवार के सभी सदस्य उसके रोग के भागीदार होते हैं। ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिसके माध्यम से व्यसनी के आदतों के प्रभाव से परिवार के सदस्य बच सकें। उन्हें प्रतिदिन व्यसनी के व्यवहार से सामना करना पड़ता है। इस तरह से परिवार के लोग उसके व्यवहार के प्रति क्रोध, भय, शर्म या लज्जा तथा उलझन के रूप में प्रतिक्रिया के रूप में प्रतिक्रिया करते हैं। इसी तरह की प्रतिक्रिया व्यसनी की ओर से परिवार के विरुद्ध होती है।

अधिकतर व्यसनी विवाहित होते हैं और उनमें से बहुसंख्या में परिवार वाले लोग होते हैं। परंतु वे उस बिंदु तक अपनी सामाजिक, पारिवारिक स्थितों की भूमिका निभाने में असमर्थ हो जाते हैं कि वे पति-पत्नी, माता-पिता और जीविका उपार्जन के क्षेत्र में संतोषजनक भूमिका नहीं निभा पाते। शराब के नशे के कारण वे उचित समय स्नेह या प्यार या बाहर आना-जाना भी समूचित रूप से पूरा नहीं करते। अनेक अवसरों पर उनका व्यवहार बदमिजांज, चिड़चिड़े, निराशा भरा और अनुचित हो जाता है। शराबी का परिवार तलाक अथवा अलग रहने के कारण टूट सकता है।

जब शराब की लत बढ़ती जाती है शराबी के परिवार वाले कुछ क्रमिक समस्याओं के साथ सामंजस्य करने का प्रयास करते हैं। पहले उसे परिवार के टूटने की संभावनाएँ जैसे किसी महिला का पति शराब पीना आरंभ कर देता है उस स्थिति में महिला इस समस्या को नकारना आरंभ कर देती है और समस्या के साथ सामंजस्य करने का प्रयत्न करती है। समस्या को सुलझाने के लिए आरंभ में अपने पति से विवाद करती है, शराब की उपलब्धता को नियंत्रित करने का प्रयास करती है तथा कुछ नियम बनाती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि पत्नी अपनी कुछ एक बिंदु पर दोनों के द्वारा शराब छोड़ने की शर्त के साथ पति के साथ शराब का सेवन करने लगती है। परंतु यह तरीका सफल नहीं हो पाता है और समस्या अपना विकट रूप धारण कर लेती है। पति-पत्नी के रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो जाती है और संबंध विच्छेद के कगार पर पहुँच जाते हैं अथवा संबंध विच्छेद हो जाते हैं।

शराब की लत बढ़ने के कारण परिवार संभावने के लिए पति की आय नहीं रहती और मज़बूरी में पत्नी को यह भूमिका निभानी पड़ती है। कई बार पत्नी कुछ अनुशासनात्मक कदम उठाने लगती हैं। शरीर का परिवार भी उसी की तरह शराब की बोतल के गिर्द घूमने लगता है। उदाहरण के लिए पत्नी अपने पति से कई बार इस बात को स्वीकार नहीं करती कि उसका पति उसे पत्नी न समझ कर नौकरानी समझता है या पति की समस्या के लिए वह जिम्मेदार है।

दो शराबियों के परिवार एक जैसे नहीं होते और न ही उनकी प्रतिक्रिया एक जैसी होती है। शराब के प्रभाव गरीब और अमीर परिवारों पर अलग-अलग होंगे। जो भी हो शराब के कारण विवाह और पारिवारिक जीवन पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और घरेलू हिंसा

अनुसंधानों से विदित होता है कि "मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले परिवारों में घरेलू हिंसा आम बात है। विशेषकर बच्चे और महिलाएँ इसकी शिकार होती है। बच्चों को गाली देना, पत्नी को मारना-पीटना, दहेज हत्या, शारीरिक हिंसा तथा परित्याग घरेलू हिंसा की सामान्य आम बात है" (यू एन डी सी पी : 1999)। मादक द्रव्य दुरुपयोग और हिंसा दोनों एक साथ चलते हैं।

आक्रमण या हिंसा मूलरूप से पशुवत स्वभाव होता है जिसमें मानव भी इस जंगल राज में भागीदार है। इस प्रकृति प्रदत्त संवेदना का उद्देश्य अपना संरक्षण करना होता है। यह उसका विवेक ही होता है कि वह अपनी हिंसक प्रकृत्ति को नियंत्रित रखता है। जैसे कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं, कि सभी मानसिक क्रियाशीलता को प्रभावित करने वाले मादक द्रव्य मस्तिष्क उस झिल्ली पर प्रभाव डालते हैं - जो हमारे विवेक पर नियंत्रण करती है। इससे मस्तिष्क की कार्य प्रणाली में विकार आ जाता है। इसलिए सभी दमित मनोभावनाएँ, संवेदनाएँ सतह पर आ जाती है। इसलिए अनेक मामलों में शराबी अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करते समय हिंसक बन जाता है।

मादक द्रव्यों का व्यसनी सामाजिक अस्वीकार्य आचरण के अनेक पक्ष प्रकट करता है हिंसा, आक्रमण, आडम्बरता गैर जिम्मेदारी, स्वार्थी, जुआ खेलना जैसे दुर्गुण रसायनों पर निर्भर रहने वाले की जीवन शैली के हिस्से होते हैं। दक्षिणीय एशियाई देशों में मादक द्रव्यों से संबंधित अपराधों की संख्या में अत्यधिक है। जो कुल अपराधों का नेपाल में 70 प्रतिशत और भारत में 20 प्रतिशत आँका गया है (यू एन डी सी पी : 1999)।

1999 में यू एन डी सी पी द्वारा दी गई रिपोर्ट बताती है कि श्रीलंका में हिंसा के अध्ययन में देखा गया है कि 60 प्रतिशत महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हैं, हिंसा, 29 प्रतिशत महिलाओं के साथ हुई, मारपीट के आँकड़े दिए गए हैं जिसमें बताया गया कि उनके पतियों ने अपने बच्चों पर भी हिंसा की इस रिपोर्ट में 82 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया है कि इन सभी प्रकार की हिंसाओं के पीछे शराब ही प्रमुख कारण है। महिलाओं की भाग्यवादी प्रवृत्ति यह होती है कि उन्हें अपने पुत्रों, पतियों और भाइयों के अत्याचारों को सहन करना चाहिए। इस प्रकार की सोच ने ही उन्हें शराब सेवन की आदत को बनाए रखने में उनका योगदान दिया है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 1993)

नेशनल काउंसिल ऑफ अल्कोहलिज्म का आकलन है कि 63 प्रतिशत शराब पीने वाले परिवारों का इलाज अस्पतालों में चल रहा है जिनका कारण घरेलू हिंसा है। शराबी परिवारों के इतने ही बच्चे शारीरिक अत्याचार का शिकार हुए हैं या उन्होंने निरंतर अपने परिवारों में लगातार इस तरह की हिंसा होते देखी है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के कारण घरेलू हिंसा की सबसे अधिक पीड़ित वर्ग प्रायः महिलाएँ ही होती हैं। भारत में सामाजिक परिस्थितियों के कारण यह हिंसा मौत में बदल जाती है। दहेज से संबंधित अनेक मामलों में कई बार मृत्यु मादक द्रव्य से संबंधित हिंसा के कारण होती है। मादक द्रव्यों से संबंधित घरेलू हिंसा में महिलाओं में आत्महत्या के मामलों का प्रतिशत अत्यधिक बढ़ा है। परिवार की देखभाल का बोझ तथा घर में पति द्वारा मारपीट के कारण अनेक महिलाएँ आत्महत्या करके अपने दुखों से छुटकारा पाने का अच्छा समझती है। व्यसनकर्ता के परिवार में समाधान यह हिंसाएँ प्रायः जाती है तथा बच्चों के समक्ष होती है अनेक बार समारोहों में जहाँ परिवार के लोग एकत्रित होते हैं जिसमें बच्चे भी शामिल होते हैं ऐसे समय में हत्याएँ की जाती हैं। हत्याओं का प्रतिशत लगभग 20-30 प्रतिशत आंका गया है जिसमें सबसे अधिक प्रभाति महिलाएँ ही होती है। ये सभी अध्ययन सिद्ध करते हैं कि व्यसन या नशा हिंसा, हत्या और लैंगिक शोषण परस्पर एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं।

व्यसनी परिवार और बच्चे

व्यसन अन्य सभी श्रेणियों के अलावा बच्चों को सबसे अधिक प्रभावित करता है। व्यस्को के पास ऐसी स्थिति में परिवार में रहने या उसे छोड़ने का विकल्प होता है। बच्चों के पास परिवार छोड़ने का विकल्प नहीं होता और न ही यह अभीष्ट है। पत्नी या जीवन साथी किसी पारिवारिक सदस्य के व्यसन से असहाय हो सकते हैं लेकिन वास्तव में बच्चें असहाय होते हैं। स्वाभाविक, स्वतः और चिंता मुक्त होना बचपन की विशेषता है। व्यसनी के परिवार में बच्चा चिंता मुक्त नहीं रह

सकता। वह हमेशा उपेक्षित, चिंताग्रस्त एवं डरा हुआ रहता है। ऐसे परिवार में बच्चों को मिलने वाली सामान्य देखभाल तथा पोषण प्राप्त नहीं होता। परिवार में किसी सदस्य द्वारा व्यसन करने से संपूर्ण परिवार का ध्यान उस पर केंद्रित हो जाता है। ऐसे वातावरण का बच्चे पर हमेशा विपरीत होता है। वे अपनी पहचान खो देते हैं तथा अवसाद, चिंता और तनाव से पीड़ित रहते हैं। उन्हें समाज में सामंजस्य करने में अपने समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चूँकि उन पर सकारात्मक ध्यान नहीं दिया जाता इसलिए वे आवारा बनने से विपरीत प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं। हो सकता है ऐसे कुछ बच्चे अति क्रियावादी, परेशान और गंभीर मामलों पर ध्यान केंद्रित करने वाले बन जाए।

अनुसंधानों से पता चलता है कि घरेलू हिंसा बच्चों की संवेदनाओं और मानसिक विकास के लिए पूरी तरह से हानिकारक है। यहाँ तक कि यदि उन पर शारीरिक अत्याचार न भी किया जाए तो भी वे इस तरह की हिंसा को देखने से वे लोग बड़े होने पर जीवन में उसी तरह की हिंसा करते देखे गए हैं। वे बच्चे जिन्होंने अपने मता-पिताओं या सहोदरों पर हिंसा होते देखा वो बड़े होकर दुरुपयोगकर्ता बन जाते हैं। अनेक बच्च जो शराबी परिवार से संबंध रखते हैं बाद में वे भी स्वाभाविक रूप से शराबी बन जाते हैं।

भारत तथा अन्य देशों में किए गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले परिवारों में घेरलू हिंसा होना आम बात है। इस हिंसा में प्रमुख रूप से महिलाएँ और बच्चे ही पीड़ित होते हैं। इस हिंसा में बच्चों पर सबसे अधिक दुराचार होता है। एक आकलन के अनुसार 4 प्रतिशत महिलाओं के साथ लैंगिक दुराचार किया जाता है, ये महिलाएँ नाबालिग होती हैं।

यू एस ए में किए गए अध्ययन से पता चलता है कि शराब से व्यसनी समस्याओं वाले परिवारों के 66 प्रतिशत बच्चों ने या तो स्वयं ही दुराचार किया था दूसरों के अत्याचारों का सामना किया। जिनमें से 25 प्रतिशत ऐसे बच्चे थे जिनके साथ शारीरिक बुरा व्यवहार भी किया गया। 1976 में एक और अध्ययन किया गया जिसमें शराबी परिवारों के बच्चों की सभी तरह की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के कुछ निष्कर्ष नीचे दिए जा रहे हैं:

- अन्य बच्चों की तुलना में तीन गुना अधिक शराबी बच्चों को पालन-पोषण ग्रहों में रखा गया था।

- 16 वर्ष से कम आयु में की गई शादीशुदा बच्चों की संख्या दूसरे बच्चों की तुलना में दो गुणा थी।
- बाल अपराध के मामलों की संख्या बहुत अधिक थी जो 50 प्रतिशत पहुँच गई थी।
- 21 प्रतिशत तक बच्चे मानसिक रूप से रोगी पाए गए।
- अभावग्रस्त समुदायों के बच्चों की तुलना में शराबी बच्चों ने आत्महत्याएँ अधिक करने का प्रयास किया।
- व्यसनियों के बच्चों में व्यक्तित्व विकृति के अधिक मामले पाए गए थे।

उपर्युक्त को देखने के पश्चात् तथ्य निकलता है कि शराबी परिवारों के बढ़ते हुए बच्चों में व्यक्तित्व और पहचान की समस्या अत्यधिक है। यहाँ पर हम कुछ की चर्चा करेंगे:

आदर्श भूमिका की कमी : बच्चे सही या गलत परिवार से विशेषत: अपने माता-पिता से ही सीखते हैं। इसी से व्यक्ति की पहचान होती है। शराबी परिवारों में इस तरह के व्यवहार सीखने को नहीं मिलते हैं वे अपने माता-पिता से केवल नकारात्मक, गलतियाँ, क्रोध और अन्य विपरीत व्यवहार के ही साक्षी होते हैं। इन बच्चों को प्राय: उस अपराध का दण्ड मिलता है जो वे कभी नहीं करते और पुरस्कार बिना किसी उपलब्धि के दिया जाता है।

व्यसनी परिवारों द्वारा किया जाने वाला व्यवहार से बच्चे भ्रमित हो जाते हैं। जब पिता शराब का सेवन नहीं करते उस स्थिति में बच्चों से प्यार किया जाता है किंतु शराब पीने के बाद बच्चों को प्रताड़ित किया जाता है। इस आयु में बच्चे यह समझने में असमर्थ होते हैं कि क्या स्नेह है और क्या हिंसा होती है। पिता केवल विरोधी भावों का एक पुलिंदा होता है तथा बच्चे अपने माता-पिता का अनुकरण करना सीख लेते हैं।

स्वाभिमान की कमी : आत्मसम्मान और आत्म योग्या व्यक्तित्व का प्रमुख अंग हैं। इसी से किसी व्यक्ति की पहचान की जाती है। बच्चे उनके व्यवहार से आत्म-सम्मान सीखते हैं जो उनके लिए महत्वपूर्ण हैं। यदि बच्चों को स्वीकार किया जाता है, उसके माता-पिता उन्हें स्नेह देते हैं तो बच्चा धीरे-धीरे महसूस करेगा कि वह अच्छा है उसकी ज़रूरत है और वह प्यार के लायक है। बचपन से ही यदि बच्चे के साथ दुर्व्यवहार किया जाए और उसको सम्मान न दिया जाए तो वह समझेगा कि वह बेकार हैं, उसको कोई नहीं चाहता और न ही कोई उससे प्रेम करता है। इस प्रकारा नकारात्मक विचार पनपने से उसका परिणाम लड़ाई-झगड़े, वाद-विवाद, सजा और उपेक्षा होता है जो परस्पर एक दूसरे से संबद्ध है।

ईमानदारी की कमी : शराबी या नशेबाज व्यक्ति प्राय: झूठे होते हैं यहाँ तक कि जहाँ वे सच भी बोल सकते हैं तो भी झूठ ही बोलते हैं। ऐसे परिवारों से बच्चे झूठ बोलना सीखते हैं। पिता अपनी शराब पीने की आदत के संबंध में सदैव झूठ बोलता है। बच्चें की माँ अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए झूठ बोलती है। पिता हमेशा वायदे करता रहता है किंतु उन्हें कभी भी पूरा नहीं करता। यह सब बच्चा अपनी आँखों से देखता और सुनता है कि उसका परिवार झूठा है। बच्चा सीखता है कि झूठ बोलना सही होता है। कुछ मामलों में बच्चे का ईमानदार होने और अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करने पर दण्डित किया जाता है।

नकारना बेईमानी का एक रूप है। शराबी अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान को बनाए रखने के लिए झूठ बोलता है। सत्य को स्वीकार करना उसके लिए बहुत ही पीड़ादायक होता है। इसी तरह बच्चा भी स्वीकार नहीं करता है कि उसके पिताजी एक शराबी है। इसलिए वह नकारता है और बढ़ती आयु के साथ इसे नकारने की आदत हो जाती है।

अवषाद या ग्लानि : शराबी परिवार के सदस्य की बहुत सारी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती है। किसी स्वस्थ भावनात्मक व्यक्ति के विकास में शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक बुनियादी आवश्यकताएँ उपयुक्त समय पर पूरी होना नितांत आवश्यक होता है। मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी न होने के परिणामस्वरूप जब बच्चे को यह सब नहीं मिलता है तो उसे निराशा और ग्लानि होती है। इस संबंध में यह महत्वपूर्ण है कि अनेक बच्चे जो बहुत अच्छे

परिवारों में पलते हैं और हो सकता है वे 'शरावी' न हो, और माता-पिता के पास अपने वच्चों की देखभाल करने का समूचित समय हो क्योंकि वे लोग अपने जीवन में वहुत व्यस्त होते हैं। ऐसे वच्चे प्राय: नर्सों या दाइयों की देखभाल में पाले-पोसे जाते हैं। वे वच्चे भी इस प्रकार के अवसाद के शिकार हो जाते हैं।

इस भाग का निष्कर्ष यह है कि जो परिवार शराव में लिप्त होते हैं वे अपने वच्चों को अस्वस्थ नागरिक वनाते हैं। इनमें से कुछ वच्चे वहुत ही उत्साही और महत्वाकांक्षी हो सकते हैं और कुछ विद्रोही हो सकते हैं। इनमें से कुछ ऐसे हो सकते हैं जो सभी को प्रसन्न करना चाहे वहीं पर ऐसे भी हो सकते हैं जो सभी को अपना दुश्मन वना लें।

इस प्रकार का व्यावहारिक स्वरूप का मुख्य कारण यह है कि उन्होंने अपने माता-पिता से ठीक समय पर समुचित अच्छी जीवन शैली नहीं सीखी है क्योंकि उनके माता-पिता परिवार में जव उन्हें कुछ सिखाना था, शराव की समस्या में अत्यधिक व्यस्त रहे।

व्यसन के संबंध में पारिवारिक प्रतिक्रिया

हम पहले ही चर्चा चुके हैं कि परिवार पहला और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जहाँ पर जीवन में कठिनाइयाँ आने पर शरण और सुरक्षा मिलती है। मादक द्रव्य दुरुपयोग इस वात का संकेत है कि परिवार वच्चे के होने की प्रक्रिया में उसकी सहायता करने में असफल रहा है। जव एक व्यक्ति आत्महत्या का प्रयास करता है तो यह इस वात के चिह्न है कि परिवार आत्महत्या का प्रयास करने वाले व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ है। परिवार व्यसन की समस्या का विभिन्न प्रकार से सामना करता है। सभी मामलों में देखा गया है कि प्रणाली अपनाई जाती है वह संतोपजनक नहीं होती है वल्कि अप्रत्यक्ष रूप से व्यसन को प्रोत्साहित किया जाता है। यदि परिवार व्यसन की समस्या को अच्छे ढंग से सुलझाने का प्रयास करता है तो वह इसे सफलतापूर्वक सुलझा सकता था। परिवार की व्यसन के प्रति विभिन्न को निम्नांकित शब्दों में वर्णन किया जाएगा। आप स्वयं देख सकते हैं कि सभी नकारात्मक है।

जव एक जीव को जीवन का खतरा होता है तो वह जीवन के अनावश्यक अन्य पक्षों की कीमत पर अपने जीवन को वचाना चाहता है। भूकम्प के मामले में एक व्यक्ति ऊँची छत से कूद कर जान वचाने का प्रयास कर सकता है और अपने वस्त्रों में आग लगने के स्थिति में व्यक्ति जान वचाने के लिए घवराहट के कारण भाग सकता है। इसी तरह से व्यसनी के परिवार व्यसन के प्रति कुछ प्रतिक्रियाएँ करते हैं जो प्राय: गलत होती हैं।

प्रथम स्थिति : समस्या को नकारा जाता है और उसे उचित ठहराने का प्रयास किया जाता है। जव परिवार इस समस्या को जान लेता है तो समस्या स्वीकार नहीं करता है या नकारता है। परिवार के लोग व्यसनी के मादक द्रव्य दुरुपयोग के अन्य कारण वता कर उसे उचित ठहराने का प्रयास कर सकते हैं। परिवार में कुछ व्यस्था करके उसे व्यसन न करने के लिए दवाव भी डालेंगे। परिवार वाले वह मादक द्रव्यों को छोड़ने, उसे कुछ पुरस्कार देने का वायदा भी कर सकते हैं।

द्वितीय स्थिति : परिवार समाज से अलग रहना आरंभ कर देता है ताकि परिवार की इस समस्या का अन्य लोग को पता न चले। वे लोगों व्यसनकर्ता के लिए कुछ प्रयास करके मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणामों से सुरक्षा करने का यत्न करेंगे। यह भी हो सकता है कि शरावी की वोतल तोड़ कर या उसके साथ नियंत्रित रूप से पीकर उसकी लत को नियंत्रण करने का प्रयास भी किया जा सकता है।

तृतीय स्थिति : इस अवस्था में व्यक्ति अपने ऊपर नियंत्रण खो देते हैं : जव परिवार लम्वे समय तक व्यसनी ईशारों पर नाचता रहता है और व्यसनी लगातार परिवार के सदस्यों की सदइच्छा का लाभ उठाते हुए वह अपने व्यवहार में तनिक भी परिवर्तन नहीं करता है तव परिवार के लोग क्रोध करना आरंभ कर देते हैं। हो सकता है इस क्रोध को वे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित न करें परंतु वे समझ जाते हैं कि नियंत्रण के प्रत्येक उपाय वेकार हो गए हैं।

चतुर्थ स्थिति : परिवार की व्यवस्था को पुनर्गठित किया जाता है। आरंभ में किए जाने वाले उपायों में से इसी उपाय को प्रभावी माना गया है। परिवार के लोग अपने जिम्मेदारियाँ स्वयं संभाल लेते हैं और चाहते हैं कि व्यसनी भी इसमें शामिल हो। यह स्थिति उस समय और अधिक स्पष्ट हो जाती है जब व्यसनी स्वयं परिवार का मुखिया हो।

पंचम स्थिति : व्यसनी से दूर भागने लगते हैं क्योंकि व्यसन अब सहन करने योग्य नहीं रहता है, परिवार के लोग शराबी या व्यसनी से अपने आपको अलग कर लेते हैं। यदि व्यसनी विवाहित है तो तलाक भी लिया जा सकता है।

षष्टम स्थिति : व्यसनी को वास्तविकता बता दी जाती है। यह सबसे अधिक सहायता पूर्ण स्थिति होती है जहाँ परिवार के लोग अपनी समस्या से इंकार करना छोड़ देते हैं और व्यसनी को कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

व्यसनी परिवार की भावनात्मक प्रतिक्रिया

हम यहाँ फिर से बताना चाहेंगे कि व्यसन एक पारिवारिक रोग है। परिवार के एक सदस्य के व्यसनी होने के परिणामों से कोई भी सदस्य बच नहीं सकता। वे शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ित होते हैं। यहाँ पर हम यह बताना चाहते हैं कि किस प्रकार से व्यसन के प्रति परिवार के लोग अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

अपराध बोध : परिवार के लोग यह समझने लगते हैं कि उनके प्रियजन के व्यसनी बनने में उनकी भी कुछ गलतियाँ हैं। व्यसन के साथ जुड़े सामाजिक कलंक भी इस प्रतिक्रिया को मजबूत बनाते हैं। परिवार के सदस्य अपने आप पर या किसी बाह्य व्यक्ति पर दोष आरोपित करते हैं। स्वयं का आरोपण करने से अपराध बोध और शर्म महसूस होती है। हो सकता है परिवार के लोग इस स्थिति के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करना आरंभ करे।

क्रोध : परिवार के लोग व्यसनी की माँगों को पूरा करने के लिए अपने आप में समायोजन करने का पूरा प्रयास करते हैं। यह भी हो सकता है वे अपने क्रोध को दबाए रखें तथा वे व्यसनी संतुष्ट करने के लिए अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को भी पूरा न करें। इससे परिवार के लोगों में क्रोध के भाव पनपने लगते हैं। इस क्रोध को दबाने से इन लोगों में भी कोई मानसिक रोग पैदा हो सकता है।

संताप या दुख : परिवार जीवन के प्रति निराश हो जाता है। वे अपने प्रियजन के नष्ट होने को भी समझ सकते हैं। इसके अतिरिक्त भी हानियाँ होती है जैसे कि सामग्री, वस्तु, धन परिवार का अच्छा नाम, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा आदि। दुख को व्यक्त करने उसे तरह से आवश्यकता होती है जैसे अन्य भावनाएँ होती हैं। परंतु वे महसूस करे हैं कि उन्हें कोई भी समझने का प्रयास नहीं कर रहा है। वे अपनी चिंताओं व दुखों को दबाते रहते है और स्वयं ही दुखी और पीड़ित रहते हैं।

लज्जा या शर्म : व्यसनी के व्यवहार से परिवार शर्म अनुभव करता है। इससे उनके अपनी प्रतिष्ठा में कमी आती है। परिवार के सदस्य समाज के अन्य सदस्यों से संबंध स्थापित करने में शर्म महसूस करने लगते हैं। वे लोग समाज के लोगों से अलग रहने लगते हैं और वे अपने आपको एकाकी महसूस करने लगते हैं।

भय : व्यसनी के परिवार में रहना बहुत ही तनावपूर्ण होता है। व्यसनी का व्यवहार बहुत ही अप्रत्याशित होता है। सदस्य नहीं जानते हैं कि व्यसनी क्या कर बैठेगा। वे अपने जीवन और भविष्य के लिए भी चिंतित रहते हैं। उनके संबंधों में अत्यधिक तनाव बना रहता है।

एकाकीपन : शर्म, कष्ट और भय को अनदेखा नहीं किया जा सकता हैं, इसलिए इनका संयोजन एकाकीपन का निर्माण करता है। आगे और होने वाले भावनात्मक पीड़ा से बचने के लिए वे अपनी भावनाओं को छिपाने का प्रयास करते हैं और उन्हें किसी को भी बताना नहीं चाहते। वे बहुत बातें करेंगे किंतु अपनी भावनाओं को कभी भी व्यक्त नहीं करेंगे। वे एकदम अकेले हो जाते हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. परिवार पर मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या प्रभाव पड़ता हैं?

.....

.....

.....

.....

3.3 व्यसनी परिवार की व्यावहारिक प्रतिक्रिया

सभी तरह के व्यवहार भावनाओं की अभिव्यक्ति है। व्यसनी परिवारों के कुछ निश्चित व्यवहार होते हैं। इन व्यवहारों की गहराई अलग-अलग हो सकती है किंतु इनके घटक समान होते हैं।

बचाव करना : परिवार के सदस्य चाहते हैं कि व्यसनी को समस्या से बचाया जाए। इसलिए वे लोग व्यसनी के कार्यों और जिम्मेदारियों को स्वयं संभाल लेते हैं। उसे अपने गैर जिम्मेदारी से उत्पन्न समस्याओं को महसूस कराने व सामना करने देने के स्थान पर वे उसके सभी कार्यों को पूरा करते हैं, उसका ऋण चुकाते हैं और अनुपस्थिति के लिए झूठ बोलते हैं। इस प्रक्रिया को योग्य बनाने के नाम से जानते हैं। इस संबंध में अगले भाग में अधिक चर्चा करेंगे अर्थात् सह-निर्भरता में इसके बारे में और अध्ययन करेंगे।

नियंत्रण करना : परिवार के लोग व्यसनी की व्यसन की लत पर नियंत्रण करने के लिए सभी तरह के भरसक प्रयास करते हैं। वे लोग उसके लिए निश्चित मात्रा में खरीद सकते हैं ताकि वह घर पर सेवन कर सके। मादक द्रव्य उसके पास जितने मादक द्रव्य हैं उन्हें नष्ट करने का प्रयास कर सकते हैं और वह जहाँ जाता है वहाँ उसके साथ जाने की कोशिश करते हैं। जितना भी व्यसनी पर नियंत्रण किया जाता है उतना ही वह अपनी प्रतिक्रिया और तेजी करता है, तथा अपने व्यसन के लिए परिवार के लोगों को ही जिम्मेदार ठहराता है।

दोषारोपण करना : व्यसनी के कार्यकलाप परिवार को क्षति पहुँचाने वाले होते हैं। इससें परिवार के सदस्य क्रोध करते हैं। परंतु प्राय: वे इसे व्यक्त नहीं करते हैं क्योंकि वे कलह से बचने का प्रयत्न करते हैं। जब कभी परिवार में कुछ अधिक ही गंभीर घटना घटती है तो वे लोग व्यसनी को दोष देने लगते हैं या उसे मनहुस मानने लगते हैं।

नकारना : कोई भी व्यक्ति अप्रिय वास्तविकता जो उसके नियंत्रण में नहीं है, को कभी भी स्वीकार नहीं करेगा। इसको संभालने का एक ही उपाय होता है कि वह इस तरह की स्थिति को नकारने लगता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. किस प्रकार से परिवार व्यसन के प्रति की प्रतिक्रिया व्यक्त करता है?

.....

.....

.....

3.4 सह-निर्भरता

रोबर्ट सब्बी के अनुसार सह-निर्भरता एक भावनात्मक, मानसिक और व्यावहारिक स्थिति है जो लम्बे समय से व्यक्ति के लिए ऐसे दमनकारी नियमों से वास्ता पड़ने, निरंतर जारी रहने के कारण उत्पन्न होती है। ये नियम व्यक्ति को भावनाओं की मुक्त अभिव्यक्ति एवं वैयक्तिक तथा अन्तरवैयक्तिक समस्याओं पर प्रत्यक्ष चर्चा करने से रोकते हैं। दमित नियमों का समूह है - ये वे नियम हैं जो अपनी भावनाओं को खुले में व्यक्त करने दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है निर्भरता में सहयोगी बनना। जब कोई व्यक्ति नशा करना आरंभ करता है तो कोई उसके कार्यों के परिणामों का सामना करने में उसकी सहायता न करे तो वह अपनी लत को अधिक दिनों तक बरकरार रखने में असमर्थ होगा। उसके बिना वह अपनी द्रव्य लत को व्यसन की चरम सीमा पर पहुँचने से पूर्व समस्याओं का सामना करने के लिए विवश होगा। यहाँ तक कि व्यसन की प्रारंभिक अवस्था में भी व्यसनी का व्यवहार बहुत खराब और असामाजिक हो जाता है जो कि स्वाभाविक परिणाम है और ये उसे और अधिक व्यसन में जाने से रोक सकते हैं। परंतु जो लोग उससे प्रेम करते हैं वे उसे संरक्षण प्रदान करते हैं। ज्यों ज्यों यह रोग बढ़ता चला जाता है उसे और अधिक संरक्षण दिया जाने लगता है। इसे हम योग्य बनाना कह सकते हैं। जो व्यक्ति उसकी इस कार्य में सहायता करता है। उसे हम सह-निर्भरता कहते हैं। ये लोग अपनी प्रतिक्रिया करते रहते हैं। वे समस्याओं, दुखों और दूसरों के व्यवहार के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। वे अपने दुखों और समस्याओं के प्रति भी प्रतिक्रिया करते हैं। उन्हें प्रतिक्रिया के स्थान पर सामना करने का मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए। सामना करना स्थिति का उत्तर होता है, प्रतिक्रिया करना स्थिति को नकारना होता है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. सह-निर्भरता क्या होती है?

....

....

....

....

3.5 मादक द्रव्य दुरुपयोग और राष्ट्रीय विकास

हाल के वर्षों में मादक द्रव्य दुरुपयोग ने बहुत ही नाटकीय ढंग से सीमाओं को लांघ दिया है। इसमें बेहद वृद्धि हुई है। मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने वाला अधिकतर युवा वर्ग है जिनमें से कुछ धनी है और अधिकतर गरीब हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से बहुमूल्य मानव और प्राकृतिक स्रोत नष्ट हो जाते हैं जिनका सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए प्रयोग किया जा सकता था। मादक द्रव्य दुरुपयोग से व्यक्ति, परिवार, समुदाय तथा अविकसित राष्ट्र की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो जाती है। इसलिए इस पर प्रतिबंध लगाना अत्यंत आवश्यक है।

राष्ट्रीय विकास का अर्थ मानव और प्राकृतिक संसाधनों का विकास होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव और प्राकृतिक संसाधनों दोनों पर ही भारी बोझ है। मानव विकास में मादक द्रव्य दुरुपयोग युवा पीढ़ी को नष्ट करता है जो देश का भविष्य है। प्राकृतिक संसाधनों की ओर से विचार करें तो राष्ट्र को इसकी प्रत्यक्ष रूप में भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रत्यक्ष उत्पादकता की हानि के रूप में होता है जो व्यसनी और राष्ट्र से भी संबंधित है। कुछ मामलों में व्यसनी मुख्य उत्पादक हो सकता है। जब व्यसनी किसी भी काम करने के योग्य नहीं रहता है तो इससे पूरी व्यवस्था को हानि उठानी पड़ती है। इसलिए अनेक प्रकार से हानि हो सकती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग का सेवन राष्ट्र पर बहुत बड़ा भार है क्योंकि यह युवा वर्ग को समाप्त कर देता है। व्यसन अनेक लोगों को मौत के घाट उतार देता है वहीं पर बहुत सारे लोगों को अक्षम बना देता है। लोग ही राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति होते हैं। व्यसन इस विशाल क्षेत्र को ही चोट पहुँचाता है। जैसे कि हम पहले देख चुके हैं कि व्यसन परिवार को नष्ट करने में व्यापक प्रभाव डालता है। इससे अनेक असामाजिक तत्वों का निर्माण होता है। इसलिए अब हम आपराधिक गतिविधियों और व्यसन के बीच संबंधों की भी चर्चा करेंगे। इस दृष्टि से व्यसन राष्ट्रीय विकास में बहुत बड़ी बाधा है।

राष्ट्र व्यसन के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकाता है जैसे कि अपराध, परिवहन और, कार्यस्थल पर दुर्घटनाएँ और सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था के अंतर्गत व्यसनियों के इलाज पर खर्च करना पड़ता है। समुदायों, विद्यालयों तथा व्यापार को भी खर्च करना पड़ता है। "मादक द्रव्यों के दुरुपयोग में वृद्धि होने के कारण सरकार को इसकी रोकथाम के लिए अनेक छोटे-छोटे कदम तुरंत उठाने पड़ते हैं जैसे कि : (1) मादक द्रव्य व्यसन की रोकथाम और उसका इलाज तथा, (2) सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था के अंतर्गत मादक द्रव्यों से संबंधित रोगों का इलाज आदि। क्या एशियाई देशों की विकासशील सरकारें बिना किसी अंतर्राष्ट्रीय सहायता अथवा अपनी प्राथमिकताओं में कटौती करके इस अतिरिक्त भार को वहन कर सकती हैं। क्या इस क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में रोकथाम के लिए विकसित होने वाले स्रोतों को कुचल दिया जाए, इसका उत्तर स्पष्ट रूप में नकारात्मक ही मिलेगा। भारत सरकार ने 1994 में लगभग 14 करोड़ रुपये इसकी रोकथाम और चिकित्सा सेवाओं के लिए आवंटित किए थे। इस धनराशि से प्रत्येक व्यसनी पर 1500 रुपये खर्च आता है।

मादक द्रव्यों की खरीद पर जो राशि व्यय की जाती है। वह संगठित आपराधिक समूहों के हाथों में जाती है। हम देख चुके हैं कि गैर अवैध मादक द्रव्य व्यवसाय एक संगठित आपराधिक गतिविधि है। मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले लोग इन अपराधिक समूहों की आय में वृद्धि करते हैं। वे काले धन को एकत्रित करने की योजना में शामिल हो जाते हैं।

मादक द्रव्य के दुरुपयोग के कारण अनेक संक्रमण रोग महामारी के रूप में फैलते हैं जैसे कि एच आई वी/एड्स आदि। इस तरह अमूल्य मानव संसाधन नष्ट हो जाते हैं। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य-व्यवस्था पर भी बोझ पड़ता है।

3.6 मादक द्रव्य दुरुपयोग और अपराध

घरेलू हिंसा में मादक द्रव्यों की भूमिका के संबंध में जब हम पिछले भाग में चर्चा कर रहे थे तो हमने बताया था कि व्यसनी अपने मादक द्रव्यों की आपूर्ति के लिए किसी भी तरह की हिंसा कर सकता है। यद्यपि उसके द्वारा किए गए अपराधों के प्रकारों और सीमाओं को बताया नहीं जा सकता है। व्यापारी व्यवस्थापक अपनी मादक द्रव्यों की आपूर्ति के लिए कम्पनी के धन को चुरा लेता है इस प्रकार की अनेक कहानियाँ सुनी जाती हैं। व्यसनी मादक द्रव्य प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह का आपराधिक व्यवहार कर सकता है यहाँ तक कि वह किसी की हत्या भी कर सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित चार प्रकार के अपराध हो सकते हैं: (क) मादक द्रव्य प्राप्त करने के लिए व्यसनी द्वारा किए जाने वाले अपराध, (ख) मादक द्रव्य बेचने वालों के द्वारा मादक द्रव्य बाजार में अपना बनाने के लिए किए जाने वाले संघर्ष, (ग) मादक द्रव्य माफिया अपने गैर-कानूनी व्यापार को बचाने के लिए भयंकर हिंसा कर सकते हैं, और (घ) वित्तीय अपराध जैसे कि काला धन एकत्रित करना, गैर कानूनी मादक द्रव्यों का उत्पादन और उसका व्यापार करना आदि है।

एक अनुमान के अनुसार यू एस ए में 70 प्रतिशत बड़े अपराध मादक द्रव्यों से संबंधित होते हैं। प्रत्येक वर्ष ड्रग माफिया हजारों अरबों रुपयों का इस गैर-कानूनी व्यापारी में लेन-देन करता है। इन अपराधियों के पास सरकारी पुलिस से कई मायनों में अच्छे हथियार होते है। ये माफिया किसी भी देश की सरकार को गिराने या अपने अनुसार बदलने में समर्थ होते हैं जैसे दक्षिण अफ्रीका में हुआ।

मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा मादक द्रव्यों का गैर-कानूनी व्यापार अप्रत्यक्ष रूप से आंतकवादी संगठनों से जुड़े होते हैं। वे बाजार में उनके दवाव से मादक द्रव्यों की माँग को बढ़ा सकते हैं। हमारे देश में अनेक आतंकवादी संगठनों का मादक द्रव्य धन ही उनकी आय का मुख्य स्रोत हैं। यह एक दूसरे प्रकार की आपराधिक गतिविधि है जो मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित हैं। अत: संक्षेप में कह सकते हैं कि मादक द्रव्य का अवैध व्यापार एक संगठित आपराधिक गतिविधि है।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. किस प्रकार से व्यसन राष्ट्रीय विकास को प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 मादक द्रव्य मुक्त राष्ट्र के लिए प्रयास

सम्पूर्ण रूप से राष्ट्र को मादक द्रव्यों से मुक्त करने का विचार अव्यावहारिक ही माना जाएगा। मादक द्रव्य मानव इतिहास के आरंभ से ही मौजूद है। यह यहाँ हमेशा रहेंगे। जैसे कि प्रत्येक प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग मानवता के लिए किया जाता है उसी प्रकार से मादक द्रव्यों का भी लाभ उठा सकते हैं। मादक द्रव्य युवाओं के जीवन को नियंत्रित करने लगा है। यह एक बुरा शकुन है।

हानिकारक मादक द्रव्यों के उपयोग को कम करने के लिए वैश्व की चिंताओं में वृद्धि हुई है। यह प्रक्रिया युवा लोगों को शिक्षित करने से आरंभ की गई है। विश्व में मादक द्रव्यों के संबंध में दो विचार प्रचलित किए गए हैं : पहला मनो-संवेदन मादक द्रव्यों के प्रयोग की कानूनी अनुमति दी जाए : यह इन पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया जाए। प्रतिबंध लगाना सफल नहीं रहा है। कानूनन अनुमति देने से जीवन की गुणवत्ता सुधार में कोई सहायता नहीं मिलेगी। हम मादक द्रव्य से नशा करने के पक्ष में या उसके विपरीत अपना मत नहीं दे सकते। हमारा मानना है कि मादक द्रव्यों से मुक्त राष्ट्र की मुख्य कुंजी शिक्षा; सूचना और रोकथाम हो सकती है।

3.8 सारांश

इस इकाई में हमने परिवार तथा राष्ट्र पर मादक द्रव्य के दुरुपयोग के प्रभावों संबंध मे चर्चा की है। हमने व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन में परिवार के कार्यों और उसकी भूमिका का वर्णन किया है। हमने देखा है कि किस प्रकार से व्यसन परिवार के वातावरण में परिवर्तन कर देता है और किस प्रकार से परिवार की संपूर्ण कार्य प्रणाली को विकृत कर देता है। व्यसन परिवार में हिंसा को प्रोत्साहित करता और बच्चों के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव डालता है।

जब व्यसन परिवार को अस्त-व्यस्त कर देता है, इस स्थिति में संतुलन बनाए रखने के लिए अस्वस्थ प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है। अधिकतर परिवार व्यसन के संबंध में लगातार नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इससे व्यक्ति का व्यसनीय व्यवहार में वृद्धि होने की सहायता मिलती है।

राष्ट्र भी अपने नागरिकों के व्यसन के लिए बहुत भारी कीमत चुकाता है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से अपराध, आतंकवाद और काले धन को पनपने का अवसर प्राप्त होता है और इनके राष्ट्रीय विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ते हैं।

3.9 शब्दावली

सामंजस्य की समस्या	:	एक व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत या सामाजिक संबंधों की मांग की प्रतिक्रिया में कठिनाइयाँ अनुभव करना।
काला धन	:	गैर-कानूनी धन।
सामना करने की कला	:	व्यक्तिगत जीवन की चुनौतियों का सामना करने का कौशल।
जन सांख्यिकीय	:	जनसंख्या से संबंधित।
परिस्थिति विज्ञान व्यस्था	:	शरीर की अंतरक्रिया व्यवस्थाएँ और उनके शारीरिक वातावरण के जैविक समुदाय।
जल मंडल	:	पृथ्वी का जलमग्न क्षेत्र।
वनस्पति नाशक	:	वे रसायन जो पौधों को नष्ट कर सकते हैं।
पहचान की समस्या	:	व्यक्ति की स्वयं को एक अच्छे व्यक्ति के रूप में प्रदर्शित करने की अयोग्यता
आंतरिक स्वीकृति	:	अपना महत्व या मूल्य स्वयं स्वीकार करना।
धन धोना	:	एक ऐसी गैर कानूनी प्रक्रिया जिसके माध्यम से काले धन को कानूनी धन के रूप में परिवर्तित करना।
नकारात्मक प्रक्रिया	:	दूसरे व्यक्ति की असहयोगी प्रतिक्रिया।
अपने आपको महत्व देना	:	स्वयं को अच्छा मानने की प्रवृत्ति।
सहोदर भाई या बहन	:	एक ही माता-पिता की संतान।
अव्यावहारिक	:	असंगत जो वास्तविक न हो।
अलगाव	:	समूह से दूर रहना।

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सारॉन वेगस्चीडर क्रुस (1989) : अनोदर चांस : साइंस एंड विहेवियर बुक्स, कैलिफोर्निया।

स्कॉट (1978) : सोशल प्राब्लम्स : फ्रॉरमैन एंड कम्पनी, इलीनॉइजस।

टाटा इंस्टीटयूट ऑफ सोसायल साइंस (19969 : हेल्थ हेबिट्स, हेल्दी लाइफ, मुम्बई।

यू एन डी सी पी (1999) : ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट, रिजन्ल ऑफिस, नई दिल्ली।

टी टी रंगनाथन (1989) : अल्कहोलिज्म एंड ड्रग डिपेंडेंसी, क्लिनिक्ल रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नई।

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. परिवार पर मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या प्रभाव पड़ता हैं?

   व्यसन एक पारिवारिक रोग है। यद्यपि परिवार में केवल एक व्यक्ति व्यसनी होता हैं किंतु इसके परिणामों से परिवार के सभी सदस्य पीड़ित होते हैं। व्यसन से परिवार में प्रत्याशित समस्याएँ ऐसी रहती हैं। इनमें से कुछ वित्तीय, कुछ स्वास्थ्य संबंधी और कुछ कानूनी समस्याएँ हो सकती हैं। परिवार का संतुलन बिगड़ जाता है और परिवार की सामान्य कार्य प्रणाली विकृत हो जाती है। व्यसन से पूरे परिवार का वातावरण दूषित हो जाता है।

बोध प्रश्न 2

1. व्यसन के संबंध में परिवारिक प्रतिक्रिया क्या होती है?

   परिवार के लोग अपने एक सदस्य के व्यसन के संबंध में अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। व्यसन का सामना करते हुए परिवार नकारात्मक, दोषारोपण, एकाकीपन तथा नियंत्रण करने आदि जैसी प्रतिक्रिया करता है। ये सभी प्रयास वेदम होते हैं। और कुछ प्रयास अप्रत्यक्ष रूप से व्यसन को बढ़ावा देते हैं।

बोध प्रश्न 3

1. सह निर्भरता क्या है?

   यह एक व्यावहारिक प्रतिरूप है जो परिवार के एक या उससे अधिक सदस्य व्यसन की प्रतिक्रिया में अपनाते हैं। व्यसनी के व्यवहार के परिणामस्वरूप भय के कारण परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा अपनाए गए व्यवहार वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यसन परिणामों का सामना करने में व्यसनी को रोकने का प्रयास करते हैं। यह निर्भरता व्यवहार (अैंदत) का एक सहयोगी हिस्सा बन जाता है।

बोध प्रश्न 4

1. व्यसन किस प्रकार से राष्ट्रीय विकास को प्रभावित करता हैं?

   कुछ मादक द्रव्य दुरुपयोग से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में राष्ट्रीय विकास अत्यधिक प्रभावित होता है। व्यसन से नागरिक का स्वास्थ्य और धन का नशा होता है। व्यसन से राष्ट्र की उत्पादन क्षमता कम हो जाती है, क्योंकि अधिकतर व्यसनी लोग सक्षम कर्मी नहीं होते हैं।

   राष्ट्रीय विकास पर व्यसन का अप्रत्यक्ष भार स्वास्थ्य की देखभाल, व्यसन की रोकथाम, अपराध, काला धन, आतंकवाद आदि क्षेत्रों के कारण पड़ता है।

इकाई 4 स्वापक (उपविष) औषध और मनोपरिवर्तक मादक द्रव्य अधिनियम, 1985 (एन डी पी एस एक्ट, 1985)

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मौजूदा औषध कानूनों में प्रमुख कमियाँ

4.3 एन डी पी एस एक्ट में 1989 का संशोधन अधिनियम

4.4 महत्वपूर्ण धाराएँ, अपराध और सजाएँ

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- एन डी पी एस एक्ट में प्रयुक्त प्रमुख शब्दावली को परिभाषित कर सकेंगे,
- एन डी पी एस एक्ट की प्रमुख विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे, और
- एन डी पी एस एक्ट में सम्मिलित किए गए विभिन्न प्रकार के अपराधों और दण्डों को जान सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

जबकि हम शराब, मादक द्रव्यों और एच आई वी से संबंधित विभिन्न पहलुओं की चर्चा कर रहे हैं ऐसी स्थिति में यह वांछनीय होगा कि हम मादक द्रव्यों से संबंधित कानूनों में से कम से कम एक अधिनियम की समीक्षा करें। इसलिए आइए इस इकाई में एन डी पी एस अधिनियम, 1985 की समीक्षा करें।

एन डी पी एस अधिनियम, जो बहुत प्रसिद्ध है, एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या, मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार की रोकथाम से ज़ाना जाता है। यह एक विशेष अधिनियम भी है जिसके अंतर्गत प्राय: बहुत सारे मामले न्यायालयों में प्रस्तुत किए जाते हैं तथा अनेक विवादास्पद निर्णय दिए जाते हैं जिनसे साधारण आदमी उलझन में पड़ जाता है।

एन डी पी एस एक्ट के बनने से पहले "भारत में अनेक केंद्रीय और राज्य अधिनियमों के माध्यम से स्वापक द्रव्यों पर नियंत्रण किया जाता था। तीन प्रमुख केंद्रीय अधिनियम, जैसे कि अफीम अधिनियम, 1857, 1878 तथा खतरनाक मादक द्रव्य अधिनियम, 1930 बहुत पहले लागू किए गए थे। लम्बे समय के अंतराल और राष्ट्र तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार तथा मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण मौजूदा कानूनों को लागू करते समय अनेक खामियाँ देखनें में आई।

4.2 मौजूदा औषध कानूनों में प्रमुख कमियाँ

एन डी पी एस अधिनियम में पाई गई प्रमुख कमियों को हम चार श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं जो निम्न प्रकार हैं:

1. तात्कालिक कानून तस्करों के संगठित गिरोहों की चुनौतियों का सामना करने, उन्हें दण्डित करने के लिए समुचित नहीं थे। भारत मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के आवागमन की समस्या का सामना कर रहा है जिसका लक्ष्य पड़ोसी देशों से पश्चिमी देश होते हैं। खतरनाक मादक द्रव्य अधिनियम 1930 के प्रावधानों के अनुसार ऐसे अपराधों के लिए जुर्माने सहित या अलग से तीन वर्ष की सजा तथा दोबारा अपराध करने का जुर्माना सहित या अलग से 4 वर्ष की सजा का प्रावधान है। मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के अपराधों से निपटने के लिए न्यूनतम दण्ड निर्धारित नहीं किया गया है तथा ऐसे तस्करों को बहुत-बार सामान्य रूप से दण्डित करके छोड़ दिया जाता था।

2. उस समय के केंद्रीय कानूनों में स्वापक, सीमा शुल्क, उत्पादक एवं आबकारी जैसी महत्वपूर्ण एजेंसियों के अधिकारियों को इन कानूनों के तहत इन अपराधों की रोकथाम एवं जाँच अधिकार उपलब्ध नहीं कराए गए थे।

3. जब तक उपर्युक्त तीनों केंद्रीय कानूनों के लागू होने के बाद से विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संधियों और विज्ञप्तियों के माध्यम से स्वापक नियंत्रण को क्षेत्र में एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय कानून संगठन बनाया गया। भारत इन सम्मेलनों, संधियों और समझौतों में शामिल था जिनमें अनेक शर्तें थी जो इन मौजूदा कानूनों के अंतर्गत नहीं आते थे अथवा आंशिक रूप से आते थे।

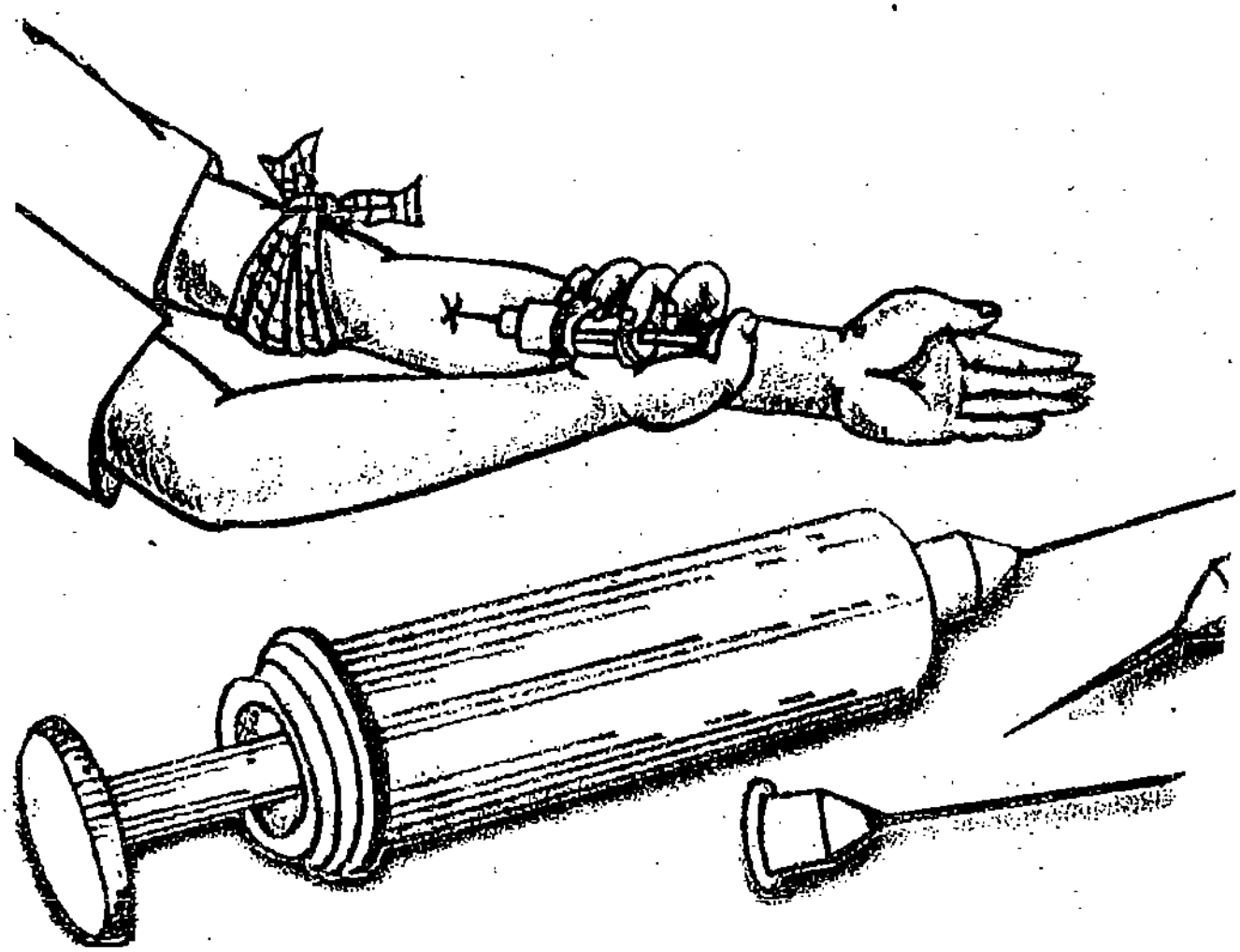

4. हाल के वर्षों में मनोपरिवर्तक के रूप में व्यसन के नए मादक द्रव्यों का उदगम हुआ है जिनसे राष्ट्रीय सरकारों के बहुत बड़ी समस्याएँ हो गई हैं। 1971 में मनोपरिवर्तक मादक द्रव्यों पर हुए समझौते, जिसमें भारत भी एक सदस्य था, के अनुसार ऐसे व्यापक कानून नहीं थे जिनके अनुसार मादक द्रव्यों पर प्रतिबंध लगाया जा सके।

उपर्युक्त कारणों को ध्यान में रखते हुए स्वापक मादक द्रव्यों और मनो-परिवर्तक द्रव्यों पर व्यापक कानून बनाने की अत्यंत आवश्यकता महसूस की गई जिन्हें स्वापक मादक द्रव्यों के नियंत्रण के संबंध में तात्कालिक कानूनों को समन्वित करने, और संशोधन करना, मादक द्रव्य दुरुपयोग पर नियंत्रण को कठोरता से लागू करना, मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार अपराधों के लिए व्यापक रूप से दण्डित करना, मनो-परिवर्तिक द्रव्यों पर प्रभावशाली नियंत्रण के लिए प्रावधान करना तथा स्वापक द्रव्यों ओर मनो-परिवर्तन मादक द्रव्यों से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का जिसका भारत एक पक्ष है को लागू करने के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता थी।

4.3 एन डी पी एस एक्ट में 1989 का संशोधन अधिनियम

एन डी पी एस एक्ट 1989 में संशोधित किया गया। इस बिल में शामिल उद्देश्यों और कारणों को नीचे दर्शाया गया है:

हाल के वर्षों में भारत गैर कानूनी मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार संचालन की समस्या को सामना कर रहा है। इस प्रकार के अवैध व्यापार से मादक द्रव्यों के दुरुपयोग और व्यसन की घातक समस्या पैदा हो गई है एन डी पी एस एक्ट, 1985 में मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोकने के लिए कठोर दण्ड निर्धारित किए गए हैं। यहाँ तक इससे संबंधित प्रमुख अपराधों में सजा के स्तर पर गिरफ्तारी को गैर-जमानती अपराध घोषित किया गया है किंतु अपराधी तकनीकी आधारों पर जमानत देकर छूट जाते हैं।

एन डी पी एस एक्ट, 1985 को लागू करने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, इसको ध्यान में रखते हुए अधिनियम को और शक्तिशाली बनाने तथा संशोधन करने की अत्यंत आवश्यकता है।

इस अधिनियम में निम्नलिखित के लिए 1989 में संशोधन किया गया :

1. अवैध मादक द्रव्यों व्यापार मादक द्रव्य दुरुपयोग के निवारण में संघर्ष के लिए किए जाने वाले उपायों में होने वाले खर्च की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय मादक द्रव्य नियंत्रण निधि की स्थापना करना।

2. एन डी पी एस एक्ट के प्रावधानों के अंतर्गत स्वापक मादक द्रव्य और मनोपरिवर्तक द्रव्यों के उत्पादन के लिए आवश्यक पदार्थों को शामिल करना और इन नियमों का उल्लंघन करने पर कड़ी सजा का प्रावधान करना।

3. अधिनियम के तहत सजा को न तो क्षमा करना और न ही उस में कमी करना।

4. पकड़े गए मादक द्रव्यों को नष्ट करने के लिए पूर्व अभ्यास का प्रावधान।

5. विनिर्दिष्ट अपराध और कुछ मादक द्रव्यों का विनिर्दिष्ट निर्धारित मात्रा के संबंध में दूसरी बार अपराध करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान करना।

6. इसी अपराध में सम्पत्ति को कुर्क करना अथवा जब्त करना और विस्तृत प्रक्रिया को अपनाना तथा

7. अपराध संज्ञेय और गैर जमानती बनाना।

अधिनियम का क्षेत्र/विस्तार

इस अधिनियम की 83 धाराएँ तथा एक अनुसूची दी गई है जिसमें मनो-परिवर्तक मादक द्रव्यों के नाम दिए गए हैं। इस अधिनियम के अध्याय 3 में पर्याप्त प्रावधानों को शामिल किया गया है जिसमें कुछ गतिविधियों पर प्रतिबंध, नियंत्रण और नियमों का संकलन किया गया है। अध्याय 4 में अपराधों और दण्डों को फिर से सशक्त प्रावधानों से जोड़ा गया है। यह सबसे बड़ा अध्याय है जिसमें प्रावधानों को शामिल किया गया है इनको निम्नांकित रूप से श्रेणीवद्ध किया जा सकता है।

क) धारा 15 ए 27 ए विभिन्न अपराधों की सजा से संबंधित है।

ख) अवशिष्ट दण्ड प्रावधान-धारा 32

ग) धारा 28 से 30 (प्रयत्न, भड़काना और तैयारी करना)

घ) अपराधी सिद्ध होने के बाद कठोर दंड देना-धारा 31 से 31ए (धारा 31 क कुछ अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान करती है।)

ङ) कम्पनियों द्वारा किए गए अपराध - धारा 38

च) सजा को समाप्त करना आदि तथा परिवीक्षा पर छोड़ने के प्रावधान समाप्त करना - धारा 32 ए तथा 33)

छ) सुरक्षा - धारा 34

ज) अपराधिक मानसिक स्थिति की संभावना धारा 35 (53 ए, 54 और धारा) तथा

झ) विशेष न्यायालय - धारा 36 से 36 डी।

एन डी पी एस, 1985 की कुछ महत्वपूर्ण धाराओं की स्पष्टता के लिए उनकी व्याख्या की गई है।

परिभाषाएँ

इस अधिनियम की धारा 2 में परिभाषाएँ दी गई हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं:

1. व्यसनी का अर्थ है जो व्यक्ति किसी भी प्रकार का स्वापक या मादक द्रव्य के प्रयोग का आदी हो।

2. भांग या गांजा का अर्थ है (क) चरस चाहे कच्ची हो या परिष्कृत तथा इसमें हशीश या भांग का तेल हो या तरल भांग, शामिल है। (ख) गाँजा भांग के पौधे पर फूल या फल है चाहे उसका कोई भी नाम हो (इसमें ऊपरी भाग रहित बीच और पत्तियाँ शामिल नहीं है) तथा (ग) कोई भी मिश्रण, चरस या गांजा जिसमें कोई प्राकृतिक सामग्री हो या न ही के साथ या कोई पेय जो इसके द्वारा बनाया गया हो।

3. कोका तत्व का अर्थ है, (क) अपरिष्कृत कोकेन या कोका की पत्तियों का कोई भी सत्व हो जिसे कोकेन बनाने में प्रयोग किया जाता है, (ख) एकॉगोनाइन तथा इसके सभी सत्व (ग) कोकेन तथा (घ) सभी उत्पाद जिनमें प्रतिशत से अधिक कोकेन की मात्रा हो।

4. कोक पौधों का अर्थ एरीथ्रोक्सीलोन (Erythroxylon) वंश का कोई भी पौधा।

5. मादक द्रव्य अवैध व्यापार के अर्थ :

   (क) किसी कोका पौधे की कृषि या कोका पौधे के किसी भाग को एकत्रित करना,

   (ख) अफीम/पोस्त भांग के किसी पौधे की खेती करना,

   (ग) किसी भी मादक द्रव्य या मनो-परिवर्तक द्रव्य के उत्पादन, निर्माण में रखना विक्रय, क्रय, परिवहन, भण्डारण, छिपाकर रखना, उपभोग करना, अंतर्राजीय स्थानांतरण, भारत में आयात करना, भारत से निर्यात करना अथवा नौकांतरण कार्य में शामिल होना।

(घ) उपर्युक्त कार्यकलापों के अतिरिक्त अन्य कार्यों में सक्रिय होना, अथवा

(ड.) उपर्युक्त क से घ में दिए गए किसी कार्यकलापों से संबंधित गतिविधियों को करना या करने के लिए किराये पर स्थान उपलब्ध कराना, तथा इसमें शामिल हैं:

(i) ऊपर दिए गए किसी भी कार्यकलाप के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वित्तीय सहायता देना।

(ii) उपर्युक्त कार्यकलापों के लिए उत्साहित करना, किसी तरह का षडयंत्र करना अथवा ऐसा करने में किसी भी प्रकार की सहायता करना, तथा

(iii) उपर्युक्त किसी भी गतिविधि में शामिल व्यक्तियों को आश्रय देना।

6. निर्माण का अर्थ (i) इस प्रकार के मादक द्रव्य या पदार्थों को उत्पादन के अतिरिक्त अन्य प्रक्रिया से प्राप्त किया जा सकता हो। (ii) इस तरह के मादक द्रव्यों या पदार्थों को परिष्कृत करना, (iii) इस तरह के मादक द्रव्यों और पदार्थों का रूपांतरण करना, तथा (iv) इनको तैयार करता (औषधालयों और विनिर्देशन के अलावा) जिसमें इस प्रकार के मादक द्रव्य या पदार्थ शामिल हों।

7. तैयार/निर्मित मादक द्रव्य का अर्थ (i) सभी कृत्रिम कोका, चिकित्सकीय भांग या चरस, अफीम पोस्त पोयाल व तूण सान्द्र, (ii) या इसी तरह से सरकार द्वारा घोषित कार्य।

8. स्वापक मादक द्रव्य का अर्थ कोका की पत्तियों, भांग (पोस्त) अफीम, अफीम पौधे के भाग तथा निर्मित मादक द्रव्य।

9. अफीम का अर्थ अफीम पोस्त का जमा हुआ रस और इसी के मिश्रण किसी प्रकार के निष्क्रिय करने वाले।

10. पोस्त अंगों का अर्थ है (बीजों के अतिरिक्त) कटाई के पश्चात् अपने मूल रूप में कटे हुए, कुचले हुए या भूसा बनाये हुए हों, चाहे उसका रस निकाला गया हो या न निकाला गया हो, शामिल हैं।

11. पोस्त अंग संक्रेदन का-अर्थ है जब पोस्त अंगों को क्षारीय सांद्र में बदलने के लिए तैयार करना।

12. मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य का अर्थ है कोई भी पदार्थ चाहे प्राकृतिक हो या कृत्रिम, अथवा कोई प्राकृतिक सामग्री या किसी प्रकार का मिश्रण या इन पदार्थों अथवा मिश्रण से तैयार कोई सामग्री इस अधिनियम की सूची में शामिल की गई है।

13. कृत्रिम अफीम का अर्थ है (i) चिकित्सीय अफीम, चाहे वह चूर्ण या दानेदार हो या प्राकृतिक सामग्रियों में मिश्रित हो (ii) तैयार अफीम, अफीम का किसी भी प्रकार का तैयार पदार्थ जो ऐसे रूप में निर्मित हो कि जिसमें धूम्रपान के बाद अपशिष्ट के योग्य हो और या अवशिष्ट बचे रहें (iii) फेनाथ्रीन क्षार जैसे मार्फीन, कोडेन, थिवेन तथा उनके कारण (iv) डाइसेटिल मार्फीन जो कि क्षारणीय भी है जिसे मार्फीन या हेराईन कहा जाता है और इसके लवण तथा (v)0.2 प्रतिशत से अधिक मार्फीन या किसी भी प्रकाश के डाइसेटिल मार्फीन शामिल वाले सभी पदार्थ।

14. अफीम पोस्त का अर्थ है (i) स्वापक एल पेपवर वर्ग का पौधा, तथा (ii) पेपवर वर्ग के कोई अन्य पौधा जिससे अफीम या फेनाथ्रीन क्षार निकाला जा सके और जिन्हें इस प्रकार सरकार ने घोषित किया हो।

15. पोस्त अंग का अर्थ अफीम के सभी हिस्से (बीज को छोड़कर) जो कटाई के बाद चाहे वे अपने मूल रूप में हो या कूटे हुए या चूर्ण बनाए हुए या रस इनसे निकाला गया हो।

16. स्वापक या मनो-परिवर्तक तैयार पदार्थ का अर्थ है, इस प्रकार के एक या अधिक मादक द्रव्य या पदार्थ जो खुराक के रूप में किसी भी प्रकार के घोल या मिश्रण रूप में हो जिसमें एक या अधिक ऐसे मादक द्रव्य हो।

17. उत्पादन का अर्थ है अफीम, पोस्त अंग, कोका पत्तियों या भांग को उनके पौधों से अलग किया जाए।

'व्यसनी' की अभिव्यक्ति उस व्यक्ति पर लागू होती है जो किसी मादक द्रव्यों को लत के रूप में प्रयोग करता है। अफ्रीका में भांग को मैरीजूना कहते हैं। भारत में इसकी परिभाषा में पत्तियों, और बीजों को छोड़ा गया जब उनमें पौधें के ऊपरी भाग शामिल न हो। भांग को अधिनियम में सम्मिलित नहीं किया गया है जबकि चरस इसमें शामिल हैं (धारा 10(1) (ए) के उद्देश्यों के अतिरिक्त) 'हेरोइन' एक तैयार मादक द्रव्य है जिसे अफीम सारा तत्व से तैयार किया जाता है जिसकी मात्रा कोई भी हो।

संस्थाएँ और अधिकरी

इस अध्याय में मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के प्रभावों को रोकने एवं इसके विरुद्ध संघर्ष करने के उपाय करने के लिए केंद्र सरकार को अधिकृत किया गया है। कुछ उपाय इस प्रकार है:

क) संस्थाओं/राज्य सरकारों आदि के बीच समन्वय करना।

ख) अंतर्राष्ट्रीय समझौते के तहत निर्णयों का पालन करना।

ग) मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोकने और उसे समाप्त कम करने के लिए संबंधित विदेशी और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को सहायता देना ताकि समन्वय और सार्वभौमिक कार्रवाई की जा सके।

घ) व्यसनियों की पहचान, उपचार, शिक्षा, देखभाल, उनका पुनर्वास और समाज में उन्हें फिर से सम्मिलित करना।

ड.) इस अधिनियम के प्रावधानों को प्रभावकारी रूप में लागू करने से संबंधित ऐसे अन्य मामले।

धारा 4: यह धारा केंद्र सरकार को मादक द्रव्य पदार्थों के विरुद्ध अधिकार देती हैं (क) दुरुपयोग और (ख) स्वापक मादक द्रव्य तथा मनो-परिवर्तक पदार्थों पर रोक लगाना। इस धारा के अंतर्गत मार्च, 1986 में स्वापक नियंत्रण ब्यूरों की स्थापना की गई।

अधिनियम की धारा 5 के अंतर्गत केंद्रीय सरकार ने स्वापक आयुक्त तथा इसी तरह के अन्य अधिकारियों की नियुक्ति की है जो अफीम पोस्त की कृषि और अफीम के उत्पादन का निरीक्षण व निगरानी तथा इससे संबंधित कार्यों की देखभाल और उनका संचालन करते हैं।

इस अधिनियम की धारा 6 के अंतर्गत : केंद्र सरकार ने एक सलाहकार समिति स्थापित की है जिसे दि नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटांस कंस्लटेटिव कमेटी कहते हैं। यह समिति इस अधिनियम को लागू करने से संबंधित मामलों पर परामर्श देती है।

धारा 7 (ए) : केंद्र सरकार की तरह ही राज्य सरकारों को भी इस अधिनियम को लागू करने के लिए आवश्यकतानुसार अधिकार दिए हैं अधिकारियों की नियुक्ति अधिकार देती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग को नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय कोष

धारा 7 ए केंद्र सरकार को एक फंड स्थापित करने का अधिकार प्रदान करती है, इसे मादक द्रव्य दुरुपयोग नियंत्रित राष्ट्रीय फंड कहते हैं। इस फंड का प्रयोग मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोकने तथा स्वापक मादक द्रव्यों एवं मनो-परिवर्तक पदार्थों के दुरुपयोग पर नियंत्रण करने में खर्च किया जाता है। धारा 7 बी के अनुसार केन्द्रीय सरकार वित्त पोषित गतिविधियों का वार्षिक हिसाब देना होता है।

निषेध, नियंत्रण एवं विनियमन

एन डी पी एस अधिनियम की धारा 8 निम्नांकित संचालन को प्रतिबंधित करती है। इसमें कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति निम्नलिखित नहीं करेगा : किसी कोका पौधे की खेती नहीं करेगा या उसके किसी भाग को एकत्रित नहीं करेगा, या अफीम पोस्ट या भांग की खेती नहीं करेगा, या

स्वापक मादक द्रव्यों अथवा मनो-परिवर्तक द्रव्यों का उत्पादन, निर्माण अधिग्रहण, किसी विक्रय, क्रय, परिवहन भंडारण, प्रयोग, उपभोग, अंतरराजीय, आयात, निर्यात, भारत में आयात-निर्यात अथवा जहाज द्वारा भेजना आदि नहीं करेगा।

इसमें चिकित्सा या वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए छूट दी गई है जो अनुमति के अनुसार किए गए जाएँगे। (इस प्रकार लाइसेंस, अनुमति या प्राधिकृत की शर्तों के अनुसार होगा।)

स्वामित्व या कब्जे के दो हैं : (क) भौतिक रूप से नियंत्रण अथवा भौतिक रूप से नियंत्रण करने की शक्ति रखना, तथा (ख) ज्ञान कि अमुक वस्तु किसी के कब्जे में है या किसी भौतिक नियंत्रण में है। अत: भौतिक तत्व (कब्जा या नियंत्रण) इसी प्रकार मानसिक तत्व (प्रज्ञान) के सिद्ध होने पर इस धारा के अंतर्गत अपराधी को दण्डित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. एन डी पी एस अधिनियम, 1985 के पहले क्या आप चार प्रमुख कमियों को सूचीवद्ध कर सकते हैं?

.....

.....

.....

2. एन डी पी एस अधिनियम 1985 का विस्तार क्या है?

.....

.....

.....

4.4 महत्वपूर्ण धाराएँ, अपराध और सजाएँ

हम मौजूदा मादक द्रव्य कानूनों की प्रमुख कमियों का अध्ययन कर चूके हैं। आइए अब संशोधित एन डी पी एस अधिनियम 1989 की महत्वपूर्ण धाराओं, अपराधों और दण्डों के विषय की चर्चा करते हैं।

धारा 15: पोस्त पौधे के अंगों से संबंधित अपराध करने पर दण्ड : जो व्यक्ति इस अधिनियम के प्रावधानों का इसके नियमों या आदेशों का या स्वीकृत लाइसेंस के अंतर्गत मादक द्रव्यों के निर्माण, स्वामित्व, परिवहन, आयात-निर्यात (अंतर राज्यों में) क्रय, विक्रय, पोस्त त्रूण, प्रयोग या भंडारण छुपाना या हटाना या पोस्ट त्रणु भंडारण का प्रयोग करना अथवा उनके भंडारण से संबंधित नियमों का उल्लंघन करने पर या कोई करना दण्डनीय होगा जिसमें कम से कम 10 वर्ष की कड़ी सजा दी जाएगी। इस कड़ी सजा का विस्तार 20 वर्ष का हो सकता है और साथ में जुर्माना जो एक लाख से रुपये कम न होगा तथा जिसकी व राशि दो लाख रुपये तक हो सकती है। न्यायालय दो लाख रुपये से अधिक भी जुर्माना कर सकता है परंतु निर्णय में इसके विस्तार कारणों का उल्लेख भी किया जाएगा।

धारा 16 : इस धारा में कोका पौधों और कोका पत्तियों के संबंध में नियमों का उल्लंघन करने पर दण्ड का प्रावधान है। इस की धारा के अंतर्गत नियम या आदेश या इस अधिनियम के अंतर्गत स्वीकृत किए गए लाइसेंस की सेवा शर्तों का उल्लंघन को दण्डनीय अपराध माना जाएगा। इस अधिनियम के अंतर्गत (i) कोका पौधों की खेती करना या किसी हिस्से को एकत्रित करना या (ii) कोका पत्तियों से संबंधित 8 कार्यों में से किसी एक के उल्लंघन पर भी दण्डनीय अपराध होगा।

धारा 17 : अफीम निर्माण करने से संबंधित कुछ कार्यों को करने पर दण्ड का प्रावधान है।

धारा 18 : अफीम पोस्त की कृषि कार्य करने से संबंधित अथवा अफीम से संबंधित किसी भी प्रकार के उल्लंघन करने पर या नियमों का पालन न करने पर दण्डित किया जाता है।

धारा 19 : कृषक द्वारा अफीम का अपहार या गबन करने के संबंध में किसी भी प्रकार का उल्लंघन दण्डनीय अपराध हैं।

एंन डी पी एस अधिनियम के अनुसार कृषक द्वारा पोस्त तृण, कोका पौधे तथा इसकी पत्तियों, अफीम का निर्माण अफीम पोस्त और अफीम का अपहार या उसको गबन करने के कार्य को या उल्लंघन को अत्यन्त गंभीर माना गया है। सभी अपराधों के लिए 10 से 20 वर्ष की कड़ी कैद और एक से दो लाख या इससे भी अधिक जुर्माने के साथ दण्ड देने का प्रावधान है।

धारा 20 : भांग के पौधे और भांग से संबंधित किसी भी उल्लंघन के लिए इस अधिनियम की इस धारा में दंड का प्रावधान है इस अधिनियम के तहत दिए लाइसेंस के किसी भी नियम व शर्तों तथा आदेश के उल्लंघन दण्डनीय अपराध हैं। ये निम्न प्रकार हैं:

(क) भांग की किसी भी प्रकार की कृषि करना या,

(ख) भांग का उत्पादन, निर्माण, स्वामित्व, विक्रय, क्रय, परिवहन, अंतर्राज्यीय आयात-निर्यात या प्रयोग करना

(i) गांजा या भांग की कृषि करने से संबंधित किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए कड़ी सजा का प्रावधान है। यह सजा वर्णित पूरी अवधि के साथ बढ़ा कर 5 वर्ष की और अधिक हो सकती है जिसके साथ आर्थिक दंड जो 50 हजार रुपये भी किया जा सकता है।

(ii) गांजा के अतिरिक्त भांग की कृषि से संबंधित किसी भी नियम का उल्लंघन करने की स्थिति में कड़ी सजा दी जाएगी जिसकी अवधि 10 वर्ष से कम न होगी और यह 25 वर्ष तक की बढ़ाई जा सकती है। इसके साथ ही कम से कम एक लाख रुपये जुर्माना हो सकता है, जो 2 लाख रुपये तक भी हो सकता है। न्यायालय यदि चाहे तो इस राशि का विस्तार दो लाख से अधिक कर सकता है, इसके लिए उसे अपने निर्णय में कारणों का उल्लेख करना होगा।

धारा 22 : मनो-परिवर्तक मादक द्रव्यों से संबंधित उल्लंधन के लिए दण्ड का प्रावधान : इसके अनुसार कोई भी इस अधिनियम के प्रावधानों या नियमों या आदेशों का अथवा स्वीकृत लाइसेंस की शर्तों का जिसे मादक द्रव्यों के निर्माण, स्वामित्व विक्रय, क्रम, परिवहन, अंतर्राज्यीय स्तर पर आयात-निर्यात के नियम हैं इनमें से किसी नियम, आदेश व शर्तों का उल्लंघन करने पर कड़ी सजा दी जाएगी जो 10 वर्ष की अवधि से कम न होगी और यह सजा 20 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है इसके साथ ही न्यूनतम एक लाख रुपये के जुर्माने का प्रावधान है, यह जुर्माने की राशि दो लाख रुपये से अधिक भी की जा सकती है। न्यायालय अपने निर्णय में बढ़ाने के कारणों का उल्लेख करेगा।

जहाँ तक 'मनो-परिवर्तक मादक द्रव्य' का अर्थ है, यह नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत किया गया नाम है। यह व्यापारिक नाम नहीं है। अधिनियम की सूची में अंतर्राष्ट्रीय नामों को सूचीवद्ध किया गया है।

धारा 23 : भारत से स्वापक मादक द्रव्यों और मनो-परिवर्तक पदार्थों के अवैध आयात-निर्यात या नौपरिवहन के किसी भी प्रकार के उल्लंघन करने पर इस अधिनियम के तहत बने नियम आदेशों या इसके तहत स्वीकृत लाइसेंस की शर्तों के उल्लंघन करने पर या स्वीकृत प्रमाण-पत्र या अधिकृत किए गए नियमों का उल्लंघन करने पर तथा संबंधित किसी नियम-कानून के उल्लंघन पर 10 वर्ष की कड़ी सज़ा का प्रावधान है जो 20 वर्ष तक की जा सकती है साथ ही न्यूनतम एक लाख रुपये का जुर्माना जो 2 लाख रुपये से भी अधिक किया जा सकता है। इसके साथ ही न्यायालय अपने निर्णय में सजा बढ़ाने के कारणों का उल्लेख करेगा।

धारा 25 : परिसर की अनुमति देने पर दण्ड के लिए प्रयुक्त धारा के अनुसार "जो कोई अपने स्वामित्व, या कब्जे या नियंत्रण या प्रयोग में आने वाले घर, आवास, कक्ष, साथ में लगा स्थान, खाली स्थान, जगह, पशु या वाहन के प्रयोग की जानबुझ कर किसी व्यक्ति को अनुमति देता है तो यह इस अधिनियम का उल्लंघन माना जाएगा और दण्ड का भागीदार होगा। इसमें किसी भी प्रावधान के अंतर्गत 10 वर्ष की बड़ी सजा दी जा सकती है जिसकी अवधि 20 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है साथ में न्यूनतम राशि का जुर्माना किया जाएगा जो एक लाख से कम न होगी। यह जुर्माना राशि 2 लाख रुपये तक की हो सकती है। न्यायालय अपने निर्णय में अपराध की गंभीरता के कारणों का उल्लेख करेगा।

धारा 29 : इस धारा के अंतर्गत द्रव्य तैयार करने में किसी प्रकार के अपराधिक षडयंत्र करना या उकसाना या किसी साक्ष्य को मिटाना जो इस अधिनियम के तहत अपराधिक कार्यकलाप माना जाता है, दण्डनीय है।

धारा 31 : यह धारा पहले किए गए अपराधों में से कुछ अपराधों को पुनः करने से संबंधित है। इस संबंध में यह दण्ड को बढ़ाने का अधिकार प्रदान करती है। किसी भी भारतीय न्यायालय में पहले किए गए अपराध को पिछले कोर्ट में दी गई सजा का प्रमाण-पत्र सजा की प्रमाणित प्रति का सारांश, अपराधी ने जिस जेल में सजा काटी है उस जेल प्रभारी के हस्ताक्षरों से प्रमाणित प्रमाण-पत्र तथा दी गई सजा के न भुगतने पर उससे संबंधित जारी वारंट प्रस्तुत करने पर सिद्ध किया जा सकता है। यह साक्ष्य उसी स्थिति में प्रसतुत किए जाएँगे जब अपराधी ने दूसरी बार भी अपराध किया है और वह अपराध प्रमाणित हो गया है।

धारा 31 (क) : अधिनियम की इस धारा में एक बार अपराध करने और कुछ की पुनरावृत्ति करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान है। इस धारा में कुछ अपराधों के लिए अनिवार्य मृत्युदंड का वर्णन है तो भी इसके अतिरिक्त इस दण्ड के संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 के संदर्भ में संभावित विरोधाभास हैं। इसी तरह से भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 के स्थान किसी व्यक्ति की हत्या करने के संबंध में मृत्युदण्ड का प्रावधान है परंतु इस धारा के तहत उम्र कैद का भी प्रावधान मौजूद है। यह ध्यान रहे कि भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 को पहले ही असंवैधानिक घोषित किया हुआ है। इसी तरह की विडम्बना धारा 31 (ए) के साथ भी हो सकती है। यह धारा भी अनौचित्य निवारण से संबद्ध है और दण्ड की विशिष्टीकरण को पूर्ण रूप से नकारती है। सजा के वैयक्तिक पक्ष को पूरी तरह नकारने के कारण अनुपयुक्त हो जाती है। क्योंकि यह न्यायालय को अपराधी के अपराध की गंभीरता को मापने से परे करती है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. एन डी पी एस अधिनियम के अंतर्गत आने वाले चार अपराधों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

2. कुछ उपराधों के लिए मृत्युदण्ड को प्रावधान धारा 23(ए) में नीहित हैं, इस धारा को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

इस इकाई में एन डी पी एस एक्ट के कानूनी प्रावधानों से आपको परिचित कराने का प्रयास किया गया है। एक्ट के प्रावधानों का अध्ययन करने के पश्चात् आप इसमें मादक द्रव्यों के प्रयोग की गई शब्दावली, उपलब्ध कुछ मादक द्रव्य तथा मादक द्रव्य व्यसनी अवैध मादक द्रव्यों के नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए कठोर सजा से अवगत होंगे। इस विषय की गंभीरता इस प्रावधान से स्वयं स्पष्ट हो जाती है कि मादक द्रव्यों से संबंधित अपराधियों के लिए मृत्युदण्ड भी निर्धारित किया गया है।

4.6 शब्दावली

व्यसनी (नशा करने वाला)	:	वह व्यक्ति जो लत के कारण मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करता है।
भांग	:	मारीजूना
अफीम	:	अफीम के पौधों या पोस्त से तैयार किए गए द्रव्य।

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एन डी पी एस एक्ट, 1985 की मूल प्रति

वक्सी, पी एस : दि नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्स्टांस एक्ट, 1985 तथा एन डी पी एस रुल्स 1985 (अन्य संबंधित अधिनियमों, नियमों के साथ इसी पुस्तक को आधार बनाकर इस इकाई का निर्माण किया गया)

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. क्या आप एन डी पी एक्ट, 1985 के बनने से पहले के अधिनियमों में व्याप्त चार मुख्य दोषपूर्ण कानूनों की सूची बना सकते हैं?

   (i) संगठित गैंगों, तस्करों से निपटने के लिए दण्ड पर्याप्त नहीं थे।

   (ii) कानून लागू करने एवं दण्ड दिलाने वाली एजेंसियों को सम्पूर्ण जाँच करने की शक्ति प्रदान नहीं की गई थी।

   (iii) मौजूदा कानूनों में अंतर्राष्ट्रीय समझौतों के अनुसार प्रावधान शामिल नहीं थे।

   (iv) व्यसन के नए मादक द्रव्य जैसे कि मनो-परिवर्तक मादक द्रव्यों से गंभीर भयानक स्थिति पैदा हो गई थी जिनकी रोकथाम के लिए उपयुक्त प्रावधान नहीं।

2. एन डी पी एस एक्ट, 1985 का विस्तार क्या है?

   एन डी पी एस एक्ट में 83 धाराएँ तथा मनो-परिवर्तक मादक द्रव्यों की एक सूची शामिल की गई है। एक्ट के वास्तविक प्रावधानों में कुछ गतिविधियों पर प्रतिबंध नियंत्रण तथा विनियमों का संकलन किया गया है। अपराधों और दंडों से संबंधित प्रावधानों के द्वारा उन्हें और अधिक शक्तिशाली बनाया गया है।

बोध प्रश्न 2

1. एन डी पी एस एक्ट, 1985 के अंतर्गत किन्हीं चार अपराधों की सूची बनाइए।

   (i) अफीम पोस्त की खेती करना कानूनी अपराध है।

   (ii) खेतीहारों या कृषको द्वारा अफीम का गबन करना या उसे चोरी से पैदा करके अवैध व्यापारियों को बेचना।

   (iii) भारत से स्वापक मादक द्रव्यों या मनो-परिवर्तक मादक पदार्थों का निर्यात या आयात करना और उन्हें जहाजों अथवा अन्य साधों से लाना-ले जाना आदि।

   (iv) इस अधिनियम में प्रतिबंधित गतिविधियों के संचालन में स्थान, प्रयोग की अनुमति देना।

2. कुछ विशेष अपराधों के लिए धारा 31 (ए) में मृत्युदण्ड का प्रावधान है, इसे स्पष्ट करें।

धारा 31 (ए) में कुछ अपराधों की पुनरावृत्ति करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान निहित किया गया है। इस अधिनियम के अंतर्गत कुछ अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 के विपरीत माना जा सकता है। यह भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 के अनुरूप ही है जिसमें हत्या के अपराधी को मृत्युदण्ड अथवा उग्र कैद देने का प्रावधान है। वैसे भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 को असैविधानिक घोषित किया जा चुका है। यही प्रतिक्रिया इस अधिनियम की धारा 31 (ए) के संबंध में हो सकती है।

इकाई 5 मादक द्रव्यों की माँग और आपूर्ति में कमी करना

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : कौन करता है?

5.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग : क्यों होता है?

5.4 माँग कम करने का मूलाधार

5.5 माँग कम करने के लिए कार्यनीतियाँ

5.6 आपूर्ति में कमी करना

5.7 सारांश

5.8 शब्दावली

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको निम्नलिखित के बारे में जानकारी प्रदान करना है। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- वो व्यक्ति जो आसानी से मादक द्रव्यों के व्यसनी बन जाते हैं, उसके संबंध में जान सकेंगे;
- कुछ व्यक्ति व्यसनी क्यों बन जाते हैं? इसका पता लगा सकेंगे;
- व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र पर व्यसन के क्या बुरे प्रभाव पड़ते हैं? इन कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- माँग में कमी करने की आवश्यकता अथवा हमें इसकी रोकथाम के लिए काम क्यों करना चाहिए? इसे समझ सकेंगे;
- लोगों को मादक द्रव्यों की अभिलाषा करने से रोकने के लिए कौन से तरिके अपनाये जा सकते है? उन घटकों को खोज सकेंगे; और
- मादक द्रव्यों की आपूर्ति पर पाबंदी क्यों और कैसे लगाई जाए; इसका विवरण दे सकेंगे।

जैसा कि हमने उपर्युक्त मुद्दों पर चर्चा है, इसलिए हम देखेंगे कि वास्तव में लोग किस प्रकार से मादक द्रव्य प्राप्त करते हैं और हम कैसे इसकी माँग और आपूर्ति को कम कर सकते हैं। हम आशा करते है कि यह इकाई पाठकों की रसायनों के प्रयोग की गंभीरता को समझने में सहायता करेगी रहेगी साथ ही पाठकों में युवा पीढ़ी को इससे बचाने और एक अच्छा नागरिक बनाने में सहायता मिलेगी।

5.1 प्रस्तावना

शराब तथा मादक द्रव्य मानव जाति के लिए हानिकारक है। सरकार और अनेक संगठनों ने मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के बुरे प्रभावों के संबंध में लोगों से चर्चा की है। सम्पूर्ण विश्व यह महसूस

कर रहा है कि आज के युवा वर्ग के इस जाल में फंसने का बहुत जोखिम है। परंतु यह सब कुछ होते हुए भी दिन-ब-दिन मादक द्रव्यों की माँग में वृद्धि हो रही है। अत्यन्त चौकसी के बावजूद अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार तेज़ी से फल-फूल रहा है। प्रतिवर्ष शराब के उपभोग में तेज़ी से वृद्धि हो रही है। संकेत है कि मादक द्रव्यों की माँग में वृद्धि हो रही है। हम समाचार पत्रों में भारत के प्रत्येक क्षेत्रों से मादक द्रव्यों के भंडारों के जब्त होने के बारे में पढ़ते रहते हैं। लगभग सभी राज्यों से शराब से प्रतिबंध हटाने के बाद अब शराब भारत में एक कानूनी द्रव्य बन गया है और हम भारत के प्रत्येक छोटे गाँव में भी शराब की खुदरा दुकानें पाते है। इसके बावजूद भारत में गैर कानूनी शराब और ताड़ी की बिक्री एक आम बात है। ये इस बात का संकेत है कि केवल माँग में ही वृद्धि नहीं हुई है अपितु उसकी आपूर्ति में भी भारी वृद्धि हुई है। इस अध्याय में हम उन तरीक़ों पर चर्चा करेंगे जिनसे माँग और आपूर्ति दोनों को ही कम किया जा सके। माँग और आपूर्ति कम करने से संबंधित कुछ उपयुक्त प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बहुत ही आवश्यक है कि कुछ लोग क्यों और कैसे मादक द्रव्यों व्यसनी होने के बाद क्या होता है? दुरुपयोग का शिकार होते है, और माँग और आपूर्ति कम करने के कौन से मूलाधार हैं जैसे महत्वपूर्ण सवालों पर चर्चा की जाए। आइए हम इस अध्याय में मादक द्रव्यों दुरुपयोग का इस दृष्टिकोण के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयास करें। हमें विश्वास है कि इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में सभी सूचनाएँ उपलब्ध होंगी ताकि आप भी इनकी माँग और आपूर्ति को कम करने के लिए कार्य कर सकें।

5.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : कौन करता है?

चूँकि हम माँग और आपूर्ति कम करने के संबंध में चर्चा कर रहे है इसलिए यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि मादक द्रव्यों की व्यसनी कौन बन सकता है। यदि आप पूछें कि "कौन व्यक्ति व्यसनी बन सकता हैं" तो उत्तर होगा कि "कोई भी" यह उत्तर तर्क संगत है क्योंकि भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि कौन व्यक्ति व्यसनी हो सकता है। ये युवा लड़का या लड़की, अमीर अथवा गरीब, शहरी अथवा ग्रामीण शिक्षित या निरक्षर व्यक्ति कोई भी व्यसनी हो सकता है। डॉ. के राजरतनम् ने शांता किंगस्टन की पुस्तक 'द ड्रग पेरिल' की अपनी भूमिका में ठीक ही लेखा है। "व्यसनी आर्थिक, धार्मिक तथा सैद्धांतिक बंधनों को तोड़ देता है तथा वह व्यक्ति एवं छोटे समुदायों के नियंत्रण के वश में नहीं होता।"

यद्यपि यह सत्य है कि कोई भी व्यक्ति व्यसनी बन सकता है फिर भी कुछ व्यक्ति मादक द्रव्यों का प्रयोग करने में प्रवृत्त होते हैं। यदि हम वास्तव में माँग में कमी करना चाहते है तो हमें इसकी रोकथाम के लिए "इस उच्च जोखिम वाले समूह" पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। 'रोकथाम' के मुहावरे में कहा जा कहा जाता है कि "रोकथाम इलाज से बेहतर है"। यह मुहावरा मादक द्रव्यों के मामले में अधिक सार्थक है क्योंकि प्रायः अनेक मामलों में इलाज लगभग असंभव है। संभवतः अब आप यह पूछेंगे कि "वे कौन लोग हैं जो उच्च जोखिम वाले समूह से संबंधित हैं?" आइए अब हम इस पर चर्चा करें।

जिन बच्चों का जन्म व्यसनी परिवार में होता है उन में विभिन्न कारणों से मादक द्रव्यों के प्रयोग करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। सबसे बड़ा कारण तो यह है कि वे जन्म से मादक द्रव्यों से परिचित होते हैं। वे अपने घर में व्यसनी द्वारा अपनाई गई इस भूमिका का अनुकरण करने की जिज्ञासा रखते हैं। शराब अथवा मादक द्रव्य उनको अपने ही घर परिवार में आसानी से उपलब्ध हो सकते है और इस बात की अधिक संभावना बनी रहती है कि वे अनुभव प्राप्त करने के लिए उनका प्रयोग कर सकते हैं। वे युवा जो नए अनुभव प्राप्त करने के लिए जिज्ञासा रखते हैं वे आसानी से मादक द्रव्यों का प्रयोग करना आरंभ कर देते हैं, क्योंकि उनका विश्वास है कि मादक द्रव्य उन्हें एक गहन कलात्मक अनुभव प्रदान करेगा। वे अनुभव के नए स्तर में पहुँच जाएँगे और वे स्वप्न संसार में जीने लगते हैं। यह बिल्कुल अर्जीव है कि जो युवा जीवन की चुनौतियों और माँगों को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे युवा लोग अपनी चिंताओं से मुक्ति के लिए मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने लगते हैं। अहं को ठेस लगने वाले जिनमें स्वाभिमान की कमी वाले, और अपने आप को छोटा समझने वाले या निकृष्ट मानने वाले मादक द्रव्यों का दुरुपयोग

करना आरम्भ कर देते हैं। वे बच्चें जो परिवार से अलग रहते है अथवा उन्हें एकाकी रखा जाता है। विशेष कर वे बच्चे जिनके परिवार छिन्न-भिन्न हो गये हैं या टूट गए हैं, वे मादक द्रव्यों विक्रेताओं के संभावित लक्ष्य बन जाते हैं। वे बच्चे जिनको माता-पिता से स्नेह या प्यार नहीं मिलता और न ही उनकी समुचित देखभाल होती है, वे बच्चे भी मादक द्रव्यों के संसार में प्रवेश कर जाते है। कुछ ऐसे युवा भी होते है जो अपने जीवन में रोमांच या नया कुछ करना चाहते है वे लोग भी आसानी से मादक द्रव्यों के लपेट में आ जाते है। क्या आपने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि व्यसन गरीब आदमियों में सबसे अधिक क्यों व्याप्त है? गरीबी भी मादक द्रव्यों के दरुपयोग का एक प्रमुख कारण है क्योंकि गरीब आदमी अपनी चिंताओं और दुखों को भूलने के लिए मादक द्रव्यों का सहारा लेता है। जो लोग कलाकार व प्रतिभाशाली होते है, वे लोग जिन्हें मादक द्रव्य दवा के रूप में लेने के लिए सलाह दी जाती है और जो खिलाड़ी होते हैं वे भी प्राय: मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगते है। परंतु यह तो सभी लोग कहते है कि यदि व्यक्ति दृढता से मादक द्रव्य लेने के लिए मना करता है फिर चाहे कुछ भी कारण हो, कोई भी हालात हो तथा कैसा भी वातावरण क्यों न हो, वह व्यक्ति मादक द्रव्यों से अपने आपको आसानी से बचा सकता है।

5.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग : क्यों होता है?

हमने पिछले भाग में मादक द्रव्यों के संभावित व्यसनी का संक्षिप्त चित्रण का प्रयास किया है। हो सकता है आप सभी तथ्यों से सहमत न हो या आप कुछ के बारे में संदेह व्यक्त करें। परंतु यह कहना बहुत ही असंभव है कि कौन व्यक्ति व्यसनी बन सकता है। इन सभी पक्षों का पिछले अध्याय में विश्लेषण किया गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे कौन लोग हो सकते हैं जो एक दिन व्यसनी बन सकते हैं। परंतु हमने पिछले अध्याय में जो व्यापक चर्चा की है यदि वह सच हो जाए तो फिर भी मादक द्रव्यों की माँग को कम करने के उद्देश्य को आगे बढ़ाने से पहले हमें यह भी जान लेना चाहिए कि लोगों में मादक द्रव्यों को लेने की अभिलाषा क्यों होती है। यदि हम वास्तव में कुछ युवाओं को मादक द्रव्यों के सेवन से रोक सकते है तो हम मादक द्रव्यों की माँग को कम करने के लिए कुछ ठोस कार्य कर सकते हैं। अब हम इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करेंगे कि "लोग क्यों मादक द्रव्यों का सहारा लेते है?"

लोग क्यों मादक द्रव्यों का प्रयोग करते है इसके अनेक कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है मादक द्रव्यों की उपलब्धता। कानूनी और गैर कानूनी रूप से मादक द्रव्यों का उत्पादन और व्यापार किया जाता है मादक द्रव्य साबुन तथा टूथपेस्ट की तरह दुकानों पर आसानी से उपलब्ध होते हैं। समाज के विभिन्न आर्थिक स्तर के व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य उपलब्ध हैं। शराब उत्पादकों में अत्यन्त प्रतिस्पर्धा है इसीलिए वे मीडिया के माध्यमों से विज्ञापन प्रसारित करते हैं। भारत में शराब की खुदरा दुकानों की संख्या बहुतायत में है, इसलिए कोई भी व्यक्ति आसानी से खुदरा दुकानों, या बार में जा सकता है और शराब पी सकता हैं। इसके अलावा यह धंधा बहुत ही लाभप्रद है, इसमें विक्रेता को 200 से 300 प्रतिशत लाभ आसानी से मिल जाता है। इसीलिए आप देखते है कि मादक द्रव्यों के विक्रताओं का गैर कानूनी जाल फैला हुआ हैं। मादक द्रव्य किसी भी स्थान पर, किसी भी समय, किसी भी व्यक्ति के पास आसानी पहुँच सकता है और लोग आसानी से मादक द्रव्यों के व्यसनी बन जाते हैं।

मोहकता और मादक द्रव्यों के प्रभावों के संबंध में गलत धारणाओं के कारण लोग द्रव्यों का खुलकर प्रयोग करते है, इस प्रकार यह अगला कारण है। अनेक लोगों का विश्वास है कि शराब या मादक द्रव्यों के प्रयोग से सृजन कला में वृद्धि होती है। मादक द्रव्यों के बारे में बहुत सी कहानियाँ प्रचलित हैं कि कैसे मादक द्रव्यों से कल्पना व्यापक हो जाती है और व्यक्ति में कलात्मकता का उदय हो जाता है। अंग्रेज कवि एस. टी. कालीरज ने दावा किया है कि उसने अफीम के नशे की हालत में ही "कुबला खान" कविता की रचना की है। यह भी एक धारणा है कि जब व्यक्ति नशे में होता है तो वह कठिन से कठिन काम भी कर लेता है। परंतु हमारा अनुभव है कि यह धारणाएँ नितांत आधारहीन है क्योंकि लोग बिना नशे के भी अच्छी कविताएँ कर लेते हैं। एक बूंद शराब के बिना भी कठिन से कठिन कार्य आसानी से कर लेते हैं।

इस इकाई में हम पहले ही बता चूके है कि परिवारों के अनेक सदस्य कुछ गलत तरीकों से अपनी भूमिका निभाते हैं। यह केवल परिवार तक ही सीमित नहीं है। अध्यापक, फिल्मी हस्तियाँ, धार्मिक नेता, खिलाड़ी तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति भी युवाओं को अपने गलत आदर्शों से भ्रमित कर सकते हैं। यदि हम वास्तव में मादक द्रव्यों की माँग को कम करना चाहते है तो जो समाज के जिम्मेदार लोग हैं उन्हे वास्तव में ही एक अच्छी और निष्पक्ष भूमिका निभानी चाहिए।

अनेक व्यक्ति मादक द्रव्यों का प्रयोग इस लिए करते हैं कि वे विश्वास करते हैं कि नशा करने से वे अपनी चिंताओं और समस्याओं से मुक्ति पा लेते हैं। जैसे कि हम इस इकाई में बता चुके हैं कि व्यक्तित्व समस्या जैसे हीनभावना और आत्मविश्वास के अभाव की भावना से ग्रसित अनेक लोग मादक द्रव्यों को ही उपाय मान लेते हैं। निराश और चिंतित व्यक्ति प्राय: विश्वास कर लेते हैं कि मादक द्रव्य चिंताओं से मुक्ति दिलाने और दुखों व पीड़ाओं से बचाकर काल्पनिक दुनिया में ले जाने में सक्षम हैं। परंतु यह एक दम आधारहीन कल्पना है। क्योंकि जब व्यक्ति नशे में होता है तो किसी व्यक्ति अथवा घटना को उसके विपरीत व उसके बारे में और अधिक सोचता है।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्यों की खोज के लिए अकेला नहीं निकलता है व्यक्ति को नशे की जाल में डालने वाला कोई सगे संबंधी, मित्र या विद्यार्थी मित्र होगा। इसे हम छिपा हुआ दबाव (पीर प्रेसर) के नाम से जानते हैं। साथ रहने वाला साथी, सहपाठी, सहकर्मी या मित्र अथवा रिश्तेदार आपको 'आमोद-प्रमोद' की कहानी सुनाएगा और वह मादक द्रव्य सेवन के लिए लुभाएगा। यह आपको किसी पार्टी में शामिल होने के लिए आमंत्रित करने के रूप में हो सकता है जहाँ पर अत्यधिक खुशामत उसे अपना साथी बनाने और एक बार अजमाने में सफल हो जाती है। हमारे अनेक युवा साथी केवल कम्पनी देने की उत्सुकता में आकर मादक द्रव्य का प्रयोग करना आरंभ कर देते हैं। क्या आप जानते है कि 'कुतूहल या जिज्ञासा ने बिल्ली को मारा''? मादक द्रव्यों के प्रयोग करने वालों से अनेक रोमांचकारी कहानियाँ सुनने से हमारे युवा लोग जिज्ञासा तथा अनजान होने से मादक द्रव्यों की दुनिया में झोंकने के लिए इस चक्कर में फंस जाते है। प्राय: इस तरह का प्रयोग हमारे युवा साथियों को बहुत ही मंहगा पड़ता है।

हमारा जनसंचार माध्यम भी असहाय युवकों के जीवन को नष्ट कर देता है। प्राय: जनसंचार के साधन शराब और मादक द्रव्यों की भव्यता को इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि युवक आसानी से गुमराह हो जाते हैं। हमारे फिल्मी पर्दे के अनेक नायकों को हमारे नवयुवक आदर्श मान लेते हैं और उन्हें पर्दे पर शराब का सेवन करते हुए देखते हैं। अपनी फिल्मों में सफलता और संपन्नता को इस प्रकार दिखाया जाता है जैसे यह उसके व्यक्तिगत जीवन प्राप्त हुआ हो। स्वाभाविक है कि इस तरह के फिल्मी प्रदर्शन हमारे युवकों के लिए गलत संदेश देते हैं इससे युवक भ्रमित होते हैं। गलती से वे यह मान बैठते है कि शराब और मादक द्रव्य प्रभावशाली जीवन और प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के अभिन्न अंग हैं। वास्तव में मादक द्रव्यों के प्रयोग को इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है मानो वे भव्य मोहक जीवन अंग हों।

उपर्युक्त दिए गए कारण ही सम्पूर्ण नहीं हैं। यदि हम वास्तव में मादक द्रव्यों की माँग को कम करने के लिए संघर्ष करना चाहते है तो हमें इन सबके विषय में जानकारी रखनी चाहिए।

अब आप मुकेश की कहानी को ध्यान से पढें और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें। हो सकता है आपके जीवन में भी कभी मुकेश जैसे किसी व्यक्ति से वास्ता पड़े।

मुकेश

मुकेश 17 वर्ष का प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित एक अच्छा लड़का है। उसे विद्यालय से निकाल दिया गया और वह अब मानसिक वार्ड में मादक द्रव्य की समस्या के कारण भर्ती है। उसका पहला अनुभव थोड़ी मात्रा में शराब पीना था। जो उसके पिता छोड़ कर सोने को लिए चले गये थे। उसकी माँ सुपमा कहती हैं कि "मेरा पुत्र 13 वर्ष की आयु तक अपनी कक्षा में प्रथम रहता था। परंतु धीरे-धीरे उसने पढाई में रूचि लेना छोड़ दिया। जब वह 10वीं कक्षा में था अपने सहपाठी जैकब को गांजा देते हुए पकड़ा गया था जिससे उसे विद्यालय से निकाल दिया गया था। मेरा पुत्र अमीर बनने के बड़े-बड़े सपने लेता था। हमें उससे बहुत आसाएँ थी। परंतु एक ही झटके में सब कुछ नष्ट हो गया जब हमें यह पता लगा कि उसे

मादक द्रव्य की समस्या है तो उसने अनेक प्रकार से अपने बचाव में तर्क दिए। उसने हम पर भी यह दोष लगाया कि हम उससे प्यार नहीं करते। जब हमने उससे निवेदन किया कि वह इस लत को त्याग दे तो उसने कहा कि मेरा संसार बहुत विशाल है, मुझे आप व्यर्थ में तंग न करें। पिछले वर्ष मेरे पति का देहांत हो चुका है। यह मामला भी अधिक शराब पीकर गाड़ी चलाने से हुई दुर्घटना का है। अब केवल मुकेश ही मेरी आशा है।"

उपर्युक्त कहानी पढ़ने के पश्चात् आप निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें।

1. मुकेश के शराब पीने का पहला अनुभव क्या था?
2. उसे शराब की दुनिया में ले जाने के लिए आपके विचार से कौन जिम्मेदार है?
3. उसकी इस लत के लिए क्या उसकी माँ पर दोषारोपण किया जा सकता है?
4. क्या मुकेश ने किसी और पर भी शराब की लत लगाने के लिए प्रयास किए।
5. यदि आप माँग को कम करने के लिए प्रभावकारी कदम उठाना चाहते हैं। आप क्या करेंगे यदि आप (क) मुकेश के पिता, (ख) मुकेश की माँ, (ग) मुकेश के मुख्य अध्यापक तथा (घ) जैकब के मित्र होते।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. यह कहा जाता है कि कुछ लोगों में मादक द्रव्यों के अनुभवों को प्राप्त करने की अधिक संभावनाएँ बनी होती है। वे कौन होते हैं?

.....

.....

.....

.....

2. "व्यसन आर्थिक, धार्मिक और सैद्धांतिक बंधनों को तोड़ देता है" क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

.....

.....

.....

.....

3. क्या कोई व्यक्ति यह घोषित कर सकता है कि भविष्य में कौन व्यसनी बनेगा? क्यों और क्यों नहीं?

.....

.....

.....

.....

.....

4. वे कौन से घटक जो युवाओं को मादक द्रव्यों की ओर आकर्षित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

5. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि हमारा मीडिया शराब और मादक द्रव्यों को भव्य मोहक अंदाज में प्रस्तुत करता है?

.....

.....

.....

.....

5.4 माँग कम करने का मूलाधार

कैसे और क्यों एक व्यक्ति मादक द्रव्यों के जाल में फँसता है हमने इस संबंध में गंभीर विचार किया है। हमने इस प्रश्न पर भी चर्चा की है "कौन व्यक्ति व्यसनी बन सकता है?" मुकेश की कहानी भी बहुत दुखभरी है। कितना सुंदर जीवन अल्प आयु में नष्ट हो गया। यह घटना किसी भी परिवार में घट सकती है। क्या आपको याद है हमने इस इकाई में पहले बताया गया वाक्य याद है कि "व्यसन आर्थिक, धार्मिक तथा नैतिक बाधाओं को पार कर जाता है?" मादक द्रव्य दुरुपयोग से संघर्ष में इसलिए हमारा सबसे पहला कदम यह होना चाहिए नवयुवकों को इनसे दूर रखा जाए। युवा लोगों को मादक द्रव्यों की व्यसन की हानियों के विषय में जानकारी दी जानी चाहिए। हमें इस तथ्य पर अडिग रहना चाहिए कि "इलाज से बेहतर रोग की रोकथाम होती है।" हमारा कर्त्तव्य है कि हम द्रव्यों की माँग को कम करने के लिए भरसक प्रयास करें।

यद्यपि हम में से अनेक लोग ये जानते हैं कि मादक द्रव्यों का व्यसन अच्छा नहीं होता। किंतु हम यह बताने में असमर्थ हैं कि प्रयोग किए जाने वाले रसायन से वास्तव में क्या बुरे प्रभाव पड़ते हैं? यदि हम लोगों को यह बताते है कि व्यसन से व्यक्ति मादक द्रव्यों पर निर्भर हो जाता है, तो हम आसानी से माँग कम करने का कार्य कर सकते हैं। इसलिए इस भाग में हम मुख्य-रूप से मादक द्रव्यों के बुरे प्रभावों के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे कि इसके व्यक्ति परिवार, समाज तथा राष्ट्र पर क्या बुरे प्रभाव होते हैं।

व्यसन किसी भी व्यक्ति के दोनों शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है। व्यसन से स्वास्थ्य की अनेक समस्याएँ पैदा हो जाती है। कुछ अतिघातक मादक द्रव्यों से चक्कर आना कंपकपी पैदा होना, भूख न लगना, नाड़ी की गति श्रीमी होना इत्यादि आम लक्षण हैं और मादक द्रव्यों की अधिक मात्रा ले लेने से हृदय गति रूक सकती है और श्वास बंद हो सकता है। गाँजा पीने से श्वास की बीमारियाँ होती हैं यहाँ तक कि फेफड़े का कैंसर जैसा भयंकर रोग भी हो सकता है। शराब सेवन से पेट के अनेक रोग होते हैं, इससे व्यसनी की भोजन पचाने की शक्ति नष्ट हो जाती है और जिगर में सुजन रोग पैदा हो जाता है। मादक द्रव्यों के साझा प्रयोग में लाई गई सूई के परिणामस्वरूप एड्स और यकृतशोध (हैपेटाइटस) सी जैसे भंयकर रोग फैल जाते हैं। मादक द्रव्य हमारे शरीर की तंत्रिका व्यवस्था को नष्ट कर देती है और अंत में मानसिक रोग हो जाते हैं।

प्राय: व्यसनी में शर्म, लज्जा और गलती जैसी भावनाएँ उसमें व्याप्त होती हैं इससे उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही नष्ट हो जाता है। व्यसनी में अनेक बुराईयाँ पैदा हो जाती हैं जैसे कि वह अनुपस्थित रहेगा, उस पर निर्भर नही रहा जा सकता, पक्का अविश्वासी एवं चिथड़ों में लिपटे रहना उसकी विशेषताएँ हो जाती है। व्यसनी निर्बाध रूप से व्यसन की ओर से बढ़ता जाता है तथा मादक द्रव्यों की पूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए अनेक उपाय करता है।

व्यसनी भीख माँग सकता है, उधार लेता है और चोरी कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह कोई अनैतिक कार्य करने के लिए तैयार करता है बशर्ते उसकी द्रव्य माँग पूरी होती रहे। वह अविश्वासी होता है साथ ही व्यसनी के कारण ही अधिकतर ही औद्योगिक और सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं।

व्यसन का परिवार पर प्रभाव पड़ता है। भारतीय स्थिति में परिवार में महिला ही सबसे अधिक पीड़ीत होती हैं। प्राय: व्यसनी अपने दोषों को महिला पर डालता है व्यसन के लिए उसे ही वह दोषी मानता है। धन के लिए महिला को ही सताया जाता है और जब व्यसनी व्यक्ति प्रतिरोध करने अथवा उसे तंग करने के योग्य नहीं रहता और न ही वह काम करने लायक रहता है ऐसी स्थिति में महिला ही पिता और माता की दोहरी भूमिका निभाती है, भारतीय पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अनेक तरीकों से दबाया जाता है और यदि परिवार में व्यक्ति व्यसनी हो जाता है तो उसे और अधिक सताया जाता है। अधिकतर घरेलू हिंसा के लिए व्यसनी पुरुष जिम्मेदार होता है। रसायनों पर निर्भरता से व्यक्ति का यौन जीवन भी प्रभावित होता है। शराबी व्यक्ति मद्य संभ्रांति रोग हो जाता है, इस तरह के व्यक्ति अपने पत्नियों की वफादारी के प्रति शंकालु हो जाते हैं। व्यसनी परिवार के बच्चों को उनके माता-पिता से समुचित स्नेह और देखभाल प्राप्त नहीं होती और उनमें आत्मविश्वास कम हो जाता है। परिवार में बड़े व्यसनी आदर्श प्रस्तुत करते हैं जिसके कारण बच्चे भ्रमित हो जाते हैं।

व्यसन विभिन्न अपराधों और दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार होता है। लड़कियों से छेड़छाड़ से लेकर बलात्कार, जेब काटने, बैंक डैकेतियों, गली के झगड़ों, योजनाबद्ध नृसंश हत्याएँ और व्यापक जनसंहार के पीछे व्यसन की अहम भूमिका होती है। समाज व्यसन के परिणामस्वरूप काम का समय, क्षमता, प्रतिभा और मानव शक्ति की बहुत बड़ी हानि उठाता है। हम सब जानते हैं कि मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार और वेश्यावृत्ति या अवैध व्यापार और जुआ खेलना तथा अन्य असामाजिक गतिविधियों का सीधा संबंध मादक द्रव्यों से है। अवैध शराब का धंधा और मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार समाज में अनेक समस्याएँ पैदा कर करते हैं। हम यह भी भलीभाँति जानते हैं कि व्यसनी और इसको प्रोत्साहित करने वाले लोग समाज को असुरक्षित कर देते हैं। हमारे समाज में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वालों के कारण त्यौहारों, धार्मिक कार्यों और अन्य आयोजनों में व्यवधानों का अनुभव करते हैं।

व्यसन के कारण राष्ट्र भी नुकसान उठता है। अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार का तस्करी, अवैध हथियारों का व्यापार, आंतकवाद, विद्रोह तथा इसी प्रकार के अन्य राष्ट्र विरोधी गतिविधयों के साथ सीधा संबंध होता है। कुछ मादक द्रव्यों के अवैध व्यापारी इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे किसी भी मौजूदा सरकार को गिरा सकते हैं। अनेक अविकसित देश मादक द्रव्यों के कारण पैदा हुई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं सहित विभिन्न समस्याओं को असमर्थ दर्शक की भाँति निहारते रहते हैं। ऐसे देशों में साधनों की कमी के कारण स्वास्थ्य देखभाल और कल्याणकारी कार्यों के लिए बेहद असमर्थ होते हैं। तीसरी दुनिया के देशों में रसायनों पर इतना ध न व्यय हो जाता यदि उस धन को विकास कार्यों में लगा दिया जाए तो एक बहुत उपलब्धि हो सकती है तथा अनेक कार्यक्रमों को आसानी से चलाया जा सकता है।

उपर्युक्त कारणों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि समाज में संतुलन बनाए रखने के लिए मादक द्रव्यों की माँग को कम करना बहुत ही आवश्यक है। भारत जैसे देश के लिए यह संभव नहीं है कि वह व्यसन पर इतनी बड़ी धनराशि को व्यर्थ में ही नष्ट होने दें और मादक द्रव्यों के व्यसन के कारण देश की बहुत बड़ी मानव शक्ति को नष्ट हो जाने दे। जब हम अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में मादक द्रव्यों की माँग या खपत के बारे में सोचते हैं तो पता लगता है कि यह बहुत खतरनाक स्तर पर है। इसलिए किसी भी रासायनिक निर्भरता के विरुद्ध सार्थक और प्रभावी संघर्ष के लिए हम सबको संगठित होकर कार्य करना चाहिए साथ ही माँग को कम करना हमारा पहला कर्त्तव्य होना नितांत आवश्यक है। हम पहले भी इसी भाग में कह चुके हैं कि मादक द्रव्यों से दूर रहने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इसके ठोस नतीजे प्राप्त करने के लिए हमें कुछ कार्यनीतियों की योजना बनानी चाहिए।

5.5 माँग कम करने के लिए कार्यनीतियाँ

हमने पिछले भाग में जो कुछ पढ़ा है, इससे यह सिद्ध होता है कि रासायनिक निर्भरता के विरुद्ध सार्थक व प्रभावी संघर्ष के लिए माँग कम करने के लिए कुछ सक्षम, प्रासंगिक तथा व्यावहारिक कार्यनीतियाँ बनानी होंगी। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है कि हमें अपने युवा लोगों को यह सिखाना है कि वे मादक द्रव्यों के प्रयोग के लिए मना कर सके। इसलिए प्रत्येक स्तर पर माँग को नियंत्रित करने के लिए हमें कुछ योजना बनानी पड़ेगी। कार्यनीति को आदर्श कार्यनीति के रूप में बनाना आसान नहीं है जो सम्पूर्ण संसार के लिए लाभकारी हो। परंतु हम कुछ अच्छी कार्यनीतियों के सुझाव अवश्य दे सकते हैं जिनमें से समाज अपने लिए अधिकतम उपयोगी नीतियों को चुन सकता है। जब हम द्रव्यों की माँग को कम करने का प्रयास करेंगे उस समय हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहारों का एक हिस्सा बनी (शराब या भांग देवकली) को रोकने की अथवा इन पर पाबंदी लगाने की बात करेंगे तो लोग इस मांग के विरुद्ध खड़े हो जाएँगे। कुछ समाजों में शराब विक्रेता समूह इतने शक्तिशाली हैं कि शराब की माँग कम करने वालों के विरुद्ध वे जान-माल को खत्म करने के प्रयास कर सकते हैं। परंतु हम पिछले अध्ययनों से यह तो समझ ही गए हैं कि मादक द्रव्यों की माँग कम करने का कार्य तब तक पूरा नहीं हो सकता है जब तक हम इस पर पाबंदी लगाने के लिए सुनियोजित कार्यनीतियों का निर्माण न कर लें। इसलिए हम इस भाग में मादक द्रव्यों का माँग कम करने संबंधी कार्यनीतियों पर चर्चा करेंगे।

क्या आपने कभी पतंगे देखे हैं जो दीपक की रोशनी के प्रति लौ की ओर आकर्षित होकर उसके पास जाते हैं और अंत में दीपक या मोमबत्ती की लौ उन्हें समाप्त कर देती है। हमारे अनेक युवाओं की तुलना इन्हीं पतंगों की किस्मत से कर सकते हैं। अनेक युवा मादक द्रव्यों के परिणाम की भयंकरता से परिचित न होने के कारण मादक द्रव्यों की ओर आकर्षित होते हैं। चाहे यह मादक द्रव्य शराब, गांजा अथवा ब्राउन सुगर हो। इसलिए हमें अपनी युवा पीढ़ी को मादक द्रव्यों के प्रयोग करने से रोकने का अथक प्रयास करना आवश्यक है। इस संबंध में हमारा सबसे पहला कदम अपने मीडिया और विज्ञापनों के विरुद्ध युद्ध छेड़ना होगा तो अपने माध्यमों से नशीले पदार्थों को चमत्कारिक, महिमामई और आकर्षण के मोहक रूप में प्रस्तुत करते हैं। हमारे मीडियों को चाहिए कि वह मादक द्रव्यों को रोकने के संदेश को प्रचारित करे। शैक्षिक संस्थाओं और युवा संगठनों को मादक द्रव्यों के विरुद्ध अभियान चलाने चाहिए ताकि युवाओं को मादक द्रव्यों की बुराइयों का ज्ञान हो जाए और व्यसन से दूर रहें। हमारी पाठय पुस्तकों में मादक द्रव्यों पर सामग्री शामिल की जानी चाहिए। जागरुकता कार्यक्रमों, सेमिनारों, सम्मेलनों और संगोष्ठियों के आयोजनों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्वैच्छिक निकायों, सेवा संगठनों तथा गैर सरकारी संगठनों द्वारा आम जनता के बीच इसकी रोकथाम के संदेश को प्रसारित करने में अहम भूमिका निभानी चाहिए।

परंतु क्या केवल इतना भर कर देने से माँग कम करने का कार्य पूरा हो जाएगा? बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो मादक द्रव्यों की निर्भरता अथवा उसके व्यसन को त्यागना चाहते हैं। परंतु उन्हें ऐसा कोई सक्षम व्यक्ति नहीं मिलता है जो उनकी सहायता कर सके। व्यसन एक रोग है, और स्वाभाविक व्यसनी रोगी है स्वयं इस रोग से छुटकारा नहीं पा सकता। वह अपने व्यसन की लत को छोड़ने में नितांत असमर्थ है। अन्य रोगियों के समान उसे भी चिकित्सक, परामर्शक तथा इलाज की आवश्यकता होती है जिससे वह निरोग हो जाए। हमारी सरकार, स्वैच्छिक निकायों, सेवा संगठनों और गैर-सरकारी संगठनों को व्यसन पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, परामर्शक और इलाज की सुविधाएँ व्यसन रोगी को उपलब्ध होनी चाहिए।

इसके अलावा माँग को कम करने में सख्त कानून भी सहायता करते हैं। यदि कानूनों को सख्ती से लागू किया जाए तो अच्छे परिणाम निकल सकते हैं जैसे कि मलेशिया और सिंगापूर देशों में हुआ। कानूनों को लागू करने वाली संस्थाओं को प्रभावशाली एवं सख्ती से कानूनों को लागू करना चाहिए जिससे इस समस्या का निवारण हो सके।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान करें।

1. युवकों को मादक द्रव्य से दूर रखने का निर्णय मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष के प्रथम उपाय क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

2. किस प्रकार से मादक द्रव्य व्यक्ति को प्रभावित करते है?

.....

.....

.....

.....

3. यह बताएँ कि मादक-द्रव्य दुरुपयोग से परिवार किस प्रकार प्रभावित होता है?

.....

.....

.....

.....

4. मादक द्रव्य दुरुपयोग से समाज और राष्ट्र किस प्रकार प्रभावित होते हैं?

.....

.....

.....

.....

5. कुछ ऐसे उपाय सुझाए जिससे हम मादक द्रव्यों की माँग को कम कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

6. मादक द्रव्य दुरुपयोग पर लागू करने से क्या आप इस कहावत से सहमत हैं कि "इलाज से परहेज बेहतर" होता है।

.....

.....

.....

5.6 आपूर्ति में कमी करना

हमने पिछले भाग में चर्चा की है कि युवकों को किस प्रकार से मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए। हम सहमत है कि हमें युवाओं का द्रव्यों से दूर रहने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। इसके परिणाम अपने आप में ही माँग में कमी होगी। परंतु हम इस अध्याय में मादक द्रव्य दुरुपयोग को कम करने के लिए एक दूसरा ही दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं क्या आपको याद है, हमने भाग 5.3 में यह बताया था कि मादक द्रव्यों की आसानी से उपलब्धता ही इसको बढ़ावा देने मे सहयोग देती है क्योंकि यह साबून और टुथपेस्ट की तरह सरलता से उपलब्ध हो जाती है? अब इस भाग में उन तरीकों को बताने जा रहे है जिससे मादक द्रव्यों की उपलब्धता पर नियंत्रण लगाया जा सके। जिसका अर्थ है आपूर्ति में कमी का अर्थ है। मादक द्रव्यों को लोगों से दूर रखना।

भारत में शराब लगभग सभी राज्यों में कानूनी मादक द्रव्य है। यह एक वस्तु है जो खुले बाजार में उपलब्ध है। शराब के विभिन्न उत्पादकों में विभिन्न प्रकार के आई एम एफ एल निर्माण में भारी प्रतिस्पर्धा है। शराब की ये कम्पनियाँ अपनी शराब को बेचने के लिए मीडिया के माध्यम से विज्ञापन करते हैं तथा, बिक्री बढ़ाने के लिए कड़ी स्पर्धा करती हैं। परंतु गैर कानूनी शराब भी आपको किसी भी जगह उपलब्ध हो जाएगी। जैसे कि हमने पहले बताया है कि भारत में गैर कानूनी शराब बनाना एक बहुत ही लाभकारी घरेलू उद्योग है। भारत में अत्यधिक गहन मादक द्रव्य भी आसानी से उपलब्ध हैं। चरस या गाँजा यद्यपि गैर कानूनी है किंतु देश के अनेक हिस्सों में इसकी जमकर खेतीबाड़ी होती है। बहुत दुख का विषय है कि बिना किसी रोकथाम के ये खुदरा बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं साथ ही ये पैकेटों में बंद सस्ते दामों में मिलते हैं। हमारे देश में मादक द्रव्यों के प्रयोग की सलाह देने वाले भी सामान्य रूप से मौजूद हैं। बहुत ही नशीले और महँगे मादक द्रव्य जैसे अफीम और कोक के कृपिक रूप भी भारतीय बाज़ारों में उपलब्ध हैं। इन गैर कानूनी द्रव्यों की विशाल आपूर्ति होती है तथा ये हमारे युवाओं तक आसानी से पहुँच जाते हैं। एक समय था जब अत्यधिक मादक द्रव्य केवल महानगरों में ही उपलब्ध होते थे। परंतु देश के विभिन्न भागों से इनके जब्त होने के समाचारों को पढ़ने से प्रमाण मिलता है कि ये देश के प्रत्येक हिस्से में उपलब्ध हैं।

हम खंड 1 की इकाई 4 में मादक द्रव्यों के अंतर्राष्ट्रीय अवैध व्यापार के संबंध में अध्ययन कर चुके हैं। यह सर्वविदित है कि मादक द्रव्यों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार गोला बारूद और हथियारों के व्यापार के बाद दूसरे स्थान पर है। उस इकाई में हम यह भी बता चुके हैं कि भारत मादक द्रव्यों को एक माध्यम (पारगमन) बिंदु हैं जहाँ से गैर कानूनी व्यापार का संचालन होता है। क्योंकि भारत गोल्डन क्रिसेंट और गोल्डन ट्रिंगल देशों के बीच स्थित है। हम समाचार-पत्रों में भी अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार, मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार संघ और ड्रग माफियों के संबंध में पढ़ते रहते हैं। यह हो सकता है कि मध्य पूर्व के कुछ देशों को छोड़ कर विश्व के सभी देशों में अतिसंवेदनशील मादक द्रव्य आसानी से मिलते हैं।

हम किस प्रकार इस आपूर्ति को रोक सकते है? क्या आपूर्ति में कमी का कुछ लाभ होगा? यदि आपूर्ति कम की जानी है तो यह देखना होगा कि इसमें किन लोगों को शामिल किया जाए? भारत में, जहाँ तक शराब का संबंध है, इसकी आपूर्ति सरकार द्वारा की जाती है। इस तरह से हम आपूर्ति कम करने के लिए क्या कर सकते हैं? क्या यह आसान काम है कि अंतर्राष्ट्रीय गैर कानूनी मादक द्रव्य व्यापार रोक लगाई जाए? गैर कानूनी मादक द्रव्य के व्यापार बहुत ही शक्तिशाली और सुसंगठित है क्या यह संभव है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी आपूर्ति में हम कुछ कमी कर सकें। शराब के उत्पादन और व्यापार में अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जुड़ी हुई हैं क्या इनकी आपूर्ति पर रोक प्रभावशाली लगाई जा सकती है? हमारे समक्ष ऐसे अनेक प्रासंगिक प्रश्न मौजूद हैं। जब हम इन प्रश्नों पर विचार करते हैं कुछ लोग निराश और निदंक हो जाते हैं। परंतु हमें यह तो ध्यान रखना ही पड़ेगा कि जब तक हम आपूर्ति में कमी नहीं करेंगे तब तक मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष नहीं कर सकते।

श्री जोनाथन् जी. द्वारा संपादित पुस्तक "ब्रिथ ऑफ लाइफ" में उन्होंने 6 तरीके बताएँ हैं जिनके द्वारा मादक द्रव्यों को युवाओं से दूर रखा जा सकता है (ब्रिथ ऑफ लाइफ : 1999) ये हैं:

1. इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को फिर से सशक्त बनाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

2. इसकी रोकथाम क्षेत्र में लगे विभिन्न सरकारी विभागों के बीच आपसी समझ, सहायता और सहयोग को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

3. पुलिस की सतर्कता को विशेष कर मादक द्रव्य विक्रेताओं द्वारा विद्यालयों के आसपास बढ़ाया जाना चाहिए ताकि मादक द्रव्य विक्रेताओं द्वारा स्कूली बच्चों की अज्ञानता और असुरक्षा का लाभ उठाने से रोका जा सके।

4. कानून तोड़ने वालों को सजाएँ लगातार और तेजी से दी जानी चाहिए।

5. ऐसे अपराधों के संबंध में जो सजा या दण्ड निश्चित किए गए हैं उनके बारे में व्यापक जानकारी दी जानी चाहिए ताकि इस तरह के कार्यों में पहले से लिप्त व्यक्तियों और प्रवेश करने की सोचने वाले नए लोगों को भय के द्वारा रोका जा सके।

6. हमें बहुत ही गंभीरता से विचार/पुनर्विचार करना चाहिए कि मादक द्रव्यों से संबंधित अपराधों के मामलों को तेज़ी से निपटाने के लिए विशेष न्यायालयों के गठन की व्यवस्था की जाए। तब तक विकल्प के रूप में मादक द्रव्यों के मामलों की शीघ्र सुनवाई एवं निपटान करने के लिए विशेष प्रावधान किए जाने चाहिए।

उपर्युक्त सुझाए गए 6 उपाय मादक द्रव्य की माँग को कम करने में काफी प्रभावी है तो भी यह ध्यान रखना चाहिए कि एक तरफ जहाँ सरकारों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, राजनीतिज्ञों और राजनीतिक नीतियों शराब के बादशाहों, तस्करों, आतंकवादियों और विध्वंसक गतिविधियों में शामिल अनेक लोगों के शामिल होने पर बहुत कुछ करना शेष है। इसका दूसरा पक्ष सरकारी अधिकारी, कानून लागू करने वाले संगठन कानूनी व्यवस्था, सेवा संगठन, स्वैच्छिक एजेंसियाँ इत्यादि हैं। क्या यह आसान काम है कि माँग में कमी करने के सघर्ष में इन सबको संगठित कर और एक दूसरे के साथ सहयोग के लिए तैयार किया जा सके। यह एक बहुत ही कठिन कार्य है। भारत में, सरकार ही अनेक स्थानों पर शराब की आपूर्ति करती है और इससे व्यापक राजस्व प्राप्त करती है। सरकार को आपूर्ति कम करने के लिए आसानी से प्रभावित किया जा सकता है?

इनमें से परेशानी वाले कुछ प्रश्नों के उत्तरों को टाला जा सकता है। इसके लिए हमें दोषारोपण नहीं करना चाहिए। युवाओं को मादक द्रव्यो से दूर रखा जाए और मादक द्रव्यों को युवाओं से दूर रखा जाए यह रासायनिक द्रव्यों की निर्भरता के विरुद्ध संघर्ष में समान रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। यह आसान कार्य नहीं है कि सुझाव दिए और लक्ष्य उपलब्धि हो गई ऐसा नहीं है। इसे लागू करना बहुत ही कठिन और कठोर कार्य हैं। परंतु यदि हम यह निश्चित कर लें कि हमें मादक द्रव्यों के विरुद्ध संघर्ष करना है तो हमें अवश्य ही मादक द्रव्यों की आपूर्ति में कमी लाने का प्रयास करना चाहिए। कुछ कार्यनीतियों को सुझाव दिया गया है किंतु वे सभी स्थितियों में लागू नहीं की जा सकती। परंतु इन सब उपायों को अंतर्राष्ट्रीय रूप में राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर समान रूप से लागू किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और यू एन डी सी पी को दृढ़ता से तथा कथित कानूनी मादक द्रव्यों के निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में कमी करने के प्रयास करने चाहिए। यद्यपि इन संगठनों के कार्य सराहनीय रहे हैं फिर भी यह आवश्यक है कि वे राष्ट्रों को आपूर्ति कम करने के लिए सहमत कराने का प्रयास करें। राष्ट्रों को चाहिए कि वे सब मिलकर मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय स्तर एक साथ तीव्र संघर्ष करें। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं एवं तस्करी की गतिविधियों को रोकने के लिए विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

निःसंदेह हमारे देश में माँग कम करने के लिए सरकार की अहम् भूमिका है। राज्य सरकारें मादक द्रव्यों से पाबंदी हटाने के लिए यह कह कर संतुष्ट कर सकती हैं कि इससे सरकार को अच्छा खासा राजस्व प्राप्त होता है और इसके साथ ही इसमें बेकार लोगों को रोज़गार मिलता है। परंतु सरकार की यह जिम्मेदारी भी है कि वैध मादक द्रव्यों को भी युवाओं तक पहुँचाने ही न दें। सरकार को ऐसी लाइसेंसिंग नीति पर भी करना चाहिए जिसमें केवल वयस्क व्यक्ति ही कानूनी

मादक द्रव्यों को ले सकते हैं वह भी सीमित मात्रा में सरकार को खुदरा दुकानों की कार्य प्रणाली से संबंधित नियमों को सख्त कार्यान्वयन भी सुनिश्चित करना चाहिए। समाचार पत्रों या मीडिया के माध्यम से शराब के विज्ञापनों पर पूरी तरह से पाबंदी लगाई जानी चाहिए। सरकारी तंत्र को गैर-कानूनी रूप शराब उत्पादन पर नज़र रखनी चाहिए तथा अपराधियों को कठोर दण्ड दिए जाएँ।

परंतु शराब से अधिक चुनौती हमें घातक मादक द्रव्यों से है। मलेशिया और सिंगापुर जैसे देशों ने मादक द्रव्यों के अपराधियों के लिए आर्थिक सजा सहित क़ठोर दण्डों का प्रावधान है। इससे गैर कानूनी मादक द्रव्य व्यापार को रोकने में निश्चित रूप से मदद मिलती है। परंतु यह सब कुछ होने के बावजूद मादक द्रव्य आपूर्ति को तब तक कम नहीं किया जा सकता है जब तक सरकार इसके तैयार न हो और मादक द्रव्यों के गैर कानूनी व्यापार पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर रोक न लगाई जाए।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. "माँग में कमी करना" और "आपूर्ति में कमी करना" के क्या अर्थ हैं, संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2. "मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रमुख कारण इनकी उपलब्धता है।" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3. "ब्रिथ ऑफ लाइफ" नामक पुस्तक में आपूर्ति कम करने के लिए दिए गए सुझावों में से किसी एक पर टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. आपूर्ति कम करने में सरकार की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5.7 सारांश

हमें विश्वास है कि आपने इस इकाई का अध्ययन किया होगा। इसमें मादक द्रव्य दुरुपयोग के अनेक पक्षों पर चर्चा की गई है। हमने बहुत ध्यानपूवर्क यह समझने का प्रयास किया कि किस तरह से मादक द्रव्यों की माँग और आपूर्ति को कम किया जाए। रासायनिक द्रव्यों पर निर्भरता के विरुद्ध संघर्ष के संबंध में कहा है कि (क) युवाओं को मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए (ख) इसी तरह से मादक द्रव्यों को भी युवाओं से दूर रखा जाना चाहिए। हमने इस पर भी चर्चा की है कि कौन मादक द्रव्यों का व्यसनी बन सकता है तथा लोग क्यों मादक द्रव्यों के व्यसनी बनते हैं। हमने यह भी बताया है कि मादक द्रव्यों से किस प्रकार एक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर कुप्रभाव पड़ता है। इन सब मुद्दो पर गहराई से विचार करने के बाद हम सहमत है कि हमें माँग कम करने के लिए कुछ कार्यनीतियों के अवलोकन का अवसर मिला है। जब हमने आपूर्ति कम करने के विषय की समीक्षा की तो हम समझ गए हैं कि यह कार्य आसान नहीं है। इसका मुख्य कारण अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों का गैर-कानूनी व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय शराब व्यापार का कार्य बहुत ही व्यवस्थित और शक्तिशाली लोगों के माध्यम से किया जाता है जिसका आधार बहुत मजबूत है। भारत में, सरकार आपूर्ति कम करने के लिए प्रभावी कदम उठा सकती है और अपनी मुख्य भूमिका निभा सकती है। इसके अतिरिक्त हमने आपूर्ति कम करने के लिए कुछ कार्यनीतियों की भी चर्चा की है।

सर्वविदित है कि "इलाज से परहेज बेहतर है" और मादक द्रव्य दुरुपयोग से संघर्ष का सर्वोत्तम तरीका है मादक द्रव्यों का सेवन न करना।

5.8 शब्दावली

आई एम एफ एल	:	भारतीय निर्मित विदेशी शराब (ब्रांडी, विहस्की, रम, जिन आदि)
एन जी ओ	:	गैर सरकारी संगठन
फेरीवाला	:	वह व्यक्ति जो घूम-घूम कर मादक द्रव्यों को बेचता है।
मादक द्रव्य का नुस्खा अथवा मादक द्रव्य लेने के लिए सुझाव	:	योग्य चिकित्सक द्वारा दवाई का नुस्खा लिए लिखित पर्चा देना, लिखना या दवाई लेने के रूप में ड्रग लेने की सिफारिश करना।
यू एन डी सी पी	:	संयुक्त राष्ट्र मादक द्रव्य नियंत्रण कार्यक्रम।
डब्ल्यू एच ओ	:	विश्व-स्वास्थ्य संगठन।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्नों 1

1. विशेष प्रकार की संभावित मादक द्रव्यों के व्यसनियों का प्रतीकात्मक चित्रण करना संभव नहीं है।

2. विश्व मादक द्रव्य परिदृश्य और व्यसनियों को देखने से इस कथन से सहमत होना स्वाभाविक है।

3. इसकी विस्तृत चर्चा 5.2 में की गई है।

4. कुछ कारण भाग 5.3 में दिए गए हैं। उपलब्धता, मोहकता या चमक-दमक, गलत आदर्शों की भूमिका, गलत अवधारणाएँ, छिपा हुआ दबाव, उत्सुकता जनसंचार माध्यम इत्यादि कुछ कारण और जोड़े जा सकते हैं।

5. इसका उत्तर आपको 5.3 में मिलेगा। आप चलचित्रों और दूरदर्शन कार्यक्रमों के उदाहरण दे सकते है।

बोध प्रश्न 2

1. "इलाज से बेहतर परहेत होता है।" इस कथन का विस्तार कीजिए। इस संबंध में भाग 5.4 का प्रथम अंश का अध्ययन कीजिए।

2. व्यसन किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य, व्यक्तित्व, धन को नष्ट कर सकता है। तथा यह अनेक अपराधों का मुख्य कारण है विस्तार से टिप्पणी कीजिए।

3. स्पष्ट कीजिए कि यह किस प्रकार संबंधों को बिगाड़ता है, व्यक्ति को गैर-जिम्मेदार बनाता है। घरेलू हिंसा कम करना मुख्य कारण है। लैंगिक जीवन को प्रभावित करता है और किस प्रकार से गलत आदर्श प्रस्तुत करता है।

4. अपराध, मानव शक्ति का नाश, धन का नुकसान, दुर्घटनाएँ इन सबका उत्तर में वर्णन किया जाना चाहिए।

5. भाग 5.5 का उत्तरार्ध पढ़िए।

6. भाग 5.4 तथा 5.5 का अध्ययन करने के पश्चात् आप अनुभव करेंगे कि हमारे युवाओं को रासायनिक द्रव्यों की निर्भरता के घातक परिणामों के बारे में बताया जाना चाहिए। इस संबंध में आप जो सोचते हैं उसे लिखिए।

बोध प्रश्न 3

1. माँग में कमी करना - लोगों द्वारा मादक द्रव्यों की माँग न करने में सहायता करना अथवा लोगों को मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए।

   आपूर्ति में कमी करना - मादक-द्रव्यों को लोगों तक पहुँचने से रोकना अथवा मादक द्रव्यों को लोगों से अलग रखना।

2. बताए कि किस प्रकार से कानूनी और गैर कानूनी मादक द्रव्य उपलब्ध हैं। सरकार द्वारा आपूर्ति करना, गैर कानूनी उत्पादन मादक द्रव्यों के विक्रेता तथा भारत अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों का गैर-कानूनी व्यापार का परागमन केंद्र का वर्णन किया जाए।

3. श्री जोनाथन जी. द्वारा दिए गए सभी 6 सुझाव भाग 5.6 में दिए गए हैं।

4. आप सरकार की जिम्मेदारियों और उसकी भूमिका से अवगत हैं। आप अपने शब्दों में लिखिए कि किस प्रकार से सरकारी तंत्र गैर कानूनी मादक द्रव्यों के व्यापार पर पाबंदी लगा सकता है। स्पष्ट कीजिए कि सरकार कानूनी मादक द्रव्यों की आपूर्ति में क्या कर सकता है।

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

BLISF-04
शराब, मादक द्रव्य और एच आई वी

खण्ड

3

मादक द्रव्य दुरुपयोग–रोकथाम और उपचार

इकाई 1
शराब और मादक द्रव्य पर निर्भरता का उपचार 5

इकाई 2
शिक्षा, परामर्श, मार्गदर्शन सेवाओं और सामुदायिक प्रतिक्रियाओं द्वारा सशक्तीकरण 25

इकाई 3
रोकथाम और नियंत्रण में ग़ैर–सरकारी संगठनों, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका 39

इकाई 4
मध्यस्थता कार्य–नीतियों के लिए निपुणता और सामर्थ्य विकसित करना 52

खंड 3 का परिचय

इस खंड में चार इकाइयाँ हैं जो शराब और मादक द्रव्य व्यसन की रोकथाम एवं उपचार से संबंधित हैं। इकाई 1 शराब और मादक द्रव्य पर निर्भरता के उपचार के बारे में है। यह इकाई आपको उपचार, विष रहित करने तथा मूल्यांकन करने की जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ उपचार के विभिन्न रूपों और मध्यस्थता तकनीकों के बारे में भी बताती है। इकाई 2 में शिक्षा, परामर्श, संदर्भ सेवाएँ, और सामुदायिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से शक्तिशाली बनाने पर चर्चा की गई है। यह शक्तिशाली बनाने की प्रक्रिया को पहचानने तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के लिए सामुदायिक संसाधनों को उपयोग में लाने की विभिन्न संभावनाओं की जानकारी प्रदान करने में सहायता करती है। इकाई 3 मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकने में गैर-सरकारी संगठनों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका का वर्णन करती है। यह इकाई आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम और नियंत्रण में विभिन्न स्तरों पर मध्यस्थता की आवश्यकता तथा विभिन्न संगठनों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका से अवगत कराती है। इकाई 4 मध्यस्थता नीतियों के लिए कलाएँ और क्षमताएँ विकसित करने की आवश्यकता का वर्णन करती है। यह इकाई आपको मध्यस्थता परामर्श के बारे में अच्छी जानकारी तथा संकटकालीन मध्यस्थता के बारे में सूचना प्रदान करती है।

इस खंड में प्रस्तुत चार इकाइयाँ मादक द्रव्य दुरुपयोग के क्षेत्र में रोकथाम और आवश्यक उपचार के स्वरूपों की व्यापक जानकारी प्रस्तुत करती हैं।

इकाई 1 शराब और मादक द्रव्य पर निर्भरता का उपचार

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 उपचार की अवस्थाएँ

1.3 उपचार की तैयारियाँ

1.4 उपचार की प्रक्रियाएँ

1.5 शराब की आदत और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम योजना

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग के उपचार की प्रक्रिया से अवगत कराना है। किसी अन्य रोग की तरह मादक द्रव्य दुरुपयोग के उपचार का भी एक प्रचलित तरीका है। यह इकाई उपचार प्रक्रिया तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग प्रक्रियाओं की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करेगी। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- उपचार, परहेज तथा मूल्यांकन के बारे में समझ सकेंगे;
- शराब और मादक द्रव्य की आदत के उपचार के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- मध्यस्थता की तकनीकों का वर्णन कर सकेंगे; और
- पुन: आदत पड़ने की रोकथाम का वर्णन कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्यों का प्रयोग प्राचीनकाल से मुख्यत: जीवन के तनाव और दबावों से मुक्ति पाने तथा धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता रहा है। शराब की पुरानी आदत की चिकित्सा तथा उन्माद की भी चिकित्सा का वर्णन पुरानी हिंदू चिकित्सा पुस्तकों में मिलता है। भारत पर हमलावर आर्य सोमरस नामक शराब का प्रयोग करते थे। हजारों वर्ष पूर्व आर्य कैनाबीज पौधे के नशे और उन्माद की विशेषताओं के बारे में जानते थे और इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने इन पदार्थों का प्रयोग किया था। भारत में बौद्धों ने जनता के अंदर संयम की आदत बनाने में काफी योगदान दिया। लेकिन मध्यकाल में राजाओं और नौकरशाहों ने शराब को बढ़ावा दिया तथा अपने उदाहरणों से जनता में कुछ हद तक इस आदत का प्रसार किया। अलाउद्दीन ख़िलजी ने इस पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था तथा औरंगज़ेब ने इस पर सख्ती से संयम रखा जो उनके समय में अपवाद माना जा सकता है।

यह भी वर्णन किया जाता है कि ब्रिटिश शासन से पूर्व सामान्यत: संपूर्ण जनता शराब और मादक द्रव्यों के प्रभावों से मुक्त थी। ब्रिटिश शासन ने शराब और मादक द्रव्य की बिक्री से राजस्व

वसूल करने का प्रयास किया। 1790 में सरकार ने कर वसूली के लिए उत्पाद शुल्क कानून बनाए तथा सभी प्रदेशों में उत्पाद शुल्क विभागों की स्थापना की। उनकी नीति कम उपभोग पर अधिकतम राजस्व वसूल करने की थी। अफ़ीम और कैनाबीज के प्रचलित व्यसन के संदर्भ में प्रथम जाँच करीब 100 वर्ष पूर्व की गई जब भारत सरकार ने 1893 तथा 1895 में दो जाँच आयोगों की स्थापना की। 1954-55 में एक प्रतिबंध जाँच समिति की नियुक्ति की गई तथा समिति ने पूरे देश में स्तरों/चरणों में संपूर्ण प्रतिबंध सिफारिश की। इसका कार्यान्वयन दो स्तरों शिक्षा और रोकथाम तथा कानून एवं प्रशासनिक स्तर पर किया जाना था। 1963 में एक प्रतिबंध अध्ययन समिति का गठन किया गया जिसे समस्या का अध्ययन कर देश में शराब तथा निर्माताओं की वर्तमान स्थिति के बारे में सरकार को रिपोर्ट देनी थी। समिति ने जागरूकता बनाने, आधुनिक उपचार कार्यक्रमों, शराब की आदतों पर सार्वजनिक शिक्षा, ग़ैर-सरकारी संस्थाओं को प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रतिबंध की सिफारिशें की। भारत को जो कुछ समय पहले तक 'गोल्डन ट्राएंगल' तथा 'गोल्डन क्रिसेंट' से अवैध मादक द्रव्य के मुख्य प्रेषण देश के रूप में जाना जाता था, अब एक बड़ा खपत वाला देश बन गया। स्वापक नियंत्रण ब्यूरो के आँकड़ों के अनुसार भारत में हिरोइन जब्त करने की वार्षिक मात्रा लगभग 1 टन है।

शराब तथा मादक द्रव्य की आदत एक गंभीर रोग है जो लाखों भारतीयों के स्वास्थ्य एवं तंदुरुस्ती को प्रभावित करता है। इसके उपचार में अनेक सेवाएँ जैसे पहचान करना, मध्यस्थता, मूल्यांकन, निदान, परामर्श, चिकित्सा सेवाएँ, मनोचिकित्सा सेवाएँ, मनोवैज्ञानिक सेवाएँ, सामाजिक सेवाएँ तथा अनुवर्ती कार्य आदि व्यापक रूप से शामिल हैं। इसके उपचार के संसाधनों में वापसी का प्रबंध करना, शराब एवं मादक द्रव्य निर्भरता का दीर्घकालीन प्रबंध तथा पुनः आदत को रोकने की रोकथाम आदि शामिल हैं। शराब और मादक द्रव्यों की आदत के लिए अनेक वैकल्पिक उपचार भी उपलब्ध हैं। जिनमें औषधि, परामर्श-सामग्री, इलाज तथा पारिवारिक चिकित्सा शामिल हैं। प्रायः चिकित्सकी उपचार के लिए दो या अधिक उपचारों को मिलाकर एक साथ प्रयोग किया जाता है। इस इकाई में शराब और मादक द्रव्यों की आदत के उपचार लिए वर्तमान में प्रयुक्त विचारधाराओं की संक्षिप्त समीक्षा का वर्णन किया गया है।

1.2 उपचार की अवस्थाएँ

उपचार प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करने के लिए हम तीन मुख्य उपचार सेवाओं और अनुसंधान की वर्तमान स्थितियों का प्रयोग कर सकते हैं। ये हैं : मध्यस्थता, पुनर्वास तथा देखभाल। इन अवस्थाओं में सामान्यतः वे गतिविधियाँ, अवस्थाएँ और चरण शामिल किए जाते हैं जो अनुसंधानकर्ताओं और उपचारकर्ताओं द्वारा प्रयुक्त की गई हों।

अवस्था 1 : मध्यस्थता

मध्यस्थता में पहला कदम है पहचान करना। यह पहचान शराब या मादक द्रव्य की आदत की वर्तमान समस्या का उपचार कराने वाला स्वयं या अन्य व्यक्ति (पारिवारिक सदस्य, देखभाल करने वाला या कानून लागू करने वाला या चिकित्सक हो सकता है) तथा इलाज के लिए किसी के द्वारा भेजा गया व्यक्ति हो सकता है। रासायनिक आदत वाले व्यक्तियों का उपचार करना समाज में फैले रोगों को दूर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है इन प्रक्रिया में रासायनिक आदत के हानिकारक, निरंतर तथा विघटनकारी प्रभावों को दूर करने के लिए मध्यस्थता की जाती है तथा रासायनिक आदत वाले व्यक्ति को मनःस्थिति बदलने वाले मादक द्रव्यों का सेवन करने से रोकने तथा (आवश्यकता एवं जरूरतों के अनुसार तालमेल स्थापित करने के लिए स्वास्थ्यकारी तरीके विकसित करने में उसकी सहायता की जाती है। इसका उद्देश्य है कि व्यक्ति को सहायता प्राप्त हो तथा) वह भावनात्मक और शारीरिक रूप से क्षतिग्रस्त (चोट ग्रस्त) न हो। मध्यस्थता का उद्देश्य आवरणों को हटाना है ताकि व्यक्ति सच्चाई को स्वीकार कर सके। यह अनजान बने व्यक्ति के लिए ग्रहण करने योग्य तरीके से सच्चाई प्रस्तुत करने का एक ढंग है। सच्चाई प्रस्तुत करने से हमारा उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार तथा उसके कारण हुई घटनाओं से संबंधित विशेष तथ्यों को प्रस्तुत करना है। ग्रहण करने योग्य तरीका यह है कि व्यक्ति उसका प्रतिरोध नहीं कर सकता

क्योंकि यह व्यक्तिपरक, स्पष्ट, पूर्वाग्रह मुक्त तथा संभालने वाला होता है। मध्यस्थता को प्रतिरोधी माना जाता है लेकिन यह अनेक महत्वपूर्ण संदर्भों में उस प्रतिरोध से भिन्न है जिससे अधिकांश लोग परिचित हैं तथा जिसका कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं होता। मध्यस्थता के लिए मादक द्रव्य के आदी व्यक्ति के संपर्क वाले ऐसे दो या अधिक व्यक्तियों का एक दल बनाया जाता है जिन्होंने नशे की हालत में उसके व्यवहारों को देखा हो। मादक द्रव्य के आदी का आवरण तंत्र इतना अधिक विकसित होता जाता है कि एक अकेला व्यक्ति उसको नहीं हटा सकता। यदि व्यक्ति विवाहित है तो दल में उसके पति या पत्नी का नाम सबसे ऊपर आना चाहिए। दल में शामिल किए जाने वाले अन्य व्यक्तियों में उसकी देखभाल करने वाले अभिभावक, बच्चे, घनिष्ठ मित्र या पड़ोसी, सहकर्मी, कोई महत्वपूर्ण धार्मिक सदस्य तथा यदि उपलब्ध हो तो नशा उन्मूलन परामर्शक हो सकते हैं।

मध्यस्थता का अगला कदम है आँकड़ें एकत्रित करना। मध्यस्थता के लिए दो प्रकार के आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। पीड़ित व्यक्ति के शराब या व्यवहार के तथ्यों के बारे में तथा उपचार के विकल्प की सूचना के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

अगला कदम मध्यस्थता की रिहर्सल (अभ्यास) करना है। प्राय: वास्तविक मध्यस्थता से पूर्व एक या दो रिहर्सल आवश्यक होती है। पीड़ित व्यक्ति को छोड़ कर सभी को इन रिहर्सलों में शामिल होना चाहिए। मध्यस्थता दल के प्रत्येक सदस्य का पीड़ित व्यक्ति के व्यवहार के बारे में लिखित तथ्यों के साथ तैयार होकर आना चाहिए। जब ये सभी क्रियाएँ या कदम पूरे हो जाएं तो आप मध्यस्थता के लिए तैयार हैं। मध्यस्थता में पीड़ित व्यक्ति को उपचार केंद्र या अस्पताल के चयन आदि के विकल्प दिए जाते हैं। प्राय: नशे के आदी लोग किसी भी केंद्र में जाने से मना करते हैं तथा स्वयं ही नशा छोड़ने की शपथ उठाते हैं। तब दल प्रश्न करता है कि यदि तुमने नशा करना नहीं छोड़ा तो क्या होगा? तुमने पुन: शराब पीना आरंभ किया तो क्या होगा? यदि आप और अधिक पीने लगे तो क्या होगा? तब दल नशे के आदी व्यक्ति से एक समझौता करता है कि यदि उसने समझौता तोड़ा तो वह उनकी सहायता अवश्य लेगा।

जब नशे का आदी व्यक्ति सहायता लेना स्वीकार कर लेता है तो उसे तुरंत सहायता देनी चाहिए। प्रदान की जाने वाली उपचार सेवा को परहेज़ कहा जाता है।

परहेज़

यह मादक द्रव्य या शराब के तीव्र उन्माद को व्यवस्थित करता है तथा चाहे वह अकेले रहता हो या संरक्षित वातावरण में उसे नशे की आदत से निकालता है। यह प्रभावित व्यक्ति को नशा छोड़ने के बाद रक्त में अल्कोहल का स्तर गिरने के बाद होने वाले लक्षणों की भावी शृंखला के माध्यम से सुरक्षापूर्वक निकालने की चिकित्सा प्रक्रिया है। शराब छोड़ने के बाद के लक्षण हलके से गहन उदासी तथा जीवन के जोखिम तक हो सकते हैं। जैसे कम्पोन्माद या दौरे पड़ना। नशे की आदत से पीड़ित रोगी को नशा बंद करने की दशा में तुरंत विशेष चिकित्सा सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। इसमें यदि सामाजिक सहायता उपलब्ध हो तो जी. पी. (सामान्य रोगी) सहायता या बाह्य रोगी आधारित सहायता पर्याप्त हो सकती है। लेकिन कभी-कभी आदत अधिक होने पर रोगी को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है ताकि समुचित ध्यान रखा जाए एवं पर्याप्त देखभाल एवं चिकित्सा सुविधा तुरंत प्रदान की जा सके। नशा छुड़ाने के उपचार में अनेक प्रकार की औषधियों का प्रयोग किया जा सकता है तथा प्रलापी एवं उत्पाती रोगी के लिए विशेष रूप से कुशल देखभाल की आवश्यकता होती है। देखभाल के आधुनिक तरीके इस चरम सीमा के उपचार में बहुत सफल हैं तथा इससे जीवन का जोखिम काफी कम हो गया है। नशा नियंत्रण केंद्रों के पिछले वर्षों में हुए विकास के कारण नशाबंदी के लक्षणें पर नियंत्रण पाने में नशे के आदी लोगों की सुरक्षापूर्वक सहायता की जा सकती है। प्राय: चिकित्सा रहित वातावरण में भी नशाबंदी को प्राप्त किया जा सकता है। बशर्ते आवश्यकतानुसार चिकित्सा एकदम तैयार मिले।

अवस्था 2 : पुनर्वास

उपचार की इस अवस्था में 3 चरण हैं। i) मूल्यांकन और समीक्षा ii) आरंभिक देखभाल, तथा iii) व्यापक देखभाल।

समीक्षा और मूल्यांकन

व्यक्ति विशेष से संबंधित उपचार नीति बनाने का उद्देश्य शराब या मादक द्रव्यों के उपयोग को सीमित या कम करना है। इसके लिए व्यक्ति के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक स्तर तथा शराब की आदत को बढ़ावा देने वाले वातावरण में योगदान देने वाले कारकों का मूल्यांकन किया जाता है। समीक्षा और मूल्यांकन जाँच द्वारा किया जाता है जो स्थिति की उपस्थिति/अनुपस्थिति या अवस्था के माप की कठोरता का निर्धारण प्रयास प्रक्रिया का सरल एवं सस्ता उपयोग है। वर्तमान में इसका प्रयोग शारीरिक व मानसिक विकृति के लिए किया जाता हैं

निदान प्रकृति और परिस्थिति की अनुरूपता है। इसमें प्राय: मध्यस्थता और उपचार के लिए की गई संस्तुतियाँ शामिल हैं। शराब की विकृतियों का निदान करने के लिए जाँच एक महत्वपूर्ण आरंभिक कदम है। जिन व्यक्तियों में शराब की आदत से समस्याएँ आरंभ हो गई हैं या जिनमें समस्याएँ आरंभ होने का जोखिम है उनकी शीघ्र पहचान सुनिश्चित करना आवश्यक है। जाँच परीक्षण इन व्यक्तियों को अगले मूल्यांकन के लिए दिशा-निर्देश देने का उद्देश्य पूरा करते हैं। इन मूल्यांकनों में चिकित्सा और मानसिक स्थिति का इतिहास एवं जाँच शामिल हो सकती हैं। मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत मानदंडों के अनुसार निदान को सही या गलत घोषित किया जाता है। जाँच पद्धतियों में मूल्यांकन के लिए मनो सामाजिक संकेतों के लिए शराब-समस्याओं से संबंधित प्रश्नावली और साक्षात्कार तथा अधिक शराब सेवन के जैविक लक्षणों का पता लगाने के लिए प्रयोगशाला परीक्षण तथा अन्य जैविक मानदंड शामिल हैं। जाँच संबंधी प्रश्न प्राय: व्यक्ति से संबंधित होते हैं। जाँच उपकरण प्रतीक रूप से ऐसी सूचनाएँ प्रदान नहीं करते जो उपचार कार्यक्रमों और विशिष्ट उपचार लक्ष्यों को निर्धारित करने में कोई सहयोग नहीं देते जबकि अधिक जटिल प्रश्न एवं साक्षात्कार अधिक उपयोगी सूचना एकत्र करते हैं जो रोगी की उपचार संबंधी योजना का अधिक विस्तृत मूल्यांकन करने में उपयोगी हैं। लक्षणों की उपस्थिति और अनुपस्थिति का निर्णय करने के लिए अनेक पारंपरिक जाँच प्रश्न 'कमी' के रूप में पूछे जाते हैं। अन्य जाँच साधनों में वर्तमान स्थिति की आदतें, व्यवहार और भावनाओं की जानकारी के लिए विषयों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक प्रकार के अपने फायदे तथा सीमाएँ है।

केज (CAGE) प्रश्न पूछना सरल पद्धति है तथा ये प्रश्न आसानी से पूछे जा सकते हैं। इन लक्षणों या समस्याओं का पता लगाने के लिए चार प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है:

i) क्या आपने कभी शराब के सेवन को कम करने के विषय में अनुभव किया है?

ii) क्या कभी लोगों ने आपकी शराब सेवन की आलोचना कर क्रोधित किया है?

iii) क्या आपने कभी अपने शराब सेवन से स्वयं को अपराधी या बुरा महसूस किया है?

iv) क्या आपने सुबह सबसे पहले अपनी घबराहट दूर करने या शराब के प्रभाव से छुटकारा पाने (आँखे खोलने) के लिए शराब का सेवन किया है?

इनमें से किसी एक का सकारात्मक उत्तर शराब सेवन की समस्या का संदेह करता है तथा एक से अधिक सकारात्मक उत्तर समस्या होने का पक्का संकेत है। केज पूछने में केवल 30 सेकिंड लगते हैं। नियमित स्वास्थ्य जाँच के रूप में शामिल करने पर शराब की समस्या का पता लग सकता है जो अन्यथा छूट सकती है।

आरंभिक देखभाल

यह स्वास्थ्यकारी गतिविधियों का कार्यान्वयन है जिससे व्यक्ति को शराब या मादक द्रव्यों के प्रयोग को कम करने में तथा स्वतंत्र रूप से या संरक्षित वातावरण में रहते हुए शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कार्यों की अच्छी तरह करने में सहायता मिलती है।

विस्तृत देखभाल (स्थिरता)

यह निरंतर उपचार में भाग लेकर तथा स्वतंत्र रूप से या संरक्षित वातावरण में परिवर्ती सहारे के साथ रहते हुए आरंभिक देखभाल के माध्यम से प्राप्त लाभों का संकलन है।

इस अवस्था के 3 अवयव हैं i) बाद में ध्यान रखना (अनुवर्ती देखभाल) ii) पुनः आदत पड़ने से, बचना और iii) निवास स्थान पर देखभाल।

अनुवर्ती देखभाल

यह गहन मध्यस्थता और स्थिरता से प्राप्त लाभों को बनाए हुए स्वास्थ्यकारी स्थिति को बनाए रखने की निरंतर प्रक्रिया है, चाहे व्यक्ति स्वतंत्र रूप से रहता हो या अनुवर्ती या दीर्घकालीन आश्रित और संरक्षित वातावरण में रहता हो।

पुनः लौटने से बचाव

यह स्वास्थ्यकारी गतिविधियों की निरंतर जारी रहने वाली प्रक्रिया है जो शराब पीने की पुनः आदत पड़ने से बचाने का कार्य करती है तथा संक्षिप्त या गहन मध्यस्थता के माध्यम से प्राप्त लाभों को बनाए रखती है, चाहे व्यक्ति स्वतंत्र रूप से रहता हो या परिवर्ती अथवा दीर्घकालीन आश्रय प्राप्त संरक्षित वातावरण में रहता हो।

पुनः रोकथाम में मान्यता है कि शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग की गंभीर आदत वाले रोगियों को किसी सहायक एजेंसी के साथ निरंतर संपर्क में रहना चाहिए। यह संपर्क कम से कम उपचार आरंभ होने के बाद, पहले एक या दो वर्ष तक होना चाहिए। शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्याएँ चाहे किसी भी स्तर की हो एक दिन में ठीक नहीं होती। समस्या के बारे में रोगी की पूरी जागरूकता धीरे-धीरे विकसित होती है और इसी प्रकार सहायता प्राप्त करने की इच्छा भी। अधिकांश व्यसनकर्त्ताओं में पुनः पतन की संभावना होती है। कुछ प्रकार की सहायता निरंतर सहायक के स्तर पर जारी रहती है तथा रोगी को एक आश्वासन कि कोई निरंतर उसका ध्यान रखेगा, प्रायः ऐसा संकेत दिया जाता है। जोखिम के बारे में निरंतर याद दिलाते रहना तथा संकट और निराशा के समय आशान्वित करना प्रभावशाली उपचार के दो अमूल्य घटक हैं।

प्रायः उपचार के बाद कुछ ही महीनों में पुनः पतन हो जाता है। व्यसनकर्ता और परिवार वाले इसे तब तक रोक सकते हैं, जब तक वे एजेंसी से निरंतर संपर्क बनाए न रखें तथा उत्साह से उपचार में भाग न लें। फिर उन्हें इस बात को गंभीरता से तथा अपनी समझदारी का विकास करने तथा पुनः पतन के कारणों के विकसित होने की समीक्षा के रूप में लेना चाहिए। अनेक बार पुनः पतन अनुभव की गई गहरी भावनाओं और चिंताओं या व्यक्तिगत दबावों या शराब के परिवेश से जुड़े वातावरण का मुकाबला करने के कारण हो जाता है। ऐसे रोगी जिन्हें पहले से बताए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक इन दबावों का सामना करने के लिए बार-बार स्मरण कराया जाए तो उनके पुनः पतन से बचाव के अच्छे अवसर रहते हैं। यह इस प्रकार भी सहायता करता है कि पुनः पतन के संभावित परिणाम रोगी के दिमाग में सजीव हों जिससे कि वह पुरानी आदतों में लौट सकने वाले केवल अल्पकालीन माने योग्य लाभों के मोह का प्रतिकार कर सकें।

उदाहरण के लिए शेखर की मान्यता है कि प्रायः वेतन वाले दिन पुनः पतन होता है। उसने इन चिंताजनक घटनाओं से बचने के तरीके तैयार किए हैं। वेतन वाले दिन ऐसे मित्र से मिलने का प्रबंध किया जाए, जो उसकी शराब सेवन की समस्याओं के बारे में जानता है। यदि स्थिति अधिक चिंतनीय हो जाती है तो इसके बारे में चर्चा करने के लिए उसे अपने किसी मित्र या परामर्शक से बात करने के लिए प्रेरित किया जाए। इन सबके साथ उसके दिमाग में ऐसी काल्पनिक छवि होनी चाहिए कि वह सड़क पर पड़ा है तथा उठ नहीं सकता एवं उसके कपड़े उल्टी से गंदे हो गए हैं। ये सब अल्पकालिक मनोवैज्ञानिक उपाय हैं जो उसकी कमी से प्रभावित जीवन-शैली में हुए परिवर्तनों से पहले कुछ महीनों तक संयम रखने में उसकी सहायता करते हैं।

हाल ही के वर्षों में रोकथाम नीतियों का काफी प्रचार किया गया है और चिकित्सकों का प्रशिक्षित किया गया है। किसी उपचार कार्यक्रम में पुनः पतन की रोकथाम प्रक्रियाओं को जोड़ने का उद्देश्य पुनः पतन की संभावना तथा तीव्रता को कम करना है। यह तकनीक आरंभिक पुनर्वास तथा पुनः पतन में भी प्रयोग की जा सकती है। आत्मक्षमता विचारधारा जो एक व्यवहार उपचार नीति है

यह बेंदुरा के आत्मक्षमता सिद्धांत की सामाजिक शिक्षा से ग्रहण की गई है। व्यवहार की आत्म-नियंत्रण शिक्षा तथा मनोचिकित्सा का वर्णन निम्नलिखित उदाहरणों के रूप में किया जा रहा है।

आत्मक्षमता आधार नीति

उस स्थिति का ध्यान से मूल्यांकन करती है जिसके कारण व्यक्ति पिछले वर्ष अत्यधिक शराब या मादक द्रव्य का दुरुपयोग करने लगा। मूल्यांकन यह जानने के लिए किया जाता है कि किन कारणों से वह जोखिम या अत्यधिक दुरुपयोग तक पहुँच गया। इस विचारधारा में व्यक्ति द्वारा मादक द्रव्यों के अत्यधिक दुरुपयोग किए बिना व्यक्ति में समस्या या तनाव की स्थिति को संभालने में आम विश्वास या योग्यता का भी मूल्यांकन किया जाता है। इस नीति में मुख्य धारणा यह है कि मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एक मात्र कारण नहीं है जो व्यक्तियों को अत्यधिक दुरुपयोग या निर्भरता तक ले जाए। हमें व्यक्ति द्वारा मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने के कारणों पर, व्यक्ति द्वारा अत्यधिक दुरुपयोग या मादक द्रव्य पर निर्भरता की स्थिति का मुकाबला करने के लिए उपलब्ध विकल्पों पर तथा व्यक्ति उन्हें अपनाए बिना स्थिति को प्रभावशाली ढंग से संभालने की आत्मक्षमता में विश्वास पर भी विचार करना आवश्यक है। इसके उपचार में कार्यनिष्पादन आधारित ऐसे कार्यों की एक क्रमिक शृंखला विकसित करना है जो वह व्यक्ति सफलतापूर्वक कर सकता है इसके द्वारा यह देखा जाता है कि वह कैसे कार्यों में निपुण हो जिन्हें वह मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की स्थिति में समस्या मानता था। उपचारकर्ता प्रत्येक कार्य के पूरा होने पर व्यक्ति की आत्मक्षमता का अध्ययन करता है। इसमें अनेक प्रकार की तकनीकें इस्तेमाल की जा सकती हैं। जैसे उपचार सत्र में अभ्यास गतिविधियाँ तथा किसी जिम्मेदार मित्र या उपचारकर्ता के साथ कार्य का संयुक्त रूप से निष्पादन। उपचार प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति अतिरिक्त सुरक्षा के रूप में सुग्राही मादक द्रव्य शराब का सेवन भी कर सकता है।

आत्म-नियंत्रण व्यवहार प्रशिक्षण

एक और पुनःपतन रोकथाम नीति हैं जिसमें स्व-प्रबंधन प्रक्रियाओं की शृंखला का प्रयोग किया जाता है। इन्हें व्यक्तियों द्वारा शराब या मादक द्रव्य के प्रयोग को कम करने या रोकने के लिए बनाया गया है। इस प्रकार के उपचार में आत्म-नियंत्रण द्वारा निर्भरता व्यवहार का आत्म-निरीक्षण किया जाता है। इसमें शराब या मादक द्रव्य दुरुपयोग द्वारा किए गए कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर (जिन्हें मोटे तौर पर सामना करने या मौज़ के लिए मादक द्रव्य दुरुपयोग की श्रेणी में रखा जाता है) विशिष्ट व्यवहारात्मक उद्देश्यों के लिए तैयार किया जाता है। शराब सेवन के व्यवहार का आत्म-नियंत्रण का अध्ययन तैयार किए गए रिकार्ड के माध्यम से मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण किए कार्य तथा उच्च जोखिम की स्थिति के बारे में सूचनाएँ प्रदान करता है। आत्म-नियंत्रण नीति प्रगति के बारे में भी फीड बैक (पुनः प्रयोग करने वाली सूचनाएँ) प्रदान करती है। स्थिति का सामना करने के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों के उपचार में वैकल्पिक ज्ञानात्मक व व्यवहारात्मक प्रतिक्रियाएँ शामिल की जाती हैं। मौजमस्ती के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति के उपचार में नशे से बचने के लिए तथा वैकल्पिक मनोरंजन निपुणताओं का विकास तथा आत्म-नियंत्रण निपुणताएँ स्थापित करना शामिल है।

मनोभाव उपचार

मनोभाव उपचार में उपचार सत्रों की एक शृंखला होती जिसमें व्यक्ति से अत्यधिक शराब का सेवन करने के कारण खतरनाक स्थिति की कल्पना (जैसे जीवन साथी से झगड़ा या किसी पार्टी में शामिल होना) का आभास कराया जाता। इसमें शराब का सेवन बिल्कुल वर्जित होता है। इसके बाद शराब के कारण उत्पन्न-भावनाओं की व्यक्ति एवं उपचारकर्ता द्वारा समीक्षा की जाती है तथा इनके प्रति की गई प्रतिक्रिया से हो सकता है कि शराब सेवन की इच्छा समाप्त हो जाए। मनोभाव उपचार उन्मूलन सिद्धांत पर आधारित है। मनोभाव बल प्रयोग किए बिना बार-बार प्रयोग के माध्यम से अपना उत्पत्ति प्रभाव खो देते हैं।

निवास पर देखभाल

आश्रित व संरक्षित सतत देखभाल का यह प्रावधान ऐसे व्यक्ति के लिए है जो पूर्व में शराब की लत के कारण असहाय व असमर्थ है और सामुदायिक जीवन में उन्हें पुनः जाना है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी : क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. शराब और मादक द्रव्य निर्भरता के उपचार में व्यापक सेवाओं का अपने शब्दों में संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

1.3 उपचार की तैयारियाँ

शराब और मादक द्रव्य निर्भरता समस्याओं के उपचार से संबंधित पठन सामग्री में "उपचार केंद्र/पर्यावरण" का अनेक प्रकार से प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी इसका प्रयोग उपचार प्रदान करने वाले संगठन की स्थानीय स्थिति के लिए प्रयोग किया जाता है (जैसे स्वास्थ्य देखभाल केंद्र, मानसिक स्वास्थ्य केंद्र और निजी उपचार केंद्र आदि), कई बार इसका प्रयोग आरंभिक उपचार दर्शन का वर्णन करने के लिए किया जाता है (जैसे सामाजिक नशा उन्मूलन स्थापना, चिकित्सीय नशा उन्मूलन स्थापना), कई अन्य स्थानों पर इसका प्रयोग व्यक्ति के उपचार के दौरान उसके आवासीय प्रबंध का वर्णन करने के लिए किया जाता है (जैसे आंतरिक रोगी, ब्राह्य रोगी, अस्पताल, कारागार, आवासीय सुविधा, सामूहिक गृह, नर्सिंग होम, साप्ताहिक उपचार केंद्र, मध्यवर्ती गृह)। इसका सामान्यत: सबसे अधिक प्रयोग शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग उपचार के लिए अनुसंधान तथा कार्यक्रम योजनाओं में उस वातावरण का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसमें उपचार किया जाता है। उपचार को मुख्यत: दो प्रकार की स्थितियों/पर्यावरण में विभाजित किया जा सकता है। आन्तरिक रोगी तथा बाह्य रोगी। हालांकि कुछ में दोनों स्थितियाँ समान होती हैं। इसमें मुख्य विशेषता यह है कि क्या उपचार आवासीय सुविधा में दिन-रात होता है। आन्तरिक उपचार में चिकित्सा, सामाजिक और दूसरी सहायक सेवाएँ शामिल हैं जो ऐसे व्यक्तियों के लिए हैं जिन्हें 24 घंटे देखभाल की आवश्यकता होती है। बाह्य चिकित्सा/गैर आवासीय मूल्यांकन जिसमें मादक द्रव्य निर्भरता के लिए उपचार नियमित तथा अनियमित दोनों आधारों पर किया जाता है इसमें उपचार का चयन अनेक तथ्यों के आधार पर किया जाता है, जैसे पैसा चुकाने का सामर्थ्य, मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की गंभीरता और उपचार समस्याएँ, आंतरिक रोगी परिवेश में उपचार कराने के लिए घरेलू वातावरण छोड़ने की इच्छा तथा रोगी की सहायता प्राप्त करने की इच्छा आदि। इस प्रकार आंतरिक और बाह्य रोगी उपचार पर्यावरण प्राय: भिन्न-भिन्न व्यसनी को सेवाएँ प्रदान करते हैं।

1.4 उपचार की प्रक्रियाएँ

प्राय: उपचार की विषयवस्तु को तकनीक, पद्धति, प्रक्रिया या विधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता हैं। लक्षणों को समाप्त करने या व्यवहार परिवर्तन को प्रभावित करने वाली विशिष्ट प्रक्रियाओं को उपचार प्रक्रियाओं के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। अनेक उपचार प्रक्रियाओं को अनेक अर्थों में प्रयोग किया जाता है जैसे मादक द्रव्य निर्भरता समस्याएँ, एकल या मिश्रित रूप में, मनोचिकित्सा, आत्म सहायता समूह, प्रतिकूल/विपरीत अनुकूलन, बेचैनीरोधी चिकित्सा, आत्म संयम प्रशिक्षण, तनाव प्रबंधन, मालिश चिकित्सा, शारीरिक व्यायाम, व्यावसायिक परामर्श, वैवाहिक परिवार चिकित्सा, सम्मोहन, शराब के प्रभावों के बारे में शिक्षा, वातावरण प्रबंधन और सामाजिक निपुणता प्रशिक्षण आदि। सामान्य: 6 श्रेणियाँ इस प्रकार हैं - 1) औषधीय, 2) सामाजिक, 3) मनोवैज्ञानिक, 4) व्यवहार संबंधी 5) मनोपरिवर्तन तथा 6) आध्यात्मिक। इनका विभिन्न उपचार प्रक्रियाओं में वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है।

1) औषधीय उपचार प्रक्रियाएँ

मादक द्रव्यों की निर्भरता के उपचार में प्रयुक्त विभिन्न औषधियों को वर्गीकृत करने के अनेक प्रयास किए जा चुके हैं। मुख्य भिन्नता इन अर्थों में है : क) शराब और मादक द्रव्य के नशे के गंभीर प्रभावों को समाप्त करने के लिए प्रयोग की जाने वाली औषधियाँ, ख) नशा छोड़ने के लिए प्रयोग की जाने वाली औषधियाँ, ग) दीर्घकालीन उपचार की औषधियाँ (पुनर्वास और पुन: पतन की रोकथाम) चूँकि इस इकाई का उद्देश्य उपचार के बारे में संक्षिप्त और उपयोगी सूचनाएँ प्रदान करना है, इसलिए हम उपचार में औषधीय चिकित्सा पक्ष की चर्चा नहीं कर रहे हैं।

2) सामाजिक उपचार प्रक्रियाएँ

शराब और मादक द्रव्य निर्भरता एक सामाजिक रोग भी है। इसलिए इसके उपचार में अनेक साधनों का प्रयोग किया जाता है जैसे वैवाहिक एवं परिवार चिकित्सा, महिलाओं के समूह, अल्कोहलिक एनानिमस (Alcoholic anonymous) तथा कर्मचारी सहायता कार्यक्रमों आदि का मादक द्रव्यों की निर्भरता के उपचार के लिए प्रयोग किया जाता है।

i) वैवाहिक एवं परिवार चिकित्सा

अब अधिकांश उपचारकर्ता इस बात को मानने लगे हैं कि रोगी के स्वास्थ्य लाभ में उसका जीवन साथी और कभी-कभी परिवार के सदस्यों का भाग लेना आवश्यक है। प्राय: व्यसनकर्ता के जीवन साथी की आवश्यकता परिवार द्वारा झेले जा रहे तनाव व व्यसनकर्त्ता द्वारा प्रयोग की जाने वाली मादक द्रव्य की स्थिति या सूचना के बारे में चर्चा करने के लिए होती है। कुछ उपचारकर्ता रोगी की मुख्य समस्या से हटकर शराब की समस्या पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करते हैं तथा दुरुपयोग को परिवार में किसी विकृति का पक्ष मानते हैं। इसके परिणामस्वरूप वे स्वत: पारिवारिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित कर लेते हैं। चाहे कोई भी दृष्टिकोण अपनाया जाए एक चीज स्पष्ट है कि व्यसनकर्ता द्वारा नई जीवन-शैली अपनाने के कारण परिवार को महत्वपूर्ण समायोजन करने पड़ेंगे। यह एक अच्छा उदाहरण है कि जीवन साथी को सहयोग और सहायक के रूप में व्यवहार करना चाहिए। अपने जीवन साथी से झगड़ना नहीं चाहिए। इससे शराब सेवन की समस्या की गंभीरता को न्यूनतम किया जा सकता है, जिससे उपचार का अच्छा परिणाम आने में योगदान मिलता है।

ii) महिला समूह

जैसे-जैसे महिलाओं में शराब से संबंधित समस्याएँ अधिक होती जा रही हैं यह आवश्यक हो गया है कि कार्यक्रमों में उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को भी शामिल किया जाए। प्राय: शराब या मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या होने पर महिलाएँ स्वयं को अधिक अपराधी तथा कलंकित समझती है। यदि केवल महिलाओं को उपचार सेवा में शामिल किया जाए तो वे नि:संकोच होकर आसानी से बात करती हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में वे अपनी समस्याओं और विशेषत: अपनी सेक्स संबंधी समस्या पर खुलकर चर्चा कर सकती हैं। महिलाओं के लिए उपचार को सुविधाजनक बनाने के लिए अतिरिक्त सेवाएँ जैसे निकटस्थ उपचार केंद्र और शिशु सदन के प्रावधानों पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

iii) एल्कोलिक्स एनोनिमस (अल-एनोन और अल-एटीन)

एल्कोलिक्स एनोनिमस संगठन ने 1985 में अपनी 50वीं वर्षगांठ मनाई। उसका दावा है कि दुनिया भर में उसने एक मिलियन से अधिक लोगों की सहायता की है। गंभीर रूप से व्यसनकर्ता का एए से संबंध न करना कोई समझदारी नहीं है। प्राय: एए के किसी सदस्य के साथ आरंभिक रूप से व्यक्तिगत परिचय होने पर व्यसनकर्ता समस्या का पता कर बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है। किसी एक मुलाकात में ही व्यवसनकर्ता से अधिक आशा नहीं रखी जा सकती। किसी के लिए इसके महत्व के बारे में अच्छी

राय बनाने हेतु अनेक समूहों के साथ प्रायः 15 से 20 मुलाकात आवश्यक होती हैं। अनेक व्यक्तियों ने अपनी आवश्यकतानुसार एए से सहायता तथा जानकारी प्राप्त की है। दूसरे व्यक्ति नियमित रूप से शामिल न होकर भी एए के दर्शन से काफी कुछ ग्रहण कर सकते हैं। अल-एनोन व्यसनकर्ताओं के संबंधियों और मित्रों का एक संगठन है जो एक बहुमूल्य संसाधन की तरह ही मान्यता का हकदार है। व्यसनकर्ता की समस्या में गहराई से सम्मिलित कोई भी व्यक्ति इससे सहायता ले सकता है क्योंकि यह संबंधी या मित्र को व्यसनकर्ता द्वारा समस्या सुलझाने की इच्छा न होते हुए भी सहायता प्राप्त करना सिखलाता है। अल-एटीन विशेष रूप से शराब का सेवन करने वाले किशोरों के लिए स्थापित किया गया है।

एल्कोलिक्स एनोनिमस एक फेलोशिप प्रदान करता है जो समूह में शराब की समस्या पर खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसमें ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो पहले ही व्यसनकर्ता के दुखों और संकोचों को पहचानते हैं तथा उसी समय जीवन में नया रास्ता प्राप्त करने मे सहारा प्रदान करते हैं एए का अंत में यही विश्वास है कि जो स्वयं को पक्का व्यसनकर्ता समझते हैं उनके ठीक होने के लिए संयम ही एक मात्र उपाय है। ड्रिंकवाचर एक अन्य स्व-सहायता संगठन है जिसका उद्देश्य खतरनाक स्तर तक शराब सेवन करने वालों को कम क्षति कारक स्तर तक की आदतों में लाने में सहायता प्रदान करना है।

iv) **कर्मचारी सहायता कार्यक्रम**

शराब तथा मादक द्रव्य की निर्भरता कार्य को गलत ढंग से करने के रूप में मानी जाती है। इस तथ्य को कर्मचारी सहायता कार्यक्रम आयोजित कर उपचार के लाभ में प्रयोग किया जा सकता है। जहाँ कोई कंपनी ऐसे कर्मचारियों से निपटने के लिए नीति बनाती है जिनका कार्य शराब दुरूपयोग या अन्य कारणों से सही नहीं है।

नीति के बनाने में प्रबंधक तथा यूनियनों की संयुक्त राय होना आवश्यक है तथा इसे समान रूप से संगठन में लागू किया जाना चाहिए। यदि किसी कर्मचारी का कार्य उसके व्यसन के कारण प्रभावित होता है तो वह किसी सहायता प्रदान करने वाले उचित स्रोत में भेजे जाने को स्वीकार सकता है बशर्ते उपचार में सहयोग देने पर उस का कार्य सेवा जारी रहेगी। हो सकता है कि कर्मचारी इस प्रकार की कार्रवाई को नकार सकता है और साधारण अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं को स्वीकार करे। लेकिन जिन कंपनियों में ऐसी नीतियाँ हैं और उचित रूप से लागू की जाती हैं वहाँ रोजगार जारी रहने के अवसर से अतिरिक्त प्रेरणा मिलती है तथा उपचार का बहुत बढ़िया परिणाम प्राप्त होता है।

3) **मनोवैज्ञानिक उपचार प्रक्रियाएँ**

मनोवैज्ञानिक उपचार के व्यवहार संबंधी तथा मनोपरिवर्तन संबंधी अनेक प्रकार हैं जिनका मादक द्रव्य दुरूपयोग के उपचार में प्रयोग किया गया है। कभी-कभी यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कोई उपचार मुख्यतः व्यवहार संबंधी है या मनोपरिवर्तन संबंधी जैसे समूह उपचार और वैवाहिक तथा परिवार उपचार को वास्तविक रूप से व्यवहार संबंधी या मनोपरिवर्तन संबंधी के रूप में विभाजित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उपचारकर्ता उन्हें प्रत्येक रूप में प्रयोग करते हैं। वास्तव में अनेक उपचार प्रक्रियाओं के प्रचलन के कारण वर्तमान में विभिन्न प्रक्रियाओं और स्थितियों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया जाता है। फिर भी कुछ विशिष्ट प्रक्रियाएँ हैं जो अपने तर्कसंगत प्रयोग और प्रभाव के कारण किसी एक या अन्य रूप के साथ विशिष्ट उद्देश्य के लिए स्वीकृत हैं।

4) **व्यवहार संबंधी उपचार प्रक्रियाएँ**

शराब सेवन के तरीके कम करने के लिए शिक्षा सिद्धांत से उत्पन्न तकनीकों का प्रथम चिकित्सीय प्रयोग 50 से अधिक वर्ष पूर्व सोवियत चिकित्सक कांतोरोविच द्वारा किया गया। कांतोरोविच ने विद्युत विमुखता का प्रयोग किया लेकिन असफलता मिली तथा इसकी

चिकित्सीय प्रक्रिया बंद हो गई। इस बीच के वर्षों में व्यवहार संबंधी पद्धतियों में जिसका लगातार मुख्य रूप से उपयोग हो रहा था वह थी - 'द्रव्य अभिरूचि'। इस तकनीक को शेडल सैनेटोरियम, सीटला एल. ए. ने आरंभ किया गया। व्यवहार संबंधी पद्धतियों का व्यापक उपयोग मनोरोग विकृति में 1960 के दशक के आरंभ में किया गया। ये आरंभिक प्रयास शराब सेवन की समस्या के निदान शास्त्र का अपेक्षाकृत सरल विचार प्रस्तुत करते हैं जो परिस्थिति की अवस्था संबंधी चिंताओं को कम करने का प्रयास करते हैं। अत्यधिक शराब सेवन के कारण के बारे में प्रथम एक आयामी ज्ञान सिद्धांत पशु प्रयोगशाला अध्ययनों और चिकित्सीय अध्ययनों से उत्पन्न हुए। इनके अनुसार शराब की समस्या के लिए उपचार किए जाने वाले व्यक्तियों में शराब चिंता के उच्च स्तर को कुछ कम कर देती है। फिर भी मानव व्यवहार संबंधी अनुसंधान इस विचार को चुनौती देते हैं कि परिस्थिति की अवस्था संबंधी चिंता का एकमात्र कारण अधिक शराब सेवन करना नहीं है। इसका सुझाव है कि अन्य संबंधित कारणों पर भी विचार करना चाहिए।

i) **मादक द्रव्य अरुचि** अभी तक ज्ञात सर्वोत्तम व्यवहार उपचार प्रक्रिया है। इसमें शराब सेवन के व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। वर्तमान प्रचलन के अनुसार द्रव्य अरुचि व्यक्ति की मनपंसद की शराब के साथ हानिकारक प्रेरणा से जुड़ी हुई है। शराब का रूप, गंध तथा स्वाद के प्रति व्यक्ति की विपरीत प्रतिक्रिया को अनुकूलित करने के लिए उल्टी उत्पन्न होती है। अस्पताल में भर्ती होने पर 10 से 15 में एक-एक दिन छोड़ कर प्राय: 5 बार अरुचि उपचार किया जाता है। कुछ व्यक्तियों में 5 से कम उपचार में पर्याप्त अरुचि पैदा हो जाती है जबकि कुछ में और अधिक उपचार की आवश्यकता होती है। चूंकि अरुचि सभी प्रकार की शराबों पर एक समान रूप से लागू नहीं होती, इसलिए व्यक्ति उपचार के दौरान अलग-अलग समय में भिन्न प्रकार की शराब प्राप्त करते हैं।

ii) **गुप्त संवेदनशीलता** एक मौखिक अरुचि उपचार है जो प्राय: व्यक्ति को बार-बार काल्पनिक अप्रसन्नता का प्रयोग करता है। यह प्राय: शराब सेवन में शामिल प्रत्याशित कार्यों के साथ सूंघने को प्रेरित करने वाली घटनाओं से संबंधित होती हैं। इसमें व्यक्तिशराब -सेवन की क्रियाओं को देखता है, गिलास को होठों से लगाता है तथा सेवन के सामान्य वातावरण के अनुसार सामान्य रूप से सेवन करता है। जैसे ही व्यक्ति गिलास को होठों से लगाता है उसे निर्देश दिया जाता है कि वह अरुचि की कल्पना करे, प्राय:- उल्टी आने की कल्पना। पुन: उसे यह कल्पना करने को कहा जाता है कि शराब छोड़ने के बाद आराम अनुभव करे। उपचार में व्यक्ति के साथ कई सत्र होते हैं जो दिन में दो बार तथा जब कभी भी उसे सेवन की आवश्यकता अनुभव हो तो प्रक्रिया को दोहराया जाता है।

iii) **तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण** को शराब की समस्या वाले व्यक्तियों में विशेषत: जब निरंतर अत्यधिक चिंता/तनाव रहता हो संयम से रहने में लाभप्रद पाया गया है। बायोफीड़ बैक एक ऐसी ही तकनीक है। इसमें एक इलेक्ट्रॉनी उपकरण का प्रयोग किया जाता है जो मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करता है तथा श्रव्य या दृश्य फीडबैक के माध्यम से उस व्यक्ति को दिखाया जाता है। व्यक्ति को मनपसंद प्रतिक्रिया के अभ्यास द्वारा फीडबैक उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है (प्राय: पेशियों को ढीला छोड़ना या ध्यान लगाना)। व्यक्ति अपनी अनुभूति से अवस्थाओं को पहचान लेता है। यह पेशियों के अधिकतम तनाव का संकेत होता है जो इलैक्ट्रोमायोग्राफी (ई.सी.जी.) फीडबैक में मापा जाता है या अल्फा वेव्ज के रूप में इलैक्ट्रोमायोग्राफी (ई.ई.सी.) द्वारा मापा जाता हैं। वांछित प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करने वाले विषयों का अभ्यास दृश्य या श्रव्य फीडबैक संकेत के रूप में किया जाता है तथा यह वांछित प्रतिक्रियाओं को मजबूत बनाता है। बायोफीडबैक प्रशिक्षण केवल उच्च चिंता करने वाले व्यक्तियों में शराब सेवन की मात्रा को कम करने में उपयोगी पाया गया है। तनाव प्रबंध प्रशिक्षण के अन्य रूप, जो शराब समस्या में प्रयोग किये जाते हैं, वे हैं- लगातार आराम प्रशिक्षण, ध्यान, सुसंगठित रूप से असंवेदी बनाना तथा व्यायाम करना।

iv) **सामाजिक निपुणता प्रशिक्षण** का विकास उन लोगों के द्वारा किया गया है जो यह मानते हैं कि अधिक शराब सेवन का कारण है कि व्यक्ति अंतर्वैयक्तिक स्थिति में अपनी संतुष्टि के अनुरूप कार्य करने में अयोग्य होता है। व्यक्तियों को समूहों या सामाजिक वातावरण में जटिल सामाजिक घटनाओं का मुकाबला करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण में उन विशिष्ट निपुणताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक भावनाओं को ग्रहण करना, अभिव्यक्त करना, संपर्क बनाना तथा आलोचनाओं का उत्तर देना सिखाया जाता है। इस प्रकार के व्यवहार संबंधी दृष्टिकोण में निपुणताओं के प्रारूप, भूमिका निभाना और भूमिका निभाने की स्थितियों के दृश्य चित्र दिखाने वाली तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

v) **आपातिक प्रबंधन** एक अन्य व्यवहार संबंधी तकनीक है। इसमें संपर्कों के माध्यम से सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की होने वाली अप्रत्याशित प्राकृतिक घटनाओं तथा अत्यधिक मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से दृढ़ होने वाले या नुकसान उठाने वाली परिस्थितियों में औपचारिक या सामान्य व्यवहार करने का प्रशिक्षण देने का प्रयास किया जाता है। इस विचारधारा में परिवर्तन किए जाने वाले लक्ष्य व्यवहार को पहचानना तथा विद्यमान बदले जाने वाले व्यवहार को निरंतर करते रहने से उचित पुरस्कार या सजा को जानना और लक्ष्य व्यवहार के पूर्व निर्धारित कार्य में अनिश्चित लाभदायक या हानिकारक कार्य अथवा गतिविधियों को जानना शामिल है। प्रभावशाली आकस्मिक प्रबंध को विकसित करने वाले मुख्य तथ्य हैं। (क) मूल्यांकन और व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण परिणामों के माध्यम से पहचान करना (ख) आकस्मिकता के बारे में पारस्परिक सहमति विकसित करना और (ग) आकस्मिकता को सावधानी तथा सुसंगत रूप से सहमति के सभी पक्षों के पास उनकी निर्धारित भूमिका के लिए ले जाना।

vi) **सामुदायिक प्रणालीकरण परामर्श** भी एक आकस्मिक या आपातिक प्रबंध विचारधारा है। यह पुराने शराब और मादक द्रव्य की निर्भरता के शिकार व्यक्तियों के व्यवहार संबंधी प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करती है। इस परामर्श का उद्देश्य दीर्घकालीन व्यवसाय, अंत: वैयक्तिक एवं परिवार समस्याओं में सुधार करना है। ऐसे मामलों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रणालीकरण पारिवारिक, रोजगार और मित्रों की पहुंच के अंतर्गत होते हैं, जो संयम में अनिश्चित होते हैं। सामुदायिक प्रचलन परामर्श एक व्यापक उपचार नीति है जिसमें डायसलफिरम का प्रयोग मित्रों, परिवार और नियोक्ता से व्यक्ति के शराब सेवन के व्यवहार या अन्य समस्याओं के बारे में फीडबैक सहित परामर्शक को नियमित सूचना देना, किसी महत्वपूर्ण पड़ोसी सलाहकार के माध्यम से निरंतर सामाजिक सहारा प्रदान करना तथा निरंतर समूह परामर्श करना शामिल है।

vii) **हानि कम करना:** यह मध्यस्थता की एक व्यवस्था है जो न केवल मादक द्रव्य निर्भरता को समाप्त करने पर ध्यान केंद्रित करती है बल्कि समाज में व्यसनकर्ता द्वारा किए गए नुकसान को भी नियंत्रित करती है। यह 1980 के दशक में पहली बार नीदरलैंड में आरंभ हुई। हानि कम करने की नीतियाँ मादक द्रव्य व्यसनकर्ता को बड़े समाज से जोड़ने तथा उपयोग और दुरूपयोग में भेद करने का प्रयास करती है।

हानि कम करने की शुरुआत तब हुई जब यह पता लगा कि मादक द्रव्य के इंजेक्शनों की एक ही सांझा सूई के प्रयोग से प्राय: एच.आई.वी. फैलता है। सूई विनिमय कार्यक्रम को हेरोइन के व्यसनकर्ता स्वस्थ लोगों को संदूषित सूई देने से रोकने के लिए हानि कम करने के कार्यक्रम के भाग के रूप में चलाया गया था। हानि कम करने में मादक द्रव्य दुरूपयोग के कारण होने वाले अपराधों को कम करना भी शामिल किया गया। एक प्रस्ताव यह भी आया है कि व्यसनकर्ताओं को चिकित्सक की देखरेख में मामूली लागत पर मादक द्रव्य उपलब्ध कराने को वैध बनाया जाए। यह प्रणाली 1970 और 1980 के दशकों में इंगलैंड में अंजमाई गई। इस विचारधारा के विरोधी कहते हैं कि इससे व्यसन में वृद्धि होती है और ब्रिटेन में 1980 के दशक में वास्तव में व्यसनकर्ताओं की संख्या में हुई वृद्धि ने इस तर्क का समर्थन किया।

इसी वृद्धि के कारण यह व्यवस्था समाप्त हो गई। फिर भी कानून के रक्षक दावा करते हैं कि इससे व्यसनकर्ताओं को स्वयं की क्षति की तुलना में समाज की अधिक क्षति करने से रोका जा सकेगा।

viii) **शराब का नियंत्रित सेवन:** अब तक शराब के दुरूपयोग के उपचार का व्यावहारिक लक्ष्य जीवन भर शराब से बचे रहने का था अर्थात् संपूर्ण परहेज। कुछ आधुनिक व्यवहार उपचार अनुसंधानों ने संकेत दिया है कि विशेष रूप से सीमित मात्रा में शराब सेवन के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक आयोजित किया जा सकता है।

इस प्रकार के उपचार में लक्ष्य बड़ी सावधानी से बनाना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति में शारीरिक गड़बड़ जैसे अमाशय या लीवर ठीक से कार्य नहीं करता तो वह कभी भी नियंत्रित सेवन का लक्ष्य नहीं बनाएगा। एक अन्य महत्वपूर्ण बात है रोगी द्वारा शराब सेवन के नियंत्रण के बारे में अपनी क्षमता की आशा करना। यदि कोई रोगी यह पक्का विश्वास करता है कि वह किसी भी हालत में शराब को नहीं छोड़ पाएगा तो ऐसे लक्ष्य बनाना समझदारी नहीं होगी।

उसी समय हमें इस बात का भी अनुमान लगाना होगा कि रोगी के सामाजिक और व्यावसायिक जीवन पर संपूर्ण परहेज तथा नियंत्रित सेवन का क्या महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। उदाहरण के लिए यदि रोगी स्वयं को नियंत्रित शराब का सेवन करने वाला घोषित या स्वीकार कर अपना रोजगार नहीं बचा सकता है तो संपूर्ण परहेज से भिन्न उपचार का लक्ष्य स्पष्टत: अनुचित होगा। उसी संकेत के अनुसार अनेक बार असफलताओं के बाद संपूर्ण परहेज के उपचार पर दृढ़ रहना ताकि संपूर्ण परहेज को प्राप्त किया जा सके, अनुचित होगा।

5) **मनोपरिवर्तन**

अभी तक मनोचिकित्सा की सरल लेकिन उपयोगी परिभाषा यह है कि, "यह किसी योग्य चिकित्सक की सहायता प्राप्त करने आए रोगी को परेशान करने वाली भावनाओं, धारणाओं और व्यवहारों में परिवर्तन करने के लिए बनाई गई आंतरिक वैयक्तिक प्रक्रिया है।" समकालीन मनोपचार में अनेक सैद्धांतिक विचारधाराओं को शामिल किया जाता है। प्राय: शराब या मादक द्रव्य के दुरुपयोगकर्ता को दिए गए मनोचिकित्सा के विचार और प्रशिक्षण की ऐसे लोगों को प्रदान किए गए विभिन्न सैद्धांतिक उपचारों के प्रभाव की वास्तविक तुलना नहीं की जाती। फिर भी पीड़ित लोगों के लिए अनेक सिद्धांतों और तकनीकों के सेट की सिफारिश की जाती है। अन्य वर्णित पद्धतियों की तरह वर्तमान परंपरा मनोपचार को अनेक उपचार विचारधारा में एक घटक के रूप में शामिल करने की है। मनोपचार सिद्धांतों को प्राय: समग्र रूप से तैयार विभिन्न आयामों वाले कार्यक्रमों में शामिल किया जाता है।

मनोपचार इसके किए जाने वाले स्वरूप में भी भिन्न-भिन्न होता है। यह व्यक्तियों को अलग-अलग सत्रों में, संबंधियों रहित समूहों में तथा परिवार के सदस्यों के साथ समूहों में भी दिया जा सकता है। मनोपचार अपने स्वरूप में भिन्नताओं के साथ-साथ अवधि के संदर्भ में, सत्रों के संदर्भ में तथा सत्रों के मध्य अंतरालों के संदर्भ में भी भिन्न-भिन्न होता है। अवधियाँ अल्पकाल से दीर्घकाल तक हो सकती हैं। अवधियों में भिन्नताओं के लिए किए गए कुछ अध्ययनों में इस बात के पर्याप्त प्रमाण नहीं मिले हैं कि दीर्घकालीन अवधियाँ अधिक प्रभावशाली होती हैं। इसके विभिन्न स्वरूपों का विवरण आने वाले अनुच्छेदों में किया जा रहा है।

i) **एक व्यक्ति का मनोपचार**

हाल के वर्षों में शराब और मादक द्रव्य के व्यसनकर्ताओं के लिए अकेले व्यक्ति के उपचार का कोई महत्वपूर्ण योगदान देखने में नहीं आया। इस विचारधारा को मनोविश्लेषकवादी पद्धतियों के उपयोग में मिली असफलता के कारण समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। यह पद्धति इस व्यसन को रोग के आंतरिक लक्षणों तथा इस आंतरिक संघर्ष की व्याख्या तथा सूक्ष्म नज़र के विकास के माध्यम से दूर करने के लिए विचार

करती है। कुछ लोगों का विचार है कि अकेले व्यक्ति का मनोपचार या परामर्श उसके व्यसन उपचार में महत्वपूर्ण योगदान करता है। अधिकांश मनोचिकित्सक परामर्शक अतीत के मुद्दों और उनके विकसित होने के कारणों पर विचार करने की अपेक्षा समकालीन जीवन की समस्याओं तथा व्यसन के दुरुपयोग तथा व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह सिद्धांत अलग करने की अपेक्षा सहायता प्रदान करने वाले उपचार का आरंभिक रूप है।

चिकित्सीय अनुभव के आधार पर विचारधाराओं में कुछ परिवर्तन भी हुए, जिनमें उपचारकर्ता को सहारा प्रदान करने तथा मुकाबला करने वाली दोनों भूमिकाओं को सक्रिय रूप से निभाने की सलाह दी जाती है। साथ ही उसे शराब मादक द्रव्य व्यसनकर्ता की सुरक्षा व्यवस्था एवं आत्मसम्मान को चोट लगने के बारे में भी सावधान रहना चाहिए। अकेले व्यक्ति की मनोचिकित्सा को प्राय: व्यापक पुनर्वास प्रयासों के एक हिस्से के रूप में लेना चाहिए जिसमें व्यसन शिक्षा, एल्कोलिक्सएनोनिमस (एए) के बारे में बताना, ए एल 1-अनोन और एल एटीन के संदर्भों सहित परिवार मध्यस्थता, डायसतफराम खाने और व्यसन को बढ़ावा देने वाली जीवन की समस्याओं के लिए विशेष प्रयास करने का प्रशिक्षण शामिल किया जा सकता है।

ii) सामूहिक मनोपचार

अकेले व्यक्ति के मनोपचार से भिन्न सामूहिक मनोपचार इस व्यसन के लिए किया जाना सबसे अधिक प्रचलित है। यह पुनर्वास के आरंभिक एवं विस्तृत कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाता है। सामूहिक उपचार एकमात्र रूप में कभी नहीं किया जाता। अकेले व्यक्ति के मनोपचार की तरह सामूहिक उपचार में भी मादक द्रव्य चिकित्सा (एए) एल्कोलिक्स एनोनियम और अन्य सहारा प्रदान करने वाली गतिविधियों के साथ किया जाता है। अकेले व्यक्ति के मनोपचार की तरह समूहों में भी उपचारकर्ताओं की स्थिति और प्रशिक्षण का समग्र कार्यक्रम जिसके वे अंग हैं की विचारधाराओं के अनुरूप भिन्नता की प्रवृत्ति होती है। इसलिए शराब समस्या के सामूहिक उपचार में भिन्नताएँ होना मुख्य विशेषता है। इस प्रकार उनमें समूहों के आकार, समूहों की बैठकों की संख्या, सत्रों की संख्या, उपचारकर्त्ताओं की संख्या और समूहों में परस्पर संपर्क शैली में कोई एकरूपता नहीं होती।

प्राय: इसके लाभों में वह तकनीक विशेष महत्वपूर्ण है जिसमें शराब की समस्या से पीड़ित व्यसनकर्ता वैसे ही अनुभव वाले लोगों से मिलता है। इस विचारधारा में समूह के सदस्य संयम से रहने पर आने वाली कठिनाइयों के बारे में सहारा तथा ऐसे लोगों के ज्ञात व्यवहारों जैसे इंकार करने, चालाकी और आडंबरों का मुकाबला करने में सहारा प्रदान करते हैं।

आरंभिक पुनर्वास साधन के रूप में रोगी बाह्य रोगी या अंतरंग रोगी हो सकता है। इसमें प्राय: प्रतिदिन एक से डेढ़ घंटे तक सामूहिक उपचार प्रदान किया जाता है। जब सामूहिक उपचार को अनुवर्ती देखभाल के रूप में व्यापक ध्यान रखने के रूप में प्रयोग किया जाता है तो समूह सप्ताह में 3 बार या फिर महीने में एक बार भी एकत्रित हो सकते हैं। समूहों का आकार प्राय: 8 से 12 सदस्यों तक उपयुक्त माना जाता है लेकिन व्यावहारिक रूप से देखा गया है कि ये 4 से 20 तक की संख्या में होते हैं। मनोचिकित्सा के अन्य समूहों की तरह इसमें भी महिला और पुरुष मनोपचारकर्ताओं की सहभागीदारी उपयुक्त मानी जाती है।

iii) सामूहिक सक्रियता

सामूहिक मनोपचार के साथ-साथ संगठित कार्यक्रम प्राय: समग्र उपचार कार्यक्रम के लिए अन्य साधनों का इस्तेमाल करने के रूप में सामूहिक सक्रियता के सिद्धांत का भी प्रयोग करते हैं। इन साधनों में शैक्षणिक समूहों को शामिल किया जा सकता है जो शराब के मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बारे में वास्तविक सामग्री प्रस्तुत करते हैं। शैक्षणिक समूह आकार और शैली में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसका अधिकतम आम रूप है

व्याख्यानों, फिल्मों और दृश्य टेपों के माध्यम से सामग्री का व्यापक सामूहिक प्रस्तुतीकरण। इसके बाद चर्चा का कार्यक्रम रखा जाता है। दोनों का लक्ष्य वास्तविक सामग्री को स्पष्ट करना तथा प्रभावों बनाना एवं गलत धारणाओं और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को सही रूप में समझाना है।

iv) **सक्रिय समूह**

सामूहिक मनोउपचार का एक अन्य रूप है सक्रिय समूह। इसका आयोजन व्यापक रूप से संगठित कार्यक्रमों में विशिष्ट मनोरंजन गतिविधियों के लिए किया जाता है। इसके उद्देश्य हैं: संयम के अर्थ में अन्य लोगों के संपर्क द्वारा सामाजिक निपुणताओं को पुन: सीखने में भागीदार होना, वैकल्पिक मनोरंजन गतिविधियों को सीखना तथा अपनाना जो अंतत: मद्य सेवन का स्थान ले तथा सामुदायिक संसाधनों से परिचित होना। अनेक संगठित कार्यक्रम सामूहिक मनोपचार साधनों के रूप में सामुदायिक बैठक या वार्ड प्रबंधन बैठकों का आयोजन करते हैं।

6) **आध्यात्मिक उपचार प्रक्रियाएँ**

मद्यपान और मादक द्रव्य निर्भरता एक आध्यात्मिक रोग भी है। मादक द्रव्यों के व्यसनकर्ता मद्यपान और मादक द्रव्य सेवन को आरंभ में बहुत महत्व देते हैं। मद्यपान और मादक द्रव्य सेवन की मजबूरी का संघर्ष करने के लिए उच्च आत्मबल होना आवश्यक है। शराब और मादक द्रव्य सेवन को छोड़ने के लिए प्रार्थना और ध्यान को एक पद्धति के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है। ध्यान में व्यक्ति किसी विचार, भावना, शब्द, वस्तु या किसी मानसिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करना सिखता है। कुछ तकनीकें काफी प्रभावशाली हैं जिनमें किसी एक विशिष्ट वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने के लिए गहन प्रयास आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए कुछ योग क्रियाओं में अभ्यास करने वालों को विशेष मुद्राओं (आसनों) को बनाए रखना, अपनी श्वास क्रिया का शरीर के अन्य कार्यों पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है। ध्यान योग की अन्य तकनीकें जैसे अनुभवातीत ध्यान निष्क्रिय पद्धतियाँ हैं। अभ्यासकर्ता को एक शांत वातावरण में रहकर आंतरिक शांति प्राप्त करने की एक आरामदायक कोशिश करनी पड़ती है। व्यक्ति अन्य विचारों को मन से निकालने के लिए किसी मंत्र पर ध्यान केंद्रित करता है या प्रयास करता है लेकिन जोर नहीं डालता। अधिकांश निष्क्रिय तकनीकों को प्रतिदिन 20 मिनट तक विशेषकर प्रात: तथा रात को खाने से पूर्व तक किया जाता है। विश्राम या शिथिल होने से तनाव और चिंताओं में रहने वाले व्यक्तियों को सहायता मिलती है। दीर्घकाल में माँसपेशियों को कसना तथा शिथिल करना सीखने पर जोर दिया जाता है। एक साथ दूसरी ध्यान प्रक्रियाओं को लागू किया जाता है। शिथिलीकरण उपचार मादक द्रव्यों के व्यसनकर्ताओं को व्यसन छुड़ाने तथा पुनर्वास में सहायक रहता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. सामाजिक उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. व्यवहार संबंधी उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. आध्यात्मिक उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 शराब की आदत और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम योजना

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग तथा मद्यपान को मनो-सामाजिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में मान्यता देते हुए सामाजिक न्याय और मानव अधिकार मंत्रालय, भारत सरकार उन गैर-सरकारी संगठनों को अनुदान प्रदान करती है जो व्यसनकर्ताओं में जागरूकता लाने, उनकी पहचान करने, उपचार और पुनर्वास करने सहित सभी सेवाएँ प्रदान करती है। मंत्रालय द्वारा आर्थिक रूप से पोषित विभिन्न योजनाएँ निम्नलिखित हैं:

1. जागृति एवं रोकथाम शिक्षा
2. मादक द्रव्य जागरूकता व परामर्श
3. उपचार व पुनर्वास केंद्र
4. कार्यस्थल रोकथाम कार्यक्रम
5. व्यसन मुक्ति कैंप
6. मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम के लिए गैर-सरकारी मंच
7. समुदाय आधारित पुनर्वास को मजबूत बनाने के लिए नवीन मध्यस्थाएँ
8. तकनीकी परिवर्तन और मानव शक्ति विकास कार्यक्रम, और
9. योजना के अंतर्गत शामिल विषयों पर सर्वेक्षण, अध्ययन, मूल्यांकन और अनुसंधान।

जागरूकता एवं रोकथाम शिक्षा

इस योजना में चार क्षेत्रों को शामिल किया गया है।

I) शिक्षाप्रद तथा प्रचार सामग्री निर्माण और वितरण। क) पोस्टर / फ्लैश कार्ड / कपड़े के चार्ट / फ्लिप चार्ट, ख) पर्चे / विवरण / पत्र, ग) होर्डिंग / पैनल / बैनर्स, घ) पुस्तकें / पत्रिकाएँ आदि।

2) सामुदायिक भागीदारी कार्यक्रम: क) नुक्कड़ सभाएँ/कार्यशालाएँ/सम्मेलन, ख) निबंध/वाद-विवाद/उक्तियाँ/नाटक/एकांकी नाटक प्रतियोगिताएँ, ग) नुक्कड़ नाटक/लोक मीडिया आदि।

3) स्वयं सेवी कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण शिविर

4) मादक द्रव्य/शराब के विरुद्ध जागरूकता बनाने वाले कार्यक्रम के लिए की गई गतिविधि।

मादक द्रव्य जागरूकता और परामर्श केंद्र

ये केंद्र समाज को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करने के लिए हैं:

क) जागरूकता पैदा करना

ख) प्रेरणात्मक परामर्श

ग) दुरुपयोगकर्ता/व्यसनकर्ताओं की पहचान करना

घ) अनुवर्ती सेवाएँ

उपचार और पुनर्वास केंद्र

उपचार व पुनर्वास केंद्र समाज को निम्नलिखित सेवाएँ प्रदान करने के लिए हैं:

i) रोकथाम शिक्षा और जागरूकता उत्पन्न करना

ii) व्यसनकर्ताओं की पहचान करना

iii) प्रेरणात्मक परामर्श देना

iv) विष रहित बनाना

v) व्यावसायिक पुनर्वास

vi) अनुवर्ती देखभाल और सामाजिक मुख्यधारा में पुन: शामिल होना।

कार्यस्थल रोकथाम कार्यक्रम

यह माना जाता है कि इस संबंध में मुख्य दायित्व प्रबंधकों तथा ट्रेड यूनियनों का होता है। इन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 15 या 30 बिस्तरों वाला उपचार व पुनर्वास केंद्र स्थापित करने के लिए उद्योग या उपक्रम को कुल खर्च का 25 प्रतिशत आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। शेष खर्च नियमों के अनुसार उद्योग/उपक्रम को उठाना होता है। ऐसे केंद्र/औद्योगिक स्थापनाओं में या एक स्थान पर न्यूनतम 500 और उससे अधिक कार्मचारियों वाले औद्योगिक स्थापनाओं के समूह सहायता के पात्र हैं।

व्यसन मुक्ति कैंप

उपचार व पुनर्वास केंद्र चलाने वाला कोई संगठन मादक द्रव्य दुरुपयोग बाहुल, विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों में व्यसन मुक्ति कैम्प लगा सकते हैं। इन कैम्पों का उद्देश्य समाज को सक्रिय बनाना तथा मादक द्रव्यों एवं मद्य दुरुपयोग की रोकथाम में जागरूकता को बढ़ाना तथा सामूहिक प्रोत्साहन को बढ़ाना होना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए वे अपने कर्मचारी तथा सामाजिक संसाधनों का उपयोग करेंगे। फिर भी कुछ अतिरिक्त निवेशों की भी आवश्यकता पड़ती है। जिसके लिए इस योजना के अंतर्गत अतिरिक्त अनुदान स्वीकृत किया जा सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम के लिए गैर-सरकारी संगठन मंच

एन जी ओज का मुख्य कार्य इस क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संगठनों के कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करना है ताकि उनके कार्य संचालन में एकरूपता को सुनिश्चित किया जा सके। इस योजना के अंतर्गत प्रेषित सभी संगठनों को एक मंच पर आकर बारी-बारी से अपने एक प्रतिनिधि

को अध्यक्ष बनाया जाता है फोरम या मंच का कार्यालय अध्यक्ष के संगठन में हो सकता है। सभी प्रांतीय/क्षेत्रीय मंच राष्ट्रीय संगठन से संबद्ध होते हैं।

समुदाय आधारित पुनर्वास को मजबूत बनाने के लिए नवीन मध्यस्थताएँ

उपचार व पुनर्वास केंद्र जिनके पास यदि क्षमता है तो उन्हें सामुदायिक आधारित विचारधारा को मजबूत बनाने के लिए नई मध्यस्थता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि व्यसन मुक्त होने वाले लोगों का पुनर्वास हो सके। इस प्रकार के उदाहरण हैं : हाफ वे होम, ड्रोप इन सेंटर आदि बनाना। इस उद्देश्य के लिए केंद्र के कुछ स्वीकृत कार्य का 5 प्रतिशत अतिरिक्त धन संगठन को देने का प्रावधान है।

तकनीकी परिवर्तन और मानव शक्ति विकास कार्यक्रम

इस योगजन के अंतर्गत समर्पित व पुनर्वास केंद्रों को सामाजिक न्याय तथा मानव अधिकार मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त अन्य प्रसिद्ध केंद्रों में अपने सदस्यों को भेजने पर आने वाले खर्च की पूर्ति के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

योजना के अंतर्गत शामिल विषयों पर सर्वेक्षण, अध्ययन, मूल्यांकन और अनुसंधान

मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित कार्य के गुणवत्ता के आधार पर योग्य संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

5. सामाजिक न्याय व मानव अधिकार मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

1.6 सारांश

इस इकाई में हमने मद्य एवं मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए उपलब्ध उपचारों को समझने का प्रयास किया है। इस प्रक्रिया में हमने उपचार अवस्थाओं तथा उपचार माध्यमों की जाँच की है। उपचार [illegible] की सूची में औषधीय उपचार, सामाजिक उपचार, मनोवैज्ञानिक उपचार, व्यवहार संबंधी [illegible], मनो-सक्रिय उपचार तथा आध्यात्मिक उपचारों को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त हमने सामाजिक न्याय एवं मानव अधिकार मंत्रालय द्वारा गैर-सरकारी संगठनों को जागरूकता पैदा करने, पहचान करने, व्यसनकर्ताओं के उपचार व पुनर्वास की समग्र सेवाओं के लिए अनुदान प्रदान करने की भी संक्षिप्त चर्चा की है।

1.7 शब्दावली

मद्य दुरुपयोग : मद्यपान की अधिक मात्रा के परिणामस्वरूप कार्य करने की शक्ति क्षीण होना तथा आंतरिक वैयक्तिक संबंधों में तनाव आना।

अत्यधिक उन्माद : अत्यधिक मद्यपान के कारण चरम उन्माद तथा चेतना एवं ध्यान में गंभीर विभाजन।

निराशा : व्यापक दुख भावना जो किसी हानि या तनाव भरी घटना से आरंभ होती है जो काफी लम्बी अवधि तक रहती है।

विषरहित बनाना : किसी ऐसे विषैले मादक पदार्थ विशेष पर शरीर का आदी होना जिससे समस्या होती है। मादक द्रव्य या मद्य विषरहित बनाने का अर्थ है कि विषैला पदार्थ की मात्रा कम होने पर प्राय: ठीक होने के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

परिवार चिकित्सा : विशेष प्रकार की सामूहिक चिकित्सा जिसमें समूह उपचार सत्रों में रोगी के परिवारिक सदस्य शामिल होते हैं। इसके मूल में भावना यह है कि समस्या समाधान के लिए संपूर्ण परिवार को अपना व्यवहार बदलना होता है।

सामूहिक चिकित्सा : एक ही समय में कई लोगों का छोटे-छोटे समूहों में मनोपचार करना।

लिथियम : दोनों प्रकार की विक्रांति के उपचार में प्रयोग किया जाने वाला रासायनिक पदार्थ।

वैवाहिक उपचार : एक छोटे प्रकार की समूह चिकित्सा जिसमें पति-पत्नी अपने संपर्कों में सुधार करने के लिए किसी चिकित्सक से एक साथ मिलते हैं।

समस्या के कारण मद्यपान : इस प्रकार के मद्य दुरूपयोग में मद्य की आदत होना या मनोवैज्ञानिक रूप से व्यसनकर्ता होना शामिल नहीं होता।

मनो-सक्रिय चिकित्सा : ऐसी चिकित्सा संबंधी विचारधारा जो फ्रायड के सिद्धांतों से उत्पन्न मनो-सक्रिय अनुभव पर आधारित हो लेकिन मनो-मूल्यांकन तक सीमित नहीं है।

मनोपचार : सामान्यत: इसका प्रयोग, मनोवैज्ञानिक, शाब्दिक और प्रतिकूल व्यवहार के उपचार में प्रयुक्त तकनीकों का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

पुन: व्यसन की आदत में रोकथाम : मद्यपान की समस्याओं पर विचार करने की दृष्टि से ऐसी समस्याओं, परिस्थितियों की पहचान करने तथा इन पर नियंत्रण पाने के लिए इनके साथ सामंजस्य स्थापित करने वाले साधनों की पहचान करने में रोगी की सहायता करना।

तनाव मुक्त प्रशिक्षण : कुछ परिस्थितियों में होने वाले तनाव को दूर करने के लिए रोगी द्वारा किए जाने वाले कुछ विशिष्ट व्यायाम करने की कला सीखना।

आत्म सहायता समूह : एक जैसी समस्या वाले लोगों का समूह जो अपने अनुभव बाँटने तथा इन समस्याओं से निपटने की

अपनी योग्यता सुधारने के प्रयास में अपनी सहायता स्वयं करने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक निपुणता प्रशिक्षण : व्यवहार या सादृश्य व्यवहार चिकित्सा विचारधारा में विभिन्न परिस्थितियों में लोगों से परस्पर संपर्क के प्रभावशाली तरीके सीखने पर जोर दिया जाता है।

सह्य मात्रा : ऐसी स्थिति जिसमें समान मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए व्यक्ति को किसी द्रव्य पदार्थ की अधिक खुराकें लेनी पड़ती हैं।

ठीक होना या वापस लौटना : किसी व्यक्ति द्वारा आदत वाले मादक द्रव्य को छोड़ने के बाद होने वाली हल्की सी तीव्र उदासी के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन/हेरोइन से वापस लौटने के लक्षण शायद अच्छी प्रकार जाने जाते हैं।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

इर्विन जी. सारसों एँड बारबरा आर. सारसों (1996) 8वाँ एडिसन : *अबनॉर्मल साइकोलॉजी.* प्रिंटिस हाल ऑफ़ इंडिया लि., नई दिल्ली।

जेलीनेक, ई.एम. (1960) : *द डिजिज कंसेप्ट ऑफ एल्कोलिज्म,* न्यू हेवन : हिल हाउस प्रेस।

चोपड़ा आर. एन. एड चोपड़ा आई. सी. (1965) *मादक द्रव्य एडिक्शन विद स्पेशल रिफरेंस टू इंडिया,* कांउसिल ऑफ साइंटिफिक एड इंडस्ट्रीयल रिसर्च, नई दिल्ली।

वेर्नान ई. जोनसन, डी. डी. (1986) : *इंटरवेंसन* जॉनसन इंडस्ट्रियल बुक्स, मिनयापोलिस।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. मद्य और मादक द्रव्य व्यसन में शामिल व्यापक सेवाओं का अपने शब्दों में संक्षिप्त में वर्णन करें।

   उपचार की व्यापक सेवाओं में शामिल हैं : पहचान करना, संक्षिप्त मध्यस्थता, मूल्यांकन करना, निदान करना, परामर्श देना, चिकित्सा सेवाएँ, मनोचिकित्सा सेवाएँ, मनोवैज्ञानिक सेवाएँ, सामाजिक सेवाएँ तथा मद्यपान की समस्या वाले व्यक्तियों में अनुवर्ती सेवाएँ। उपचार का एकमात्र उद्देश्य मद्य या मादक द्रव्य के प्रयोग को कम या समाप्त करना है। इनके कारण शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्य विकृत हो जाते हैं तथा इनसे संबंधित समस्याओं की प्रगति रुक जाती है या समाप्त हो जाती है।

बोध प्रश्न 2

1. संक्षेप में सामाजिक उपचार साधनों का वर्णन कीजिए।

   मद्य और मादक द्रव्य व्यसन एक सामाजिक रोग भी है। रासायनिक द्रव्यों के व्यसन के उपचार के साधन के रूप में वैवाहिक तथा परिवार चिकित्सा, महिलाओं के समूह, एल्कोलिक एनोनिमस, कर्मचारी और परिवार चिकित्सा तथा महिलाओं के समूह मद्यपान व्यवहार तथा संप्रेक्षण दोनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक-एक स्व-सहायता समूह है। ईएपी रोगियों की उनके कार्य प्रबंधों में सहायता प्रदान करता है।

2. व्यवहार उपचार साधनों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

सोवियत चिकित्सक कंटोरिविच ने पहली बार विद्युतीय घृणा का प्रयोग किया था जो अब प्रभावहीन होने के कारण बंद हो गया है। व्यवहार पद्धतियों में अधिकांशतः लगातार मध्यवर्ती सालों में रासायनिक घृणा उपचार का प्रयोग किया गया। व्यक्ति के पसंदीदा मद्य में हानिकर पदार्थ मिलाकर मद्य तैयार किया जाता है। मौखिक घृणा चिकित्सा में एक मौखिक संवेदनशीलता पद्धति का प्रयोग किया जाता है। इस सिद्धांत में आकस्मिक प्रबंध, सामुदायिक प्रबलन परामर्श, हानि में कमी तथा नियंत्रित मद्यपान तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

3. आध्यात्मिक उपचार साधनों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

मद्य और मादक द्रव्य एक आध्यात्मिक रोग भी है। मद्य और मादक द्रव्य का व्यसनकर्ता आरंभ में अपने व्यसन को बहुत महत्वपूर्ण मानता है। मद्यपान तथा मादक द्रव्य के प्रयोग की मजबूरी से संघर्ष करने के लिए उच्च शक्ति की भावना होना अनिवार्य है। मद्यपान तथा मादक द्रव्य के व्यसन से मुक्त होने के लिए प्रार्थना और ध्यान योग को एक साधन के रूप में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है।

बोध प्रश्न 3

1. समाजिक न्याय और मानव अधिकार मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालिए।

सामाजिक न्याय और मानव अधिकार मंत्रालय भारत सरकार उन गैर-सरकारी संगठनों को अनुदान प्रदान करता है जो समग्र सेवाओं जैसे जागरूकता पैदा करना, पहचान करना, व्यसनकर्ताओं का उपचार और पुनर्वास करना आदि प्रदान करते हैं। मंत्रालय द्वारा आर्थिक रूप से पोषित योजनाएँ निम्नलिखित हैं: 1. जागरूकता एवं रोकथाम शिक्षा, 2. मादक द्रव्य जागरूकता तथा परामर्श केंद्र, 3. उपचार व पुनर्वास केंद्र, 4. कार्यस्थल रोकथाम कार्यक्रम, 5. व्यसन मुक्ति कैम्प, 6. मादक द्रव्य दुरुपयोग रोकथाम एन.जी ओज मंच, 7. सामुदाय आधारित पुनर्वास को मजबूत करने के लिए नवीन मध्यस्थताएँ, 8. तकनीकी आदान-प्रदान और मानव शक्ति विकास कार्यक्रम, और 9. योजना में शामिल विषयों के सर्वेक्षण, अध्ययन, मूल्यांकन और अनुसंधान।

इकाई 2 शिक्षा, परामर्श, मार्गदर्शन सेवाओं और सामुदायिक प्रतिक्रियाओं द्वारा सशक्तीकरण

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सशक्तीकरण की प्रक्रिया

2.3 रोकथाम शिक्षा

2.4 रोकथाम की नीतियाँ

2.5 व्यसन की रोकथाम में सामुदायिक प्रतिक्रिया

2.6 व्यसनी और परिवार को प्रेरित करना

2.7 व्यसनी की पहचान करना

2.8 स्कूल आधारित रोकथाम के कार्यक्रम

2.9 सारांश

2.10 शब्दावली

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग के कुप्रभाव से बचाव कार्य को आगे बढ़ाने के लिए समुदाय के विभिन्न समूहों द्वारा किए जा सकने वाले कार्यों का उल्लेख करना है। बचावकारी शिक्षा, अभिभावक एवं सामुदायिक नेताओं के लिए काउंसलिंग अर्थात् परामर्श शिक्षा, उपचार के लिए परिवार एवं व्यसनी को प्रेरित करना तथा उपचार कार्यक्रमों की पहचान करना आदि समुदाय के सशक्तीकरण के कुछ उपाय हैं। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- सशक्तीकरण की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- स्थाई दुरुपयोग की रोकथाम से संबंधित शिक्षा कार्यक्रमों को पहचान सकेंगे;
- व्यसनी को पहचानने के विभिन्न उपायों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए सामुदायिक संसाधनों को लेने की विभिन्न संभावनाओं का पता लगा सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने विभिन्न उपचार कार्यक्रमों के बारे में पढ़ा है। स्थाई दुरुपयोग का उपचार तो हो सकता है लेकिन यह इलाज वाला रोग नहीं है। इसलिए स्थाई मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम का अत्यधिक महत्व है। इस इकाई में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग को रोकने के लिए

समुदायों को शक्तिशाली बनाना तथा साथ में व्यसनी और उसके परिवार को उपचार के लिए प्रेरित करने का वर्णन किया गया है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग को अनेक प्रकार से समुदाय/ समाज द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। इसलिए समाज को इसके उन्मूलन को बढ़ावा देने तथा रोकथाम में शक्तिशाली भूमिका निभाने के लिए जागरूक किए जाने की आवश्यकता है।

समाज के अनेक अंग हैं। प्रभावशाली रोकथाम तथा उपचार नीतियाँ बनाने के लिए सभी अंगों को शामिल करना अनिवार्य है। हम चर्चा करेंगे कि इनमें संतुलन कैसे बनाया जाए। रोकथाम और उपचार के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिन्हें व्यक्ति, परिवार तथा समुदाय स्तर पर समझना कठिन हो सकता है। जानकारी के अभाव में रोकथाम एवं उपचार कार्यक्रमों का प्रतिरोध हो सकता है। इन प्रतिरोधों से निपटने के उद्देश्य से एक खंड भी इस इकाई में शामिल किया गया है।

2.2 सशक्तीकरण की प्रक्रिया

"चाहे कोई व्यक्ति कितना भी अज्ञानी हो, किसी दूसरे की अपेक्षा वह अच्छी तरह जानता है कि उसे क्या तकलीफ है और यही कारण है कि चाहे वह अशिक्षित हो या संभ्रांत वह अपने दुखों को जानता है। प्रत्येक व्यक्ति से सक्रिय रूप से इस प्रकार सलाह ली जाय कि उसे यह महसूस हो कि वह सामाजिक नियंत्रण प्रक्रिया तथा आधिकारिक प्रक्रिया का एक अंग है। उसे यह लगे कि इस प्रकार उसके पास अपनी जरूरतों और इच्छाओं को बताने का अवसर है, ताकि सामाजिक नीति बनाते समय उनका ध्यान रखा जाए।"

ये शब्द प्रसिद्ध सामाजिक चिंतक एवं शिक्षाविद् जॉन डेवी के हैं। यदि किसी समाज की विचारधारा और कार्यप्रणाली में परिवर्तन या संशोधन की आवश्यकता है, तो इसके सदस्य इस आवश्यकता का अनुभव करते हैं तथा अपनी सामाजिक संरचना एवं परस्पर अपने विचारों में आवश्यक संशोधन कर लेते हैं। वे ही परिवर्तन स्थायी रहते हैं जिन्हें लोगों ने स्वयं किया है। जो उन्होंने बनाया है लोग उसका समर्थन करते हैं।

मादक द्रव्य के दुरुपयोग की रोकथाम तथा उपचार विधियों को चिकित्सकों तथा मनोचिकित्सकों का क्षेत्र माना जाता है। कुछ हद तक यह सत्य है। दूसरी तरफ इस व्यसन को सामाजिक रूप से उत्पन्न रोग माना जाता है। जहाँ तक व्यसनी का संबंध है इस व्यसन को अनुकूलन व्यवस्था कहा जा सकता है जबकि यह नाकारात्मक तथा विनाशकारी है। व्यसनी मादक द्रव्य का प्रयोग कर समाज की आशाओं और आवश्यकताओं की तुलना में अपने व्यक्तित्व को संतुलित करने का प्रयत्न करता है। समाज जितना विकृत होगा उतने ही अधिक व्यसनियों के बढ़ने की संभावना होगी।

सशक्तीकरण की प्रक्रिया भागीदारी या शामिल होने की प्रक्रिया है। यह भागीदारी प्रक्रिया शारीरिक लक्ष्यों की अपेक्षा मानव के विकास के लिए है। यह निरंतर प्रयत्न करते रहने का व्यक्तिगत प्रशिक्षण है न कि तकनीकी ज्ञान के लिए। भागीदारी द्वारा विकास लोगों को स्वयं अपना विकास करना सिखलाता है। लोग अपनी समस्याओं की पहचान करते हैं, उनको प्रस्तुत करते हैं तथा व्यावहारिक समाधान ढूँढते हैं। यह लोकतांत्रिक एवं सहकारी पद्धति है।

सशक्तीकरण तथा भागीदारी

भागीदारी प्रक्रिया से समाज को शक्तिशाली बनाया जा सकता है। भागीदारी प्रक्रिया को कर्तव्यनिष्ठा की भावना के माध्यम से संभव बनाया जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति या समूह को संबंधित व्यक्ति या समूह को प्रभावित करने वाली समस्या की वास्तविकता के बारे में जागरूक किया जाता है। कर्तव्यनिष्ठा की भावना लोगों को समस्या तथा संभावित समाधानों को समझने में सहायता करती है इस प्रक्रिया से उनमें नियंत्रण भावना जागृत होती है। सत्यनिष्ठा, संस्कृति, व्यक्तिगत मूल्य तथा आत्म पहचान शक्तिशाली बनाने की नींव हैं। शक्तिशाली बनाने का उद्देश्य समेकित शक्ति का प्रयोग करना है। शक्ति को अधिकतम प्रभावी बनाने के लिए इसे संगठित होना चाहिए। संपूर्ण समुदाय को आत्मविश्वास से भरे व्यक्तियों द्वारा शक्तिशाली बनाया जाना चाहिए जो वर्तमान स्थिति को चुनौती देने तथा अन्य समाधान तलाशने के लिए तत्पर रहते हैं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. क्या मादक द्रव्य दुरुपयोग को रोकने के लिए समुदाय को शक्तिशाली बनाना महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

2.3 रोकथाम शिक्षा

"सही समय पर किया गया कार्य अच्छा परिणाम देता है।" यह मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में बिल्कुल सच है क्योंकि इसकी रोकथाम तो की जा सकती है इलाज नहीं। मादक द्रव्य के दुरुपयोग को नियंत्रित करने के उद्देश्य के दीर्घकालीन अनुभवों से ज्ञात हुआ है कि इसकी रोकथाम करना एक निर्णायक कार्य है। विश्व की आबादी का एक भाग अवास्तविक रूप से यह समझता है कि विश्व मादक द्रव्य रहित हो सकता है। लेकिन अनुभवों में हमे यह सिखा दिया है कि विश्व को मादक द्रव्य रहित बनाना असंभव है। फिर भी गंभीर प्रयत्नों से हम इसके दुरुपयोग को कुछ हद तक कम अवश्य कर सकते हैं।

मादक द्रव्य दुरूपयोग विश्वव्यापी है। इसलिए इसकें रोकथाम की प्रक्रिया भी विश्वव्यापी होनी चाहिए जो प्रत्येक देश, समाज, परिवार तथा व्यवसाय तक पहुँचे। यह प्रक्रिया सबको जागरूक बनाने वाली हो तथा अवैध मादक द्रव्य एवं इसके दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में सभी भागीदारों को प्रोत्साहित करती हो। रोकथाम में ऐसी शिक्षा शामिल हो जो इसके दुरुपयोग को रोकती हो तथा उपभोग करने वालों को इसका प्रयोग छोड़ने के लिए सहमत कराती हो।

शैक्षिक कार्यक्रम मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरूद्ध समग्र संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मादक द्रव्य का प्रयोग करने वालों के लिए उचित शिक्षा सफल मध्यस्थता एक उपचार का रास्ता प्रदान करती है। यह शिक्षा उपयोगकर्ता को इसके साथ जुड़े जोखिमों के बारे में जागरूक बना कर तथा प्रयोग छोड़ने का फैसला करने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षा अभिभावकों और शिक्षकों को समस्या को समझने और किसी स्थिति विशेष को संभालने के सही उपाय को समझने में भी सहायता प्रदान करती है।

रोकथाम कार्यक्रम युवाओं को ऐसे स्वस्थ व्यवहार विकसित करने के लिए शिक्षा का आधार बनाते हैं जिसमें मादक द्रव्य न लेना शामिल है तथा उनमें जिम्मेदारी की भावना भी जागृत करते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग शिक्षा पूरी तरह समाज तथा निजी जीवन में धर्म या धर्मनिरपेक्ष रूप से स्कूल पाठ्यक्रम की तरह सत्यनिष्ठा वाली होनी चाहिए। इसमें मादक द्रव्य दुरुपयोग के विनाशकारी प्रभावों पर पढ़ाई, स्वास्थ्य और समग्र व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करने पर बल दिया जाना चाहिए।

रोकथाम शिक्षा कार्यक्रम के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य होने चाहिए:

- अच्छे व्यक्तिगत स्वास्थ्य को बनाए रखना तथा उसका महत्व समझाना।
- मादक द्रव्य दुरुपयोग को प्रतिबंधित करने वाले कानून और नियमों का पालन करना।
- मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए भारी दबावों का प्रतिरोध करना।
- मादक द्रव्यों से दूर रहने वाले छात्रों की गतिविधियों को बढ़ावा देना तथा छात्रों को रुचिकर कार्यक्रमों के लिए अच्छे अवसर प्रदान करना; और

- ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना जो मादक द्रव्य रहित जीवन शैली को मजबूत बनाते हों।

2.4 रोकथाम की नीतियाँ

गंभीर मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम की आवश्यकता के बारे में सभी जानते हैं। यह जानना महत्वपूर्ण है कि कोई व्यक्ति इस महत्वपूर्ण कार्य को कैसे करें। मादक द्रव्य के व्यसन को अनुभव करने के अनेक कारण हैं। रोकथाम का प्रभावी ढंग से संचालन तथा उन क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम देने वाला होना चाहिए जो व्यक्तियों को स्वस्थ जीवनयापन में सहायता प्रदान करते हों। इस प्रकार हम निम्नलिखित नीतियाँ तैयार कर सकते हैं।

- व्यक्तिपरक नीतियाँ
- परिवार को शिक्षा देने वाली नीतियाँ
- स्कूल आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से रोकथाम
- प्रचार साधनों से रोकथाम
- कानून को सख्ती से लागू करके रोकथाम।

व्यक्तिपरक नीतियाँ

यह सबसे अधिक प्रचलित साधन हैं। इसका उद्देश्य व्यक्ति में सही धारणाओं, ज्ञान और नैतिक गुणों का विकास करना है। सही ज्ञान तथा मादक द्रव्य एवं व्यक्ति पर उनके प्रभावों की सही सूचना उनके दुरुपयोग की संभावना को कम करेगी। इस नीति के अंतर्गत निम्नलिखित तथ्य होने चाहिए। शराब और अन्य मादक द्रव्य के बारे में ऐसी वास्तविक सूचना प्रदान करनी चाहिए जो युवाओं की भावनात्मक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाली हो। यह उनको ये समझाने वाली होनी चाहिए कि व्यसन का शिकार कोई भी हो सकता है। कार्यक्रम में अनुकूलन कुशलताओं को सिखाने वाले तथा व्यक्ति के असामाजिक व्यवहार को बताने वाले तत्व होने चाहिए।

परिवार को शिक्षित करने वाली नीतियाँ

परिवार में अभिभावक, भाई, बहन तथा घनिष्ठ संबंधी शामिल हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि यह व्यसन परिवार का रोग है। मादक द्रव्य मुक्त समाज के निर्माण में परिवार महत्वपूर्ण एजेंट है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग के संघर्ष में प्रभावशाली परिणाम के लिए इस नीति में निम्नलिखित तथ्य शामिल करने चाहिए :

- अभिभावकों को शराब, सिगरेट आदि मादक द्रव्यों के बारे में सही सूचना दी जानी चाहिए।
- अभिभावकों को स्वस्थ पारिवारिक संबंध स्थापित करने के लिए निपुणताओं का विकास करने में सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
- उदाहरण देकर, रचनात्मक गतिविधियों में बच्चे की सहायता कर तथा किसी गंभीर दबाव का प्रतिरोध कर मादक द्रव्य रोकथाम नीतियों को घर में लागू करने में अभिभावकों की सहायता करना।
- परिवार में बड़ों द्वारा शराब या धूम्रपान के प्रयोग के संबंध में स्पष्ट नियम बनाये जाने चाहिए।

स्कूल आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से रोकथाम

स्कूल बच्चों का दूसरा घर होता है। विशेष रूप से स्कूल आधारित कार्यक्रमों में अभिभावकों को शामिल करना चाहिए। ऐसे कार्यक्रमों के लिए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं :

- शराब, तम्बाकू तथा अन्य मादक द्रव्य के प्रयोग के बारे में स्पष्ट नीतियाँ बनाना। छात्रों को स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए कि इसका उल्लंघन करने पर उन्हें सख्त सजा/दण्ड दिया जाएगा।

- मादक द्रव्य उन्मूलन की शिक्षा देने के लिए अन्य गतिविधियाँ तैयार करें। इसके भाव स्पष्ट तथा समझने में सरल होने चाहिए। ये लक्ष्य समूहों की आवश्यकता तथा रुचि के अनुरूप सही होने चाहिए।

- स्कूल छात्र सहायता कार्यक्रम भी तैयार कर सकते हैं। यह समस्याग्रस्त छात्रों को पहचानने तथा समस्या को दूर करने में उनकी सहायता करने के लिए होने चाहिए।

- अध्यापकों को कुशलता तथा ज्ञान प्रदान करना ताकि वे मादक द्रव्य दुरुपयोग शिक्षा को संभालने एवं पहले से समस्याग्रस्त छात्रों की सहायता करने में सक्षम हो सकें।

- अध्यापकों के शराब और मादक द्रव्य के प्रयोग से संबंधित दृष्टिकोण और विश्वास को समझने में सहायता प्रदान करना।

जन माध्यम से रोकथाम

जन माध्यमों में मुद्रित सामग्री जैसे समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, फिल्में और लोक कलाएँ शामिल हैं। इनका युवाओं पर निश्चित प्रभाव पड़ता है। ये सकारात्मक/रचनात्मक तथा नकारात्मक, विनाशकारी हो सकते हैं। प्रचार में रेडियो, टेलीविजन, बोर्ड, पुस्तिकाएँ, पोस्टर, सार्वजनिक प्रदर्शन आदि शामिल हैं।

कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित को शामिल किया जाना चाहिए :

- संदेश को प्रेक्षित करने में सक्षम व्यक्ति विश्वसनीय, संदेश लक्ष्य समूहों को प्रभावित करने वाला तथा एकदम उपयुक्त होना चाहिए।

- इसमें जनता को योजना बनाने एवं लागू करने में दोनों स्तरों पर शामिल किया जाना चाहिए।

- यह लक्ष्य समूहों में सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य होना चाहिए।

कानून को सख्ती से लागू करके रोकथाम

सभी देशों और सरकारों ने मादक द्रव्य दुरुपयोग संबंधी कानून बनाए हैं। जनता की उदासीनता या कानून लागू करने वाले क्षेत्र की अकुशलता के कारण मादक द्रव्य दुरुपयोग में वृद्धि होती जा रही है। इस संदर्भ में कुछ संभावित कार्रवाई निम्नलिखित हैं:

- शराब पर बिक्री कर में वृद्धि करना।

- शराब पीने की न्यूनतम आयु को लागू करना।

- शराब की दुकान खोलने को हतोत्साहित करना।

- शराब और तम्बाकू के विज्ञापनों पर रोक लगाना।

- शराब उद्योगों द्वारा प्रायोजित खेलों और सामाजिक कार्यक्रमों को रोकना।

2.5 व्यसन की रोकथाम में सामुदायिक प्रतिक्रिया

मादक द्रव्य दुरुपयोग एक सामाजिक समस्या भी है। इसके प्रति सामुदायिक प्रतिक्रियाएँ अनेक प्रकार की हैं। इसके बारे में व्यापक चर्चा खंड 2 की इकाई 3 में की जा चुकी है। रोकथाम प्रयत्नों में सामुदायिक प्रतिक्रिया मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या के प्रति उनके दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। रोकथाम नीतियों में समाज में विद्यमान समस्या के प्रति उनके दृष्टिकोण पर विचार किया जाना चाहिए।

मादक द्रव्य उन्मूलन नीति बनाने एवं कार्यक्रम लागू करने के लिए समर्थन एवं सहायता के लिए समुदाय के पास जाना आवश्यक है। रोकथाम के किसी भी प्रयत्न के पीछे समुदाय को शामिल करने के लिए निम्नलिखित कार्य करने की आवश्यकता है:

- बैठकों, प्रचार साधनों तथा शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समस्या के बारे में समुदाय/समाज की जानकारी में वृद्धि करना।
- नीति बनाने के लिए जनता का समर्थन लेना तथा रोकथाम और कार्यान्वयन के लक्ष्यों पर सहमति का विकास करना
- मादक द्रव्य समस्या के प्रभावों और उसकी गहराई के बारे में लोगों को शिक्षित करना।
- स्थानीय विशेषज्ञों जैसे स्थानीय चिकित्सकों के अनुभव जानने के लिए आमंत्रित करना।
- कार्यक्रम के लिए समर्थन प्राप्त करने हेतु सामुदायिक समूहों के संसाधनों तथा स्थानीय व्यवसायियों को सक्रिय करना।

रोकथाम तथा उपचार में समुदाय को शामिल करना

व्यसन किसी एक व्यक्ति की समस्या लगती है। धीरे-धीरे इसका विस्तार होता है और यह पूरे समुदाय की समस्या बन जाती है। इस व्यसन से समाज में हिंसा तथा असुरक्षा की भावना फैलती है। यह छोटी मोटी चोरी, अपराध तथा बहुत बार डकैती को भी बढ़ावा देती है। जब समाज शांति और सुरक्षा से रहना चाहता है तो इस व्यसन की समस्या से निपटने के लिए समूह के रूप में शामिल हो जाता है। समाज के सभी अंगों को मादक द्रव्य मुक्त वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इनमें चिकित्सक, प्राथमिक कर्मचारी, अध्यापक, पुलिस, धार्मिक गुरू तथा पंचायत के नेता शामिल होने चाहिएं।

सामुदायिक सदस्यों को शामिल करने के कुछ निश्चित लाभ होते हैं, जैसे :

- अपने-अपने अनुभव बाँटने के लिए सामान्य व्यक्ति तथा विशेषज्ञ एक साथ मिल कर कार्य करते हैं।
- सामुदायिक नेताओं को व्यसन समस्या की पूरी जानकारी मिल जाती है।
- समाज में घनिष्ठता बढ़ती है।
- सामुदायिक सदस्य व्यसनी के ठीक होने की प्रक्रिया में उनको पूरा सहारा प्रदान करने में सक्षम होते हैं।
- इससे ठीक हो रहे व्यसनी के सामाजिक संबंध तथा सामाजिक जीवन पुनः स्थापित हो जाते हैं।

यद्यपि मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा उपचार में सामुदायिक सहमति अनिवार्य तथा सहायक है तो भी कुछ समस्याओं पर नियंत्रण पाना अनिवार्य है :

- कुछ सभ्यताओं/जातियों में विवाह और त्यौहारों पर शराब तथा अन्य कोई मादक द्रव्य को लेना सामाजिक रूप से स्वीकृत परंपरा हो सकती है। इसलिए वहाँ मादक द्रव्य के प्रयोग को समस्या नहीं माना जाता।
- शराब तथा गांजा उत्पादन जैसे मादक द्रव्य कुछ गाँवों में जीवनयापन का साधन हो सकते हैं। हो सकता है ऐसे व्यक्ति समर्थन न करें अपितु इसका तीव्र विरोध करें।
- कुछ जातियाँ अज्ञानता के कारण इन व्यसनियों को अपराधी समझ सकती हैं। इसलिए वे इनकी कोई सहायता नहीं करते।
- यदि मादक द्रव्य रोकथाम या उपचार कार्यक्रम के आयोजक स्वयं मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले हों तो इस आंदोलन की विश्वसनीयता समाप्त हो जाएगी।

- आयोजन कर्ताओं को दीर्घकालीन योजनाएँ बनाने तथा दृढ़ संकल्प बनाए रखने की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

2. रोकथाम की कार्यनीतियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

.....

.....

.....

.....

2.6 व्यसनी तथा परिवार को प्रेरित करना

प्रेरित करने का अर्थ है कि किसी व्यक्ति को इस प्रकार समझाना या प्रभावित किया जाए कि वह अपना विकृत व्यवहार बदल ले। व्यसन के उपचार में प्रेरणा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अन्य रोगों से भिन्न व्यसनी तथा उसका परिवार अपने इंकार करने (छुपाने) के लक्षणों के कारण प्राय: उपचार नहीं कराते। व्यसन के बारे में पर्याप्त जानकारी न होने के कारण भी उपचार कराने से इंकार किया जा सकता है। व्यसनी को प्रेरित करने में शामिल हैं:

- मादक द्रव्य छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना,
- व्यक्ति को जीवन शैली बदलने की इच्छा जागृत करना,
- उपचार कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनिवार्यता का अनुभव करना, तथा
- ठीक होने के लिए समायोजन करने की इच्छा व्यक्त करना।

प्राय: कोई भी व्यसनी अपने आप तब तक उपचार कराने नहीं आता जब तक परिस्थितियाँ उसे मजबूर न कर दें। यह मजबूरी संबंधों या जानलेवा रोग का डर होने, कार्य छूटने, पुलिस केस या तलाक की धमकी अथवा तलाक के रूप में हो सकती है। इन परिस्थितियों के बावजूद व्यसनी परामर्शक के पास अस्थाई लाभ के लिए ही आता है। व्यक्ति यह स्वीकार नहीं करता कि उसकी समस्या मादक द्रव्य है। यह अपने रोग, किसी विशेष विषय पर बातें करेगा या फिर इस बात को छिपाएगा कि उसकी पत्नी ने उसे छोड़ दिया है।

प्रेरणा का केंद्र बिंदु व्यक्ति को यह अनुभव कराना है कि उसकी मुख्य समस्या मादक द्रव्य है तथा अन्य समस्याएँ उसके मादक द्रव्य लेने का परिणाम हैं। व्यसनी उपचार के लिए बहुत कम प्रेरित होता है। उसे मादक द्रव्य छोड़ने का डर तथा उपचार के स्वरूप के बारे में चिंता होती है। किसी ग्राहक को सफलतापूर्वक प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित बातें उपयोगी होंगी:

- व्यसनी को एक व्यक्ति के रूप में स्वीकार करें न कि व्यसनी या शराबी के रूप में। इससे उसमें आत्मसम्मान तथा परामर्शक के प्रति विश्वास जागृत होगा।
- व्यक्ति के साथ प्रश्न और तर्क करने की अपेक्षा उसके साथ सहानुभूति एवं समझदारी के साथ व्यवहार करें जिससे उपचार प्रक्रिया में उसका विश्वास बन सकेगा। उसे उपदेश या डाँट-फटकार न लगाएं।
- निर्णायक न बनें। व्यक्ति एवं उसके कार्यों को अच्छा या बुरा साबित न करें।
- उसके साथ संबंध स्थापित करें तथा ग्राहक द्वारा सहयोग करने पर भी संबंध बनाए रखें।

- ग्राहक के कार्यों/मामलों के बारे में गोपनीयता बनाए रखें।

इससे ग्राहक और परामर्शक के बीच विश्वास और दृढ़ बनता है।

व्यसनी को उपचार के लिए लाए जाने पर भी परिवार के सदस्य उपचार में दिल से भाग नहीं लेते। जैसा कि हमने पहले चर्चा की है कि उपचार की जितनी आवश्यकता व्यसनी को है उतनी ही आवश्यकता उसके परिवार को भी है। परिवार वाले चाहते है कि व्यसनी में परिवर्तन आए लेकिन वे इस पारिवारिक रोग में भागीदारी को स्वीकार करना नहीं चाहते। परिवार के सदस्यों को प्रेरित करने का अर्थ है:

- भ्रम के आवरण को हटाने में उनकी सहायता करना।
- परिवार में रोग को स्वीकार करने के लिए उनकी आंतरिक शक्ति को बढ़ाना, और
- परिवार के सदस्यों की भावनाओं को जानना तथा उनको समझाना।

व्यसनी का परिवार स्वयं के बनाए गए भ्रमजाल में ही घिरा रहता है। जिसका वर्णन खंड 2, इकाई 3 में किया गया है। परिवार के सदस्यों को सच्चाई से इंकार करने की आदत होती है। उन्होंने परिवार में व्यसन समस्या के साथ समायोजन बैठाने के लिए कई सुरक्षित बहाने भी बनाए हुए होते हैं। यह विश्वास कि परिवार में व्यसनी के व्यवहार को छोड़कर सब कुछ ठीक है उन्हें उपचार प्रक्रिया में दिल से शामिल होने से रोकता है।

पारिवारिक रोग स्वीकार करने में परिवार के सदस्यों को अपनी गलती स्वीकार करने की आवश्यकता है। परिवार के सदस्यों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है कि वे व्यसनी की यह आदत छुड़ाने में सहायता करने के लिए अपनी भूमिका निभाएं।

परिवार में एक सदस्य द्वारा व्यसन करने पर भी सदस्यों की भावनाओं को ठेस लगती है। अधिकांशत: वे इन भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं करते और यदि वे अभिव्यक्त करते भी हैं तो क्रोध तथा अनुचित ढंग से करते हैं।

भावनाओं को सही रूप से स्वीकार करने तथा परिवार के सदस्यों द्वारा इसकी उचित अभिव्यक्ति व्यसनी द्वारा परिवार के सदस्यों को अपनी भावना के बारे में बताने का आधार बनती है।

प्रतिरोध का सामना करना

उपचार और ठीक होना परिवर्तन की प्रक्रिया है। परिवर्तन का प्रतिरोध होना स्वाभाविक है। परिवर्तन का आशय है अनजान स्थिति का सामना करना। स्वस्थ व्यक्ति परिवर्तन का सामना आसानी से कर लेते हैं। व्यसनी तथा उसके साथी परिवर्तन को डरावना मानते हैं। व्यसन के कारण परिवार की आंतम शक्ति को क्षति पहुँचती है। उपचार और ठीक होने के लिए किसी की भावना को ईमानदारी से स्वीकार करने तथा उन्हें दूसरे के साथ बाँटने की आवश्यकता होती है। व्यसनशील की सोच के नियमों के अनुसार कुछ भी महसूस मत करो, किसी का विश्वास नहीं करो तथा किसी से बात नहीं करो अर्थात् व्यसनकर्ता अपनी भावनाओं को दबा लेते हैं, किसी का विश्वास नहीं करते तथा किसी से बात नहीं करते। ठीक होने की प्रक्रिया में ऐसे विनाशकारी व्यवहार को व्यसनी द्वारा छोड़ना आवश्यक है। परिवर्तन के प्रतिरोध से निपटने के कुछ मार्गदर्शन सहायक हो सकते हैं, जो इस प्रकार है :

- परिवार की व्यसन के बारे में वास्तविक आशाओं तथा उसके अपने प्रयत्नों को विकसित करने में सहायता करना।
- परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ मेल-जोल बैठाना ताकि ठीक होने की प्रक्रिया में उनकी सहायता की जा सके।
- परिवार के उन गुप्त संपर्कों को उजागर करना जिसके सहारे व्यसनी दूसरों के साथ चालाकी कर अपने व्यसन को बनाए रखता है।

- परिवार के कुछ सदस्यों की अधिक गतिविधियों को जानना तथा उन्हें व्यसन के बारे में शिक्षित कर उन्हें कम करना।
- परिवार के सदस्यों को ऐसे सहयोगी दलों में शामिल करना जो ऐसे संकटों को झेल चुके हैं। ये दल आदर्श उदाहरण की भूमिका निभा सकते हैं।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. उपचार के लिए ग्राहक (व्यसनी) तथा व्यसनी के परिवार को प्रेरित करने के कौन-से महत्वपूर्ण पक्ष हैं?

.....

.....

.....

.....

2.7 व्यसनी की पहचान करना

किसी व्यसनी की पहचान करना आसान है। आरंभिक अवस्था में व्यसनी को पहचानना आसान नहीं है। जब शराब का व्यसन हो तो यह और भी कठिन है। व्यसनी परिवार के सदस्यों से अपनी आदत छिपाने में समर्थ होता है। उसके व्यवहार और उपस्थिति-दर्शन कुछ स्पष्ट संकेत देखने वाले या ध्यान देने वाले होते है। ये अधिकाशं छात्रों या युवाओं पर लागू होते हैं।

घर में

व्यसनी घर विलम्ब से आता है। उसके नए मित्र बनते हैं। वह अपने नए मित्रों के बारे में बताना नहीं चाहता। शराब या मादक द्रव्य का प्रयोग न करने वाले पुराने मित्र उसको बहिष्कृत कर देते हैं। वह प्राय: घर पर खाना नहीं खाता। वह प्राय: कमरे में बंद रहता है तथा एकांत में रहता है। परिवार के किसी सदस्य से बात नहीं करता। वह देर से सोता है तथा देर से उठता है। यदि मादक द्रव्य का इंजेक्शन लेता है तो स्नानघर में अत्यधिक समय लगाता है। उसके कमरे में सिरींज तथा मादक द्रव्य से संबंधित अन्य उपकरण मिल सकते हैं।

उसकी धन की माँग बढ़ जाती है। घर से कीमती सामान जैसे टेपरिकार्डर, पंखे, घड़ियाँ तथा अन्य सदस्यों के आभूषण एवं वस्त्र आदि गायब (चोरी) होने लगते हैं। धार्मिक कार्यों, सामाजिक आयोजनों आदि में जाने से इंकार कर देता है।

स्कूल में

स्कूल में बहुत कम जाता है। शिक्षा के स्तर में एकदम गिरावट आ जाती है। स्कूल के समय छुट्टी पर रहता है। स्कूल में झगड़ा करने लगता है। स्कूल जाने से मना करता है या स्कूल के अधिकारियों अथवा अध्यापकों में दोष निकालने लगता है।

शारीरिक परिवर्तन

व्यसन से व्यसनी के व्यक्तित्व में परिवर्तन आ जाता है। व्यसनी के शरीर में परिवर्तन मुख्य रूप से देखा जाता है। अपने स्वरूप, सफाई के प्रति लापरवाही, गंदी उंगलियाँ, सिगरेट के दाग, सूखी त्वचा, हाथ के अगले हिस्सों में सूई के निशान, आवाज में लड़खड़ाहट, पसीना, भूख में कमी, थकान, बेचैनी, चक्कर आना, झुकी हुई पलकें, भावहीन चेहरा तथा आँखों के नीचे काले घेरे (जो शीशी में स्पष्ट देखे जा सकते हैं), आँखे लाल होना, आँखों की लाली छिपाने के लिए काले रंग

का चश्मा लगाना, अस्थिर चाल, वजन में अचानक कमी, बाँहों पर इंजेक्शन के निशान छिपाने के लिए लम्बी आस्तीन की कमीज पहनना, उलट लक्षण जैसे उल्टी आना, पेचिश, मांस-पेशियों में दर्द, नींद न आना आदि परिवर्तन व्यसनी में आसानी से देखें जा सकते है।

2.8 स्कूल आधारित रोकथाम के कार्यक्रम

व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करने में स्कूलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम की शुरुआत जीवन के आरंभ में ही करनी चाहिए। यह परिवारों में घटित होता है। रोकथाम शिक्षा का दूसरा कदम स्कूलों में उठाया जाता है।

स्कूलों में मादक द्रव्य रोकथाम के प्रभावशाली कार्यक्रम में शिक्षा के व्यापक उद्देश्य निहित हैं। इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं:

उद्देश्य 1 : व्यक्तिगत स्वास्थ्य को बढ़िया बनाना तथा उसका महत्व समझाना।

स्वास्थ्य को मादक द्रव्य कैसे प्रभावित करते हैं इसके बारे में समझना। एक प्रभावशाली मादक द्रव्य रोकथाम शिक्षा कार्यक्रम स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग के महत्व की शिक्षा प्रदान करता है। यह शरीर की कार्यप्रणाली और अच्छे स्वास्थ्य में व्यक्ति की आदतों के योगदान तथा मादक द्रव्य का शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को अपने शरीर का ध्यान रखने के बारे में सिखाया जाता है। आदतों, औषधियों तथा विषों के बारे में जानकारी उनमें मादक द्रव्य के ज्ञान के बारे में नींव डाल देती है। बड़े होकर बच्चे मादक द्रव्य की समस्या के बारे में जान जाते हैं तथा वे उन मादक द्रव्यों के बारे में अध्ययन करते हैं जिनके संपर्क में आने की अधिक संभावना होती है। बच्चे वर्तमान में जीने वाले होते हैं और मादक द्रव्य के दीर्घकालीन प्रभावों को आसानी से नहीं समझते। इस कारण उन्हें मादक द्रव्य दुरुपयोग के तात्कालिक प्रभावों के बारे में बताया जाना चाहिए जैसे उनके स्वरूप, सजगता तथा समन्वय पर पड़ने वाला प्रभाव।

उद्देश्य 2 :- मादक द्रव्य दुरुपयोग को प्रतिबंधित करने वाले कानूनों को मानना

दूसरा उद्देश्य बच्चों को समाज के वास्तविक मूल्य और समाज तथा व्यक्ति के संरक्षण साधनों के रूप में कानूनों और नियमों को स्वीकार करना सिखलाता है। यह मादक द्रव्य संबंधी कारणों के बारे में विशेष शिक्षा प्रदान करता है। छात्र जब आरंभिक स्तर पर नियमों और उनके महत्व के बारे में जान जाते हैं तो बड़े होकर वे स्कूल की मादक द्रव्य संहिता तथा उन्हें प्रतिबंधित करने वाले कानूनों के बारे में भी जान जाते हैं। इसमें ऐसे विषय शामिल किए जा सकते हैं। जैसे कानून क्या है, यदि समाज में कानून न हो तो क्या हो जाएगा, मादक द्रव्य दुरुपयोग के कानूनी व सामाजिक परिणाम, शराब पीकर या मादक द्रव्य लेकर वाहन चलाने का दंड तथा मादक द्रव्य एव अपराधों में संबंध आदि।

उद्देश्य 3: मादक द्रव्य का दुरुप्योग करने के लिए दबावों का प्रतिरोध करना।

मादक द्रव्य की पहचान और अजमाने में बच्चों को प्रोत्साहित करने के दबाव को रोकने में सामाजिक प्रभाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मादक द्रव्य दुरुपयोग करने के लिए दबाव आंतरिक होता है जैसे बच्चा चाहता है कि उसे किसी समूह में शामिल किया जाए या वह स्वतंत्र/आत्म निर्भर दर्शाना चाहता है और बाहरी दबावों में है : मित्रों, बड़े बच्चों तथा वयस्कों और प्रचार संदेशों के विचार तथा उदाहरण आदि।

छात्रों को इन दबावों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उन्हें मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले इन संदेशों का प्रतिरोध करना सिखाना चाहिए तथा इंकार करने का अभ्यास होना चाहिए। शिक्षा कार्यक्रम में व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों, सही निर्णय करने तथा मादक द्रव्य दुरुप्रयोग करने वाले दबावों का प्रतिरोध करने की तकनीकों पर बल दिया जाना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए विषयों के नमूने हैं : प्रसिद्ध संस्कृति का प्रभाव, छात्रों पर शक्तिशाली दबाव, सही निर्णय करने के तरीके,

शक्तिशाली दबाव का प्रतिरोध करने के तरीके, तथा ऐसी अन्य परिस्थितियाँ जिसमें छात्रों पर मादक द्रव्यों का प्रयोग करने के लिए दबाव डाला जाता है।

उद्देश्य 4 : छात्र जीवन में सकारात्मक तथा मादक द्रव्य रहित वातावरण को मजबूत बनाने वाली गतिविधियों को बढ़ावा देना।

स्कूली गतिविधियों का उद्देश्य छात्रों को मादक द्रव्य रहित वातावरण में खुशी के अवसर प्रदान करना होना चाहिए। इनका उद्देश्य मादक द्रव्य का प्रयोग करने के लिए पड़ने वाले शक्तिशाली दबाव का शक्तिशाली प्रतिरोध करने में योगदान करने वाला होना चाहिए। स्कूल की इन गतिविधियों में मादक द्रव्य की रोकथाम से संबंधित कार्यों का बड़े छात्रों से नेतृत्व करा कर सकारात्मक उदाहरण भी प्रस्तुत करने चाहिए।

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ गतिविधियों के सुझाव हैं : नेतृत्व के अवसर छात्रों को प्रदान करें। मुख्य नेताओं को नेतृत्व का प्रशिक्षण प्रदान करें। मादक द्रव्य रहित वातावरण को बढ़ावा देकर शिक्षा संबंधी गतिविधियों जैसे चित्रकारी, नाटक लिखना आदि में वृद्धि करें। मादक द्रव्य दुरुपयोग से न जुड़े आदर्श भूमिका वाले उदाहरणों को बढ़ावा दें। मादक द्रव्य दुरुपयोग, इसका अवैध व्यापार जैसे अपराधों आदि के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए स्कूल में अध्ययन समूह बनाएँ। स्कूल में खेल सुविधाएँ प्रदान करें तथा स्काउट एवं एन. सी. सी. जैसे आंदोलनों को बढ़ावा दें।

मार्गदर्शन सेवाएँ

मार्गदर्शन सेवाओं का अर्थ है किसी व्यक्ति को राय देने के लिए किसी निपुण या विशेषज्ञ से मिलने के लिए मार्गदर्शन देना। विशेषत: किसी रोगी को मनोचिकित्सक विशेषज्ञ के पास भेजना। अधिकांश व्यक्ति अपने जीवन में या परिवार में व्यसन की समस्या के बारे में जान जाते हैं। कुछ के पास व्यसनी को उपचार के लिए प्रेरित करने की कुशलता एवं ज्ञान भी होता है। जब किसी के पास समस्या को प्रभावी ढंग से संभालने की योग्यता सीमित हो तो अच्छा रहता है कि व्यक्ति को अधिक योग्य व्यक्ति या संस्था के पास भेजा जाए।

मार्गदर्शन तीन प्रकार के हो सकते हैं (i) स्वयं, (ii) अभिभावकों, मित्रों या स्वैच्छिक संगठनों द्वारा (iii) अनिवार्य मार्गदर्शन।

स्वयं मार्गदर्शन

स्वयं के मार्गदर्शन का मुख्य स्रोत ठीक होने वाले किसी व्यसनी, मित्र या स्वैच्छिक संगठन से प्राप्त हो सकता है। इसका अर्थ है कि व्यसनी उपचार या अन्य किसी सहायता के लिए स्वयं आता है। हो सकता है कि उस व्यक्ति में तीव्र प्रेरणा हो।

अभिभावकों, मित्रों या स्वैच्छिक संगठनों द्वारा मार्गदर्शन

यह मार्गदर्शन भी स्वेच्छा प्रकार का है। कोई व्यक्ति व्यसनी को उपचार के लिए उपलब्ध अनेक विकल्पों में से किसी एक विकल्प के लिए मार्गदर्शन देता है। उदाहरण के लिए मार्गदर्शक किसी परामर्शक को किसी संदिग्ध, शराब या मादक द्रव्य के दुरुपयोगकर्ता के बारे में बता सकता है। वह व्यसनी का नाम बता सकता है लेकिन अपनी पहचान गुप्त रखना चाहता है। इस प्रकार वह परामर्शक को उसके संपर्क में ला देता है। मार्गदर्शक अभिभावक, जीवन साथी या उससे संबंधित कोई व्यक्ति हो सकता है। यह भी हो सकता है कि वह अपना नाम बताने की अनुमति प्रदान कर दे।

अनिवार्य मार्गदर्शन

यह मार्गदर्शन अनिवार्य माना जाता है। इसमें मार्गदर्शक वास्तव में व्यसनी को परामर्शक या उपचार केंद्र में लाता है। यह किसी शिक्षण संस्थान में हो सकता है जहाँ पर कोई छात्र शराब या अन्य मादक द्रव्य का प्रयोग करने वाले के रूप में पहचान लिया जाता है। यदि ऐसा छात्र स्कूल या कालेज में है तो प्रिंसिपल या अन्य अधिकारी उसे उपचार के लिए या किसी परामर्शक के पास

जाने का आदेश देता है। यदि कोई व्यक्ति नशाखोरी के जुर्म में गिरफ्तार हो जाता है तो न्यायधीश उसे उपचार के लिए अनिवार्य रूप से भेज सकता है।

अन्य संस्थाओं के साथ नेटवर्क

विश्व को मादक द्रव्य मुक्त करने का कार्य किसी एक व्यक्ति, संस्था या देश पर नहीं छोड़ा जा सकता। यह एक सामूहिक प्रयास होना चाहिए। एकल प्रयास का परिणाम सीमित हो सकता है। उसके संसाधनों एवं अनुभवों की सीमा हो सकती है।

एक जाल खिड़की की छड़ों से भिन्न होता है। यद्यपि छड़ें मजबूत होती हैं लेकिन वे केवल दो स्थानों से जुड़ी होती हैं। जाल अन्य सूत्रों से अनेक स्थानों से जुड़ा होता है, चाहे वह छड़ों जितना मजबूत न हो। जाल को मजबूती प्रदान करता है, उसका अनेक स्थानों से दृढ़तापूर्वक जुड़ा होना। इस प्रकार नेटवर्क विभिन्न समूहों के साथ मिलकर संभव है।

1. रोकथाम के प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय कानून लागू करने वाली एजेंसियों को शामिल करें। पुलिस तथा अदालतें अच्छी तरह स्थापित संस्थाएँ हैं, जिनका मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम करने वाली अन्य एजेंसियों के साथ परस्पर प्रगाढ़ संबंध है।

2. मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम में छात्र संगठनों को शामिल किया जाए। उनमें उत्साह और मानव शक्ति होती है। इसके लिए आवश्यक है कि किसी अन्य एजेंसी द्वारा उनको सही कार्य पर लगा दिया जाए।

3. रोकथाम की गतिविधियों में सांस्कृतिक संगठनों को भी शामिल किया जाए। सांस्कृतिक गतिविधियाँ जोड़ने वाली और शिक्षाप्रद साधन के रूप में जानी जाती हैं।

4. समाज को मादक द्रव्य मुक्त करने के लिए धार्मिक संगठनों की सहायता ली जाए। सभी धर्म शराब और दूसरे मादक द्रव्यों की भर्त्सना करते हैं। इसके अतिरिक्त धर्म आत्म-नियंत्रण के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं। अनेक स्वास्थ्य लाभ के कार्यक्रम धर्म पर आधारित होते हैं।

2.9 सारांश

मादक द्रव्य व्यसन का इलाज नहीं किया जा सकता इसलिए इसकी रोकथाम करना श्रेष्ठ है। मादक द्रव्य के दुरुपयोग की रोकथाम के लिए शिक्षा मुख्य साधन है। रोकथाम के लिए शिक्षा आरंभिक अवस्था में घर से ही आरंभ होकर स्कूल और कालेज तक जारी रहनी चाहिए।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के लिए समुदाय या समाज प्रभावशाली एजेंट है। समुदायों को ऐसा करने के लिए शक्तिशाली बनाना आवश्यक है। रोकथाम तथा उपचार के लिए समुदायों को शामिल करने के अनेक लाभ हैं। समाज को मादक द्रव्य मुक्त बनाने में इसके सदस्यों के लिए अधिक शिक्षा, अधिक भागीदारी तथा अधिक जिम्मेदारी अकसर आ जाती है।

यदि व्यसनी तथा उसका परिवार उपचार को उपयोगी एवं जरूरी समझे तो इसका उपचार संभव है। परिवार एवं स्वयं व्यसनी को प्रेरित करने का मुख्य महत्व है। व्यसनी को घर में, स्कूल में तथा उसके शारीरिक हाव-भाव देखकर पहचाना जा सकता है।

मादक द्रव्य शिक्षा और उपचार सामूहिक प्रयत्न है। इसलिए अधिकतम परिणाम प्राप्त करने के लिए विभिन्न सामाजिक एवं सरकारी एजेंसियों को मिलकर कार्य करना चाहिए।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4. व्यसनी को पहचानने के क्या तरीके हैं?

.....

.....

.....

2.10 शब्दावली

बेनाम : नाम या अधिकारी का नाम ज्ञात न होना।

प्रतिक्रिया : विउन्मूलन कार्य द्वारा प्रतिरोध करना।

विश्वसनीयता : समझाना, विश्वास के लायक, यदि कोई व्यक्ति स्वयं शराब लेता है और शराब के विरुद्ध उपदेश करता है तो उसकी कोई विश्वसनीयता नहीं होगी।

जन माध्यम : जन संचार के मुख्य साधन, विशेषत: समाचार-पत्र और टेलीविजन।

मादक द्रव्य संबंधी उपकरण : टीन फॉइल, मोमबत्ती, सूई और सिरींज जो व्यसनी द्वारा इंजेक्शन लगाने या सूँघने के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं।

मुख्य नेता : हम उम्र समूह के नेता (उपलब्धियों या अन्य क्षमता के कारण)।

तालमेल : उपयोगी सौहार्द संबंध एवं संप्रेक्षण

हकलाना : अस्पष्ट आवाज़

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

प्रीवेंटिंग एलकोहॉल प्रोबलम्स थ्रु स्टुडेंट्स एसिसटेंस प्रोग्राम, (1984), यू. एस. डिपार्टमेंट ऑफ़ हेल्थ एंड ह्यूमन सर्विस न्यूयार्क।

डब्लू. एच. ओ./*टीस वर्कशॉप इंवोलवमेंट ऑफ यूथ इन हेल्थ प्रमोशन,* (1996), टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल वर्क, मुंबई।

बी. के महाजन एड एम.सी. गुप्ता, (1991), *टेक्स्ट बुक ऑफ प्रीवेंटिव एड सोशल मेडिसन,* जेपी ब्रदर्स, नई दिल्ली।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के लिए समुदाय के सशक्तीकरण का क्या महत्व है?

सशक्तीकरण सहायता करने से भिन्न है। सहायता प्रक्रिया में प्राय: सहायक उत्तर देता है। सशक्तीकरण में सहायता ग्राहक को स्वयं उत्तर तलाशने में सहायता प्रदान करता है। जिसको समस्या होती है वह स्वयं समस्या के बारे में सहायक से अधिक जानता है। हो सकता है कि समस्याग्रस्त व्यक्ति समस्या को हर पहलू से न देख सकें। सशक्तीकरण का अर्थ है समस्या को व्यापक संदर्भ में देखने में सहायता करना तथा ग्राहक द्वारा स्वयं उपाय ढूँढने में सहारा देना। जब किसी व्यक्ति या समुदाय को शक्तिशाली बनाया जाता है तो

सहायक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। सभी शिक्षण प्रक्रिया का यही आदर्श उद्देश्य होता है।

2. रोकथाम की नीतियाँ महत्वपूर्ण क्यों है?

रोकथाम के लिए प्रयुक्त पद्धति बहुत महत्वपूर्ण है। मानव इतिहास के आरंभिक काल से ही मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम के प्रयत्न किए जाते रहे हैं। आज तक किसी के द्वारा कोई पूरी तरह प्रामाणिक पद्धति की खोज नहीं की जा सकी है। रोकथाम की नीतियों में सभी गुण होने चाहिए जो एक सफल शिक्षण प्रक्रिया में पाए जाते हैं। वे व्यक्तिपरक, भागीदारीयुक्त एवं परिणाम दर्शाने वाली होनी चाहिए। रोकथाम की नीतियों में लक्ष्य समूहों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक पहलुओं का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

3. उपचार के लिए ग्राहक एवं उसके परिवार को प्रेरित करने वाले महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?

उपचार का अर्थ है परिवर्तन। उपचार के लिए व्यसनी या उसके परिवार को प्रेरित करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है। उपचार के लिए आने वाले व्यक्ति का उपचार सम्मानपूर्वक किया जाए। उसकी बातें धैर्य एवं सहानुभूतिपूर्वक सुनी जाए। सहायक से मेलजोल बढ़ाना चाहिए तथा ग्राहक के बारे में एकत्रित सूचनाएँ गुप्त रखनी चाहिए। सहायक को निर्णायक नहीं होना चाहिए तथा ग्राहक को उपदेश नहीं देना चाहिए।

4. व्यसनी को पहचानने के क्या तरीके हैं?

व्यसनी को पहचानने में निम्नलिखित संकेत एवं लक्षण सहायक हो सकते हैं:

रात को घर देर से आना, अधिक जेब खर्च की माँग, थका हुआ लगना, बेचैन लगना, चक्कर आना, कभी-कभी उल्टी करना, यादाश्त कम होना, अपने स्वरूप व सफाई के प्रति लापरवाह, अंगुलियों के सिरों पर दाग, बाहों और सांथलों पर सूई के निशान तथा स्कूल में प्रायः अनुपस्थित रहना आदि।

इकाई 3 रोकथाम और नियंत्रण में गैर सरकारी संगठनों, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : मध्यस्थता की आवश्यकता

3.3 मध्यस्थता की अवस्थाएँ

3.4 अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

3.5 राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

3.6 गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

पिछली इकाइयों में हमने मादक द्रव्य दुरुपयोग के बारे में चर्चा की है। इस इकाई का उद्देश्य आपको व्यसन के विरुद्ध संघर्ष की आवश्यकता से अवगत कराना है। यह इकाई आपको संभावित मध्यस्थता की विभिन्न अवस्थाओं - रोकथाम, नियंत्रण, उपचार तथा पुनर्वास के बारे में भी बताती है। इस इकाई में यह भी बताया गया है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग एक अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत समस्या है और इस बुराई के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष में अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, संस्थाओं तथा गैर सरकारी संस्थाओं की मध्यस्थता अनिवार्य है। संक्षिप्त रूप में छः संगठनों के बारे में भी जानने का अवसर दिया गया है। आशा है कि इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको विभिन्न अवस्थाओं में मध्यस्थता की आवश्यकता तथा विभिन्न संगठनों द्वारा निभाई जा सकने वाली भूमिका की आवश्यकताओं की जानकारी होगी।

3.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्य दुरुपयोग की समस्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। कोई देश या समाज इससे प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। संसार ने अनुभव कर लिया है कि जब तक एक सुनियोजित संघर्ष तथा प्रभावशाली मध्यस्थता नीतियाँ नहीं अपनाई जाएँगी यह बुराई पूरे संसार में फैलती जाएगी। हम में से अधिकांश ने यह अनुभव किया है तथा अनेक बार अनेक व्यक्तियों ने सोचा भी है कि इसके लिए कुछ ठोस कार्य किया जाए तथा स्थिति को ऐसे ही नहीं चलने दिया जाए। लेकिन हम में से अनेक लोगों के पास प्रोत्साहन, दृढ़ विश्वास, संचालन करने का तरीका या मध्यस्थता में शामिल होने की इच्छा का अभाव होता है। इसमें मध्यस्थता की आवश्यकता है क्योंकि यह लगभग सभी देशों और समाजों की समस्या है। मध्यस्थता विभिन्न अवस्थाओं - रोकथाम, नियंत्रण, उपचार या पुनर्वास में की जा सकती है। उपभोग और आपूर्ति में कमी करना भी आवश्यक है। चूँकि यह विभिन्न स्वरूपों में विश्व समस्या है, अतः कोई एक इसके विरुद्ध संघर्ष नहीं कर सकता। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है क्योंकि मादक द्रव्यों का अंतर्राष्ट्रीय

अवैध व्यापार, आतंकवाद तथा विद्रोही गतिविधियों से संबंध है। जिसने विश्व शांति को खराब कर दिया है। फिर व्यसन अकथनीय स्वास्थ्य समस्याएँ विशेषत: एच. आई. वी. और हैपेटाइटस बी/सी की संभावना वाले क्षेत्र भी पैदा करता है। राष्ट्रीय संस्थाओं को न केवल माँग में अपितु इसकी आपूर्ति को कम करने में भी अपनी भूमिका निभानी है। देश ऐसा प्रभावशाली तंत्र होना चाहिए जो अवैध शराब उत्पादन/निर्माण तथा मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोक सके। लेकिन केवल सरकार, वह भी भारत जैसे विशाल देश में सब कुछ नहीं कर सकती। गैर सरकारी संगठनों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि इस मादक द्रव्य के खतरे को समाप्त करने के प्रयास में वे सरकार की सहायता के लिए आगे आएँ।

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग : मध्यस्थता की आवश्यकता

लोग विभिन्न प्रकार के द्रव्यों का प्रयोग करते हैं। यहाँ तक कि स्कूल जाने वाले और गली में खेलने वाले बच्चे भी विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करते हैं। विश्व में शराब और अन्य मादक द्रव्यों पर अत्यधिक धन बरबाद किया जाता है। व्यक्तियों पर अनेक प्रकार से इसका प्रभाव पड़ता है। व्यसनी का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। उसका पैसा बरबाद हो जाता है। उसका पारिवारिक जीवन संकट में पड़ जाता है। व्यसन के कारण औद्योगिक और सड़क दुर्घटनाएँ बढ़ जाती हैं क्योंकि उसका निर्णय गलत होता है। इससे व्यक्ति की निष्पादन क्षमता प्रभावित होती है। अत: मानव शक्ति की हानि होती है। संक्षेप में व्यक्ति का व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है। व्यसनी धोखेबाज बन जाता है और कभी विश्वास करने लायक नहीं होता। चोरी करना, वस्तु गिरवी रखना, जुआ खेलना और झूठ बोलना व्यसनी के जीवन का अंग बन जाते हैं। वह आने वाली पीढ़ी के लिए गलत आदर्श प्रस्तुत करता है।

व्यसन समाज को भी अकथनीय क्षति पहुँचाता है। कई अपराधों के केंद्र में व्यसन मुख्य कारण होता है और यह समाज की शांति को भंग करता है क्योंकि यह अनेक असामाजिक गतिविधियों का कारक बनता है। विभिन्न सामाजिक उपद्रवों का कारण भी यही होता है जो गली के झगड़े से लेकर गुटों के बीच युद्ध तक फैलाता है। कोई व्यक्ति समाज में शांति की आशा नहीं रख सकता, क्योंकि समाज गंभीर रूप से मादक द्रव्य के व्यसनकर्ताओं, अवैध शराब उत्पादकों तथा शराब के शहंशाहों से त्रस्त होता है। अंतर्राष्ट्रीय तथा सीमा पार अवैध मादक द्रव्यों के व्यापार, मादक द्रव्य के गिरोह तथा मादक द्रव्य माफिया ने राष्ट्रों को असहनीय क्षति पहुँचाई है। स्मगलिंग, आतंकवाद तथा विद्रोही गतिविधियों के तार अवैध मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार से जुड़े हुए हैं।

विकासशील देशों में व्यसन ने विकास और उत्पादकता में बहुत बाधा पहुँचाई है। यूरोकेयर के निदेशक डेरिक राइफोर्ड ने अपनी पुस्तक 'ए लॉट ऑफ बॉटल' में एक ग्रामीण जैम्बियन का पत्र जो जैम्बियन डाक को लिखा गया है को उद्धृत किया है, "हमारे पास पानी, लाइट, स्कूल, नहाने की सुविधाएँ नहीं हैं। परंतु नगर पालिका हमारे लिए बीयर हॉल बनाने की बात कहती है। यदि हम बीयर पीएँगे तो नगर पालिका की आमदनी होगी ताकि एक दिन हमें पानी का पाइप मिल जाए। मुझे कितनी बीयर पीनी पड़ेगी कि एक दिन मेरे बच्चे को पीने का पानी मिल जाए।" गरीब देशों में व्यसन ने और तबाही मचा रखी है। डेरिक रूद्रफोर्ड कहते हैं, "विकासशील देशों में लगभग 800 मिलियन लोगों को भोजन नहीं मिलता तथा लगभग 500 मिलियन लोग कुपोषण के शिकार हैं।" एक गरीब को शराब का मूल्य चुकाने के लिए उसके पूरे परिवार के बजट की कटौती करनी पड़ती है। परिणामस्वरूप शराब कुपोषण का कारण बनती है जो शराब दुरुपयोग की समस्या से जुड़ा हुआ है।" यह भारत जैसे देश के लिए सत्य है। क्या आपको अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रो. शेखर सक्सेना के भाषण का वह अंश याद है जो पहले इकाई में दिया गया है - "प्रत्येक गरीब व्यक्ति शराब नहीं पीता, लेकिन यदि वह पीता है तो धन के लिए बच्चों के भोजन और शिक्षा में कटौती करके पीता है। व्यक्ति का शराब पीना कुपोषण का, पढ़ाई छोड़ने का, अनेक प्रकार से गरीबी का, हिंसा का तथा परिवार में बीमारी का मुख्य कारण है।"

जहाँ तक भारत में मादक द्रव्य का परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का संबंध है इसकी तस्वीर (स्थिति) उतनी अच्छी नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अधिवेशन में प्रो. सक्सेना का वक्तव्य अनुभव किए गए भारतीय समाज के व्यापक संकटों का एक संकेत मात्र है। व्यसन घरेलू हिंसा

तथा पत्नी को पीटने का मुख्य कारक है। किसी शराबी की पत्नी एवं उसके बच्चों के मानसिक आघात की कल्पना करें। इसके अतिरिक्त भी पुरुष प्रधान भारतीय समाज में व्यसन के कारण महिलाओं का और अधिक शोषण होता है। 1990 के दशक के पूर्वार्ध में भारत का दौरा करने के बाद डेरिक रूद्रफोर्ड लिखता है कि "देश के विभिन्न भागों में प्रत्येक 4 व्यस्कों में से । व्यक्ति में शराब पीना सामान्य बात है तथा यह व्यसन शिक्षित मध्य और उच्च सामाजिक वर्गों की शहरी महिलाओं में भी फैल रहा है। लोग कम आयु यहाँ तक कि छात्रावस्था में ही पीना आरंभ कर देते हैं। पिछले 10 वर्षों में अत्यधिक शराब पीना तथा शराब पर निर्भर रहने की संख्या में वृद्धि हुई है। अस्पतालों में कम से कम एक-तिहाई विस्तर शराब से संबंधित रोगियों - जिसमें सड़क तथा औद्योगिक दुर्घटनाओं के रोगी भी शामिल हैं, से भरे हुए हैं।" (द ग्लोब नं 2, 1991)

हमने विकासशील देश, विशेषत: भारत जैसे देश में रसायन आधारित समाज की बहुआयामी समस्या की झलक देखी है। हमारे पास इससे स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक समस्या से निपटने के संसाधन नहीं है। इस ज्वलंत सामाजिक मुद्दे को हल करने की सीमित जानकारी है इसलिए प्राय: इसका सामना करने के स्थान पर हम आराम से दूसरे विषयों को सोचने लगते हैं या इसे दबा देते हैं। हम यह दिखावा करते हैं कि हम अन्य गहन समस्याओं से घिरे हुए हैं और मादक द्रव्य दुरुपयोग छोटी समस्या है। इसलिए सामाजिक कार्य सूची में इसे कोई प्राथमिकता नहीं दी जाती। लेकिन भारत के जिम्मेदार नागरिक तथा समाजिक दायित्व के प्रति सजग व्यक्ति के रूप में अब तक आपने अनुभव किया होगा कि इसमें विभिन्न अवस्थाओं में मध्यस्थता या हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

मध्यस्थता से हमारा क्या अभिप्राय है? मध्यस्थता का अर्थ है मादक द्रव्य दुरुपयोग को या तो माँग के स्तर पर अथवा आपूर्ति के स्तर पर नियंत्रित करने के हमारे प्रयत्न। हमारी मध्यस्थता नीति का उद्देश्य है लोगों को मादक द्रव्यों का प्रयोग करने से रोका जाए या इनकी आपूर्ति अथवा बिक्री पर प्रभावशाली नियंत्रण लगाया जाए या समाज का एक प्रकार से दायित्व बने कि व्यसनी का उपचार अथवा पुनर्वास किया जाए। अगले भागों में हम विस्तृत रूप से मध्यस्थता नीतियों तथा सरकार सहित विभिन्न एजेंसियों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं की चर्चा करेंगे। कोई भी प्रश्न कर सकता है कि मध्यस्थता क्यों करनी चाहिए? प्रश्न बहुत स्वाभाविक है क्योंकि अनेक लोगों का विश्वास है कि यह एक ऐसी बुरी आदत है जिससे बचा जा सकता है तथा यदि कोई व्यसन करता है तो अपनी मर्जी से करता है। हमें मध्यस्थता नीतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय इन रसायनों का आदी हो सकता है। कई व्यक्ति संयोग से - अनजाने में और कई परिस्थितियों के कारण इसके व्यसनी बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह व्यसन एक सामाजिक समस्या है। अत: व्यक्ति को बहिष्कृत नहीं किया जा सकता और उस पर आरोप भी नहीं लगाया जा सकता। यह अनुभव करने के बाद कि व्यसन से व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व को क्षति पहुँचती है तो क्या मध्यस्थता नीतियों की योजना बनाना हमारा फर्ज नहीं है ताकि इस सामाजिक बुराई को समाप्त किया जा सके। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप अनुभव करेंगे कि जब तक इस व्यसन से संघर्ष के गंभीर प्रयास नहीं किए जाएँगे निश्चित रूप से यह मादक द्रव्य दुरुपयोग भारी समस्या में बदल जाएगा।

3.3 मध्यस्थता की अवस्थाएँ

इससे पहले के भाग में हमने मादक द्रव्य दुरुपयोग को समाप्त करने के लिए मध्यस्थता की आवश्यकता के बारे में चर्चा की है। अभी तक अनेक लोगों ने मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं किया है, कुछेक ने प्रयोग किया है तथा पक्के व्यसनी बन गए हैं। हम इन सभी लोगों पर एक जैसी मध्यस्थता नीति लागू नहीं कर सकते। फिर भी इन सभी को मध्यस्थता की आवश्यकता है। मध्यस्थता रोकथाम, नियंत्रण, उपचार तथा पुनर्वास के विचार से की जानी चाहिए। आगे के भागों में हम विभिन्न अवस्थाओं के लिए अपनाई जाने वाली मध्यस्थता नीतियों तथा संस्थाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के बारे में विस्तृत चर्चा करेंगे। लोगों को मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने से रोकथाम करने वाली मध्यस्थता, युवाओं तथा सामान्य जनता को लक्ष्य समूह मानते हुए की जानी चाहिए। जैसा कि आप जानते हैं कि कोई भी मादक द्रव्य दुरुपयोग हो सकता है। जब हम उपभोग व आपूर्ति घटाने वाली गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं तो हमारा उद्देश्य इसे

नियंत्रित करना होता है। जब कोई व्यक्ति पक्का व्यसनी बन जाता है तो उसे इलाज, मनोचिकित्सा तथा परामर्श के लिए एक मार्गदर्शक की भी आवश्यकता पड़ती है। लेकिन जब कोई उपचार के लिए आता है और उसे सहायता मिल जाती है तो उसे पुनर्वास की आवश्यकता पड़ती है। उसे अपने जीवन को सार्थक बनाने तथा जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए क्रमश: सहारे और उत्साह की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए जब आप इस इकाई का अध्ययन कर लेते हैं तो आपको अनुभव होगा कि यदि हम इन सभी अवस्थाओं में मध्यस्थता को लागू करते हैं तो मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध हम प्रभावशाली संघर्ष कर सकते हैं।

रोकथाम

पहले इकाई में वर्णित कहावत को याद करें; "इलाज से परहेज़ श्रेष्ठ है।" एक बार जब कोई व्यक्ति प्रयोग के रूप में मादक द्रव्य लेना आरंभ करता है और फिर उसे आदत पड़ जाती है या वह व्यसनी बन जाता है तो उसे इससे मुक्ति दिलाना बहुत कठिन है। इसलिए मध्यस्थता की अवस्था व्यक्ति द्वारा मादक द्रव्य लेने के प्रथम प्रयोग से पूर्व आती है। सही रोकथाम नीति अपनाने के लिए लोगों को चाहे वे बहुत छोटे हों, मादक द्रव्य दुरुपयोग की बुराई के बारे में बताना अच्छा होता है। क्या आप इस कहावत को जानते हैं कि "छोटों को ही पकड़ लो" हमें व्यसन के विरुद्ध वाले संदेश छोटे बच्चों को पहुँचाने चाहिए। हमें यह ध्यान रखना होगा कि छोटे बच्चे चाहे वे छात्र हों या गली में खेलने वाले हों, मादक द्रव्यों से परिचित हो जाते हैं। भारत जैसे देश में किशोर स्कूलों और कालेजों में सरलता से मादक द्रव्यों के संपर्क में आ जाते हैं। कृपया खंड 2 की इकाई 5 में भाग 4.5 "माँग की कमी के पीछे तर्क" देखें। जब हम माँग में कमी की बात करते हैं तो मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में हमारा पहला कदम है युवाओं को मादक द्रव्यों से दूर रखना। इसी इकाई के भाग 5.5 में दिए गए वर्णन को याद कीजिए जिसमें हमने दृढ़तापूर्वक कहा हैं कि युवाओं को 'मादक द्रव्य नहीं' कहने के तरीके सिखाने चाहिएं।

किसी भी सफल रोकथाम कार्य के लिए जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना पहली आवश्यकता है। स्कूल या कालेज के छात्रों के लिए सेमिनार, संगोष्ठी तथा ऐसे ही कार्यक्रम काफी प्रभावशाली होते हैं। व्यसन के बारे में पाठ्यक्रम में सामग्री रखने का भी महत्व है। लेकिन अनेक बच्चे स्कूल या कालेजों में नहीं जाते। फिर बाल श्रमिक हैं जो होटलों, दुकानों और कारखानों में काम करते हैं या गृह निर्माण श्रमिक हैं, कारीगरों के सहायक या फिर कुटीर अथवा दस्तकारी उद्योग में सहायता करते हैं। इनमें से अनेक गली में खेलने वाले, रद्दी बटोरने वाले या भिखारी तक होते हैं। हम इन किशोरों तक कैसे पहुँच सकते हैं जो अधिकांशत: अशिक्षित होते हैं। क्या सेमिनार के माध्यम से? चाहें तो हम नुक्कड़ नाटक या लोक कलाओं के माध्यम से संदेश पहुँचा सकते हैं। यहाँ पर हमारे जनसंचार के साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अधिकांश बच्चे चलचित्र देखने या सार्वजनिक टेलीविजनों पर कार्यक्रम देखने जाते हैं। जब हम सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों की भूमिकाओं की चर्चा करेंगे तो हम रोकथाम नीति पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

नियंत्रण

एक चीनी कहावत है कि "पहले आदमी एक बार शराब पीता है, फिर शराब शराब को पीती है, फिर शराब आदमी को पीती है"। इस कहावत का अर्थ है कि जब व्यक्ति एक बार शराब पीना आरंभ करता है तो कोई शक्ति उस पर नियंत्रण नहीं रख सकती। इसलिए श्रेष्ठतम नीति यह है कि शराब पीना कभी आरंभ ही न किया जाए। क्या किसी व्यक्ति ने शराब पीना आरंभ कर अपनी आदत पर नियंत्रण किया है? पश्चिमी सभ्यता में अनेक लोगों ने अनुभव किया है कि शराब पीने की आदत को छोड़ना संभव नहीं है। उन्होंने 'उचित मात्रा' में शराब पीने की बात करना आरंभ कर दिया है। उनका क्या अर्थ है? व्यक्ति शराब पी सकता है लेकिन सीमित मात्रा में पीनी चाहिए। किसी को भी आश्चर्य होगा कि क्या ऐसा नियंत्रण संभव है? क्या शराब के लिए उचित मात्रा की शर्त लगाई जा सकती है? अनेक व्यक्ति पूछ सकते हैं कि 'कितनी उचित मात्रा' में। यदि हम लोगों को अपनी शराब पीने की आदत पर नियंत्रण की बात सिखाएँ तो यह एक व्यर्थ का परिश्रम होगा।

'नियंत्रण' को दूसरे अर्थ में भी प्रयोग किया जा सकता है। मादक द्रव्यों को युवाओं से दूर रखने वाले संदर्भ की चर्चा को याद करें। जैसा कि पहले एक इकाई में चर्चा की जा चुकी है कि उपलब्धता पदार्थ प्रयोग करने का एक कारण है। मादक द्रव्य की उपलब्धता पर कुछ नियंत्रण या

प्रतिबंध लगाना कुछ सार्थक हो सकता है। जब हम नियंत्रण का इस अर्थ में प्रयोग करते हैं तो सरकार की, विशेषत: भारत जैसे देश में बड़ी जिम्मेदारी हो जाती है। हमारे देश में सरकार से लाइसेंस प्राप्त किए बिना कारखाने में शराब का निर्माण या उत्पादन आरंभ करना संभव नहीं है। कई प्रांतों में सरकार स्वयं थोक बिक्री करती है (जैसे तमिलनाडु में)। सरकार खुदरा बिक्री के लिए नीलामी करती है तथा उनकी कार्य प्रणाली सरकार द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार होती है। यदि सरकार की इच्छा हो तो लाइसेंस प्रणाली पद्धति लागू कर देती है। नि:संदेह यह केवल वैध मादक द्रव्यों पर ही लागू होता है। लेकिन जब यह नियंत्रण अवैध मादक द्रव्यों पर आता है तो इसे कैसे लागू किया जा सकता है? अवैध व्यापार तथा अवैध शराब उत्पादन को समाप्त करने वाले सख्त कानून ही मादक द्रव्यों पर प्रभावशाली नियंत्रण कर सकते हैं। सरकार के दायित्वों की चर्चा करते समय इन पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

उपचार

शराब या मादक द्रव्यों के व्यसन को बुरी आदत, पाप या रोग आदि विभिन्न रूपों में समझा जाता है। किसी व्यसनी को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह एक रोगी व्यक्ति है। यह निरंतर बढ़ने वाला रोग है। यह घातक रोग है। इसे रोग क्यों माना गया है? जिस प्रकार किसी रोगी की कोई स्वास्थ्य समस्या होती है जैसे हृदय रोग या कैंसर जिसमें उपचार की आवश्यकता होती है इसी प्रकार व्यसनी को भी उपचार की आवश्यकता होती है। अन्य रोगों की तरह व्यसनी को भी चिकित्सक द्वारा संभाला जा सकता है कहा जाता है कि जो एक बार 'नशेड़ी' वह हमेशा के लिए 'नशेड़ी'। क्योंकि व्यसन द्वारा हुई शारीरिक और मानसिक क्षति ठीक नहीं हो सकती। इसीलिए कुछ लोग समझते हैं कि व्यसन रोग का उपचार हो सकता है इलाज नहीं। फिर भी ऐसे प्रमाण हैं जो यह मानते है कि व्यसन एक समस्या है जिसमें चिकित्सीय मध्यस्थता की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा रोग है जिसमें चिकित्सक तथा मनोचिकित्सक की आवश्यकता पड़ती है। यहाँ पर हम चिकित्सा प्रक्रिया की चर्चा नहीं कर रहे हैं। क्योंकि यह ब्लॉक 3.1 का विषय है। आपको व्यसन मुक्ति, परहेज़ तथा उपचार प्रक्रिया की जानकारी मिल चुकी है। कुल मिलाकर हमें यह ध्यान रखना है कि जिस प्रकार हम किसी रोगी को इलाज के लिए किसी चिकित्सक के पास ले जाते हैं, उसी प्रकार यदि हम किसी व्यसनी को किसी ऐसे चिकित्सक के पास ले जाते हैं जो व्यसकियों की देखभाल करने में विशेष रूप से प्रशिक्षित है तो यह एक अच्छी मध्यस्थता नीति होगी। लेकिन जब तक व्यसनी स्वयं व्यसन के दुरुपयोग से मुक्त होना नहीं चाहेगा और उसे उपचार का प्रभाव समझ में नहीं आएगा दूसरों द्वारा किए गए प्रयत्न पूरी तरह व्यर्थ हो जाएगे। इसके अतिरिक्त किसी व्यसनी का उपचार एकांत में नहीं करना चाहिए। उपचार के बाद उसका निरंतर ध्यान विशेषत: किसी प्रशिक्षित परामर्शक द्वारा करना उपचार को सफल बनाने के लिए बहुत आवश्यक है। यह सिद्धांत न केवल व्यसनी रोगी पर अपितु उसके परिवार के अन्य सदस्यों पर भी लागू करना चाहिए। परिवार का उपचार करना भी आवश्यक है ताकि परिवार के सदस्य उपचार किए गए व्यसनी के साथ तालमेल बैठा सकें एवं उपचार को स्वीकार कर सके। चिकित्सक, मनोचिकित्सक, परामर्शक तथा परिवार के सदस्यों की तमाम कोशिशों के बाद भी व्यसनी पुन: अपनी पुरानी आदत में पड़ सकता है या जिसे हम कहते हैं पुन: बीमार हो सकता है। इस प्रकार उपचार बहुत बार प्रभावशाली मध्यस्थता को पूरा नहीं करता। अनेक व्यक्ति जिन्होंने व्यसनी के उपचार में पर्याप्त समय लगाया है निराश हो जाते हैं और इस कारण निरुत्साहित हो जाते हैं। लेकिन फिर भी जब तक हमारे पास चिकित्सा मध्यस्थता के साधन नहीं होंगे, व्यसन के विरुद्ध कोई संघर्ष प्रभावी नहीं हो सकता।

पुनर्वास

1. पुनर्वास भी मध्यस्थता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। ऐसे अनेक व्यसनी हैं जो अपनी आदत छोड़ना चाहते हैं। लेकिन उनके मन में अनेक सवाल आते हैं जो उन्हें उपचार कराने या अपनी आदत छोड़ने में बाधा पहुँचाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यदि मैंने व्यसन करना छोड़ दिया तो क्या समाज मुझे स्वीकार करेगा? शंका करना सही है। क्योंकि व्यसनी के दिमाग में अपराध और शर्म की भावना होती है जो उसको यह विश्वास दिलाती है कि उसके आसपास का समाज उन सब बातों को कभी नहीं भूलेगा जो उसने व्यसन करते समय किया है। दूसरा प्रश्न यह आता है कि अपनी आदत छोड़ने के बाद मैं क्या करूंगा? यह

एक विकासशील देश जैसे भारत के बारे में बिल्कुल सत्य है। समाज में गरीबी के कारण व्यसन की आदत छोड़ने वाले व्यक्ति के लिए उचित कार्य प्राप्त करना बहुत कठिन है। पुनर्वास एक कला है जिसमें पूर्ण व्यसनी को समाज की माँग के अनुसार तालमेल बैठाना सिखाया जाता है। पुनर्वास कला में समाज को भी पूर्व व्यसनी को स्वीकार करने की कला सिखाई जाती है। पुनर्वास एक रास्ता है जिसमें पूर्व व्यसनी को जीवन को नए सिरे से आरंभ करना सिखाया जाता है। पुनर्वास में पूर्व व्यसनी को पुनः व्यसन में न पड़ते हुए सफलतापूर्वक जीवन जीने के लिए उत्साहित किया जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सही पुनर्वास नीतियाँ बनाएं जो व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए उपयुक्त हों। अब आप समझ गए होंगे कि उपचार के बाद की अवस्था में भी मध्यस्थता बहुत महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. किसी व्यसनी के पुनर्वास से आपका क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

जैसा कि हमने पहले बताया है कि मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। यह अर्ध विकसित तथा विकसित देशों में समान रूप से फैली हुई है। इनमें तीव्रता के अतिरिक्त कोई अंतर नहीं है। इसके अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, स्मगलिंग, अवैध शस्त्र व्यापार तथा आतंकवाद से संबंधों के कारण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अनेक समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। विश्व हत्या, तोड़फोड़ व विद्रोही गतिविधियों में मादक द्रव्य माफिया तथा संगठनों के संबंधों को अच्छी तरह जानता है। इसलिए व्यसन के खिलाफ कोई भी संघर्ष तब तक व्यर्थ होगा जब तक उसमें पूरे विश्व की भागीदारी न हो। अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने इस बदली समस्या के बारे में गंभीर विचार व्यक्त किए है तथा हो। संघर्ष करने का संकल्प किया है। इन संगठनों ने विभिन्न अवस्थाओं में मध्यस्थता के बारे में विचार किया है तथा अपनी नीतियाँ बनाई हैं जो अनेक प्रकार की हैं जिनमें सिफारिश, उपचार, पूर्वव्यसनिओं को संगठित करना, पुनर्वास तथा मादक द्रव्य के अवैध व्यापार के विरुद्ध संघर्ष करना तथा माँग और आपूर्ति को कम करने की योजना बनाने के लिए क्षेत्रीय सहयोग आदि सम्मिलित हैं।

इस भाग में वर्णन किया गया है, कि मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में शामिल सभी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का एक संपूर्ण अध्ययन करना संभव नहीं है। फिर भी, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सोच के बारे में सूचित करने के प्रयास किए गए हैं। इस भाग का अध्ययन करने के बाद आप अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे यू.एन.ओ. व डब्ल्यू. एच. ओ. तथा राष्ट्रों की क्षेत्रीय संस्थाएँ जैसे सार्क ने इस समस्या के बारे में गंभीरता से विचार किया है तथा माँग और पूर्ति को कम करने के कार्य आरंभ किये हैं। विश्व और विश्व के संगठनों को मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध महत्वपूर्ण कार्य करना चाहिए क्योंकि इससे समाज में विनाश हो रहा है। जबकि गरीबी के अंतर्गत अनेक समस्याएँ हैं तो इन मादक द्रव्यों पर अत्यधिक राशि व्यर्थ चली जाती है। यूरोकेयर के श्री डेरिक रुद्रफोर्ड कहते हैं, "शराब उद्योग की कुल राशि विश्व में प्रत्येक व्यक्ति को 10 गुणा अधिक पर्याप्त रूप से रोटी, पानी, शिक्षा आवास तथा चिकित्सा सहायता प्रदान कर सकती है।"

संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व में मादक द्रव्यों के खतरे से तथा इसने विश्व शांति को जो क्षति पहुँचाई है उससे वह परिचित है। अनेक अंतर्राष्ट्रीय अव्यवस्थाएँ फैलाने तथा विकास में बाधा बनने के कारण राष्ट्र संघ की कार्य सूची में मादक द्रव्यों का व्यसन महत्वपूर्ण स्थान पर है। संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य नियंत्रण कार्यक्रम (यू.एन.डी.सी.पी.) की मादक द्रव्य रिपोर्ट में उठाए गए तथ्यों से हमें इसकी गंभीरता का पता लगता है जिसे यूएन ने समझा है। विश्व मादक द्रव्य रिपोर्ट ने संसार में मादक द्रव्य के अवैध उत्पादन, व्यवसाय तथा प्रयोग की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की है। रिपोर्ट में शब्दों की उपयोगी परिभाषाएँ हैं। इसमें मादक द्रव्यों में प्रयुक्त रसायनों का संक्षिप्त लेकिन सही विवरण एवं व्याख्या दी गई है साथ ही इसका प्रयोगकर्ता के शरीर और दिमाग पर पड़ने वाले प्रभावों को भी स्पष्ट किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि यू.एन.डी. सी.पी. द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार 1985 से कोक पत्तियों का उत्पादन दो गुणा तथा अफीम का उत्पादन 3 गुणा से भी अधिक हो गया है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि पूरे विश्व में कच्चे माल के उत्पादन में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है जिससे विश्व में इसकी कृषि भूमि 1996 में 280,000 हेक्टर तक पहुँच गई है। भारत में इस रिपोर्ट को बड़ी गंभीरता से लिया गया है।

क्या आपको पिछली इकाई में वर्णित हमारा कथन याद है कि भारत मादक द्रव्य के अवैध व्यापार का आवागमन विंदु बन गया है क्योंकि इसकी स्थिति गोल्डन क्रिसेंट तथा गोल्डन ट्रायएंगल देश के बीच में पड़ती है। यह रिपोर्ट बताती है कि अधिकतम (90%) अवैध मादक द्रव्य गोल्डन ट्रायएंगल तथा गोल्डन क्रिसेंट देशों में उत्पादित होता है। यू.एन. ने विश्व को यह भी बताया है कि सन् 1980 से सिंथेटिक मादक द्रव्य के दुरुपयोग में प्रतिवर्ष 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई। स्वास्थ्य और मादक द्रव्यों के बीच संबंधों के बारे में सनसनीखेज रहस्य बताने के अतिरिक्त रिपोर्ट मादक द्रव्य के दुरुपयोग और अपराधों के बीच संबंधों के बारे में भी विस्तृत रूप से प्रकाश डालती है। मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को समाप्त करने के संकल्प के साथ यू.एन. ने इस रिपोर्ट में यह भी बताया है कि यह उत्पादक देश सहित किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक है। "अवैध मादक द्रव्य के माध्यम से देश द्वारा अर्जित अपेक्षाकृत थोड़ा-सा मुनाफा देश की अर्थव्यस्था को बिगाड़ने लगता है।" 1946 में अपनी स्थापना से ही यू.एन. मादक द्रव्य नियंत्रण तथा अपने दायित्वों को निभाने के कार्य करने लगा था। रिपोर्ट के अनुसार विश्व मादक द्रव्य नीति में यू.एन. की भूमिका विभिन्न प्रवृत्तियों में एक विकासशील एवं सामंजस्य स्थापित करने वाली है। "मादक द्रव्यों पर अनेक जटिल एवं कानूनी समझौतों को एक समान तथा सरल बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा में तीन विभिन्न मादक द्रव्य नियंत्रण सम्मेलनों में प्रयत्न चरम विंदु पर पहुँच चुके हैं। मादक द्रव्यों के निरंतर बदलते प्रयोग के कारण इसमें भागीदार अनेक देशों की संख्या में वृद्धि हुई। इन प्रयत्नों में इन देशों के चिकित्सीय, वैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक हितों के भेदों में सामंजस्य स्थापित करने की निरंतर आवश्यकता को दर्शाया गया है।"

1987 में वियेना में मादक द्रव्य दुरुपयोग और अवैध व्यापार पर आयोजित यू.एन. के अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन में यू.एन. के महासचिव श्री जेवीयर परेज-डी क्यूलर ने अपने भाषण में बताया, "वास्तव में जिस प्रकार मादक द्रव्य का व्यसनी अपना स्वास्थ्य एवं स्वतंत्रता खो देता है, अनेक देश भ्रष्टाचार के कारण बरबाद हो जाते हैं और उनकी स्वतंत्रता को भी खतरा हो जाता है, इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा भी खतरे में है क्योंकि अवैध मादक द्रव्य व्यापार अवैध शस्त्र व्यापार, विद्रोह तथा आतंकवाद से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। संक्षेप में कहा जाए तो हम सब एक ऐसी बुराई का सामना कर रहे हैं जो न केवल मनुष्यों को बरबाद कर रही है अपितु भ्रष्टाचार और हिंसा के माध्यम से समाज की नीवों को भी हिला रही है।" यू.एन. ने आरंभ से ही अवैध मादक द्रव्य व्यापार के विरुद्ध संघर्ष करने तथा मादक द्रव्यों से जुड़े अपराधों को समाप्त करने के लिए राष्ट्रों को संगठित करने का कार्य किया है। 1988 में यू.एन. ने मादक द्रव्य तथा उन्मादकारी द्रव्यों के अवैध व्यापार के विरुद्ध एक सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य कानून लागू करने में सहयोग करना, मादक द्रव्यों से जुड़े अपराधियों का प्रत्यर्पण करना तथा मादक द्रव्यों के मुनाफे से प्राप्त संपत्तियों को जब्त करने पर विचार करना था।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के क्षेत्र में डब्ल्यू.एच.ओ. ने आश्चर्यजनक एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। इसने शराब और मादक द्रव्यों के खिलाफ जनमत तैयार कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1951 में डब्ल्यू.एच.ओ. ने पहली बार शराब पर सवाल उठाया। उन्होंने एक

विशेषज्ञ समूहों का गठन किया जिन्हें कुछ अनुसंधान तथा सूचनात्मक कार्य सौंपे गए। 1975 में डब्ल्यू.एच.ओ. के बोर्ड तथा इसकी महासभा ने शराब के बारे में पुन: सवाल उठाया। संगठन के महानिदेशक को निर्देश दिया गया कि इस क्षेत्र पर आँकड़ों सहित प्रकाश डाला जाए ताकि शराब की खपत कम करने के प्रयास किए जा सकें। 1977 में डब्ल्यू.एच.ओ. के सदस्य राष्ट्रों ने "वर्ष 2000 तक सबके लिए स्वास्थ्य" के लक्ष्य का अनुमोदन किया तथा इसे अपनाया। 1979 में डब्ल्यू.एच.ओ. ने एक कार्य योजना तैयार की जिसमें अन्य बातों के साथ निम्नलिखित विषय उठाए गए:

- शराब की खपत को विशेषकर युवाओं और गर्भवती महिलाओं में कम करना।
- शराब के उत्पादन और बेचने के खिलाफ कार्रवाई करना।
- व्यसनियों को चिकित्सा तथा पुनर्वास सुविधा प्रदान करना।
- शराब की खपत तथा संबंधित समस्याओं के आँकड़े तैयार करना।
- व्यसन के मामले को संभालने के लिए देशों के बीच अधिक सहयोग करना।

1980 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के यूरोपीय क्षेत्र ने ठोस लक्ष्य एवं नीतियाँ बनाई। उन्होंने वर्ष 1995 तक शराब की खपत में महत्वपूर्ण कमी तथा वर्ष 2000 तक 25 प्रतिशत कमी की सिफारिश की। 1983 में डब्ल्यू.एच.ओ. ने सभी देशों से अनुरोध किया कि वे सावधानीपूर्वक एक राष्ट्रीय शराब नीति बनाएं। आज डब्ल्यू.एच.ओ. मादक द्रव्यों दुरुपयोग के खिलाफ कठोर संघर्ष करने जा रहा है। डब्ल्यू.एच.ओ. इस विषय को विभिन्न दृष्टिकोणों से देख रहा है। उसकी विशेष चिंता मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध एच.आई.वी. और हपेटाइटिस से जुड़े होने के कारण है। इसे कुछ प्रकाशनों में प्रकाशित भी किया गया है। डब्ल्यू.एच.ओ. अपने मानसिक स्वास्थ्य और मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम वाले प्रभाग के अंतर्गत मादक द्रव्य दुरुपयोग पर आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से इस संघर्ष में शामिल है। विश्व को आशा है कि डब्ल्यू.एच.ओ. मादक द्रव्य के दुरुपयोग के विरुद्ध अपने संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा तथा विश्व का मार्गदर्शन करता रहेगा।

इस व्यसन के विरुद्ध काम करने वाले किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संगठन पर चर्चा एल्कोलिक एनोनिस जिसे एए के नाम से जाना जाता है, का जिक्र किए बिना अधूरी है। एए राष्ट्रों का एक गैर सांप्रदायिक संगठन है, जिसका गठन समस्याग्रस्त शराब पीने वालों की सहायता के लिए किया गया है। यह 1935 में एकरोन, ओहियो में मामूली सदस्यता के साथ आरंभ हुआ था। इसकी शुरुआत बिल डब्ल्यू और डॉ. बोब्स नामक ऐसे दो व्यक्तियों ने की थी जिनका लापरवाही से शराब पीने का लम्बा इतिहास है। आज 100 देशों में इसके लगभग 5 लाख सदस्य हैं। 'एलकोलिक एनोनीयस' ऐसे पुरुषों और महिलाओं का संगठन है जो परस्पर अपने अनुभव, शक्ति तथा शराब छोड़ने में दूसरों की सहायता कर सकें। इसकी सदस्यता की एकमात्र शर्त शराब छोड़ने की इच्छा होनी चाहिए। इसकी सदस्यता के लिए कोई शुल्क नहीं है। एए किसी संप्रदाय, वर्ग, राजनीति, संगठन, संस्था से नहीं जुड़ा है। यह किसी विवाद में पड़ना नहीं चाहता। किसी कार्य का न समर्थन करता है और न ही विरोध। इसके सदस्यों का मुख्य उद्देश्य है संयम से रहना तथा दूसरे शराब का सेवन करने वालों की संयम रखने में सहायता करना। एए की सदस्यता बहुत प्रभावशाली है इसने शराब छोड़ने के लिए 12 सूत्री कार्यक्रम का भी सुझाव दिया है।

मादक द्रव्य यूरोप निवासियों के सार्वजनिक एवं निजी जीवन को बरबाद कर रहा है। इसलिए यूरोपीय देशों ने शराब तथा मादक द्रव्य की समस्या तथा इसके अवैध व्यापार को समाप्त करने के उपायों पर गंभीरता से विचार किया है। 1995 में 46 यूरोपीय देश पेरिस में एकत्रित हुए तथा शराब पर एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। शराब की गड़बड़ियों का अनुभव करते हुए यूरोपीय संघ में एक स्वैच्छिक तथा गैर सरकारी संगठनों का गठबंधन स्थापित करने के लिए कदम उठाए गए तथा यूरोकेयर का गठन किया गया।

हाल ही में सार्क द्वारा किए गए प्रयत्नों का भी वर्णन किया जाना चाहिए। दक्षिण एशियाई क्षेत्र के सदस्य देशों ने मादक द्रव्य के अवैध व्यापार से होने वाले जोखिमों के खिलाफ संघर्ष करने का संकल्प किया है।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग तथा अवैध व्यापार की बुराई के बारे में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की जागरूकता को आशा की किरण के रूप में देखा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय समस्या होने के कारण इसे विकसित और अविकसित देशों में अलग-अलग रूप से नहीं देखा जा सकता। व्यक्तियों तथा समाजों को कठिनाई में डालने के साथ-साथ इसने विश्व शांति के लिए भी खतरा पैदा कर दिया है क्योंकि इसका संबंध आतंकवाद सहित असामाजिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है और मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार एक अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि बन गया है जोंस हर्टलुइस ने अपनी पुस्तक 'द वर्ड ए ड्रग सिन' में लिखा है, "एक मादक द्रव्य संघ दो या तीन से अधिक महाद्वीपों के अनेक देशों में पुलिस तथा सीमा शुल्क अधिकारियों के लिए समस्या पैदा कर अपना कार्य कर सकता है। हो सकता है कि मादक द्रव्य का उत्पादन एक देश में हो, संसाधन दूसरे देश में, स्मगलिंग तीसरे देश में, बिक्री चौथे देश में तथा लाभ बंटवारा पाँचवें देश में हो। इससे कानून लागू करने वाली संस्थाओं के लिए बहुत समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय अपराध के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए ठोस प्रयास अंतर्राष्ट्रीय अपराधी पुलिस संगठन (आइ.सी.पी.ओ., इंटरपोल) तथा व्यापार सहयोग परिषद कस्टम्स को आपरेशन कांउसिल (सी.सी.सी.) द्वारा किए जा रहे हैं।"

3.5 राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका

इस भाग में हम रोकथाम, नियंत्रण, उपचार तथा पुनर्वास में शामिल विभिन्न राष्ट्रीय संस्थाओं की चर्चा करेंगे। अब तक आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि व्यसन से संघर्ष करना कोई आसान कार्य नहीं है। मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा अवैध व्यापर को जड़ से मिटाना आसान नहीं है। अनेक राष्ट्रीय संस्थाएँ मध्यस्थता तथा माँग व आपूर्ति को समाप्त करने में लगी हुई हैं। इस भाग का अध्ययन करने के बाद आप अनुभव करेंगे कि किसी सार्थक कार्य को करने के लिए ठोस तथा गंभीर प्रयास करना कितना आवश्यक है। राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका समझने के लिए भारत में मादक द्रव्यों की समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना आवश्यक है। जैसे उपलब्ध मादक द्रव्य के प्रकार, उनके वैध और अवैध मार्ग, कितनी मात्रा में वैध मादक द्रव्यों विशेषत: शराब का उत्पादन तथा व्यापार होता है और मादक द्रव्यों का अवैध तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर नियंत्रण कैसे किया जाता है?

भारत में सुपारी आधारित आरंभिक मादक द्रव्य जिसे आमतौर पर 'गुटका' के नाम से जाना जाता है तथा तम्बाकू आधारित मादक द्रव्य जिसे 'थम्पक्स' के नाम से जाना जाता है का प्रचलन विशेषत: युवाओं में बहुत आम है। चाहे कुछ भी हो इन 'गुटकों' और 'थम्पक्स' की बिक्री पर कोई रोक नहीं है। ये छोटी-छोटी आकर्षक थैलियों में उपलब्ध ये होती हैं। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति सिगरेट प्राप्त कर सकता है। बस सरकार इतना चाहती है कि सिगरेट की प्रत्येक डिब्बी पर जरूरी चेतावनी - "सिगरेटपीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" लिखा होना चाहिए। स्पष्ट है कि ऐसी कोई राष्ट्रीय संस्था नहीं है जो इन आरंभिक मादक द्रव्यों की बिक्री पर सार्थक नियंत्रण लागू कर सके। परिणामस्वरूप ये कहीं भी बेची जा सकती हैं, यहाँ तक कि स्कूलों और कालेजों के नजदीक और कालेजों तथा विश्वविद्यालय की कैंटीन में तो और भी बुरी हालत है।

यद्यपि हमारा संविधान कहता है, "राज्य चिकित्सा उद्देश्यों को छोड़कर नशीले पेय और मादक द्रव्य जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं के उपभोग पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास करेगा।" अनेक राज्यों में शराब वैध मादक द्रव्य है। हमारे संघीय ढाँचे में केंद्र सरकार प्रतिबंध लगाने के बारे में अधिक नहीं कहती। यह एक मजाक है कि भारत में राज्य सरकारें शराब वितरण का कार्य करती हैं। अनेक राज्यों में सरकार के शराब निर्माण के अपने उद्योग, गोदाम, थोक बिक्री डिपो तथा यहाँ तक खुदरा बिक्री केंद्र भी हैं। क्या आप नहीं सोचते कि यह एक विरोधाभास है कि जिस देश में गांधी जी ने राष्ट्रपिता के रूप में इस व्यसन के विरुद्ध संघर्ष किया हो वहाँ सरकार संविधान में किए गए वर्णन के बावजूद शराब व्यापार में शामिल है। यद्यपि खुदरा बिक्री के बारे में कुछ

नियंत्रण हैं, जैसे - विक्री, समय, स्थान, जहाँ शराव की दुकान नहीं होनी चाहिए, तथा विज्ञापन आदि। लेकिन इनका पालन करने के स्थान पर उल्लंघन अधिक होता है। वितरण प्रणाली द्वारा कानून का पालन न करने पर भी प्रायः राज्य सरकारें मौन, असहाय दर्शक वनी रहती हैं।

यह स्वीकार करना होगा कि भारत सरकार तथा राज्य सरकारें, अवैध मादक द्रव्यों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष कर रही हैं। हमारा सीमा शुल्क विभाग, हवाई अड्डों, बंदरगाहों पर सतर्क निगरानी रखता है तथा मादक द्रव्यों के अंतर्राष्ट्रीय अवैध व्यापार को रोकने का भरसक प्रयास करता है। भारत मादक द्रव्य के अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आवागमन केंद्र होने के कारण सीमा शुल्क विभाग हार्डकोर मादक द्रव्य की आने व जाने वाली तस्करी को रोकने की ईमानदारी से निगरानी करता है। उत्पाद शुल्क विभाग जो शराव उद्योग को लाइसेंस देने का कार्य करता है अवैध शराव वनाने या तैयार करने पर कड़ी निगरानी रखता है। प्रायः हम मिलावटी शराव पकड़ने के वारे में पढ़ते हैं। अनेक राज्य सरकारों ने मादक द्रव्य संवंधी विषयों को संभालने के लिए विशेष कार्य वलों की स्थापना की है। राज्य सरकारें उन लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करती हैं जो कैनावीज और पोस्त की खेती करते हैं। इस कार्रवाई में पुलिस तथा वन विभाग शामिल होते हैं। भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमा वहुत लंवी है तथा इसके समुद्री तट भी काफी विशाल हैं। इसलिए केवल मादक द्रव्यों का अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केवल हवाई अड्डों और वंदरगाहों के माध्यम से नहीं किया जाता। अधिकांश अवैध व्यापार तटीय और भारत-पाक तथा भारत-वंग्लादेश सीमाओं के माध्यम से किया जाता है। हमारी सरकार के अनेक विभाग इस अवैध व्यापार को नियंत्रित करने में शामिल हैं। हमारी सेना, सीमा सुरक्षा वल, नौ सेना तथा तट रक्षा वल द्वारा किया जाने वाले कार्य सराहनीय हैं। हिस्सा वनाया। जहाँ तक उपचार का संवंध है सरकारी अस्पतालों में व्यसनी के उपचार तथा उसके वाद उसका ध्यान रखने की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। देश के कानून के सामने व्यसनी का भी उपचार अन्य अपराधियों के समान किया जाता है, इसलिए उसकी आदत छूटने की संभावना समाप्त हो जाती है। नीमहंस, वंगलौर व्यसनिओं के उपचार, परामर्श और पुनर्वास के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाली संस्था है। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय व युवा कल्याण मंत्रालय भी कुछ कार्य कर रहे हैं लेकिन कोई सराहनीय या ठोस परिणाम सामने नहीं आया है। यह भी एक तथ्य है कि कई मेडिकल कालेज तथा अस्पताल व्यसन मुक्ति केंद्र चलाते हैं जहाँ अनेक रोगियों का उपचार किया जाता है।

3.6 गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

पिछले भाग का अध्ययन करने के वाद शायद आपने यह राय वना ली होगी कि मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में हमारी सरकार उतना कार्य नहीं कर रही जितना कि उसे करना चाहिए। ऐसी वात भी नहीं है। हमें यह भी समझना होगा कि भारत एक विशाल देश है जिसकी आवादी 100 करोड़ से अधिक है तथा गरीवी जिसकी सवसे वड़ी समस्या है। इसलिए मादक द्रव्य के दुरुपयोग के विरुद्ध सरकार अकेले संघर्ष नहीं कर सकती है। ऐसी स्थिति में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका वहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। एन.जी.ओ. की मुख्य भूमिका किसी भी सामाजिक वुराई के विरुद्ध संघर्ष तथा सामाजिक उत्थान के लिए किए जाने वाले प्रयासों में सरकार के साथ सहयोग करने की है। व्यसन के विरुद्ध संघर्ष एन.जी.ओ. द्वारा किए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं।

भारत में एन.जी.ओ. ने परिवार नियोजन अपनाने तथा निरक्षता को समाप्त करने में महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान की हैं। उसी प्रकार एन.जी.ओ. को रसायन की आदत की समस्या की गंभीरता को अनुभव करना चाहिए। महिला संगठनों को भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी क्योंकि भारतीय समाज में पुरुष प्रधान परिवारों में मादक द्रव्य दुरुपयोग का आसानी से शिकार महिलाएँ ही वनती हैं। उनके शोषण और दुखों का व्यसन एक और कारण वन जाता है। गैर सरकारी संगठन दूरस्थ गाँवों में भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। कई संगठन नुक्कड़ नाटकों एवं लोक कलाओं के माध्यम से यह संदेश पहुँचा सकते हैं। इस संदर्भ में केरल शास्त्र साहित्य परिषद का उल्लेख करना आवश्यक है। एन.जी.ओ. [illegible] पीड़ितों को सहारा दे सकते हैं उन्हें परामर्श प्रदान कर सकते हैं तथा उन्हें [illegible] में [illegible] एवं पुनर्वास में सहायता भी प्रदान कर सकते

हैं। निजी संस्थाएँ तथा गैर सरकारी या धर्मार्थ संगठन व्यसनियों के उपचार के लिए अस्पताल चला सकते हैं और यह मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में एक अच्छा कदम होगा। टी.टी. आर. फाउंडेशन द्वारा चेन्नई में की जा रही सेवाएँ भी उल्लेखनीय हैं। कुछ अस्पतालों में मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित मामलों को संभालने के लिए अलग विभाग खोले हुए हैं। इस दिशा में बंगलौर के सेंट जोंस अस्पताल की सेवाएँ भी उल्लेखनीय हैं। क्या आप जानते हैं कि आँध्र प्रदेश में जागरूक बनाने के लिए महिला संगठनों ने दायित्व संभाला था। जब किसी महिला का पुरुष के व्यसन के कारण शोषण होता हो तो महिला संगठनों को उस महिला तथा कुल मिलाकर पूरे समाज को बचाने के लिए आगे आना चाहिए। पश्चिमी देशों में अनेक गैर सरकारी संगठनों के समर्थनात्मक कार्यक्रम, परामर्श तथा उपचार केंद्र, मध्यस्थता गृह, देखभाल केंद्र तथा पुनर्वास केंद्र हैं। मादक द्रव्य के दुरुपयोगों के लिए पश्चिमी देशों पर आरोप लगाने की बजाय हमें इसके विरुद्ध संघर्ष में वहाँ के गैर सरकारी संगठनों से कुछ सीखना चाहिए। इन व्यसनों पर रोटरी क्लब तथा लायंस क्लब जैसे सेवा केंद्रों के अपने कार्यक्रम होते हैं। सरकार, गैर सरकारी संगठन तथा सेवा केंद्रों को मिलकर मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के विरुद्ध तेज, प्रभावी एवं सफल संघर्ष करना चाहिए।

मादक द्रव्य दुरुपयोग के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले कुछ गैर सरकारी संगठनों के बारे में जानना भी उचित होगा। एक संपूर्ण सूची बनाना तो संभव नहीं है फिर भी कम से कम श्रेष्ठ कार्य करने वाले कुछ संगठन निम्नलिखित हैं:

टाराडा (कोट्टायम) केरल

कैम फाउंडेशन (बंगलौर) कर्नाटक

टी.टी रंगानाथन क्लिनिक रिसर्च फाउंडेशन (चेन्नई), तमिलनाडु

शांति सेवा सदन (बंगलौर) कर्नाटक

हेल्पिंग हैंड्स (बंगलौर), कर्नाटक

टर्निंग प्वाइंट (चेन्नई) तमिलनाडु

शक्ति (पुणे) महाराष्ट्र

सहारा हाउस, नई दिल्ली

कृपा फाउंडेशन (मुंबई) महाराष्ट्र

आदिक (तिरुवनंतपुरम) केरल

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा नियंत्रण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 1979 में उठाए गए कुछ मुद्दों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

इस इकाई में हमने मादक द्रव्य दुरुपयोग में मध्यस्थता के बारे में चर्चा की है। यह एक सार्वभौमिक समस्या है। साथ ही यह राष्ट्रीय, सामाजिक, परिवार तथा व्यक्तिगत समस्या भी है। इसलिए यह आवश्यक है कि इसकी माँग और आपूर्ति को कम करने के लिए मध्यस्थता की जाए। हमने कई अवस्थाओं की चर्चा की है जिनमें प्रभावशाली मध्यस्थता की जा सकती है। हम रोकथाम, नियंत्रण, उपचार तथा पुनर्वास के लिए कार्य कर सकते हैं। विश्वव्यापी समस्या होने के कारण यह विश्व शांति और व्यवस्था और कुल मिलाकर मानव जाति को प्रभावित कर रही है। अत: इसके खतरों को समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को महत्वपूर्ण कार्य करने हैं। इस इकाई में हमने यू.एन.ओ., डब्ल्यू. एच.ओ. तथा ए.ए. के बारे में भी बात की है। विश्व की स्थिति तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका का जायजा लेने के बाद हमने अपने देश की स्थिति पर नज़र डाली है। इससे हमने भारत में शराब उद्योग और शराब की आपूर्ति में सरकार की भूमिका के संदर्भ में भी विचार किया है। हमने कई सरकारी संस्थाओं जैसे-सीमा शुल्क विभाग, स्वास्थ्य मंत्रालय, कल्याण मंत्रालय, सेना, नौ सेना, सीमा सुरक्षा बल तथा तट रक्षक बल आदि की भूमिकाओं के बारे में भी चर्चा की है। हमने यह भी अनुभव किया है कि मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष में भारत की गैर सरकारी संस्थाओं को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। हमने आयोजित किए जा सकने वाले कुछ कार्यक्रमों तथा कुछ गैर सरकारी संगठनों पर भी प्रकाश डाला है।

3.8 शब्दावली

धर्मयुद्ध (Crusade): कल्याणकारी कार्य के लिए संघर्ष

निम्हंस (Mimhans): राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (बंगलौर)

रद्दी उठाने वाले (Rag poker): जो कूड़े के ढेरों से डब्बे, बोतल, धातु के टुकड़े आदि बीनते हैं।

सार्क (SAARC): क्षेत्रीय सहयोग के लिए दक्षिण एशियाई एसोसिएशन

यू.एन.ओ. (UNO): संयुक्त राष्ट्र संघ

डब्ल्यू.एच.ओ (WHO): विश्व स्वास्थ्य संगठन।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अनिल अग्रवाल (1995) नारकोटिक ड्रग्स, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

थॉमस, ग्रेसियस (1997) प्रीवेशन ऑफ एड्स: इस सर्च ऑफ आंसर्स शिप्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

जैरी सीगेल (सं. 1987) एड्स एंड सब्सटैंस अब्यूज, हैरिंगटन पार्क, न्यूयार्क।

यू.एन.डी.सी.पी. (1999) ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट, यू.एन.डी.सी.पी., रिजनल ऑफिस, नई दिल्ली।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. व्यसनी व्यक्ति के पुनर्वास से आप क्या समझते है।

   पुनर्वास वह कला है जिसके माध्यम से समाज व्यसनी व्यक्ति को स्वीकार करता है। पुनर्वास के माध्यम से एक व्यसनी व्यक्ति नये सिरे से अपना व्यसन मुक्त जीवन शुरू कर सकता है।

यह व्यसनी व्यक्ति को पुन: नशा करने से रोकती है तथा सफलतापूर्वक जीवनयापन करने के लिए प्रेरित करती है।

बोध प्रश्न 2

1. मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा नियंत्रण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठनों द्वारा 1979 में उठाए गए कुछ मुद्दों का वर्णन कीजिए।

   मादक द्रव्य दुरुपयोग की रोकथाम तथा नियंत्रण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 1979 में उठाए गए मुद्दे इस प्रकार है:

   — एल्कोहल के उपयोग में कमी विशेष रूप से युवा वर्ग और गर्भवती महिलाओं द्वारा एल्कोहल के उपभोग में कमी,

   — एल्कोहल के उत्पादन तथा विक्री पर कार्रवाई,

   — नशा व्यसनियों को चिकित्सा देखभाल तथा पुनर्वास की व्यवस्था,

   — उपभोग की सांख्यिकी और एल्कोहॉल से संबंधित समस्याओं को इकट्ठा करना,

   — व्यसन संबंधी मुद्दों पर कार्रवाई करने के लिए विभिन्न देशों के बीच सहयोग में सुधार करना।

इकाई 4 मध्यस्थता कार्य-नीतियों के लिए निपुणता और सामर्थ्य विकसित करना

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मध्यस्थता क्या है?

4.3 परामर्श की भूमिका

4.4 प्रेरक निपुणताएँ

4.5 संकट कालीन परामर्श की ए.बी.सी. पद्धति

4.6 सारांश

3.7 शब्दावली

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

व्यसन का उपचार किया जा सकता है। व्यसन एक बाध्यकारी मानसिक विकृति है। व्यसनकर्ता तब तक उपचार नहीं लेता जब तक कोई उसे प्रेरित यहाँ तक कि मजबूर न कर दे। यह इकाई आपको उपचार के लिए व्यसनकर्ता को प्रेरित करने की प्रक्रिया से अवगत कराएगी। व्यसनकर्ता को प्रेरित करने का एक तरीका है मध्यस्थता परामर्श। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- मध्यस्थता परामर्श से संबंधित विशिष्ट ज्ञान पर चर्चा कर सकेंगे;
- परामर्श के अन्य प्रकारों और मध्यस्थता परामर्श में अंतर कर सकेंगे;
- परामर्श में प्रेरित करने की कुछ निपुणताओं को अपना सकेंगे; और
- संकटकालीन मध्यस्थता का बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

हम सभी जानते हैं कि प्राय: बीमार व्यक्ति उपचार कराना चाहता है। इसी प्रकार एक व्यसनकर्ता अपनी आदत तो छोड़ना चाहता है लेकिन वह उपचार कराना नहीं चाहता। क्योंकि उसे आदत छोड़ने से होने वाले दर्द का भय होता है तथा यह भी एक तथ्य है कि व्यसन उसकी समस्याओं को कम करता है। केवल कुछ लोग ही स्वत: अपना उपचार कराते हैं।

हमने अनुभवों से जाना है कि व्यसन के अंतिम अवस्था तक पहुंचने से पूर्व उपचार के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को 'मध्यस्थता' कहा जाता है। मध्यस्थता एक विशेष विचारधारा है। इसके लिए ज्ञान और निपुणता की आवश्यकता होती है। यह पाठ आपको पर्याप्त सूचना प्रदान करेगा तथा आवश्यक निपुणता प्राप्त करने के लिए सुझाव भी देगा। नि:संदेह निपुणता का अभ्यास करना आवश्यक है।

ऐसी संक्षिप्त इकाई में परामर्श निपुणता के सभी पक्षों की चर्चा नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त पिछले खंडों में आपको परामर्श की कला से पहले ही अवगत कराया जा चुका है। इस

इकाई का मुख्य विषय व्यसन द्वारा और अधिक क्षति करने से पूर्व व्यसनकर्ता को उपचार स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने में निपुणता को प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करना है। परामर्श से संबंधित विस्तृत विवरण व तकनीक आदि के लिए आप संप्रेषक और परामर्श संबंधी पाठ्यक्रम पढ़ें।

4.2 मध्यस्थता क्या है?

मध्यस्थता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मादक द्रव्य व्यसन के हानिकर, बढ़ते हुए तथा विनाशकारी प्रभावों में हस्तक्षेप किया जाता है तथा पीड़ित व्यक्ति को कुछ रचनात्मक सहायता प्रदान की जाती है ताकि वह अपनी मादक द्रव्य की आदत को छोड़ सके। मध्यस्थता में यह अंतर निहित है कि व्यक्ति के संपूर्ण विनाश से पूर्व ही उसकी सहायता की जा सके। मध्यस्थता एक ऐसी पद्धति है जिसमें पीड़ित व्यक्ति के सम्मुख स्वीकार्य ढंग से उसकी सच्चाई प्रस्तुत की जाती है। इसका अर्थ है-मादक द्रव्य या शराब का दुरुपयोग करने वाले व्यक्ति के बारे में उसके परिवार की मुख्य चिंताओं पर मिल कर सहानुभूति व सावधानी से चर्चा करना।

यदि व्यसन का उपचार नहीं किया जाता है तो यह मृत्यु की ओर ले जाता है। व्यसन में निरंतर वृद्धि होते रहने से कई कारणों से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है:

i) अज्ञानता

ii) रोगी द्वारा उपचार कराने से इंकार करना

iii) निपुणता का अभाव।

अनेक लोगों को पता नहीं है कि व्यसन भी अन्य रोगों की तरह एक रोग है जिसका उपचार किया जा सकता है। यह भी एक धारणा मात्र ही है कि यदि व्यसनकर्ता का उपचार हो जाए तो वह स्थाई रूप से व्यसन मुक्त हो जाता है। व्यसन का उपचार तो हो सकता है पर इलाज नहीं। अनेक उपचारित व्यसनकर्ता पुनः व्यसन में पड़ जाते हैं। कुछ उपचार नहीं कराते हैं या उन्हें उपचार कराने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। इससे व्यसन बढ़कर चरम सीमा पर पहुँच जाता है जिससे स्थाई विकृति या मृत्यु की अवस्था आ जाती है। यदि व्यसन के बारे में अज्ञानता को दूर कर दिया जाए तो व्यसन की वृद्धि को रोकना संभव है।

जब व्यसनकर्ता निम्नतम/अंतिम स्तर पर चला जाता है तो बहुत कम मामले हैं जिनमें सहायता की जा सके। व्यसन की यह वह स्थिति है कि "मरता क्या न करता।" यह वैसे ही है जैसे कि डूबने वाला व्यक्ति कुएँ की तली में जाता है और मरने से पहले एक बार सतह पर आता है। ऐसे मामले दुलर्भ होते हैं। बहुत से व्यसनकर्ता स्वेच्छा से उपचार कराने से पहले मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। व्यसनकर्ता विभिन्न कारणों से उपचार नहीं कराते। जैसा कि हमने पिछली इकाई में देखा है कि व्यसन व्यसनकर्ता के लिए कोई समस्या नहीं है बल्कि यह उसकी समस्या का तथाकथित समाधान है। वह अपने व्यसन के लिए किसी व्यक्ति या किसी परिस्थिति पर आरोप लगाता रहेगा। व्यसनकर्ता के लिए व्यसन की वास्तविकता डरावनी होती है। जब वह व्यसन के परिणाम स्वीकार कर लेता है तो वह उपचार भी करा लेता है।

किसी को प्रेरित करना एक कौशल वाला कार्य है। व्यसनकर्ताओं को मजबूर किया जाता है, प्रेरित नहीं। जब प्रेरित करने के लिए अधिकार का प्रयोग करना आवश्यक हो तो इसे निपुणता से किया जाना चाहिए। व्यसनकर्ता के परिजनों तथा संबंधित अन्य व्यक्तियों को उसका ध्यान रखने से पूर्व कुछ बुनियादी निपुणताओं को जानना आवश्यक है।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1. मध्यस्थता से आप क्या समझते हैं?

.....

4.3 परामर्श की भूमिका

परामर्श के अनेक उद्देश्य होते हैं। वह मनुष्यों में परिवर्तन लाने का एक साधन है। व्यसन के उपचार का उद्देश्य व्यसनकर्ता की जीवन शैली में परिवर्तन को प्रभावित करना है।
इसलिए परामर्श की मुख्य भूमिका व्यसन समस्या में मादक द्रव्य के दुरुपयोग की गहराई से जाँच करने की है। सिग्मंड फ्रायड जो मनोविज्ञान के मनोविश्लेपण विचारधारा के जनक हैं उनका कहना है कि 'गहराई से जाँच करना इलाज है''। व्यसनकर्ता की अपनी एक अवास्तविक विचारों की दुनिया होती है। व्यसनकर्ता के जीवन में तथा उसकी समस्या के अनुभवों में परिवर्तन करने से वह उन्हें वास्तविक दृष्टिकोण से देखने लगता है।

व्यसनकर्ता को नया दृष्टिकोण अनुरूपता, संप्रेपण, जीवन शैली का पुनः बदलाव, उसकी अपनी पहचान पुनः स्थापित करने तथा सत्यनिष्ठा के माध्यम से प्रदान किया जाता है। व्यसनकर्ता का स्वयं व्यक्ति पर, परस्पर व्यक्तिगत संबंधों पर तथा नैतिक, धार्मिक एवं परंपराओं पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। व्यसनकर्ता पर भयानक डर, असहाय तथा भाग्यवाद छा जाता है। इससे उसके अंदर गंभीर मानसिक डर बैठ जाता है।

उसकी कोशिशें मानसिक डर से बचने की होती है। इसके लिए आरंभ से ही व्यसन या नशा उसकी पहली पसंद तथा निर्णय होता है। उसकी मुख्य कोशिश सामान्य होने व दर्द से तुरंत राहत पाने तथा सुख का अनुभव करने की होती है। दुर्भाग्य से यह प्रक्रिया दृढ़ होती है और उसे एकांत तथा पृथकता की ओर ले जाती है। इसलिए व्यसनकर्ता के जीवन में इलाज के अन्य साधनों की अपेक्षा उसके द्वारा मुकाबला करने की आवश्यकता अधिक होती है। मुकाबला करना परस्पर व्यक्तिगत संपर्कों के संदर्भ में मानव के व्यवहार का मूल्यांकन करने की पद्धति है।

व्यसन परामर्श के सिद्धांत

प्रशिक्षण के बिना भी कुछ लोगों में परामर्श की शुद्ध योग्यता होती है। व्यसन एक जटिल मसला है। इसलिए एक व्यसनकर्ता को परामर्श करने में कुछ बुनियादी सिद्धांतों का पालन करना चाहिए:

1. मादक द्रव्यों (शराब या मादक द्रव्य) के आदी व्यक्ति को समझना। मादक द्रव्यों के आदी व्यक्ति दूसरों से भिन्न होते हैं क्योंकि वे अनिवार्यतः किसी मानसिक विकृति से पीड़ित होते हैं। किसी व्यसनकर्ता की सहायता करने के लिए मादक द्रव्यों की आदत, उसके लक्षण और परिणाम के बारे में स्पष्ट रूप से जानना आवश्यक है।

2. मादक द्रव्यों की आदत एक पारिवारिक रोग है। इसका उपचार व्यसनकर्ता के सभी परिजनों के सहयोग से ही संभव है। व्यसनकर्ता की आदत से परिजनों की जीवन शैली पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. याद रखें कि व्यसनकर्ता की मुख्य समस्या मादक द्रव्य है। व्यसनकर्ता वास्तविक समस्या को विकृत रूप में सामने रखता है। जैसे मादक द्रव्य दुरुपयोग की अपेक्षा वह इसे धूम्रपान कहेगा। व्यक्ति को अपनी आदत का प्रत्यक्ष रूप से सामना करना चाहिए। परामर्शक को व्यक्ति से उसके मादक द्रव्य प्रयोग के बारे में आराम और विश्वास के साथ चर्चा करनी चाहिए।

4. व्यसनकर्ता के साथ सहानुभूति तथा समान अनुभूति रखना चाहिए। यदि व्यक्ति परिचित नहीं है, तो शराबी या व्यसनी जैसे संबोधनों से बचना चाहिए। व्यसनकर्ता अपने कार्य तर्क के

अनुसार नहीं करता। वह अपनी भावनाओं का गुलाम होता है जो दर्द से बचने के लिए उसकी आवश्यकता से उत्पन्न होती है। इसलिए ऐसे व्यक्ति पर औचित्य और तर्कों का प्रभाव नहीं पड़ता।

5. व्यसनकर्ता के मूल्य तथा अनुभव दूसरे व्यक्तियों से भिन्न होते हैं। परमर्शक को उन्हें व्यसन रोग के लक्षणों के रूप में स्वीकार करना चाहिए। हो सकता है कि वे परामर्शदाता के लिए अजीब या अवास्तविक हों। व्यसनकर्ता जीवन को जिस रूप में देखता है, उसी के अनुसार चलना चाहिए। व्यसनकर्ता के विचार बदलने के लिए परामर्शदाता को उसके भावों को समझना अनिवार्य है।

6. पुनः पतन को स्वास्थ्य लाभ प्रक्रिया के अंग के रूप में मानें तथा स्वीकार करें। व्यसन रोग का इलाज नहीं होता। परामर्शक द्वारा व्यसनकर्ता को उसके स्वास्थ्य लाभ में शर्त रहित या निःस्वार्थ सहारा प्रदान करने की आवश्यकता है। इसका अर्थ है कि यदि उसे पुनः आदत पड़ी है तो भी उसकी सहायता की जानी चाहिए।

7. स्वास्थ्य लाभ के लिए अल्पावधि लक्ष्य निर्धारित करें।

परामर्शदाता को क्या करना चाहिए?

1. मादक द्रव्य की आदत से संबंधित एवं परिणामें के संबंध में यथासंभव सूचनाएँ एकत्रित करनी चाहिए। सामाजिक वातावरण जैसे उसके व्यवसाय, परिवार, आर्थिक स्थिति आदि के बारे में सभी संबंधित सूचनाएँ एकत्र करनी चाहिए। व्यसनी और परिजनों या अन्य संबंधियों को व्यसनी के जीवन में मादक द्रव्यों की भूमिका तथा उसके जीवन को प्रभावित करने की प्रक्रिया के बारे में बता दें। परामर्शदाता द्वारा किए गए मूल्यांकन में व्यसनी के परिवार के अन्य सदस्य भी भागीदार होने चाहिए।

2. व्यसनी के साथ मादक द्रव्य की आदत के बारे में एक रोग के रूप में चर्चा करें। उसको समझाने में सहायता करें, इंकार करने पर स्थिति को संभालें तथा वास्तविक योजना बनाएँ और उसे समाज में बने रहने के लिए प्रेरित करें।

3. आरंभ में किए गए मूल्यांकन के अनुसार व्यसनी परस्पर व्यक्तिगत संबंध तथा अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध सुधारने में सहायता करें।

4. संयम की योजनाएँ बनाने में व्यसनी की सहायता करें। योजनाओं में अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन संयम योजनाएँ होनी चाहिए। अल्पकालीन योजनाएँ तात्कालिक वातावरण को संभालने वाली हों जो उसके संयम को बनाए रखें तथा वे पुनः पतन की रोकथाम के लिए कदम उठाने वाली हों। दीर्घकालीन योजनाएँ व्यसनी की जीवन शैली में परिवर्तन के प्रयास करने में, व्यक्तित्व, सद्गुणों और मूल्यों व अनुवर्ती उपायों तथा दीर्घकालीन अध्ययन के लिए कार्यक्रम बनाने में सहायता करेगी।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए ए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

2. मध्यस्थता परामर्श के किन्हीं तीन महत्वपूर्ण तथ्यों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.4 प्रेरक निपुणताएँ

परामर्श का उद्देश्य व्यसनी को परिवर्तन और जीवन का अधिक प्रभावशाली ढंग से मुकाबला करने में सक्षम बनाना है। परामर्श में प्रेरणा मुख्य घटक है। वास्तव में किसी स्वास्थ्यकारी उपचार का यह पहला चरण है। प्रेरणा किसी व्यक्ति में अपना गलत व्यवहार बदलने की इच्छा जगा सकती है। व्यसनकर्ता को परामर्श देने के संदर्भ में निम्नलिखित को शामिल करना चाहिए:

- मादक द्रव्यों को छोड़ना,
- जीवन शैली में परिवर्तन की इच्छा जागृत करना,
- उपचार कार्यक्रमों में पूरी तरह सहयोग की आवश्यकता का अनुभव करना, और
- ठीक होने के लिए समायोजन करने की इच्छा पैदा करना।

व्यसनी के प्रेरित होने का पता लगाना

यदि व्यसनी प्रेरित हो गया हो तो :

- वह इस बात को स्वीकार करेगा कि उसे मादक द्रव्यों से समस्या है;
- समस्या के समाधान के लिए सहायता की मांग करेगा;
- उपचार के लिए अपनी इच्छा से आएगा;
- वह उपचार केंद्र के नियमों का पालन कर उपचार कार्यक्रम में सहयोग करेगा; तथा
- वह स्वंय के लिए अच्छा होना चाहेगा।

प्राय: व्यसन उपचार के लिए व्यसनी स्वयं नहीं आता। उसकी मुख्य समस्या हो सकती है

- स्वास्थ्य समस्या,
- वित्तीय समस्या,
- कार्य स्थल पर समस्याएँ,
- पुलिस/कानूनी मामले,
- तलाक की धमकी आदि।

परामर्शदाता आरंभिक तथ्यों के रूप में इन विषयों का प्रभावशाली रूप से प्रयोग कर सकता है। इस अवस्था में हो सकता है कि वह व्यसनकर्ता की समस्या का स्पष्टता से सामना न कर सके। परामर्शकदाता का मुख्य कार्य व्यसनी के मुख्य मामलों को रेखांकित करना तथा व्यसन की समस्या पर ध्यान केंद्रित करने में साधन के रूप में इनका इस्तेमाल करना है।

प्रेरणात्मक क्षेत्र को मजबूत करना भी परामर्शदाता के पास एक और साधन है।

प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनका उसके/उनके जीवन में बहुत प्रभाव होता है। यह उनके प्यार या किसी अन्य संबंध के कारण हो सकता है। परमर्शकदाता को ऐसे व्यक्तियों का पता लगा कर व्यसनी को प्रेरित करने में उनके प्रभाव का प्रयोग करना चाहिए। व्यसनी को उपचार और स्वास्थ्य लाभ के लिए राजी करना, बिना किसी पूर्वाग्रह और स्पाट सोच के द्वारा होना चाहिए। उसके साथ सकारात्मक संबंध बनाना व्यसनी को प्रेरित करने में बहुत महत्वपूर्ण होता है। व्यसनी का स्वभाव परामर्श में बहुत महत्वपूर्ण है। व्यसनी को प्रेरित करने में सहायक कुछ परीक्षित पद्धतियों का वर्णन नीचे किया जा रहा है:

शाब्दिक अभिव्यक्ति फीडबैक: परामर्शदाता व्यसनी को व्यसन के कारण हुई क्षति के बारे में अपने अनुभवों को बता सकता है। जब व्यसनी किसी व्यक्ति से घटित हुई बातों को सुनता है तो इसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सामूहिक उपचार: मादक द्रव्यों को छोड़ने के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहे अन्य व्यसनकर्ताओं के अनुभवों के द्वारा भी प्रेरणा को मजबूत किया जा सकता है। इससे उसको यह विश्वास होगा कि संयम से रहा जा सकता है तथा संघर्ष में वह अकेला नहीं है। सामूहिक चर्चा में यह अच्छी प्रकार किया जा सकता है क्योंकि इसमें उन्हें परस्पर एक-दूसरे के अनुभवों को जानने का अवसर मिलता है।

समस्या पर परामर्श: समस्या में एक जोखिम तथा एक अवसर होता है। समस्या एक मोड़ है। समस्या में मध्यस्थता का उद्देश्य व्यक्ति की समस्या के प्रभाव को कम करना तथा समस्या में प्रयोग किए जाने वाले आवश्यक उपायों को अपनाने में व्यक्ति की सहायता करना है।

इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका सहारा प्रदान करने की होती है। इस प्रकार के परामर्श का मुख्य उद्देश्य अनुचित वातावरण को पहचानने तथा उसे बदल कर उचित व अच्छे वातावरण को अपनाने में व्यसनकर्ता की सहायता करना है।

सही जानकारी देना तथा व्यक्ति से अपनी सभी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग करने में उसे सहायता प्रदान करना समस्या परामर्श के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। समस्या में व्यक्ति प्राय: सच्चाई से अछूता रहता है। उसकी सोच अवास्तविक तथा तर्कहीन होती है। समस्या में मध्यस्थता करने वाले परामर्शदाता का मुख्य उद्देश्य व्यसनी की युक्तिहीन सोच पर नियंत्रण करने, वास्तविकता और उसके परिणामों को स्वीकारने में उसकी सहायता करना है।

समस्या निर्णायक होती है। समस्या से घिरा व्यक्ति चौराहे पर खड़े ऐसे अजनबी की तरह है जो सही रास्ते पर जाने का निर्णय नहीं कर सकता। ऐसे में परामर्शदाता व्यक्ति को सही रास्ता बताने तथा उस पर चलने का तरीका बताने में उसकी महत्वपूर्ण सहायता कर सकता है।

समस्या में मादक द्रव्यों का दुरुपयोग : मादक द्रव्य दुरुपयोग की आरंभिक अवस्था में व्यसनकर्ता तथा उसका परिवार किसी समस्या के होने से इंकार करते हैं। कुछ समय बाद समस्याएँ सामने आने लगती हैं। प्राय: परिवार का कोई एक सदस्य समस्या की प्रकृति को स्वीकार करता है और वही व्यसनकर्ता के लिए सहायता प्राप्त करता है।

परामर्शदाता को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि वर्तमान समस्या से पूर्व हो सकता है कि व्यसनकर्ता के जीवन में अन्य कोई समस्या रही हो। व्यसनकर्ता ने पिछली समस्याओं के संपूर्ण प्रभावों को अपनी मनोवैज्ञानिक समझ के कारण टाल दिया हो तथा सामना करने की प्रक्रिया के रूप में मादक द्रव्य के दुरुपयोग को अपना लिया हो।

समस्या व्यक्ति के अंदर से या बाहरी वातावरण से उत्पन्न हो सकती है। समस्या मानव जीवन का आम पक्ष है। समस्या से दबाव पड़ता है। स्वस्थ मन वाले व्यक्ति समस्या की स्थिति को उचित रूप से संभालने में सक्षम होते हैं। व्यसनकर्ताओं में प्राय: हालात का मुकाबला करने वाली इन प्रक्रियाओं और निपुणताओं का अभाव होता है। समस्याओं से व्यक्ति पर दबाव पड़ता है। तनाव या दबाव व्यक्ति की संपूर्ण क्षमताओं के विकास के लिए श्रेष्ठ एवं आवश्यक है। तनाव एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें शरीर तनाव का प्रतिरोध करने में सक्षम होने लगता है। अथवा शरीर इन्द्रिय प्रणाली की कार्य प्रणाली को व्यापक बनाकर श्रेष्ठतम तरीके से तनाव का सामना करता है। व्यक्ति के विकास में सहायता देने वाले दबाव को इयोस्ट्रेस (श्रेष्ठ दबाव) तथा व्यक्ति के विकास को क्षति पहुंचाने वाले या अत्यधिक दबाव को विपत्ति/समस्या कहा जाता है। यह एक ऐसा मामला है जहाँ दबाव बढ़ता है और कार्य कुशलता कम होती है।

मानव शरीर में कुछ स्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रियाएँ होती हैं, जिन्हें कठिन परिस्थिति का सामना करने वाली सुरक्षात्मक प्रक्रियाएँ कहा जाता है। यदि व्यक्ति को स्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रियाओं का ज्ञान नहीं है तो वह अन्य उपायों द्वारा समस्या से बचने का प्रयत्न कर सकता है। व्यसन एक ऐसी ही अस्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रिया है। जब तनाव एक स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ ये उपाय भी प्रभावी नहीं रहते हैं तो वह अन्य विकृत मानसिक स्थिति का प्रदर्शन करने लगता है।

इस प्रकार की कार्य शैली को बदलने के लिए व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति की या बाहरी सहायता की आवश्यकता होती है। समस्या ग्रस्त स्थिति को हल्का करने के लिए 4 तथ्यों की आवश्यकता होती है:

i) समस्या ग्रस्त व्यक्ति द्वारा वास्तविकता का सही अनुभव करना;

ii) व्यक्तियों का पर्याप्त मेल-जोल;

iii) स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त समय; और

iv) पर्याप्त स्वस्थ प्रतिरोधक प्रक्रियाओं का ज्ञान।

4.5 संकट कालीन परामर्श की ए.बी.सी. पद्धति

सभी संकटकानीन परामर्शों का लक्ष्य एक ही है। इसका उद्देश्य समस्या ग्रस्त व्यक्ति को पिछला कार्य स्तर पुन: प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। जब व्यक्ति एक बार इस स्तर को प्राप्त कर लेता है तो उसके कार्य स्तर में वृद्धि करने के लिए उसकी और सहायता की जाती है। सहायता प्रदान करने वाली प्रक्रिया आरंभ होने से पूर्व परामर्शदाता को वास्तविक समस्या की स्थिति का ज्ञान होना आवश्यक है। इसे निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है। परामर्शदाता को पूछना चाहिए कि:

i) क्या कोई ऐसी चीज है जो व्यसनी को हाल ही में इस प्रकार दुखी कर रही हो, जिससे उसकी भावना या व्यवहार प्रभावित हो रहा है?

ii) क्या यह भावना या व्यवहार निरंतर और खराब होता जा रहा है?

iii) क्या समस्या आरंभ होने का समय किसी बाहरी घटना से संबंधित है?

यदि सभी उत्तर हाँ में हैं तो समस्या है। ए.बी.सी. समस्या परामर्श का रूप वारेन एल जोंस द्वारा प्रतिपादित किया गया है। ए.बी.सी. का अर्थ है:

ए = व्यक्ति के साथ संपर्क बनाएँ।

बी = संभव सीमा तक समस्याओं को कम करें।

सी = समस्या का हिम्मत/सक्रियता से सामना करें।

संपर्क बनाना

परामर्शदाता बुनियादी निपुणताओं जैसे समस्या में शामिल होना तथा सहानुभूति का प्रयोग कर समस्याग्रस्त व्यक्ति के साथ संपर्क स्थापित करता है तथा तालमेल बनाए रखता है। समस्याग्रस्त व्यसनी को शर्त रहित स्वीकृति तथा सहायता की आवश्यकता होती है। समस्या ग्रस्त व्यक्ति को अपनी समस्याओं के बारे में बताने तथा अपनी भावनाओं की मुक्त अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए।

यथा संभव समस्या को कम करना

परामर्शदाता समस्या ग्रस्त व्यक्ति द्वारा प्रदत्त मौखिक संकेतों/सूत्रों का उपयुक्त उत्तर देकर उसकी सहायता करता है। उत्तर का लक्ष्य व्यसनी की मुख्य समस्या पर उसका ध्यान केंद्रित कराना है। यह ध्यान केंद्रित करने का कार्य पहचानने और स्पष्टीकारण के माध्यम से किया जाता है। कार्य व्यसनी का ध्यान निम्नलिखित पर केंद्रित कर करके किया जाता है:

क) समस्या को बढ़ाने वाले तथ्य,

ख) व्यसनी की सामाजिक स्थिति को जोखिम,

ग) व्यक्ति द्वारा सामना करने की विधियाँ,

घ) ऐसी नई स्थितियाँ जो व्यक्ति को सामना करने से रोक सकती हों।

समस्याओं का सक्रियता से सामना करना

जैसा कि हमने पहले वर्णन किया है कि समस्या परामर्श का उद्देश्य व्यसनी की स्थिति निपुणताओं को मजबूत बनाना है। यह कार्य समस्या की स्थिति का मूल्यांकन तथा उस स्थिति का सामना करने के लिए उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करके किया जाता है। इस प्रक्रिया में पाँच चरण हैं:

1. लक्ष्य निर्धारित करना। आरंभ में अल्पावधि में प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्यों को निर्धारित करना महत्वपूर्ण है। इससे व्यसनी को समस्या की स्थिति को बदलने में अपनी क्षमता का पता लग है। एक बार अल्पावधि लक्ष्य प्राप्त होने पर दीर्घावधि लक्ष्य निर्धारित करने में उसकी सहायता की जा सकती है।

2. संसाधनों का पता लगाना। यह समस्या से निपटने के लिए व्यसनी के पास उपलब्ध बाहरी तथा आंतरिक संसाधनों को ध्यान में रख कर दिया जाता है।

3. विकल्पों की स्थापना करना। कई बार व्यक्ति के पास समस्या से निपटने के लिए उपलब्ध साधनों को छोड़कर कोई अन्य विकल्प मौजूद नहीं होता। जिससे समस्या आरंभ हो जाती है। दिमाग पर जोर डाल कर तथा सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों विकल्पों पर विचार कर ही विकल्पों की तलाश की जाती है।

4. विकल्प को लागू करना। व्यसनी की सहायता करने के लिए जिन विकल्पों की तलाश की जाती है, हो सकता है उनके बारे में उसे जानकारी न हो। ऐसी स्थिति में इन नए विकल्पों से अनजान होने के कारण व्यसनी इनका प्रतिरोध कर सकता है।

5. समीक्षा तथा पुन: विश्लेषण करना। सही रूप से लागू करने के लिए लक्ष्यों तथा उनकी कार्यान्वयन स्थिति का आवधिक विश्लेषण करना आवश्यक है। जब कुछ पद्धतियाँ प्रभावशाली नहीं रहती तो अधिक प्रभावशाली कार्य के लिए उनमें संशोधन करना आवश्यक होता है।

संकट कालीन परामर्श की तकनीकें

संकट कालीन परामर्श में सहायता के लिए बेंजामिन रश ने कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ विकसित की हैं। जो इस प्रकार हैं:

1. व्यसनी की आदत का स्तर पता करने के लिए परामर्शदाता एक तरह से 'अभिभावक' की भूमिका निभाता है। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि समस्या मनोवैज्ञानिक हो। यह तो वातावरण का मुकाबला न कर सकने वाले व्यक्तियों को होती है। इनमें से अधिकांश निर्भरता के स्वभाव वाले होते हैं। इसलिए जब कोई समस्या आती है, तो समाधान के लिए वे किसी संरक्षक की इच्छा करते हैं। व्यसनी की सामना करने की निपुणताओं को मजबूत करने के लिए परामर्शदाता इस प्रवृत्ति का साधन के रूप में प्रयोग कर सकता है।

2. भावनात्मक वेग को एक समझदारी वाले बंधन में बदला जाए। परामर्शदाता, व्यसनी के भावनात्मक हिस्से को पहचानने तथा अभिव्यक्ति का एजेंट बन जाता है।

3. तनाव भरी स्थिति की उद्देश्यात्मक समीक्षा जो सहारा प्रदान करने वाले वातावरण में हो। समस्या के कारण व्यसनी स्थिति को सही रूप से अनुभव नहीं कर सकता। परामर्शदाता स्थिति का सही विश्लेषण करने में प्रभावशाली सहायता प्रदान कर सकता है।

4. व्यसनी के व्यक्तित्व को मजबूत बनाकर उसमें आत्म विश्वास पैदा करना। कम आत्म विश्वास वाले लोगों में प्राय: समस्याएँ शीघ्र आने की संभावना होती है। मजबूत व्यक्तित्व बनाने का अर्थ है व्यसनी द्वारा समस्याओं का अधिक सफलतापूर्वक सामना करना।

5. व्यसनी के परिवेश तथा जीवन शैली में परिवर्तन करना। कुछ समस्या परिवेश के कारण पैदा होती है। कई बार व्यसनी वर्तमान परिवेश में असहाय हो जाता है। परामर्शदाता परिवेश में परिवर्तन करने में व्यसनी की सहायता कर सकता है।

6. क्रियाशील बनाने संबंधी चिकित्सा। कुछ समस्याएँ व्यक्ति को भावात्मक रूप से निष्क्रिय कर देती हैं। व्यसनी को किसी सकारात्मक कार्य में लगाने से उसमें यह विश्वास पैदा होगा कि परिवर्तन संभव है।

7. धार्मिक संसाधनों का प्रयोग करना। मनुष्य स्वभाव से धार्मिक होता है। लगभग सभी व्यक्तियों का अपने से अधिक किसी अलौकिक शक्ति में विश्वास होता हैं। परामर्शदाता व्यसनी की समस्या का समाधान धार्मिक जीवन के सकारात्मक पक्ष की उचित धार्मिक गतिविधियों को प्रोत्साहित कर निकाल सकता है।

कुछ समय तक इसका अनुकरण करें। यदि व्यसनी को स्वयं के फैसले पर छोड़ दिया जाए तो उसको उचित मार्ग का पता नहीं होता। परामर्शदाता को व्यसनी की सहायता से बनाई गई कार्य योजना का समीक्षा और मूल्यांकन करने के लिए एक निश्चित व स्पष्ट कार्यक्रम बनाना होगा।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3. संकट कालीन परामर्श का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.6 सारांश

मध्यस्थता एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के हानिकारक बढ़ते विनाशकारी व्यवहार में हस्तक्षेप किया जा सकता है और उसके वर्तमान व्यवहार से उसका संपूर्ण विनाश होने से पूर्व स्वस्थ व्यवहार अपनाने में उसकी सहायता की जाती है। व्यसनकर्ता कभी सहायता के लिए नहीं कहता। इसलिए परिवार में से किसी को सबसे पहले प्रेरित किया जाता है। परामर्शदाता को प्रेरक क्षेत्र का पता लगाना होता है। समस्या परामर्श मध्यस्थता का प्रभावशाली साधन है। समस्या परामर्श अल्पकालीन परामर्श होता है। जिसका उद्देश्य समस्या की स्थिति हो हल्का कर समस्या का समाधान करने में व्यक्ति की सहायता करना है। परामर्शदाता समस्याओं को संभव सीमा तक कम कर हिम्मत से सामना करने में उसकी सहायता के लिए संबंध स्थापित करना है।

4.7 शब्दावली

विवश मानसिक विकृति	:	एक आंशिक दिमाग जहाँ अवांछित अचेतन विचार मनुष्य के विचारों और कार्यों को प्रभावित करते हैं।
सामना करना	:	मनोवैज्ञानिक परामर्श में प्रयोग की जाने वाली तकनीक जिसमें परामर्शदाता व्यसनी को वास्तविकता का सामना करने के लिए तैयार करता है।
अन्तर व्यैक्तिक	:	एक व्यक्ति एवं अन्य व्यक्तियों के बीच कोई संबंध/बातचीत /संपर्क।
अंतर्वैयक्तिक	:	व्यक्ति के अन्दर।

मनोविश्लेषणात्मक स्कूल : सिग्मंड फ्रायड द्वारा स्थापित मनोविज्ञान का स्कूल।

प्रणालीकरण : व्यवहार या धारणा को दृढ़ करना।

पुनः पतन : मादक द्रव्य दुरुपयोग की आदत में पुनः पड़ना।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. मध्यस्थता से आप क्या समझते हैं?

मध्यस्थता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मादक द्रव्य दुरुपयोग के हानिकारक, बदले हुए विनाशकारी प्रभावों में हस्तक्षेप कर व्यक्ति को रचनात्मक प्रकार की सहायता प्रदान की जाती है। व्यसनकर्ता केवल अंतिम अवस्था में ही उपचार कराने के लिए सहमत होते हैं। रोग के अंतिम अवस्था में पहुँचने से पूर्व व्यसनकर्ता को समस्या की स्वीकृति कराना तथा उपचार के लिए सहमत कराना संभव है।

बोध प्रश्न 2

2. मध्यस्थता परामर्श के किन्हीं तीन महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में लिखिए।

मध्यस्थता परामर्श के तीन महत्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित हैं:

क) मादक द्रव्यों का व्यसनकर्ता अन्य व्यक्तियों से भिन्न होता है। वह विवश मानसिक विकृति रोगों से पीड़ित होता है। उसकी वास्तविकता से संबंधित सोच अन्य व्यक्तियों से भिन्न होती है। परामर्शदाता को उसे स्पष्ट रूप से समझाना चाहिए।

ख) व्यसन एक पारिवारिक रोग है। व्यसनकर्ता के परिवार को भी समझ और उपचार की आवश्यकता होती है।

ग) व्यसनकर्ता की वास्तविक समस्या मादक द्रव्य है। व्यसनी उन समस्याओं को भिन्न रूप में प्रस्तुत करता है। मध्यस्थता परामर्श व्यसनकर्ता को यह स्वीकार कराती है कि उसकी वास्तविक समस्या मादक द्रव्य है।

बोध प्रश्न 3

3. संकट कालीन परामर्श का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

संकट कालीन परामर्श अल्पकालीन परामर्श होता है। इसका उद्देश्य समस्याग्रस्त व्यक्ति के जीवन में समस्या की स्थिति के प्रभाव को कम करना तथा समस्या पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाना है। यह कार्य व्यक्ति की इस प्रकार सहायता करके किया जाता है कि वह समस्या को सही रूप में देखें, तथा समस्या का मुकाबला करने के लिए उसके पास उपलब्ध संसाधनों का पता लगाए और संसाधनों को विकसित करे। व्यक्ति की नई जीवन शैली विकसित करने के संघर्ष में भी उसकी सहायता की जाती है।

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

हॉवर्ड क्लिनवेल (1982), *अंडरस्टेंडिंग एँड काउंसलिंग द ऐल्कोहॉलिक*, एविंगटन प्रेस, नास्वले टेनसी।

एब्राहम जे. ट्वर्सकी, एम. डी. (1990), *एडिक्टिव थिंकिंग हेजेल्डन फांउडेशन, द प्लीजेंट वैली*, एम.एन., यू. एस. ए.।

शरोन वेसचाइडर क्रस (1989), *एनादर चांस*, साइंस एड विहेवियर बुक्स, कैलिफार्निया।